

यस्त्वया धियनयनमः॥ स्वय
 कंयमनर्थं सर्वकायस्य समनः
 किं यासिद्विद्विषायामित्वत्यः
 सादान्मदृश्वय॥ ॥ धक्क
 धनादन॥ स्वयसायलिठम
 लिठ॥ मलिंसाभसाय॥ स्वयलि
 नसाधयुलिंकाय॥ मवननून
 मदतसादृश्यसाक्रियाय॥ ॥
 सकिनिलधूनक॥ ॥ गंक
 कमृगलकायावयंवाभृगसा
 नयाय॥ चन्दनादिन॥ ॥
 जक्रुमकनऊयवयगंक॥ क
 किऊयवयगायनीन॥ ॥
 लाहाकर्मियूजा॥ गंकवंध्राय॥
 वीणातालिमूखनगंककथक॥
 कलिबूय॥ ॥ वावनशूकका
 याय॥ ॥ धनंलियूनादिननः

सहिगयागायाठरु ॥ ॥ थाकर
थायसदवयाअनूचयनवलि
वियावरु ॥ वालानरुवगजान
कीद्ववशवलिलालमान ॥ ॥

लक्ष्मस्यैदकाय ॥ अननसम्यः
विधिनागृहीता गिलारुवत्सव
सुखावहासा ॥ तस्मात्त्ययत्ननय
थाकमत दनीयवर्णसकलहि
कृतान् ॥ ॥ ॐ निलिगिरुन
विधिः ॥

अथ गिलासाधनविधि ॥ ॥

एनकसकलक्षेत्रनयाय ॥ ॥

वासयविधिः ॥ नरुठयाकलक्ष

या ॥ धवरववसयाक सती ॥ धाद नय

कत ॥ वलिमालकत ॥ नाक वा

कमृगल कस्मिन्नान डाषधीमा

लकवासय ॥ ॥ विधिर्थायाय ॥

वाकल गमानडा मधी पवश्च
दनयूजा ॥ ॐ याडा मधी ॥
वायू मयूजा गानिक यष्टिक ॥
यथाकमम ॥ लाडा कायाव नि
म्वेनादियाय ॥ मग रुनाठः
वामयुगनत्वाय ॥ ॥ ज्ञान ॥
मिलाद रुने ॥ ॐ नत्वायामि ॥
मीधदक ॥ ॐ येनीधनि ॥ यं वा
मुन ॥ यं वगय ॥ वदनं गंगामुः
लिकानवय ॥ ॐ अश्वकानि ॥
गंगदकनहाय ॥ ॐ वृमममग
ग ॥ वृमदक ॥ ॐ ववृमया
रु ॥ रुलादक ॥ ॐ या रुलनी ॥
गंधदक ॥ ॐ गंधदानी ॥ वीः
द्वदक ॥ ॐ वीरुयधमे ॥ सर्वा
दक ॥ ॐ येनीधनि ॥ गंगदक ॥
ॐ यविगुष्ट ॥ मूर्तिकलसम्नाः

न॥ ॐ वसाऽयवि॥ कायाशनयू
स्यन॥ वृणर्त्तियावर्त्तधन॥ ॥
चठस्यमचन नकचदननद
वयामूलमक्तचायलाहाम॥ च
दनादिमगुनयूजन॥ ॥
विश्वकम्मायूजा॥ दक्षिण॥ तर्क
चाकलवद्वाय॥ लाहलवद्वा
यवाच॥ ॥ ॐ विश्वकम्मान
ममृष्यं तलाचुष्टिकानकः॥
यथायुक्तकनास्याच विश्वकम्मा
नमाशुन॥ लवद्वाय॥ तर्ककय
क॥ तर्ककयाथायसकस्मिन्
य॥ ॥ लाहाचूनचानवलिस
चाय॥ अन्नसंकल्पदक्षिण वा
चन॥ वलिविसर्जन॥ कल्लारि
षक॥ ॥ गुरुगुरुलक्षणासा
याव अगुरुलक्षणासामयास्य

य
न

सान्निभूतविषय ॥ ॥ दवल
दलचास्यविषय ॥ धनंति कर्मि
यनिष्यं विश्वकम्भोसालावदव
आठठ ॥ ॥ ०० निगिलायूजा
विधिः ॥ ॥

य५
न१

धनंति यिदिसि आचाश्याहि
न सकलमूनक दसयनिगस्यं
रुद्यालकं आदिन यनिष्यामायाद
दिसाचक ॥ ॥ धनंतिदवन
नानयाविधिः ॥ ॥ धनंति
माचाश्यास्यदवनदानयारुसः
नखवलि विधिर्थाविषयक ॥ सा
गर्वाचाचक ॥ ॥ धनंतिअ
द्ययागलीखनरुसहायक ॥ अ
मुमकन ॥ ॥ वालांरुसयूजा ॥
दक्षिणा यूजायाठाक लिलव
क्षय ॥ ॥ आग्रयादियुः ॥

३५ तस्य वा दद व विल ॥ धनं लि त म र्मु न धाय

धनं स. पावना दि. आभा दौ द ॥ ३

कानसं मरुतं अरुमकुन
वाद्यादाव वलिसकास्यं वलिवि
मरुनयादाव कर्नकसकाय ॥ ॥
धनधनदाव विधिथ आवाय
नवलिवियक ॥ वलियाग उरु
वत १ मालाने वाद्य १ ग १ उ १ आ १
निवत वा १ २ दाल वा १ २ धनद
यकं वलिविय विधिथं ~~का~~
तयाय ॥ ॥ धनं लि आवाः
यन चका यनका यनकिस्य
नयाव अयलयमकु ॥ अद्याना
मु अद्यान वडा वनीसि उरुका
नादिसकाव ॥ ॥ धनं न अयः
लयाव युव सुस्म ननयादाव द
व नदान नृस सायाल हाल ॥
धनं लिया साकयावक ॥ समय ॥
दक्षिण ॥ यजमाना उषक ॥

का

आयया नतीनवलिङ्गाय ॥ रुच
 नवाला लवङ्गायाव दवलरु
 ढायकं डालकं ॥ धनं नृ मिनिवि
 द्द ॥ ॥ धनं लिङ्गाति किवा
 ढाव दिग्गमन्धनयाचकं ॥
 धनं लिङ्गाव नृगलयाय लिमा
 नन नृविङ्गायाय ॥ किल यूच
 दूयं युलि १२ यकानसंगाय
 का ५ यंच सगुनं कुमलकान साधु
 दिन ॥ ॥ नृति नृ मिनिविद
 ष यधमाविधिः ॥
 यूनरुः यक्षान् द्वितीयकमः ॥
 गुरुलग्नसायाव नृमिसाधनया
 य ॥ धनयाद द्विषदास वाध
 लनकलसाधनयाय ॥ कलस
 याद द्विषदास जिमनयनियल
 वायाव धयादवन वाकलस

नय ॥ त्वतीर्थ जलनय विधिर्था
 वलिमालका नय स मन्त्र २ ॥
 ध्यायूषे स ध्याता स नमस्तुलवा
 याव सावायना रुननय धक
 वायाव ध्यायूषे स ध्याता स नमस्तुलवा
 लास नमस्तुलवा लास नमस्तुलवा
 गंगाजल हामिकिलद्व २४
 यूष विधिर्था कलसा च नयाय
 ॥ ॥ आचार्य न वलिमालका
 विषयक वाङ्मययुजा साकि क
 यस्मिन् यथा कर्म लयाय ध
 यावाक् यजमानस्य अमूकः
 दवय निष्कृष्ट मिमाधन निमि
 त्यर्थ ॥ यूषे स वाढ सामयी यूजा
 याय ॥ वाकलस ॥ ऊँ उजागव ॥
 रुल ॥ ऊँ लांगलय विनवत ॥
 यं वगद्य नाय गंगाजल ॥ ऊँ

उभापारन ॥ रुक्माद्यादि वन्दनादि सिद्धनने

वर्क. रुक्मिणी ॥ रुक्मलवर्जिता ॥ रुक्मनासायुजा ॥ रुक्मनासायुजा ॥ ८

यविनश्च ॥ ॐ ॐ मम गीता ॥ ॐ
मनाशुति ॥ नञ् ॥ ॐ वीरुयश्च
म ॥ यथाकर्म ॥ ॥ नमश्च
दावस माया रुन वासानद्याः
पूर्वसवाद्यसामयी विधिर्धला
सायावदतायन दीयलाहल
का ॥ लखध हास्य दतायन ॥
थनाहलधनयुजायाय सग
नादि सहाता ॥ ॥ धनीलिः
ॐ गानकानसगय यजमान
याअनूकलनदिगसायावः
वासविक ॥ ॥ वाद्यवन
सक्तिवाचनादिघालय ॥ साया
लवायक ३ ॥ वासावाक्यं या
ता वतानितीवियावकायः
साद्य ॥ धयुलरुस कक ५ सायु
आयल कास आदिनदतसा

का २

हाकातिन ॥ ॥ वाय्वनगितव
 न नामिय ॥ धरुलहृदिस्यंज
 यवयमं ॥ ॐ ॥ २० ॥ यंयग
 वनहाय ॥ ॐ वाचनं छदामी ॥
 गंगाकुलनहाय ॥ ॐ ॥ ममग
 र्ग ॥ ॥ धर्नलि यजमानन
 नञ्जाजानकं वाय्वन धरुस
 हाल ॥ ॐ वीहयश्चम ॥ यूजाया
 स्यंनया चाकलसलंखनधः
 विय ॥ ॐ स्मिन् ॥ ॥ गाः
 यकायावयगिहायाय ॥ ॐ म
 नाहनि ॥ दक्षिणार्धनं वाचनं ॥
 गरुडयकलसकायाव अरि
 षकविय चन्द्रनादि सगुल
 आसिद्धाद ॥ वलिक्काय थायथा
 यसं ॥ साक्षिथाय ॥ धर्नलि हा
 सिक्कील यकनसंताय नञ्जाः

हालाथासकाठकंगय ॥ ॥

ॐ गिरु मि ॥ धन द्वितीयकः

मविधिः ॥

धनावायनकलसावनया

य ॥ ॥ आवायनधनावलि

वियकमालका ॥ ॥ कलस

याडरुवसधनवासय ॥ ॥

सायातायूजावन वक्र का

शदाहृखर्षुष्टंगी वृशद्वनम

कालागूल ॥ रुवधनयाताव

गालि ॥ ॥ यथाकर्मत्वया

य ॥ ॥ गामाह निर्मच्छनादिः

दीयलाहवदा ॥ ॥ गतागामा

माहमानीय ॥ साद्यं अगामाह

शुद्धमासर्ननमधायुर्थनमः ॥

ववयादार्थरुमार्थवदन

सिद्धन यज्ञायवीग वक्रालका

न यथा कांश्याय स्वर्णं शुभं
नो यथा स्वर्णं नाम यथा शुभं धूपदीपः
ददत् ॥ **सा** ॥ स्वर्णं त्वयि हस्त
स्थानं स्वाहा यद्वा मुखा गथा ।
सर्वपापहृत्ता गवाः तस्माच्छुः
किं यथा च ॥ ॥ धनं लिप्ताः
दायनं च्छांता थायस्य न
क ॥ ॥ **हो** मल कृत लंख
कायाव च्छां कलयाय ॥ ।
अथत्यादि ॥ ददाति यः यव ह
र्षी यो नक्त गच्छ दवगा । गवार्थ
न च या दद्यात् गकला कमही
यत् ॥ अथ विष्णु लाकमही गत्
कामः ८ ॥ गां ऊवा न यथायति
देव गां यासा दार्थं देमि यविरु
कन नार्थं यथा मर्हं मत्सु ऊत् ॥
सा च्छां नक्त ॥ मल मूत त्याग मयो

नाल ॥ सायागादद्विषा विच ॥
यजमातअलिषक विच ॥
विधिधंधूनक ॥ ॥ धनाआ
वायुवलि कयात विचकाव
वालाकुठिलवकाय दद्विषा
विच ॥ चायातक ॥ सायलिठ
मलिठ ॥ ॥ नायवचावाः
द्रव जाति ॥ आदुद वि ॥ एथा
ववेण्य ॥ हाकुपूद ॥ ॥
॥ स्वाद ॥ चाकुवाद्रव ॥ हाकु
द्वि ॥ मालवेण्य ॥ स्वायुपू
द ॥ गंध ॥ माकुवायव ॥ हिना
द्वि ॥ यानिनावेण्य ॥ विष्ठाः
नापूद ॥ ॥ जंठ ॥ छा ॥ वा
ठ ॥ कायल ॥ धनलूलठावलि
ठ ॥ वि विठ कक ॥ विमिमा
ठ ॥ हलिठा ॥ धन लूलसामलि

ॐ मृदु विद्युः ॥ ॥ संयादि
निः शायन रुचिनि कुधन
लका नया हा कम विद्युः शयव ॥
॥ हं गाल रुम सा सि लं हा न
वत धक कल धन लल हा वया
धि मृदु कल खय न य उमानः
काल कम ॥ ॥ हिल ख धन
लल हा का व वलिक मया ठ
सं काल विद्यु मायु का कम सिद्धि
शयव ॥ ॥ ॐ नि मय वि
द्या ॥

वधु न मया य ॥ मा ध रु न ॥ लंः
खन मल काय ॥ दिग्मा धन या
ठ न य ॥ ॥ दिव सा नू कम
न रु मि सा धन ॥ कल भा वनः
न वा य रु न वा वि धि यु वन ॥
गाम यन गं धा द क न हा य ॥

यजमान. कालकशुक्लवस्त्र
निय ॥ मालकावसयविधिश्च ॥
॥ ॥ कलशाच्चनजाननवाः
सय ॥ यागासनवाय. तायडा
ल. आयनियलयाय. कलसया
ता ॥ स्वस्तिक. संगानयागा. ॥
धवजवस. यैव. वलि. धानल
ख. कलंक. थाययादान. माल
का. वासय ॥ धवखवस. गा
स. गायस. कुम्भलयुजा ॥ ॥
कलयायुवस. कामिकिल
यु३३द्व. १३याजूनमानन
खियातमालका ॥ न्या. कलक
य. लूनमालाव ॥ आयायगुः
॥ कलि ॥ गंगाजल. वहुसमवि
त ॥ यैवामुन ॥ वायुयुजायागा.
नेत्रादि. दवधवधव. नति

नमालकात् ॥ वा. कलसस. तिथ
 कलनय. धीखधु वन्दननयसा
 ददतय. नाय. कायालन. ००न.
 कायिव. खान. कचा. सहलनय
 ॥ लास्ययकावन. कलसयायूव
 सनय ॥ ॥ यक माया. ९ वू
 सियायाव. सानयाठाव. नायव
 वक्रनतिथ. मालकास. ९ वू सि
 याय ॥ ॥ यकमानन. सूर्या
 योदि. युव्यायाद. यकादनया
 य ॥ आवाय्यामालका. व. सय ॥
 ॥ ॥ यकमान. नासिचक ॥ यय
 काजनयावक ॥ वा. ॥ यथानि
 मिरु ॥ ॥ किदवयागतिन ॥ युका
 कालआवायलवद्रय ॥ ॥
 ययार्थ ॥ युवस्मानन ॥ न्यासः ॥
 अर्थयानयुका ॥ आत्मयुका ॥ स्वा

नकायावलंखनहाय चन्दना
दिन ॥ ॥ यूजा ॥ ॐ तत्सत्तामि
त्यादि ॥ ॐ अजिद्युता ॥ कलसयू
जा ॥ दवयादान ॥ ॐ अक्कः
त्यादि १० ॥ ॐ गानावमिद १० ॥
ॐ अस्वस्त्यादि ८ ॥ ॐ अर्द्धमा
सात्यादि ॥ सयनयूजा ॥ ॥
वलिमालकाकवायूजा ॥ ॥
थनाकलसयाविवन वरुयू
जायाय ॥ ॥ विश्वकर्मा
यर्द्धमासर्जनम यथानम ॥
ववन्दनादि ॥ ॐ सर्वकदा
नायनमः ॥ ३ ॥ ॐ सनईका
यनमः ॥ ३ ॥ ॐ सर्वसंशाना
यनमः ॥ ३ ॥ थनावदनयूजा ॥
ॐ अक्क कर्मकर्मकर्म ४ मरुवा
वामयाहुवा ॥ दवयू ४ कर्मक

त्वास्तु मन्त्रमवाधुव ॥ ४ ॥ ॐ नमो
 भुवनेश्वर्य ॥ ॐ मन्त्रानां ॥ ॐ आगू
 नन्द्यवृण्डनस्माकमर्द्धमाग
 दि मरुतान्महीरि नृतिरि ॥ ४ ॥ आ
 वाहनादि ॥ ध्रुव दीप नैवाद्या
 दि जाय **भुव** ॥ सर्वो वसुधयस्त
 विविधकृतमयसर्वनिर्माणय
 न् आयात्रे कोटुकाश्च गकलु
 वगवाहधानूयथागनिर्दिष्टीति
 दि जागय नमयुवत न विविचिनि
 विचिकारं वन्दने लाञ्छनार्थं
 नवननमिर्न विष्टकर्मो वेना
 र्त्त ॥ **भुव** गन्धादि ॥ ॥ **भुव**
 मन्त्रनयलयेन ॥ ॥ **वास्तु**
 यूजा ॥ **भुव** क यस्तिक ॥ ॥
 यथा कर्म ॥ वास्तवकाश्च नया
 य ॥ धनावाला यूजायाय ॥ दक्षि

ॐ सहलवद्वाय ॥ सामयीमालः
काआढावधायसवन ॥ कीन
याचासयचासुतन वय ॥ ॐ स
गंगाऊनहाय ॥ आचायनयन
शुकायावकार्थकार्थकिलना
सुहवदुर्मसमथुढाव ॥ ॐ स्वस्ति
वाक्चनयुः ॥ ॐ ॥ गीतवायादि
निःस्वनगेभादि ॥ दक्षिणयुर्व
नसमस्तसामयीआढाव आस
नसयुर्वसास्यवान ॥ दलयान
किलआढावऊवनयनशुर्क
यावकिलनाय ॥ वाक् ॥ ॐ वि
गन्तुगलनागलाकयालाश्र
कामदा ॥ निष्ठुनष्टुस्मिन्
आयुर्वलकनस्यदा ॥ ॥
मन्त्र ॥ ॐ द्वाद्वादयायनमः ॥ य
नष्टुआयासनाय ॥ नानावायथ

याव ॥ आर्यकानि निसृणी ॥
नत्वं वास्तु कुरु स्वयावकार्थका
र्थं सूर्ययूताय ॥ ॥ का
र्थं रश्मिधातन कार्थयन ॥
आर्यकानि निसृखिधातनयन
नानधूनक ॥ कीलसचन्दना
दित ॥ दधूसयद्य वाय कवान
माल का मधुल वाय नायका
ल ॥ ॥ कार्थं रश्मिधातन चन्दना
दित ॥ कार्थं रश्मिधातन ॥ दिदि
गसंवलियाग वाय ॥ ॥ वि
धिर्धयूता वाय ॥ नासिया ३ ॥
सूर्यार्थ ॥ रुद्रनमस्कन न्यास
अर्घ्यार्थयूता आत्मयूता ॥ दिग
वलि विधय ॥ ॥ आर्यकान ॥
वलिमनु ॥ आर्ययादिषु कील
य वलिदया कुमनरु आर्ययाः

संमखाहृत्वा वलिं मन्त्रदाय
य ७ ॥ ॐ अग्निस्थाधमवस्था य
वान्यतत्समाष्टता ४ ॥ वलिं गत्य ४
ययक्कमि सर्वेष्टद्रुममक्तिर्
स्वाहा ॥ अग्न्यादि ॥ ॥ न

मय ॥ ॐ नैमत्याधियति (येवः
नैमत्या येववाहसा ४ ॥ वलिं ग
त्य ४ ययक्कमि सर्वेष्टद्रुम
क्तिर् स्वाहा ॥ अग्न्यादि ॥ ॥

न ७

वायवा ॥ ॐ नमानावाहसा य
वान्यतत्समाष्टिता ४ ॥ वलिं गत्य
४ ययक्कमि एष्टद्रुमययमाद
नस्वाहा ॥ अग्न्यादि ॥ ॥

वीणा ॥ ॐ वृद्धय ४ सर्वदवः
स्था यवान्यतत्समाष्टिता ४ ॥ व
लिं गत्य ४ ययक्कमि एष्टद्रुम
मनात्सर्व स्वाहा ॥ अग्न्यादि ॥ ॥

वाकुपूजायाय ॥

ॐ नमो भगवते ॥ आसनं ॥ ॐ देवः
 सत्त्वा ॥ अस्य कर्तुं ॥ ॐ हृदि देव
 नाथे नमः ॥ ॐ पृथिवी देव नाथे
 नमः ॥ ॐ धनाथे नमः ॥ ॐ वि
 श्वनाथे नमः ॥ ॐ ब्रह्मा ॥ ॐ यं क
 मसि शो न सि पृथु सि मात नि श्व
 मा नमो सि वि श्व धा ॥ अ सि य न
 अ ॥ ॐ ह ॥ ॐ रु च ना क्क म्मा न
 अ ॥ ॐ क्क म्मा न ॥ ॐ रु च ना क्क म्मा न
 मि न स्या दि ति न सि वि श्व धा या
 वि श्व धा रु च ना क्क म्मा न ॥ ॐ पृथिवी
 अ क्क पृथिवी नृ ० रु पृथिवी म्मा
 हि ० सी ॥ ॐ पृथिवी देव यजु न्या
 य आ क्क मूलं मा हि ० सि यं व ऊं ग
 क्क म्मा न व यजु न्या ॐ व धा न द
 व स वि न ॥ य न म स्या पृथिवी ॥

गननयालोआस्मान्दृष्टियंचव
यंदियासुमनामामोक् ॥ ॐ म
हीयो ॥ ॐ स्याता यथिविना ॥
ॐ वस्ययज्ञानं ॥ आवाकनादि ॥
धूर्यं २ दीर्घं २ ॥ तिनतंदनने
वयं २ ॥ कामल युवाक ॥ ॥
मृग ॥ मर्यावलययदवयव वयु
वैकुण्ठकुंड ॥ कामलुहस
गं वदथी विष्टनमलि ॥ ॥
वृथावृहत्कदि ॥ कामल ॥ न
संस्क्रित ॥ ॐ नमो ॥ ॥
मनिवि ॥ ॐ सूर्याय ॐ दमास
ननम ॥ ययं २ ॥ वद ॥ ॥ सूर्यव
मिहविकण ॥ ॐ वसासविता
अतिवृद्धया ॥ ॐ जयमा ॥ नस्य
यूर्ययसवयातिविद्वान्मेयश्च
क्रिदिश्चाहुवनानिगाया ॥ ॥ ॥

वाहनादि धूय दीय ॥ लघुः
क नैवश ॥ लघुवामा ॥ अ
नगन्नादि ॥ ॥ विवशान ॥ ३
यमाय ० दमासनं २ यशं २ ॥
ॐ यमनदहं ॥ आवाहनादि ॥
धूयं २ दीयं २ कंकम नकचन्द
न नैवश ॥ कणवि नकचन्द
न ॥ ॥ मिश्र ॥ ॐ वलरुदाय
० दमासनं २ यशं २ ॥ ॐ लाङ्ग
लस्यवीनवत् सलगव ० सामयि
त्यन । तद्द्वये निगामविम्वरु
व ॥ अयीवनीम्यस्थिवदधवाह
लम् ॥ आवाहनादि ॥ धूयं २ दी
यं २ यशं २ यशं २ नैवशं २ ॥ वा
कृती नजा ॥ ॥ महीधन ॥ ॐ
समन्यवताय ० दमासनं २
यशं २ ॥ ॐ महीधो ॥ आवाहना

दि ॥ धूर्यं दीयं समीप माषा
न नैव श्यं ॥ काविला मासदि
वनि ॥ अरुमन्धादि ॥ माप ॥ उं आ
यवत्सायं दमासर्न श्यं ॥
उं हिमालययवताय ॥ उं हि
मस्यत्वाजनाय ॥ असा नयनि
वयामसि पावको ॥ अस्मद्य ॥
गितारुव ॥ दग्ध नैव श्यं नमः ॥
दद ॥ अरुमन्धादि ॥ ॥ आय
वत्सः ॥ उं दमायं दमासर्न श्यं
॥ उं आमा ॥ दधि नैव श्यं
नमः ॥ धलि ॥ अरुमन्धादि ॥ ॥
सविता ॥ उं दवमातायं दमा
सर्न श्यं ॥ उं गायत्री ॥ कृष्ण
नक यश्च नैव श्यं ॥ कृष्णालाख
आदुस्वान ॥ अरुमन्धादि ॥ सावि
त्री ॥ उं गीमायं दमासर्न श्यं

श्री २॥ ॐॐॐ मंगल ॥ आवाहनाः
 दि॥ धूयानमः दीया २॥ उरुयू
 य कृष्णदक नैवयं २॥ वाकमा
 ख कृष्णवायालंख ॥ अमगम्भः
 दि॥ ॥ ॐॐॐ ४॥ ॐॐॐ दाय ॐॐ
 दमासनं २॥ ॐॐॐ आनता ॥ आ ॥ ३
 वाहनादि॥ धूया २ दीया २॥ हनि
 दान्न नैवयं २॥ हनलिजा नया
 आठाव ॥ अमगम्भदि ॥ ॥
 ॐॐॐ जय ॥ ॐॐॐ दाय ॐॐॐ मा
 सनं २ ययं २॥ ॐॐॐ वक्तु मिद्वाय
 वनाय वाय धायानः ॥ युतन्यादः
 यनक्तु मिद्वनैवकुलानक्तु मिद्वः
 नमः ॥ दववक्तु यिक्तु नमः हनय
 दिनेद्वनः ॥ आवाहनादि॥ धूया २
 दीया २॥ मिष्टाद्व युतान्न नैवयं २
 ॥ धल साखल जा नया आठाव ॥

अग्नगन्धादि ॥ ॥ वृद्ध ४॥ कुं मा
 दुष्टनाय ॥ दमासर्न २ यथ २ ॥
 कुं नम ४॥ कृवाय ॥ आवाहनादि
 धूया २ दीया २ ॥ यद्भिर्मांसं दृक्
 सिद्धां न नैव यं २ ॥ माग्नलला यल
 जा ॥ अग्नगन्धादि ॥ ॥ वृद्धास
 ॥ कुं नाजय ॥ दमासर्न २ ॥
 कुं नाग्नयिनी वलासस्था ॥ सडय
 वितामसि ॥ अथाग्नस्य यद्वा
 म्याका नावसिनागनी ॥ आवाह
 नादि ॥ धूया २ दीया २ ॥ वला आ
 दमांस ४ नैव यं २ ॥ वद्यावाल का
 विला ॥ अग्नगन्धादि ॥ ॥ वृद्धा ॥
 कुं वृद्धा नाय ॥ दमासर्न २ यथ २
 २ ॥ कुं नमी ॥ नैव यं २ ॥ अग्नगन्धादि
 निधियं जित्मसं ह्रमहवयम् ॥
 धूयानायथावद सामसहृधवे

क्षितायाय नमः ४ स्वस्त्य ॥ आवा
हनादि ॥ धूया २ दीया २ ॥ घृणाक
न नैव अं २ ॥ यत्न अकन ॥ अग
मन्नादि ॥ ॥ यथा ॥ ॐ मद्यः

नायकाय ॐ दमास नं २ यथा २ ॥
ॐ महां ॐ दाय २ डाऊसाय ऊँ वा
वृष्टि मा २ २ ॐ व ॥ कामेव त्स स्य
वा वृष्टि ॥ आवाहनादि ॥ धूया २
दीया २ ॥ ऊँ लोत्य ल नैव अं २ ॥ ल
स्व डरुत ॥ अगमन्नादि ॥ ॥

ऊँ यन ४ ॥ ॐ काथायाय ॐ दमास
नं २ यथा २ ॥ ॐ कास्त्रिदासीत्यव
चिह्नि ४ किं सिदासी हुरुदय ४ ॥
कास्त्रिदासीत्यिलियिताकास्त्रिदा
सीत्यिणमिता ॥ आवाहनादि ॥
धूया २ दीया २ ॥ यनाका वीक्रम
नैव अं २ ॥ आदयनाय वीक्रम ॥

[illegible]

नान्यावर्थावागीक्षिन्वा निजा
वसुधावसुक्षिन्वयकतनादि
सुखाश्नादियाक्षिन्वतकुना
वाय४॥ आवाहनादि॥ धूयाश्दी
या२॥ जवाक्षिन्वय२॥ नक्काः
यवजा॥ अग्न्यादि॥ ॥

हस॥ उं कामदवाय० दमास
न२य्य२॥ उं कामकामधूय॥
आवाहनादि॥ धूयाश्दीया२॥
मायोदनन२य्य२॥ मासधिवः
नि॥ अग्न्यादि॥ ॥ अन्व
४॥ उं आकाशाय० दमासन२
य्य२॥

॥ वद

॥ उं उद्वान्मिसमिधारुतसूदा
धुकाश्वावी२य्य४॥ अमरुमा

[illegible]

॥ लाजा रुम नेवयं २ ॥ नाय ल
काट ॥ अगम न्यादि ॥ ॥ एरु
दत ॥ ॐ अंग वाय वंद मास नं २
ययं २ ॥ ॐ अग्नि मूर्द्धा ॥ आवा रुना
दि ॥ धूया २ दीया २ ॥ दोदान न
वयं २ ॥ ॥ कजा ॥ अगम न्यादि ॥
॥ ॥ यम ॥ ॐ यमाय वंद मास
नं २ ययं २ ॥ ॐ अग्नि यमा ॥ अवा
रुनादि ॥ धूया २ दीया २ ॥ चनक
नेवयं २ ॥ कलकुल ॥ अगम न्या
दि ॥ ॥ गन्धर्व ॥ ॐ विष्वावसू
वंद मास नं २ ययं २ ॥ ॐ गन्ध
र्व विष्वावसू ४ यनिदधा ४ वि
ष्वा विष्वा यजमानस्य यविधिन
स्यग्निनिगृह ३ ॥ ॐ गीत ४ ॥ ॐ दस्यवा
दनसिदक्षिरणा विष्वा विष्वा य
जमानस्य यविधिनस्यग्निनिगृह

ॐ नमः ॥ आवाहनादि ॥ धूया २
दीया २ ॥ गन्ध नैवर्त्य २ ॥ नासाक
॥ अग्न्यादि ॥ ॥ हंगना ॥
ॐ नमः ॥ आवाहनादि ॥ धूया २
दीया २ ॥ खगजिकानैवर्त्य २
॥ आकाशसंश्रवया ॥ अग्न्यादि ॥
॥ मृषा ॥ ॐ नमः ॥ आवाहनादि ॥
॥ धूया २ ॥ दीया २ ॥ नीलयवनैवर्त्य
२ ॥ सातक ॥ अग्न्यादि ॥ ॥

वितन ॥ ॐ पितृभ्यां दमासनं
यर्थं ॥ ॐ ययक पितृनायक
नरुयां विद्वयां २ डचनयवि
द्यार्वचकयति नञा नवेद ४ स्व
धारिथ्यं ० संकन ३ यस्व ॥ आ
वाहनादि ॥ धूया २ दीया २ ॥ ति
लान्ननेवर्थं ॥ हामवञा ॥ अग
गन्धादि ॥ ॥ दोवाविका ॥ ॐ न
दिनं दमासनं २ यर्थं ॥ ॐ
दानादवी ॥ आवाहनादि ॥ धूया
२ दीया २ ॥ दन्तधावननेवर्थं २
॥ हामास्व ॥ अगगन्धादि ॥ ॥
सूयोव ॥ ॐ मनमूर्क्यं दमा
सनं २ यर्थं ॥ ॐ यजायत ॥ आ
वाहनादि ॥ धूया २ दीया २ ॥ य
यनेवर्थं ॥ मास्व ॥ अगगन्धादि
॥ ॥ यथादन्त ॥ ॐ गवदाय

ॐ दमासनं शय्यं ॥ ॐ मूर्ध्नि :
 सिगन्तुम् सिद्धिं कृतिना गाय ॥ ॐ ॥
 ॐ हृदयं कनकं ॥ सामग्रा :
 त्वाच्चन्द्रां स्यान्नानियद्भुवि :
 नामासासनं नृत्तमिदं यद्भु
 यद्भु यद्भु यद्भु ॥ ॐ हृदयं ॥ सूर्यः
 ॐ सिगन्तुम् दिवङ्गुत्तं यत् ॥
 आवाहनादि ॥ धूया शदीया ॥
 दृष्टयश्च नवशं ॥ अत्र या गया
 खाने ॥ अत्र गन्धादि ॥ ॥ यत्र
 ना ॥ ॐ वन्द्या य ॐ दमासनं श
 य्यं ॥ ॐ वन्द्या ॥ आवाह
 नादि ॥ धूया शदीया ॥ यद्भु
 कने वशं ॥ आदु यत् ॥ अत्र ग
 न्धादि ॥ ॥ अत्र ॥ ॐ नारुव
 ॐ दमासनं शय्यं ॥ ॐ कयान
 शिग ॥ आवाहनादि ॥ धूया शदी

या १॥ मन्त्रा मांसने वश्यं १॥ अग्न
 गन्धादि ॥ ॥ साय ॥ उं गने श्रना
 यं दमासनं शय्यं १॥ उं गना
 दवी ॥ आवाहनादि ॥ धूया १ दी
 या १॥ घृणान्नने वश्यं १॥ यलजा ॥
 अग्नगन्धादि ॥ ॥ याय ॥ उं यश्वा
 नागा यं दमासनं शय्यं १॥ उं
 त्वामास्यसामाना जाविद्वान्यश्वा
 दमूच्यन् ॥ आवाहनादि ॥ धूया १
 दीया १॥ धाना घृतमधु नैवश्यं
 १॥ नक्तसिया यलव नयाश्वा
 दा ॥ अग्नगन्धादि ॥ ॥ नागा ॥
 उं वायुश्वा यं दमासनं शय्यं १
 ॥ उं नववायु ॥ आवाहनादि ॥
 धूया १ दीया १॥ यीगधऊ नैवश्यं
 १॥ वयु धऊ ॥ अग्नगन्धादि ॥ ॥
 नागा ॥ उं वासुकी मूली यं दः

न २

व १

मासनं श्यथं ॥ ॐ नमो भूतः
 थो ॥ आवाहनादि ॥ धूया शदीया
 ॥ नागकसननेवशं वृक्षस
 न ॥ अग्न्यादि ॥ ॥ सुमर्या
 ॥ ॐ विध्वक्कर्मोयं दमासनं श
 यथं ॥ ॐ विध्वक्कर्मोयं विधावः
 न ॥ नंगा नमिदमकलं नववृ
 म् ॥ नमो विष्णुः समनमकयुर्वी
 नयम्या विदुः शायथासन् ॥ ॐ
 ययामष्टहीनासीदायत्वा विध्व
 कर्मोयं नमनयानि विदुः शायत्वा
 विध्वक्कर्मोयं ॥ आवाहनादि ॥
 धूया शदीया ॥ यस्तिकानेवशं
 ॥ कामय ॥ रुखाट ॥ ॐ वन्द्या
 यं दमासनं श्यथं ॥ ॐ वन्द्या ॥
 ॥ आवाहनादि ॥ धूया शदीया
 ॥ मन्त्रानेवशं नमः ॥ मन्त्रः

न २

चित्रलिङ्गा ॥ अगुगम्भादि ॥ ॥
सोम ॥ उं वृ व वा य ँ द मा स न रं
य र्थां ॥ उं वृ वि दं ॥ आवाहनादि
॥ धूयां र दी यां ॥ या य सा य न व
अं न म ॥ चित्रलिङ्गा ॥ अगुगम्भादि ॥
॥ ॥ विनि ॥ उं व न का य ँ द मा
स न रं य र्थां ॥ उं ड य नि ष्ट ति दः
सु ता य व न का वा य म्या क्त न स ल
गं म् ॥ ॥ आवाहनादि ॥ धूयां र
दी यां ॥ गालू क न व र्था न म ॥ वा
दु कं ॥ अदि ति ॥ उं धी य ँ द माः
स न रं य र्थां ॥ उं धी य न ॥ आवा
हनादि ॥ धूयां र दी यां ॥ लायि
न व र्थां ॥ कला ॥ दि ति ॥ उं स र्व
मू र्खा य ँ द मा स न रं य र्थां ॥ उं
अमा ल की न ॥ आवाहनादि ॥ धू
यां र दी यां ॥ य नी न व र्था न म ॥

यूनीमाह ॥ ॥ चनकी ॥ ॐ नमः
ना ॥ ॐ चनकाय ॐ दमासनं २
यर्थ २ ॥ ॐ घृतं घृतं तयावान ॥ आ
वाहनादि ॥ धूया २ दीया २ ॥ घृ
तं मासि नैवर्त्तनम् ॥ यत्नः वा ॥
विदानि ॥ आग्रय ॥ ॐ विदानि
काय ॐ दमासनं २ यर्थ २ ॥ अ
थेकानक्षी ॥ आवानादि ॥ धूया २
दीया २ ॥ दधिर्घृतं कर्तुं नैवर्त्तनम् ॥
धनि यत्नः खान ॥ ॥ घृटना ॥
नैवर्त्तनम् ॥ ॐ घृटनाय ॐ दमासनं
२ यर्थ २ ॥ ॐ यत्नः ताता ॥ आवाः
रुनादि ॥ धूया २ दीया २ ॥ यिरुत्
धिनैवर्त्तनम् ॥ सत्तादि ॥ ॥
यायवर्त्तनम् ॥ वायव्य ॥ ॐ याय
वायव्य ॥ यत्नः दमासनं २ यर्थ २
॥ ॐ वातावासानावागन्धवा ॥ सत्त

वि० गति ॥ तं इन्द्राय नमः ॥ इन्द्राय
 इन्द्राय नमः ॥ इन्द्राय नमः ॥ इन्द्राय
 नादि ॥ धृया शदीया ॥ अस्ति न
 कयीतनेवयं ॥ कासहि नय
 ॥ स्कंद ॥ पूर्वस ॥ उक्तदा य
 दमासनेवयं ॥ उयदकोद ॥
 आवाहनादि ॥ धृया शदीया ॥ मा
 सादननेवयं ॥ मासस्तिवतिज्ञा
 ॥ ॥ आर्यम ॥ दक्षिण ॥ उ आर्य
 मायन्दमासनेवयं ॥ उ अ
 स्तिममा ॥ आवाहनादि ॥ धृया श
 दीया ॥ ययकणलनेवयं ॥
 वाकामाह ॥ स्तिवतिज्ञा ॥ ॥
 ऊरुक्त ॥ यधिम ॥ उ ऊरुकायः
 दमासनेवयं ॥ उ अथावा
 व ॥ आवाहनादि ॥ धृया शदीया ॥
 लकमासनेवयं ॥ लाही ॥ ॥
 पितृपितृ ॥ उरु ॥ उ पितृपितृ

यः दमासनं शय्यं ॥ ॐ विदि न
 ॥ आवाहनादि ॥ धूया शदीया ॥
 नक्तं नक्तं मने वयं ॥ हिता ॥
 वास्तुयुक्तं ॥ वास्तुमूल्यं ॥ दमा
 सनं शय्यं ॥ ध्यान ॥ आकृष्टितः
 कर्तवास्तु मूलानमस्त्वाकर्तुः ।
 सनं नयुक्तास्तु कर्मा दिनितः ॥
 त्वधर्मे लनं ॥ जाननी कर्त्यवाकः
 कदिमिवातद् नासथा ॥ धीयाः
 याद युता नोद्यानि वास्यददयः
 ॥ ३३ लि ॥ धिया ३३ लि ॥ ॐ वदः
 ॥ वास्तुमूल्यं नम ॥ ३ ॥ आवाह
 नादि ॥ धूया शदीया ॥ जाय ॥ का
 य ॥ ॐ यद्यथा निधु मूलि वास्तुः
 स्नाननियोगिनः ॥ ४ ॥ छिक्कात्म
 कानि र्थं तस्मै वदन्मानम ॥
 अग्न न आदि ॥ अरु यासा आरु
 निविष्टं त्वाय ॥ यमिस्त ॥ वास्तु

यूजा ॥ ॥ वनान्कमन क
 शिवा लालवक्राय ॥ दारुलखान
 न वनकायाव वनक्य ॥ या
 लकयक ॥ वा ॥ उँ कादा नदा
 नयकायि कीलकाटियनिष्ठित
 ॥ द्युशगायि विवीदवी शिवस्तः
 यनरुगव ॥ द्यालको वा आकाश
 धीनिन वलिसक्या ॥ द्यावको धा या
 यम कस्मिनराय ॥ ॥ कवा
 समस्तस्वस्तनयाय ॥ कवानिवश
 रवसवय ॥ सात्तिक योस्तिकवा
 अलदक्षिण ॥ विधिर्ध धनक ॥
 अलिगय ॥ आशीर्वाद ॥ वा अल
 राऊन ॥ ॥ निरुमि साधन वा मु
 जाम विधि ४ ॥

म ५

नमानवयादस्तयन ॥ धिलिखा
 न ॥ अग्नि कायै कलसा चर्चः
 वा ॥ विधिर्ध मालका वसय ॥ ॥

धातासनवाय ॥ नाय ॥ हल ॥
निवर्णकि कलणवलिधायया
अनूनूनयनमालक ॥ गोयासकी
माली सयुध ॥ ॥ विद्यहृन
धवलिविय य अगवादि ॥ नि
वर्णकि रुमनादि अरूयाय ॥ ॥
द्युतादुनि ॥ तिलादुनि ॥ कल
णयनिस्तुर्णदुयादुनि ॥ ॥
तनायथाकर्म ॥ ॥ यरूम
धुययाणीगणकाणनानम
धुयवन ॥ ॥ सिञ्जलद्यु
वायलेकायसादयक ॥ ॥ धा
युवासादवन लयलय क
रुन कयुन ॥ गोलावन धीख
लु वृकम ॥ नीरथादक अष्टमृ
हिका युवायावा याधल नव
नल धादुलेलाहलेवीहिकम
अष्टम यय धन कार्थं २ युव

निर्य सायावदधान कायसान
 यूय धवश्दिगवर्ध कायाल्ल
 यूय ॥ ॥ कुरु कल गणधा
 न ॥ यूय अल ल हवद्वा डणव
 हा वीहि काययवा काथायय ॥
 ॥ ॥ आग्रय ॥ मृश कानि सि
 जल मनसिन वनरुनि वीहि
 हामल अद्वानंथासयय ॥ ॥
 दक्षिण ॥ ॥ ॐ नै नै न्या यंगः
 माति नक वन्दन वीहि मासः
 हाकवान काथासयय ॥ ॥
 नैमय ॥ नील कंस ॥ ॥ सूर्य
 माखि अयु निवीहि मृग कंता
 वान काथास कायय ॥ ॥
 यथिम ॥ मति हाहा याधन ड
 हाव वीहि नंका नायवान का
 थासनाकयय ॥ ॥ वायय ॥
 यूयवान लीशि याग चिनि क

न सेवीहि न च्छा वायुवान वाय
वृकानसयय ॥ ॥ डरुन ॥

यद्यनाग कंस गंधक कटवी
हि कलाट आरुवान डरुन
काथासकायय ॥ ॥ ॐ ॥

॥ वदल अल दियनि गरुः
रुलि वीहि सिक नायवानः
ॐ नान कानयय ॥ ॥

॥ मधु ॥ रुगिक स्वयासन मा
उनिनिवा सर्वधामु सर्वमि
मि सर्ववीहि एयवानदधुस
कायय ॥ धननव काथायोः
विसमरुवा ॥ ॥

वायाल हि सायावमयादाः
मायुथाय एवालादा ॥ ॥

लं डाहाकलस लयल डाहा
यल लकायल लया नाग ल

डाहायायायुक्ता लूयातिकाः
न लूयाधवनीवलाह लूयाध
सा लूयागिव लूयातिकाः
लाहायाकायल वालसिदधु
जुंयुनिश्चय ॥ कणद्वोयुय ॥
गालावनवन ॥ कयूवगाला
वन कसूली श्रीखलुसमरा
ग ॥ स्रक्कालिमि ॥ आनजालन
॥ अजलमला ॥ वरुश्च ॥ धः
नजादाववन ॥ वाकलणय
ल ॥ ॥ चवकिआयावचकुक्
लणनदायक ॥ चन्दनात ॥ क
लयुजा ॥ युवोदि ॥ ॐ गमाये ॥
ॐ मनाये ॥ नमदाये ॥ स
वस्यये ॥ वद ॥ ॐ आजियः
क ॥ ॐ मुक्तिकाये ॥ ॐ मस्र
वान्त ॥ ॐ दासयी ॥ ॐ ॥

याडाषवी ॥ दवसक दमा ॥
 उंदवदव रुगनाथ सृष्टिर्मा
 हलकावक ॥ निमिनायं त्व
 यादु त्वदीया मूरुवतसा ॥ न्य
 गा नास्त्रिधिकांगाय वांगवाधि
 कनक विरुद्रुमरुसिनः
 सर्वेद्रुम गायनमध्व ॥ निः
 म्रकनादि ॥ लोहवद्रा ॥ सुः
 काय ॥ आन ॥ निलादकन ॥
 उं नत्वायामी ॥ मुक्तिका ॥ उं म
 हिथी ॥ कषाय ॥ उं विष्णुवरा
 ट ॥ यवगवा ॥ उं वावक ॥ य
 वां मुग ॥ उं मगवक ॥ गरु
 दक ॥ उं गन्धदा ॥ रुलादक ॥
 उं या ॥ रुलनी ॥ वनादक ॥ उं
 हिमगर्भ ॥ सर्वद्रुम ॥ उं
 वद्रुवधाम्ना ॥ वयुः कलस ॥

यूव ॥ ॐ गन्नादवी ॥ ददिल ॥
 ॐ यवननय ॥ यथिम ॥ ॐ डय
 कन ॥ डकन ॥ ॐ आयादिष्टा ॥
 गरुयधान ॥ ॐ वसाः यत्रिग ॥
 गंधादक ॥ गंगजलनयाव ॥
 ॐ तस्यनय ॥ दक्षि वियक ॥ ॐ
 रुजनिवृ ॥ वन्दनादिन ॥ का
 यालंयय ॥ सरुणावति ॥ यू
 र्कनद ॥ लखधावथस्यमैमः
 यदावनन दगयन ॥ यरुक्कु
 या यूदसग ॥ लंयागिकानस
 आधववक्वाय ययनियव ॥
 धयादवनमूलमलवायवन
 न ॥ यवनमूयकानयस्य ॥ ॐ ध
 वय ॥ दगन ॥ ॐ कांआत्मनः
 लायसाहा ॥ ॐ वदयय ॥ याद ॥

ॐ श्रीविद्यामन्त्राय नमः ॥ ॐ विः
 श्रान्नाय नमः ॥ ॐ श्रीगणेशाय नमः ॥
 ॐ गणेशाय नमः ॥ लामविला
 मन ॥ धनं शान्तिविश्वं त्वाय
 ॥ मूलमन्त्रं नमः ॥ हिलिविद्याव
 त्वाय ॥ सजीवरुकाय नमः ॥ ग
 नादशक्रिया ॥ शान्तिविश्वः
 त्वाय ॥ दय ॥ वाञ्छनी ॥ ॐ गङ्गा
 श्रया ॥ ॐ श्रीगणेशाय नमः ॥ ॐ स्व
 स्तिनं ॥ ॐ श्रीगणेशाय नमः ॥
 य ॥ ॐ माहि श्रया ॥ ॐ यानः
 कम्माय ॥ ॐ यानयाकायालः
 याल ॥ ॐ नामकवनाय नमः ॥ श्री
 वलाहाय नमः ॥ श्रीकम्माय नमः ॥ श्रीः
 गङ्गाय नमः ॥ ॐ कायस्त्राहा कम्माय
 कगमम्माय नमः ॥ श्रीमाधीः नाय

विष्णुवत्साहार

स्य ५५

१मनः४यजायनयः२॥ विरुः
विक्रानायादिहो२दिहोमयः
२दिहोसमृणीकायः२मनसः
हो२मनसहोपावकायः२मन
सहोवहो२युक् २युक् यः
यथाय२युक् नवमिषायः२ह
२२ह २२नीयायः२ह २२युक्
नयायः२विष्णुवनिहययायः२
विष्णुवनिहयिहयः२॥ ॥
ॐरुलसुनयागनायः२॥ ॐः
नयन ॥ वृणाकननायः२॥ ॐ
मूर्धानदि ॥ ॐवनवधनायः२॥
ॐयधर्मा ॥ ॐविवाहायः२॥
ॐयमर्क ॥ ॐमनयागनायः२॥
ॐकाष्ठान् ॥ ॥ ययसुगका
दाय ॥ ॥ गगारुगुदि ॥

द्रव्यं दवाय गवा छाव धम निवाः
 ध्यामं आसयाय ॥ २५ ॥ न लिदः
 वयास ॥ ॥ ॐ ए धि वी न त्वा य
 २ ॥ ॐ ए धि वी न त्वा धि फ य व द
 २ ॥ ॥ या द ॥ ॐ आ य न त्वा य २ ॥
 ॐ आ य न त्वा ॥ धि फ य वि ष व २
 ॥ ॐ ॥ ॐ न ज न त्वा य २ ॥ ॐ नः
 ज न त्वा धि फ य व द य २ ॥ रु दि ॥
 ॐ वा य न त्वा य २ ॥ ॐ वा य न त्वा
 धि फ य व २ ॥ ना रि ॥ ॐ
 आ का ण न त्वा य २ ॥ ॐ आ का ण नः
 त्वा धि फ य स द लि वा य २ ॥ मृ धि ॥
 य व वि ण मि त्वं आ स न सा ध य न ॥ ॐ
 कां आ त्म न त्वा य २ आ त्म न त्वा धि य न
 य व द २ ॥ न म ४ ॥ ॐ कां आ मू र्क य २ ॥
 ॐ कां आ त्या धि य न य स वा य २ ॥ ॐ कां

वक्रि मूल्याधियतय यष्टयतय २॥ ॐ
 कांयजमानमूरुय २॥ ॐ कांयजमान
 मूल्याधियतय डयय २॥ ॐ कांयज
 मूरुय २॥ ॐ कांयज मूल्याधियतय
 वृदाय २॥ ॐ कांजलमूरुय २॥ ॐ कां
 जलमूल्याधियतय सुवाय २॥ ॐ कां
 वायूमूरुय २॥ ॐ कांवायूमूल्याधियत
 य ँनीनाय २॥ ॐ कांॐ न्दमूरुय २॥
 ॐ कांॐ न्दमूल्याधियतय सदानिवाय
 २॥ ॐ कांखमूरुय २॥ ॐ कांखमूल्या
 धियतय सीमाय २॥ ॐ निमायादिना
 र्थान् ॥ ॥ ॐ कांविद्यातत्वाय २॥ ॐ
 कांविद्यातत्वाधियतय विष्णुव २॥ ना
 यादियीवान् २॥ ॐ कांनिवतत्वाय २॥
 ॐ कांनिवतधियतय वृदाय २॥ यीवा
 दितत्तागान् ॥ ॐ कांयष्टमूरुय २॥

ॐ ह्रीं वसुधाय नमः ॥ वसुधा २ ॥ सिः
 वसीद ॥ ॐ नित्यं वसुधा नित्यं ॥ यदिः
 नित्यं वसुधा नमः ॥ ॐ ह्रीं लघु धि न
 त्वाय २ ॥ ॐ ह्रीं वसुधा नमः ॥ ॐ ह्रीं
 वसुधा नमः ॥ ॐ ह्रीं वसुधा नमः ॥
 २ ॥ ॐ ह्रीं वसुधा नमः ॥ ॐ ह्रीं
 ४ नमः ॥ ॐ ह्रीं वसुधा नमः ॥
 २ ॥ ॐ ह्रीं वसुधा नमः ॥ ॐ ह्रीं
 नमः ॥ ॐ ह्रीं वसुधा नमः ॥
 ॐ ह्रीं वसुधा नमः ॥ ॐ ह्रीं वसुधा
 नमः ॥ ॐ ह्रीं वसुधा नमः ॥ ॐ ह्रीं
 वसुधा नमः ॥ ॐ ह्रीं वसुधा नमः ॥
 ॐ ह्रीं वसुधा नमः ॥ ॐ ह्रीं वसुधा
 नमः ॥ ॐ ह्रीं वसुधा नमः ॥ ॐ ह्रीं
 वसुधा नमः ॥ ॐ ह्रीं वसुधा नमः ॥

ॐ ह्रीं वसुधा नमः ॥ १॥ ८

ॐ ह्रीं वसुधा नमः ॥ १॥ ५

ॐ ऊँ प्रकृतिरत्नाय नमः ॥ २

या २

द्विगुणत्वाय ॥ ॐ ऊँ अरुणकाय नमः ॥

य २ ॥ नायादि ॥ हृदयं नैवमन् ॥ ॥

ॐ ऊँ यन्मन्त्रत्वाय ॥ ॐ ऊँ वायव्यः

त्वाय ॥ ॐ ऊँ नीलमणिगुणत्वाय ॥ ॐ

ऊँ कालमन्त्राय ॥ ॐ ऊँ विद्यामन्त्राय

य ॥ ॐ ऊँ विशुद्धमन्त्राय ॥ ॐ ऊँ

वैश्वदेवमन्त्राय ॥ ॐ ऊँ शिवमन्त्राय

नमः ॥ मूलादितलाटां नैवमन् ॥

ॐ नित्यं दिग्गुणमन्त्र ॥ ॥

धनं नैवमन्त्रमिविद्यावसकमानंत्वा

य ॥ ॥ धनमसकलं ललाटमासृः

दिशि नैवमन्त्रमनयाय ॥ ॥

मन्त्राजीवन्त्यासः ॥ मूलमन्त्रनक्षत्रिः

लिश्विद्यावत्वाय ॥ दद ॥ ॐ यन्मन्त्र

वया ॥ ॥ अरु ॥ वायादिनममर्त

स्वस्त्वानयाय ॥ ॥ कर्मिषुजा ॥ ध

ॐ ऊँ कलागुणाय नमः ॥ ॐ ऊँ साक्षात्त्वाय नमः ॥ २

१० ॐ ऊँ सदाशिवमन्त्राय नमः ॥ ॐ ऊँ शक्तिगुणाय ॥ १०

नादवयूजा ॥ वन्दनादित ॥ द्रव्यव
 लाहयूजा ॥ नासिय ॥ ३ ॥ व्यास ॥ ग
 यशीर्न ॥ अद्ययागयूजा ॥ आत्मयूजा ॥
 ॐ आधालगिकिमलास्त्राय ॥ १ ॥
 ३३ लि ३ ॥ ॐ नमाधववनिधः
 वस्त्राहा ॥ यश ॥ आवाहनादि ॥
 ॥ ॥ क्रमनिलायूजा ॥ ॐ हंस ॥
 मास्त्राय ॥ श्रीरुति ॥ ३ ॥ ॐ हंस
 मूलय ॥ यश ॥ ॐ हंस ॥ कुरुद
 यादि ॥ आवाहनादि ॥ ॥ रथासा
 यूजा ॥ ॐ हंस ॥ वरायनमः ॥ ३ ॥
 निवयूजा ॥ ह्रीं नमनि वाय ३ ॥ ॥
 सर्वधर्मोपाकलस ॥ रथयाधवकांदा य
 रुत, ली, डाहायनन ॥ ॐ सर्ववत्तः
 मयकलणाय ॥ यादका ॥ ॐ कृ
 कवचनायनम ॥ ॥ लयातिः

कान्ते ॥ मूलमलगा ॥ अग ॥ आ ॥ न
दादियं च दव नाय ॥ धूय ॥ दीया ॥
नेवय ॥ वदन् ॥ आय ॥ काय ॥ ॐ
रुगवत्तयसादन, यज्ञार्थं तत्र म
चित्ते । निदिशिदिष्यदं ददि, कर्ममू
लिनमास्तुत ॥

अगगन्धादि ॥ यद ॥ ॐ मदीयो ॥ ॐ
यस्य कर्मा ॥ ॐ अष्टसिन्धु ॥ ॐ नि
वानामा ॥ ॥ समस्तस्वस्तनयाः
दान कर्मिलवद्वाय ॥ समस्तसाम
यीजादाव, यादस्वायन, थायसव
न ॥ ॥ सिञ्जलकलस, चासक
यूनेरगा लावन, कस्तूरी धीखण्डन
द्ववनवय ॥ ॥ कार्थश्चनत्रम ॥ यू
वादिन ॥ ॥ अगयासगा लावन
न, अकाथस्वस्तिकथाय ॥ ॥

अत्रिकारण॥ ॥ सिजलद्यलवाया
 यमाननगांयुय॥ अययागलखन
 हाय॥ यागासनस्रसिकवाय॥ ॐ
 नयूलकंदालाचकअनमान॥ दः
 थससिजलद्यगवागय॥ ॥ थवान
 युय॥ ॥ यूजन॥ ॐ वनिष्ठसूर्यता॥
 ॥ ॐ नद्यायेश॥ आचार्यकर्मिषरु
 गितस्मिन्नहाव॥ ॐ नदनदिनि
 युसां॥ स्वामगस्ययामूड॥ अस्मि
 न्निष्ठितादृष्टा यावदावदमान
 कं॥ आयु४ कामधियनद नदादि
 सर्वदावृत्तां॥ अस्मिन्नुदात्तयाकाः
 आयासादयन्नग४ सदा॥ कल॥
 दकनज्ञान॥ वद॥ ॐ नारिभ्रविः
 रुं विज्ञानंथायुभयवगिरुसग४
 आनन्दनद्यावा॥ अमरुग४ सोशरु

यमः ॥ उद्या श्याय श्याय भ्रासि विमि
 नाय निष्ठिनः ॥ अगुग न्नादि ॥ काया
 लनयाय ॥ ॥ नेमय का ॥ लय
 व्वेवत ॥ याद रुधन ॥ यूजन ॥ ॐः
 कथयेत्तु नाथे नमः ॥ ॐ रुदाय ॥
 धिलहाल ॥ ॐ रुद त्वं सर्वदा रुद यं
 मां कुरु हि नाय हा ॥ नाय दा काम दा
 देवि धीय दा धन दा रुव ॥ अस्मि नृः
 दा त्वया काश्या ॥ यासा दय त्वग ॥ स
 दा ॥ कल ॥ द कन सान ॥ ॐ रुद क
 ॥ अगुग न्नादि ॥ काया लनयाय
 ॥ ॥ वायव्य का ॥ पूर्ववत्ता द
 रुधन ॥ यूजन ॥ ॐ रुद रुदाय ॥
 ॥ ॐ रुदाय ॥ धिलहाल ॥ ॐ रुद
 त्वं सर्वदा रुद सन्निधय रुदायि नाम या
 निर्यादा वहा द विष्णु मिनः ॥ धीयः

दारुव ॥ अस्मिन्नुदात्तया कार्या या
 सादयत्तगः सदा ॥ कलरणादकनः
 स्नान ॥ उं या न नृद ॥ अगुगन्नादि ॥ क
 यालनयाय ॥ ॥ ॐ ॥ नकान ॥ यू
 र्ववत्यादस्कयन ॥ यूजन ॥ उं राव
 दारुसमायेश ॥ उं म कायेश ॥ धिल
 दाल ॥ उं विकैविकदायध्र सिद्धिम्
 कियदेषु ॥ सर्वदासर्वदायम् ॥ नि
 वृत्तमीसेवृयक ॥ अस्मिन्नुदात्तयाः
 कार्या यासादयत्तगः सदा ॥ कलरणा
 दकनस्नान ॥ वद ॥ उं मक्का मया ॥ नि
 लोक्तुक्कवामा नरुत्तमायां स्यायत्तुल्या
 दव ॥ ॥ गम्मासिगम्माभय नमस्तु
 मुमामादि ० सी ॥ ॥ कायालनया
 य ॥ ॥ ॥ नकामरथायादस्कयन ॥ ॥
 नकसीयानासनययथाय ॥ धयाद

॥ विदिगमयकिनां डथं ॥ २

तमा ५

वनकृष्णशृङ्गलाय ॥ धनैलिः
शृङ्गमासान् ॥ दधूमसिञ्जलयु
क्तमय ॥ धयादवनविहलाय ॥
धयादवनलुङ्गाकलणमय ॥
धयादवनलुङ्गायलमय ॥ ध
यादवनलुङ्गानाममय ॥ धया
दवनलुङ्गाकायलमय ॥ धयाद
वनलुङ्गायादकामय ॥ धया
दवनलुङ्गागिकानमय ॥ धयाद
वनलुङ्गाधननिबलाह ॥ धयाद
वनधनमय ॥ धयादवननिब
मय ॥ धयादवनतलिकामय ॥
धयादवनबालसिमिधमय ॥
धयादवनसिधमय ॥ धयाद
वनककुलमय ॥ धनारुकाद
यवकानगाललुङ्गलथान ॥

यूजन ॥ ॥ ॐ सर्वत्र तमय कलः
 गाय ॥ ॐ अनादि अक्ष नागाय
 ॥ ॐ दाकृममृकय ॥ ॐ कृ. नः
 कववनाय ॥ ॐ नमो नलो ध. न
 विधनस्त्राहा ॥ ॥ ॐ अंगिवसूना
 य ॥ ॐ यूष्मजेश ॥ ॥ मध्यमयू
 जा ॥ आधनगक यथादि ८ ॥ वृ
 मासनाय ॥ मूलमकु नृप्रिया ऊ
 लि ३ ॥ स्रु ३ ॥ आवाहनादि ॥ धू
 यः दीय. आय. स्नाग ॥ ॥ धनाधि
 लहाल ॥ अशवालाहक ल्यादि ॥
 ॐ यूष्मत् सर्वदा विश. सर्वसंदाह
 लका ॥ ॥ सर्वसंयूष्मत्वाग. यासा
 दकृवसर्वदा ॥ अस्मिन्नात्रयाका
 या. यासादयन्नग ४ सदा ॥ कलसाद
 कनसान ॥ ॐ यूष्मद्विद्यना ॥ अग

गन्धादि॥कायावनयाय॥ ॥धनं
लियक्रमलुपसवादावमूलमन
नशाहनिवियउ॥गायकमुः
निकाय॥श्रुवाकाय॥वद॥उंकि
नारुवतीद॥यू॥ ॥यायाः
लि.सरुधिलहाल॥हामरुंदिनला
कायास्यन॥उंअशवालाहाकला
यादि॥अशादि॥उंयवमधनध
मरुं.ज्ञानविज्ञानवृथिनं।नयस
वायनागाय.यू॥ययव्यानिव
॥लाकानाधुरुहलर्थ.सिवाहवस
खासनं।निखंरुतसदादव.यय
हंयावेवरेता॥यू॥गंयऊमाना
य.सर्वकारुलुले॥वाहृणाकिः
अयीवाजा.सहिदोसयजासुथा।
सम्बन्कियाधधभम्.सहिदावा

रुमवव ॥ रुमवव रुयदानन. यूथ
काटिगु लाधजा ॥ नाजा विजयमा
धानि. दीयायुनि नूयदव. विलः
यावगाष्टधी. धनधायाय (गारिः
ना ॥ यथायुजाय मरुतं स्वहिर्न
वस्ववदना. युजिमा ऊयमानाय
स्थायारुवगु सर्वदा ॥ स्वस्वसदाः
सकारावा. सत्यसनायसीरुव ॥
याववद स्यस्यस्य. मदिनिसफ
सागना. यावदाकागर्गगाव. गाव
वस्वस्विनारुव ॥ वद ॥ उंस्विनारु
ववीदङ्ग ॥ उंस्विनारुव ॥ उंस्विनारुव
दधाय ॥ ॥ थनायुययादिर्यव
सुगकानवयावयरुमभुयसदगा
यन ॥ आदुनि ॥ आययादिमध
न ॥ थवथव मरुन आदुनि विस्य

त्वाय ॥ वंदे धवधव ॥ ॥ मूलमन्त्र
नमो नमि ॥ ४ ॥ ॐ मना इमि ॥ य
मिस्त्रयाय ॥ ॥ यं वारिधक ॥ ता
यश्चक्षुः ॥ ३ ॥ उमाध स्वान नय
॥ वद ॥ ॐ नववाय ॥ ॐ ॐ ॐ लन ॥
ॐ अक्षु नमी ॥ ॐ यारु लनि ॥ ॐ
धीधन ॥ ॥ धनीलिमधुस वीहि
नया ॥ यवारु १ अक्षु वारु १ स्याकि
रु १ म्वाग रु १ मास रु १ मृग रु १ न
क्षु रु १ अक्षु रु १ उकायु कारु १ हाम
ल रु १ करु गुलिरु १ अक्षु रु १ न
वारु १ ॥ वद ॥ ॐ वीरु यधमा ॥
धनीलिरु वनवलिविय दगदि
गसं लाहि मास नयाव ॥ ॥
यवर्त ॥ ॐ कां लौ लौ लौ लौ ॐ न्दा
यवलि गृह २ हारु ॥ ॥ ॥

जूध्माध्विनय ३

दधूसयनायस्वाया॥ वदशा॥ ॐ अस्मा
कमिन्द॥ भानिक, योष्टिक, कृगधि
कर्मा, विधिर्त्यधूनका॥ यजमानज
रिषकादिज्जाणीर्चादयस्सर्नधूनक
॥ पूजास्तुत्या॥ ॥ वृत्तियादस्तुयनः
विधिः समाफ॥ ॥ दधूस, यानद
यकाव, यानकावयन॥ ॥

हज्जथदवस्तुयनविधिं निश्चयत॥
विधिर्त्यमालकावास्य, यातासनथा
य, नायक्षाना॥ गिवगकि कलशवति
थाययाजूननूयनमालक, गह्वरे
ग्राम, कीमाली, सुगुहा॥ मानकावास
या॥ ॥ विद्यहवन, वलिविय, यक्ष
गद्यादि॥ गिवगकि चमनादियकृया
या॥ धृमाकृति॥ गिलाकृति॥ कलश

यमिहृगिखाकृमि॥ ॥ महायथाक
र्मा॥ ॥ यक्षमधुयया, वृक्षमनका
सहानमधुयवन॥ ॥ रुद्रपी० सु
दवकय, दवया, जूयसु, गिऊलका
लसु, कसकनकय॥ दवनयानकय॥ व
दवका॥ दवयाचका॥ ॥ जूयय
यद्वचायवि, यूर्वादि, कमनकगवाय,
॥ गुरु॥ कृगयादवनयूर्वादि, कम
न, थव२३, सध्रीकय॥ ॥ यूर्वा॥ नी
ल, यद्व, कृग॥ दवनमूर्त्तिकादि, कय
॥ यद्वनाय, मूर्त्तिका॥ नृयद्वान, म॥
नदीया, नावान, म॥ ३॥ वाल्मीकम॥ रुद्र
सिदनकम॥ वृषगृगम॥ ॥ यद्वमूलना
वनाहत्याग॥ ॥ गवांगम॥ ॥ वउय
थ॥ ॥ कृगमूल॥ ॥ गिवकृग॥ १२॥ वि
षूकृग॥ १३॥ गगिम, मूर्त्तिका॥ १४॥ थकयू

कल ४१२

ॐ॥ करवाय॥ य न सि १ ॥ ॐ॥ म्ब न सि २ ॥

कलशं॥ ॥दक्षिणा॥श्वगपद्म

वनूक्षसियाहता॥शाजून्वकसियाहता

रुत॥ १॥ वनागम्या रुत॥ ३॥ कदम्बम्

नमः॥ न कयदा॥ यं चामृता॥ दधि

॥ प्रथमः साक्षात् ॥ गुरुः ॥ एतन्नाम ॥

स॥ ॥यश्चि०म॥यीनयद्म॥यद्माद

यथाहाकमालकाकमशागन

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

यूष्यहानिकैवदनगावलहाकू

८६॥ नूयकंगनाग्रीखलुगा॥ल

२ वकूलसियाहल॥५॥अरुनसियाहल

॥८॥कृष्णव॥१०॥८

हलादक १२॥ अंगुलिजला ३॥ गण

दक १४॥ कर्कशजला १५॥ कर्काला

जला १६॥ नकाजला १७॥ धनडहन

कलगांसा ॥ ॥ ग्नीमान ॥ कयिलय

द्रो ॥ चूर्ण ॥ यव ॥ अक्षुग ॥ धनमि

ल ३॥ रुस ४॥ गरिवादक ५॥ धनग्नी

मानकलगांसा ॥ ॥ विधिर्धयू

जायाय ॥ न्यासादि ॥ आसन ॥ ॐ गत्व

यामि ॥ अस्य कृष्णी ॥ ॐ दवसात्वा ॥ ॥

यूर्व ॥ ॐ द्वां जेन नमो गमय यूर्वसमू

दाय नमो ॥ ॐ द्वां क्षान समूदाय नमो ॥

ॐ द्वां हृदय मीगुन ॥ ॐ समूदाय मि

॥ मूर्हिका ॥ ॐ अस्रकान ॥ ॥ आ

य ॥ ॐ द्वां क्षान समूदाय नमो ॥ ॐ द्वां

मि नमो गमय ॥ ॐ समूदं दंष्ट्र ॥ कषाय

॥ ॐ विष्णु ननाठ ॥ ॥ दक्षिण ॥ ॐ

द्वां गदकना गमय दक्षिण समूदा

यनमा॥ ॐ कौं दधि समूदाय नमः॥ ॐ
 कूँ गिरवाय मंगला॥ ॐ समूदाय स्वावा
 ॥ यलव॥ ॐ ॐ दधि विष्णु॥ ॥ नेमहा
 ॥ ॐ कौं घृण समूदाय नमः॥ ॐ कूँ कव
 वन मंगला॥ ॐ समूदक रुद्रय॥ यवा
 मृग॥ ॐ मंगवस्तु॥ ॥ यविम॥ ॐ
 कौं पद्म ॥ नागभय यधि म समूदा
 यनमः॥ ॐ कौं सुनादन समूदाय नमः
 ॥ ॐ कौं नय मंगला॥ ॐ समूदा सि विष्णु
 वाचा ॥ अऊं आस्य कया दहि न सिवू ॥ ध्यु
 द्वाग सो नु मसि सदा स्मृ न सदा नो मा
 मास नायक मधुना मधुय नय मा निव
 स्वस्ति म स्मि न्यथि दवयान रुया ॥
 यद्रा दय॥ ॐ वृक्ष यज्ञानी॥ ॥
 वायुवा॥ ॐ कौं गह्वर समूदाय नमः॥
 ॐ कूँ कवच मंगला॥ ॐ दव स्यात्वा॥ न
 नमा वधी॥ ॐ या डा वधी॥ ॥

उरुना॥ॐ कौंर्गं रव पा ल ना ग म य
उरु न स मू डाय २॥ ॐ कौं रू कू स
मू डाय न म ॥ ॐ कू णि वा य म य ॥
ॐ स म ड त्वा न म म श्र ज्ज न क र्त्त
व क्ता रू ष्ठि दि वा श्र ज्ज रू ध न ॥
रु गा य त्वा न ज सि न स्ति वा श्र म
या म य स्ति म रि वा श्र ज्ज व र्ध न ॥ ॥
ज ल ॥ ॐ रू मी म र्ग ॥ ॥ रू मी
ना ॥ ॐ कौं र्गि द न स मू डाय न म ॥ ॐ
कौं र्गि न स मी र्ग ॥ ॐ स म्भ या मि ॥ चू
र्ध्वा ॥ ॐ य य ४ य धि ॥ ॥ स्ना न ज्ञान
न यू ज्ञा ॥ ग न्ध ॥ ॐ ग न्ध द्या ना ॥ सू व
क्ष्म द कं ॥ हि न द्ध ग र्क ॥ न त्ना द कं ॥
ॐ य व न द्या ॥ रू मी रू ष्ठि क ॥ ॐ य त्वा
नि रू ॥ श र क्क्ष न ॥ ॐ जू मि न्द्र ॥ सह
प्र क्ष न ॥ ॐ व सा य वि य म सि ॥ य व ॥
ॐ रू य द्या दि वा रू मी ॥ ग म य गी न ॥

मूर्धिका॥ॐ शुभं नायथिवीना॥ साक
निवि॥ मूलमनुना॥ क्षान्ता॥ॐ क्षान्ता
मसि॥ वाहि॥ॐ वृहयश्चम॥ लाजा॥
ॐ त्वयवि॥ रुल॥ॐ याः रुनिधनयू
जन॥ ॥ दवशकक्रमा॥ॐ दवद
वजगनाथ॥ सुखिसहालकावकः
॥ निर्मिताय त्वयादिव॥ त्वदीयामूरु
चनसा॥ नृनास्त्वधिकान्मया॥ वीणा ग्र १
वायिकत्रः॥ कविः॥ कनुमरुसिः
सर्वक्रमाय नमः॥ ॥ नि
र्मितादि॥ लारुनका॥ सुखाय॥ स्ना
नी॥ ॥ पूर्वकलनस्तान॥ वद॥ॐ
जुष्टकान्॥ मूर्धिका॥ॐ समुद्रादू॥
जुष्टया॥ कषाय॥ॐ विश्वान्नाट॥
ॐ समुद्रजं॥ ॥ दक्षिण॥ यज्ञ
वा॥ॐ ॐ दक्षिण॥ॐ समुद्राय स्वा॥
नेमत्या॥ यज्ञमृता॥ॐ मगवः॥

ॐ समुद्रक॥ ॥ यश्चिमायद्मादय
॥ ॐ वृक्षयक्लानी॥ ॐ समुद्रागिवि॥
वायुवा॥ गनमाषधी॥ ॐ याडावधी॥
ॐ दवस्यत्वा॥ ॥ डरुन॥ ऊलस्र
ना॥ ॐ ॐ मीमगणि॥ ॐ समुद्रत्वान
॥ ॥ ॐ न॥ चूर्ण॥ ॐ यय ४ य
थि॥ ॐ समुद्रयामि॥ ॥ गरिषादक॥
ॐ गन्धदाना॥ सुवर्णदक॥ ॐ रुनः
वृगुरु॥ नलादक॥ ॐ यचनद्यः॥
गृक्षदक॥ ॐ चत्वात्रिगृक्ष॥ गन
क्षनी॥ ॐ अमिन्दुनिन्दु॥ सरुस्रक्षः
नी॥ ॐ वसायविष्ण॥ यवी॥ ॐ द्रुयदा
दिवी॥ रुस्र॥ गभयनी॥ मूर्लिका॥ ॐ
स्यानायुथिवी॥ क्षन्या॥ ॐ क्षन्यमसि
॥ वारि॥ वीरुयधर्मि॥ नाडा॥ ॐ त्वः
यवि॥ रुन॥ ॐ या॥ रुनि॥ ॐ निदव
स्त्रानविधिः॥ ॥ चक्षकानयारु

युजा॥ देवदिक्षिवियक॥ ॐ नर्वक्ष
देवहिर्ग॥ ॥ वन्दनादि सल्ल
नविया॥ ॥ सरुञ्जानकि॥ यनिर्ह
ममाल॥ द्रुसकनकन॥ ॐ यूर्ध्व
द्व॥ कायालनयाय॥ ॐ वसा ४ यवि
ग्रा॥ विसर्जनयाय॥ ॐ ददयनम
॥ डलनी॥ ॐ डलिस्तनाजसा॥ दे
ववायालिमनयकमानर्तलव
द्राया॥ देवयाणा॥ मधुर्यकामाश॥
व्राद्राघनस्वस्तिवाचनीय १०॥
नेमस्यदालसलीसाय॥ लाकायः
वान॥ देवर्तमधुर्ययविश्व॥ वद्व
नीकवसनदक्षिणा॥ धविलनड
रुवा॥ देवगा॥ रुदयाठिकास्त्राय
॥ ॐ आनारुद्रा॥ देवस्त्रयनी॥ ॐ
नमोर्गुरुवाय॥ ॥ देवस्यायस
योस्त्रयनी॥ गृहायकवनादि॥

वद॥ उं का शुक्ला॥ निद्रा कलमस्तु
या॥ उं वायव्ये वाया॥ वमुष्मस्तु
कुण्डयन॥ अक्षयव॥ यादनगिन
नी॥ गिननयादनी॥ न्यासयायद
वदाना॥ अक्षय॥ याद॥ उं ह्रस्वाह॥
उं कौञ्जलगत्वायवद्व॥ नमः॥
उं वद्वयज्ञानं॥ ॥ ह्रदय॥ उं
हुं ह्रस्वाह॥ उं कौविद्यागत्वायवि
द्वनमः॥ उं विष्णुनाद॥ गिन
स॥ उं ह्रस्वाह॥ उं कौगिवगत्वा
यसदागिवाय॥ उं गिवा नामासि
॥ यूनः गिननयादनीकाटिस्थिह॥
॥ ॥ नादीसंक्षन॥ र्यवस्तुगका
नविद्याववायुगदस्ययक्तुसिंहस
स्तुद्व॥ ॥ यक्तुसिंहसनस्ति
त्वाञ्जलि॥ उं कौञ्जलगत्वायवद्व
नमः॥ उं वद्वयज्ञानं॥ ॥ याद
सथिया॥ उं कौविद्यागत्वायविद्व
ह्रस्वाह॥ ३॥ उं विष्णुनाद॥ ह्रदयसथि

या॥ॐं कृं गिव नत्वाय सदा गिवाय स्वा
हा॥ॐं नमः ४ गी रुवा॥ गिन सथिय॥
यूनः ४ धम नु न विद न गिन न लम
याव यादन धून क॥ काथि स्यं शुवा
ना॥ ॥ दव या मूल मनु लसा याव
लम धन याव सजीव य कायाय॥ ॥
ब्रीहि॥ क्षुड॥ न त॥ डा व श्री॥ वद क
लून था याव॥ डा हान था या व न व॥
हृज य स चा या व न व॥ दव या वा
हाना॥ लू या णि का ण॥ लु डा हा य ल॥
य व न त॥ कृ ग॥ अ कृ ग॥ धा रु ल स्वा
ना॥ गाय व या न॥ थ व वि लानू सा व न
रु क द या॥ दव या य नु॥ सि ध न॥ क
मु वि॥ ना सा क स्वा न॥ ध न द व न पा
द न या॥ ॥ ग ना द व द ग क्रिया॥ य श्र
सू ण का र्शं डा व॥ य ऊ मा न द व या अ
ग्र स न॥ ॥ॐं क्रां द द य म नु ल म कृ नि
श॥ॐं कृ य स या नि न सि॥ या नि क ल्य
ना॥ॐं क्रां ग य ग्रा कृ नि॥ॐं व स न नः

मठना. देवाद्यसवमि. वृत्तामुगाश्वथ
 नवमगजसारुविनिन्दव्यादधू॥
 मठयदानी॥ ॐ कौमुलमादुर्गि॥ ॐ न
 गामृष्टं द्विजरागियानिम्यविगदिन्दि
 यमागर्भजत्रायुष्मवृत्तः उल्लङ्घ्य
 गिजन्मना॥ वीर्ययदानी॥ ॐ कं कवः
 चं कर्गि॥ ॐ लीजविस्तुदा॥ नका॥ ॥
 ॐ कौं दयनादुर्गि॥ ॐ गरुजिन्मना॥
 गरुधनी॥ ॐ कौं गिन्मनादुर्गि॥ ॐ सु
 स्तिनः उ॥ य॥ ॐ कौं गिरवनादु
 र्गि॥ ॐ गिवा नामासि॥ गीर्मना॥ ॐ कं क
 वचनादुर्गि॥ ॐ याष्मयस्त्राहा॥ कायास
 ढाल॥ जानकर्म॥ निदाकलगायाल
 खनलय॥ ॐ मृष्टनुमागयश्मदथ
 यनृष्टादुग॥ नृथयमस्ययशुगमः
 त्सर्वस्मादवकिलिषाग॥ ॥ शु०
 वि. ॐ मून. वाक. यय. नवाक. सिन्धु
 य॥ सिथ्मालदलूगसमर्गयाय॥ ॥ ॥
 ॐ कौं नृष्टमादुर्गि॥ लावननददग॥ ॐ

नमः शिवाय ॥ मूलनादुर्गि ॥ यममधुदा
 ययन् ॥ मूलमर्गि ॥ नाडि च्छदनी ॥ ॐ
 यमो नयस्त्रिधा गच्छ यमो यानिर्हिनश्च
 यी ॥ अङ्गान्नादुर्गाय यमममात्रासम
 जीगमधुस्वाहा ॥ ॥ मयकुन्ना ॥ स्त्र्या
 कलसादकनर्गि ॥ ॐ समश्चदया ॥
 उधायी ॥ ॐ डलिस्त्रुवद्रा ॥ गायत्री
 ना ॥ ॐ त्वमप्यदरिणि ॥ सद्यस्त्रुकनास
 नी ॥ यं च गय नहाय ॥ ॐ यविष्णु ॥ ॐ
 द्रान्नर्गि ॥ ॐ वद्राङ्गान्नी ॥ निः
 क्रमनी ॥ ॐ द्रं जम्भुनादुर्गि ॥ ॐ काय
 स्वाहा कस्मै २ कतमस्मै २ स्वाहा धिर्म
 धीन्ताय २ मनः २ यजाय गये २ ॥ वि
 लं विज्ञानाया दिह्ये २ दिह्ये मश्चै २ दि
 ह्ये समुत्तीकार्ये २ सनत्त ह्ये २ सनत्त
 ह्ये यावकार्ये २ सनत्त ह्ये वृद्ध ह्ये २ पू
 षू २ पू षू ययत्त २ ययत्त २ पू षू ननन्दिवा
 य २ त्वष्टु २ त्वष्टु कुनीयाय २ त्वष्टु
 पू नूनयाय २ विष्टु २ विष्टु वनिरुय
 व ॥

यायश्चिष्णुवगियिविष्णुयश् ॥ ॥
नामकवर्ण ॥ यथदवस्यनामलिखी
द्युर्नदाययन् ॥ दवजवक्रसस नामुकं
न ॥ ॐ कं अमुष्मदुर्गि ॥ ॐ जारुनी ॥ रु
लषास्वी ॥ सयिनिनिमससाग ॥ ॐ कं
नकुनादुर्गि ॥ ॐ अनयन ॥ अनयास
न ॥ विवजादवर्क ॥ गिवगकि ॥ अग्नि
॥ धननप्रिराग ॥ लकारसुवाया ॥ ॐ कं
कववनादुर्गि ॥ ॐ रुदक ॥ कर्धूरु
दा ॥ क्रसरवीन ॥ ॐ कं गिखनादुर्गि ॥ ल
उ ॥ हाश्वा नर्त ॥ ॐ मूर्ध्ना नदिवा ॥ चूण
कर्धूरु ॥ वाक रुनीनि क्यय ॥ ॐ कं गिन
म्मादुर्गि ॥ ॐ अन्त्रवृत्तयास्त्ववृत्तयार्थ
नवक नूत्रिय ० सामयियाममक नूत्रय
सात्वयि ॥ सरुनो वृत्तयनवृत्ता न्ना नूत्रमः
दीक्षादीक्षायनिर्मन्नातामनूत्रयस्क
यस्यगि ॥ ॥ वृत्ता ॥ भवत्ता ॥ कृष्णीं कि
नायक्कायवीना ॥ गयगुला ॥ ॐ यक्काय
वीना ॥ गयगुनीना ॥ दीक्षाप्रदानी ॥ ॐ

वगनदीक्षा॥ ॐ कौंक्षदयनादुर्गि॥ ॐ
यथेयाम्माचा॥ ॐ नृकृष्ण॥ समावर्तने
॥ ॐ कौंक्षदयनादुर्गि॥ ॐ नार्थस्मयत्वा
लामविविचननुमनीयया॥ दवानाम्म
त्वा॥ दशः सूचार्हिः शम्भानुर्त्वा॥ ॥
विवाहा॥ ॐ कौंक्षदयनादुर्गि॥ ॐ ग्रिय
मर्क॥ चतुर्थीसगसूय॥ ॐ सरुमाधि॥
सगरुंदिका, कृष्णनिन, यसादयिकि
नि, अनिनि, धनदवद्वाय॥ ॐ यज्ञाय
नन॥ ॐ गिवा नामासि॥ ॐ नृनात्यवि
धुगा॥ रुनानि॥ ॐ स्वस्तिन नून्दा॥ हाः
सा॥ यथददस्यकनादानी॥ कौंक्षद
यनादुर्गि॥ वद॥ ॐ कन्या नूववर्हा॥ व
दनादिवसु, सिधुयय॥ ॐ स्वस्तिन नू
न्दा॥ ॐ दिद्यायत्वा॥ वदवना॥ कौंक्षि
नादुर्गि॥ ॐ काष्ठा॥ कौंक्षदयनादु
र्गि॥ ॐ गिवा नामासि॥ गृहायकनर्ग॥
रुधुमदद्यात्॥ लिर्वरुर्ग॥ अदिन, स
मर्कदवद्वाय॥ ॐ कौंक्षि वसनादुर्गि॥

डाहा॥ श्रीरघु पाधन श्रीहिसूग॥ ५॥ वा
यथा॥ यथ्यत्राग लीति॥ रुक्लसि याटधि
त्रि॥ नक्ष॥ ४॥ डरुना॥ यद्यत्राग कंसरीद
॥ कूटगंधक॥ कलाट॥ १॥ ॐ नमो॥ वेद
र्य॥ कृत संघरू लि॥ रियनि॥ स्यक॥ ६॥
म॥ सक्तय॥ सर्वनत॥ सर्वधु॥ सुटिक
सर्वोषधी॥ सर्वदया॥ अष्टवीरि सुवर्ग॥ ध
नक्तय॥ ॥ यूजन॥ ॐ कौं नान न्दायश॥ ॐ
कौं मं यरायश॥ ॐ कौं कौं रुदायश॥ ॐ कौं
मं स्नानायश॥ ॐ कौं कौं रुयायश॥ ॐ कौं ॐ
वेवा स्नायश॥ ॐ कौं त्रि त्रिकायश॥ ॐ कौं ॐ
ॐ न्ध्यायश॥ आयेयादि॥ ॐ नमो नार्क
॥ ॥ ॐ कौं न न्दायश॥ ॐ कौं मं अधुमायश
ॐ कौं रुदायश॥ ॐ कौं मं अस्नानायश॥ ॐ
कौं रुयायश॥ ॐ कौं नू वेवा स्नायश॥ ॐ कौं
त्रिकायश॥ ॐ कौं नू नेवायश॥ यथादि
रुनार्क॥ ॥ म॥ ध्यायश॥ ॐ कौं यूयं ॐ
यश॥ ॐ कौं आ आ धा वग कयश॥ ॐ कौं नू
न न्ना स्नायश॥ ॐ कौं कौं नार्क वश॥ ॐ कौं

स्तुत्यास्तुत्यश॥ उंक्रां नास्तुत्यास्तुत्यश॥ उंक्रां य
स्तुत्यास्तुत्यश॥ उंक्रां यस्तुत्यास्तुत्यश॥ उंक्रां कर्ण
स्तुत्यास्तुत्यश॥ उंक्रां कर्णिकास्तुत्यास्तुत्यश॥ उंक्रां वृष
स्तुत्यास्तुत्यश॥ यिष्टिकास्तुत्यास्तुत्यश॥ ॥
यक्ष्ममधुयस्तुत्यास्तुत्यश॥ दवविस्तुक्तनया
स्तुत्यास्तुत्यश॥ मधुयनयिर्नरुयावदवस्तुत्या
स्तुत्यास्तुत्यश॥ ॥ मधुयस्तुत्यास्तुत्यश॥
मधुयस्तुत्यास्तुत्यश॥ धनंतिदवयावास्तुत्यास्तुत्यश॥ सूर्य
स्तुत्यास्तुत्यश॥ लूतास्तुत्यास्तुत्यश॥ यक्ष्मस्तुत्यास्तुत्यश॥ काय
स्तुत्यास्तुत्यश॥ कर्ण॥ अक्ष॥ दारुस्तुत्यास्तुत्यश॥ धव
स्तुत्यास्तुत्यश॥ विस्तुत्यास्तुत्यश॥ रुक्मस्तुत्यास्तुत्यश॥ दवयास्तुत्या
स्तुत्यास्तुत्यश॥ सिन्धुस्तुत्यास्तुत्यश॥ कर्मुनि॥ नासास्तुत्यास्तुत्यश॥ ध
स्तुत्यास्तुत्यश॥ ॥ धनंतिदवस्तुत्यास्तुत्यश॥
नयास्तुत्यास्तुत्यश॥ मूतमनुक्त॥ वद॥ उं नमस्तु
स्तुत्यास्तुत्यश॥ ॥ यिष्टिकास्तुत्यास्तुत्यश॥ अक्षः
स्तुत्यास्तुत्यश॥ विस्तुत्यास्तुत्यश॥ उंक्रां गिनिनोर॥
उंक्रां अक्षदानी॥ उंक्रां अक्षानी॥ उं
क्रां मात्रीवी॥ उंक्रां क्षातिनी॥ उंक्रां
निवृत्ति॥ उंक्रां यनिस्तुत्यास्तुत्यश॥ उंक्रां विद्या
स्तुत्यास्तुत्यश॥ उंक्रां गनि काय॥ उंक्रां नमस्तुत्यास्तुत्यश॥

ॐ कौं निवृत्ताये श ॥ १ ॥ ॐ कौं यनिस्त्राये श
२ ॥ ॐ कौं विद्याये श ॥ ३ ॥ ॐ कौं मन्त्राये श ॥
४ ॥ ॐ किं नित्यं नूयकता ॥ ॥ ॐ कौं मनः
मेश ॥ १ ॥ ॐ कौं माहायश ॥ २ ॥ ॐ कौं क्रमा
ये श ॥ ३ ॥ ॐ कौं निष्ठाये श ॥ ४ ॥ ॐ कौं व्याध
यश ॥ ५ ॥ ॐ कौं मुख्यवे श ॥ ६ ॥ ॐ कौं द्रुक्ष
ये श ॥ ७ ॥ ॐ कौं रुष्टायै श ॥ ८ ॥ ॐ किं नूद
धानकता ॥ ॥ ॐ कौं नऊसश ॥ १ ॥ ॐ

ॐ कौं वक्रयेश ॥ २ ॥ ॐ कौं वक्रयेश ॥ ३ ॥
ॐ कौं यात्येश ॥ ४ ॥ ॐ कौं कामायेश ॥ ५ ॥
ॐ कौं संत्रयेश ॥ ६ ॥ ॐ कौं क्रियायेश ॥ ७ ॥
ॐ कौं वृक्षयेश ॥ ८ ॥ ॐ कौं वर्मायेश ॥ ९ ॥
ॐ कौं नाभयेश ॥ १० ॥ ॐ कौं कामयेश ॥ ११ ॥
ॐ कौं भारुयेश ॥ १२ ॥ ॐ कौं कालायेश ॥ १३ ॥
ॐ निवामदवकला ॥

ॐ कौं सिद्धयेश ॥ १ ॥ ॐ कौं विद्धयेश ॥ २ ॥
ॐ कौं धृतयेश ॥ ३ ॥ ॐ कौं क्लायेश ॥ ४ ॥
ॐ कौं मक्षयेश ॥ ५ ॥ ॐ कौं कान्तायेश ॥ ६ ॥
ॐ कौं प्रकायेश ॥ ७ ॥ ॐ कौं स्वक्षयेश ॥ ८ ॥

सुधाजातादि ॐ निजुक्तिशक्ति कला ॥
ॐ कौं समरुगमवावृद्धीकथयिष्येश
ॐ निविष्यिका ॥ ॥ देवस्य यं वरुणः

माधवर्न ॥ ॐ कौं यिथिवीमूरुयेश ॥ ॐ कौं
यिथिमूल्यादिकथयामायेश ॥ आश्विन
॥ ॐ कौं आयमूरुयेश ॥ ॐ कौं आयमूल्या
दिकथयऊष्मायेश ॥ कान्त्या ॥ ॐ कौं नऊ
मूरुयेश ॥ ॐ कौं नऊ मूल्यादिकथयैकिर्य
येश ॥ नारि ॥ ॐ कौं वायूमूरुयेश ॥ ॐ कौं

वायुमूल्यादिकथस्नानायशा ददयः॥
ॐ क्रांस्वमूर्त्ययशा ॥ ॐ क्रांस्वमूल्यादिकथ
ॐ क्रांस्वमूर्त्ययशा ॥ ललाटा ॥ सर्वानकमम
र्थतः ॥ गृष्टिकममकातः ॥ कृत्तिर्यवग
त्वा ॥ ॥ दवस्यमूलषडंगनन्यासः ॥
ॐ क्रां ददयाय दूं रुद्र ॥ ॐ यज्ञाय न
॥ ॥ ॐ मंगि वसूं रुद्र ॥ ॐ सहस्रगीर्वा
य ॥ २ ॥ ॐ धृतिस्वाय दूं रुद्र ॥ ॐ अर्कम
रुद्र ॥ ३ ॥ ॐ सुं कवचाय दूं रुद्र ॥ ॐ आसु
सिसाना ॥ ४ ॥ ॐ दूं नवाय दूं रुद्र ॥ ॐ वि
द्रातः ॥ ५ ॥ ॐ रुद्र अस्त्राय दूं रुद्र ॥ ॐ न
मस्तु नृप ॥ ६ ॥ ॐ क्रां आयतत्वायशा ॥ अ
यतत्वादियायवक्राद्यशा ॥ ॐ वक्राद्य
तः ॥ ॐ क्रां क्रामूर्त्ययशा ॥ क्रामामूर्त्यादि
कथसर्वायशा ॥ ॐ अर्ककातः ॥ ॐ क्रां वक्रि
मूर्त्ययशा ॥ वक्रिमूर्त्यादिकथयष्टयत
यशा ॥ ॐ सवितात्वासा ॥ ॐ क्रां यज्ञमानः
मूर्त्ययशा ॥ यज्ञमानमूर्त्यादिकथयष्टय
यशा ॥ ॐ पूनत्वा ॥ ॐ क्रां अर्कमूर्त्ययशा
अर्कमूर्त्यादिकथयष्टययष्टय ॥ ॐ नमीसा

नी॥ उंकां जलमूर्खय २॥ जलमूर्खाधियत
यरुवाय २॥ उंअस्मि मरु॥ उंकां वायूमूर्ख
य २॥ वायूमूर्खाधियतय व्रीभनाय २॥ उं
नववाय॥ उंकां वृन्दमूर्खय २॥ वृन्दमूर्खा
धियतय महादवाय २॥ उं नभावायाः
उंकां खमूर्खय २॥ खमूर्खाधियतय हीमाय
२॥ उं नभामुनी तयीवाय॥ वृन्मि आयतवा
यादादिनाथान् ॥ ॥ उंकां विद्यातवाय
२॥ विद्यातवाधियतय विष्णुमूर्खय २॥ उं
दिष्णाय नमः॥ उंकां श्रमाय २॥ श्रामामूर्खा
धियतय सर्वाय २॥ उंअस्मि मरु॥ उंकां व
क्रिमूर्खय २॥ वक्रिमूर्खाधियतय यद्युय
तय २॥ उं सविता तवा २॥ उंकां यजमानमू
र्खय २॥ यजमानमूर्खाधियतय उग्राय २
॥ उं पुनत्वा॥ उंकां अर्कमूर्खय २॥ अर्कमू
र्खाधियतय वृद्धाय २॥ उं तमीभन॥ उं
जलमूर्खय २॥ जलमूर्खाधियतय रुवाय
२॥ उंअस्मि मरु॥ उंकां वायूमूर्खय २॥ वायू
मूर्खाधियतय व्रीभनाय २॥ उं नववाय
॥ उंकां वृन्दमूर्खय २॥ वृन्दमूर्खाधियतय

महादवायश॥ ॐ नमावाह्या॥ ॐ कौं खमू
 रूयश॥ खमूरुयादियनयहीमायश॥ ॐ
 नमामुनीतयीवाय॥ ॐ निविद्यानत्वाः
 द्विजुमूरुलिनास्यादियावान् ॥ ॥
 ॐ कौं गिवनत्वायश॥ गिवनत्वादियनयनू
 दायश॥ ॐ या नूदा ॥ ॐ कौं श्रामामूरुयाः
 द्वियनयसर्वायश॥ ॐ असीत्याना॥ ॐ कौं
 वक्रिमूरुयश॥ वक्रिमूरुयादियनययय
 यनयश॥ ॐ सवितात्वास॥ ॐ कौं यजम
 नमूरुयश॥ यजमानमूरुयद्वियनय
 उग्रयश॥ ॐ यूनत्वा॥ ॐ कौं अर्कमूरु
 यश॥ अर्कमूरुयादियनयनूदायश॥ ॐ
 नमीमान् ॥ ॐ कौं जलमूरुयश॥ जलमू
 रूयादियनयरुवायश॥ ॐ अस्मिन् ॥ ॐ
 कौं वायूमूरुयश॥ वायूमूरुयादियनय
 ॐ भूनायश॥ ॐ नववायु॥ ॐ कौं ॐ नूमू
 रूयश॥ ॐ नूमूरुयादियनयमहादवाय
 श॥ ॐ नमावाह्या॥ ॐ कौं खमूरुयश॥ खमू
 रूयादियनयहीमायश॥ ॐ नमामुनीत
 यीवा॥ ॐ निगिवनत्वादिविनासक ॥

ग्रीवादिस्तत्तां॥ ॥ ॐ ह्रीं वक्रां ॥

मूर्खयः॥ वृक्षाद्यु मूर्त्यादियतययन
वृक्षधरः॥ ॐ नित्यादिकसाध्या ॥ ॐ नि
यश्च विंशतिनखरुद॥ मूर्द्धि ॥ ॥

यष्टिंशति कृत्वरुषक न्यास ॥ ॐ क्रांजै
कैरवै गंधं दं ज्ञां यथि वायुयतडा वायाः
काष्मत्मन ज्ञं गुष्ठा ह्या ॥ १ ॥ ॐ क्रांजै

वं वूं ऊं मूं हूं णं दस्य न नृय नमस गंधात्म
नमश्च साक्षां नमः ॥ २ ॥ उं द्रां डं टं ठं डं

ॐ त्वववर्मा मां सन् शिवमदमर्जात्मा
नमश्चमाह्यां ॥ ३ ॥ ॐ क्रां मं नं थं दं धं

नमः वादनयद्गुणप्रजिज्ञानधामः
नमः नामिकाह्यै ॥ ४ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं यं ह्रीं

वैरुंमंउंमनावद्विबहंकात्रविलात्म
नकनिष्ठाही२॥ ५ ॥ ॐ ह्रीं जूं यं वं हूं यं

गं घं संहं दं जं ॥ वचना दान आनन्द आ
त्मन विना माया मून ज्ञायाय रु ॥ ३ ॥

ॐ ह्यादि ह्रदयादिक वाक्कं न्यास ॥ ॥
वाक्कं न्यास ॥ मातृनी गद्य वासि ॥ यद्वि

नि कृत्वनमाधयत् ॥ ॥ ॐ क्रां यृथीन

त्वायश॥ १ ॥ उं कौं आयुः त्वायश॥ २ ॥
उं कौं भूत त्वायश॥ ३ ॥ उं कौं वायुः त्वाय
श॥ ४ ॥ उं कौं आकाश त्वायश॥ ५ ॥
उं कौं गन्ध त्वायश॥ ६ ॥ यादादिगुकार्क
विन्यासः ॥ ॥ उं कौं स्रव त्वायश॥ ७ ॥
उं कौं वृष त्वायश॥ ८ ॥ उं कौं स्यर्ग त्वा
यश॥ ९ ॥ उं कौं गद त्वायश॥ १० ॥
उं कौं घ्राण त्वायश॥ ११ ॥ उं कौं जिह्वा
त्वायश॥ १२ ॥ गुणदिगुकार्कविन्या
सः ॥ ॥ उं कौं चक्षुः त्वायश॥ १३ ॥
उं कौं त्वक् त्वायश॥ १४ ॥ उं कौं ध्रुव त्वा
यश॥ १५ ॥ उं कौं वाक् त्वायश॥ उं कौं
याधित्वायश॥ १६ ॥ उं कौं याद त्वा
यश॥ १७ ॥ गुणदिनाह्यार्कविन्यास
ः ॥ ॥ उं कौं पायुः त्वायश॥ १८ ॥
उं कौं डयस्म त्वायश॥ १९ ॥ उं कौं मनः
त्वायश॥ २० ॥ उं कौं बुद्धि त्वायश॥ २१
॥ उं कौं अहंकार त्वायश॥ २२ ॥
उं कौं प्रकृति त्वायश॥ २३ ॥ नात्यादिह
दयार्कविन्यासः ॥ ॥ उं कौं यन्त्र

नत्वाय २॥ २१ ॥ उं कौ नाग नत्वाय २ ॥
२५ ॥ उं कौ नीय कि नत्वाय २ ॥ ३० ॥
उं कौ काल नत्वाय २ ॥ ३६ ॥ उं कौ क न
नत्वाय २ ॥ ३८ ॥ उं कौ माया नत्वाय
२ ॥ ३० ॥ हृदयादिनालमूलार्कविन्य
स ॥ ३१ ॥ ॥ उं कौ विद्या नत्वाय २ ॥
३१ ॥ उं कौ विष्णु नत्वाय २ ॥ ३२ ॥ उं
कौ वीष्ण नत्वाय २ ॥ ३३ ॥ उं कौ सदा
वि नत्वाय २ ॥ ३४ ॥ उं कौ न कि नत्वा
य २ ॥ ३५ ॥ उं कौ निव नत्वाय २ ॥ ३६ ॥
नालमूलदिललाटा न्क विन्य ॥ ३७
निवद्रि नत्वाय २ ॥ ॥ उं कौ कौ वी
मनाय २ ॥ क नत्वा ॥ उं कौ यं नत्वाय २
याय २ ॥ अनामिका ॥ उं कौ नै नत्वाय २
य २ ॥ मध्वमाहुति ॥ उं कौ यं वा मधवा
य २ ॥ नत्वा नत्वा ॥ उं कौ लं मधवा जा
य २ ॥ अहुष्टी ॥ ॥ निव कु क नत्वाय २
॥ ॥ रुववाष्टकं नत्वाय २ ॥ उं कौ अ नि
ना महरु नत्वाय २ ॥ नासिका ॥ १ ॥
उं कौ नू नत्वा महरु नत्वाय २ ॥ हृदया ॥ २ ॥

ॐ कौं वधुमहारु नवायश ॥ मूर्द्धि ॥ ३ ॥

ॐ कौं काधमहारु नवायश ॥ यीवायी ॥ ४ ॥

ॐ कौं उ नमनमहारु नवायश ॥ डा ॥ ५ ॥

ॐ कौं कयातागमहारु नवायश ॥ न ॥ ६ ॥

ॐ कौं लीषमहारु नवायश ॥ तलाटा ॥ ७ ॥

ॐ कौं मंलानमहारु नवायश ॥ गिखायी ॥ ८ ॥

कौं ॐ कौं नवायश ॥ मरुदसमाय ॥ ॥

ॐ कौं लं सधा नायश ॥ हदय ॥ ॐ सधा जात

॥ १ ॥ ॐ कौं वं वामदवायश ॥ गिवा ॥ ॐ वाम

मयसुविमि ॥ २ ॥ ॐ कौं नं अयावायश ॥ गिर

या ॥ ॐ या न नूद गिवा ॥ ३ ॥ ॐ कौं यं कत्य

नूयायश ॥ कवच ॥ ॐ यत्यनूय ॥ ४ ॥ ॐ

कौं कं वृक्षनायश ॥ अ ॥ ॐ कमीननी ॥ ५

॥ यं ववकुवद ॥ वृक्षिर्गनाय ॥ ॥

अवृक्षिर्गनाय ॥ ॐ कौं गिनिनोर

॥ मूर्द्धिपूर्व ॥ १ ॥ ॐ कौं अरुदायेश ॥ मूर्द्धि

दक्षिण ॥ २ ॥ ॐ कौं वृक्षयेश ॥ मूर्द्धिपुत्रि

मा ॥ ३ ॥ ॐ कौं मनीययश ॥ मूर्द्धिउरुनः

॥ ४ ॥ ॐ कौं कालिनोर ॥ मूर्द्धिमध्या ॥ ५ ॥

वृक्षमनकलासमायमिति ॥ ॥

ॐ कानि वृत्ताये २॥ पूर्ववक्त्र ॥ १ ॥ ॐ कानि
वृत्तिस्त्राय २॥ दक्षिणवक्त्र ॥ २ ॥ ॐ कानि वि
द्याये २॥ यष्टिमवक्त्र ॥ ३ ॥ ॐ कानि धन्याये
२॥ उरुवक्त्र ॥ ४ ॥ ॐ कानि त्रयवक्त्र ॥
॥ ॐ कानि मनसे २॥ मूर्ध्नि उर्ध्व ॥ १ ॥
ॐ कानि माहाय २॥ हृदय ॥ २ ॥ ॐ कानि कर्म
ये २॥ ग्रीवाय ॥ ३ ॥ ॐ कानि निष्ठाये २॥ ध
नु ॥ ४ ॥ ॐ कानि बाधये २॥ नाभि ॥ ५ ॥
ॐ कानि मूलवे २॥ जठर ॥ ६ ॥ ॐ कानि कू
क्षये २॥ पृष्ठ ॥ ७ ॥ ॐ कानि हृत्प्राये २॥ उरु
॥ ८ ॥ ॐ कानि अथावक्त्र ॥ ॥ ॐ कानि
कर्म २॥ युक्त ॥ १ ॥ ॐ कानि वक्त्राय २॥ ति
क्ष्ण ॥ २ ॥ ॐ कानि वक्त्राय २॥ दक्षिणवक्त्र ॥
३ ॥ ॐ कानि पात्ये २॥ वामानु ॥ ४ ॥ ॐ का
माये २॥ दक्षिणमजाना ॥ ५ ॥ ॐ कानि सम
सिन्धये २॥ वामजानो ॥ ६ ॥ ॐ कानि क्रियाये
२॥ दक्षिणजंघा ॥ ७ ॥ ॐ कानि वृक्षये २॥ वा
मजंघा ॥ ८ ॥ ॐ कानि वर्माये २॥ दक्षिणही
व ॥ ९ ॥ ॐ कानि नाभौ २॥ वामहीव ॥ १० ॥
ॐ कानि आमनये २॥ कर्णा ॥ ११ ॥ ॐ कानि माह

नो२॥ दक्षिणायाम् ॥ १२ ॥ ॐ कौं कालाय
 ॥ वामायाम् ॥ १३ ॥ ॐ निवामदवकला ॥
 ॥ ॐ कौं सिद्धायेश ॥ दक्षिणायाम् ॥ १ ॥
 ॐ कौं सिद्धायेश ॥ वामायाम् ॥ २ ॥ ॐ कौं शु
 कयेश ॥ दक्षिणायाम् ॥ ३ ॥ ॐ कौं श्रुतेश ॥ वा
 मायाम् ॥ ४ ॥ ॐ कौं मधुयेश ॥ नासीयुः
 ॥ ५ ॥ ॐ कौं कान्तायेश ॥ गिरम ॥ ६ ॥
 ॐ कौं यज्ञायेश ॥ दक्षिणायाम् ॥ ७ ॥ ॐ कौं स
 क्षयेश ॥ वामायाम् ॥ ८ ॥ सदा ज्ञानादि ॥ ॐ
 निजसुखिणिकता ॥ ॥ ॐ कौं निवाम
 त्वायेश ॥ निवामत्वादि कथमदा निवामयेश
 ॐ निवामानामाणि ॥ १ ॥ ॐ कौं विद्यात्वाय
 श ॥ विद्यात्वादि कथमिष्टव ॥ ॐ कौं वि
 ष्णव ॥ २ ॥ ॐ कौं आत्मत्वायेश ॥ आत्म
 त्वादि कथमिष्टव ॥ ॐ कौं कर्मस्यगः
 ॥ ३ ॥ ॐ निद्रित्व ॥ ॥ ॥
 कलादवानिर्कंगत्वा अर्थया नममन्त्रि
 तन ॥ यथा विष्णुर्नरुत्तुष्टोदियाव
 यतिष्ठान्कानयन् ॥ विष्णुवमन्त्रे वा
 स्यन्तया ॥ ॥ यूनः कृष्णानिर्कंगः

॥ अमुकदवस्यमूतमकुव. गहंदा
महर्षिवाकृत्वायुर्धु ॥ वद ॥ ॐ यन्नाकु
नस्यविमृथाविनचिन्नूदादाययुधि
वीज्जीवदानमू ॥ यामेनयध्वमसि
हृध्वाहिस्ममधीनासाऽनूदिग्यय
जन्त ॥ या दृगीनासादयद्विषकावध
(सिस्वाहा ॥ ध्रुवानधिय ॥ ॥
दवयाद्वनययवतिविय ॥ ॐ गर्
नांत्वा ॥ ॐ म्मा नूदाय ॥ ॐ नभावा ॥ ॐ
अम् ॥ अम् ॥ ॐ यातव ॥ ॥
यूननाकृति ॥ ॐ यंवरुत (मध्यामि
॥ ॐ वाचनकुन्धमिष्टागनकुन्ध
मिचक्रुत्कुन्धमिष्टागनकुन्ध
मिनाहिनकुन्धमिष्टागनकुन्ध
यायनकुन्धमिचक्रुत्कुन्धमि
॥ ॐ मनसू ॥ आयायतांवाक् ॥ आ
यायताम्यागसू ॥ आयायताञ्ज
सू ॥ आयायताऽ (मृत्कुन्ध ॥ आया
यताम् ॥ यल्लूकनयदाहिनकुन्ध
आयायतानिष्टायायतानकुन्धगुञ्ज

गमहाद्याः॥ डाषधेजायस्वस्वधिकमं
 न० हि० सी॥ यं वरुतः॥ धनी॥ ॥
 उं यं वरुतः स्मायनं॥ उं आयूर्द्धा नायस्व
 हा॥ वद॥ उं आयूर्योक्तं न कल्याणाः॥
 हा॥ व्याघ्रयक्तं न कल्याणाः॥ स्वाहायानं
 यक्तं न कल्याणाः॥ स्वाहायाना यक्तं न कल्या
 नाः॥ स्वाहायाना यक्तं न कल्याणाः॥ स्वाहा
 समाना यक्तं न कल्याणाः॥ स्वाहावद्वयं
 क्तं न कल्याणाः॥ स्वाहाग्न्याक्तं न कल्या
 नाः॥ स्वाहाद्याग्न्याक्तं न कल्याणाः॥ स्वाहाम
 नायक्तं न कल्याणाः॥ स्वाहास्वायक्तं न क
 ल्याणाः॥ स्वाहाम्नायक्तं न कल्याणाः॥ स्वाहा
 गिर्यक्तं न कल्याणाः॥ स्वाहास्वयक्तं न क
 ल्याणाः॥ स्वाहायुक्तं न कल्याणाः॥ स्वा
 हायक्तं न कल्याणाः॥ स्वाहा॥ ॥
 आयूर्द्धा नं॥ ॥ ग० ४॥ सुकयवर्धन्या
 स॥ उं ह० ४॥ अग्निर्दवता गमयणी कुन्दस
 स्वाहा॥ उं अ० म० अ० मि॥ नाहो॥ ॥ उं ह० व
 ४० ४॥ कुन्दवायुदवताय स्वाहा॥ इति॥
 उं क० व० वायु॥ २॥ उं ह० ४॥ अ० न० क० पु० न० अ०

दिव्यदवताय स्वाहा ॥ ॐ आदि ह्यङ्गुलम्
 यसासमद्वि सरुमुंयु कि म्मां विष्णु नूय
 म् ॥ यत्रिवृद्धि रुन सा मा हि म ५ ह्या ४ः
 गताय व ह्युहि द्या य मान ४ ॥ ३ ॥ क ७
 ॥ ॥ ॐ मरु ४ वरु नी च्चन्द व नू (ध) दव
 ता य स्वाहा ॥ ॐ व नू ण स्या रु म् न म सिव
 नू ण स्य स्क् म् स ऊ नी स्या व नू ण स्य ५
 म न स द न्या सिव नू ण स्य ५ म न स द न
 म सिव नू ण स्य ५ म न स द न मा सी द ॥ ॥
 मरु ॥ ५ ॥ ॐ जन ४ यं कि च्चन्द ४ ॐ न्या
 दव ता य स्वाहा ॥ ॐ ॐ न्या सा न ता वरु
 स्य कि र्द द्वि ण य रु ४ य न ५ व रु मा म ३ ॥
 दव स नाना म हि रु ३ नी ना ३ य नी ना
 मा नू ता य न्व न्नु म् ॥ ५ वि ॥ ५ ॥ ॥ ॐ न
 य ४ वि ष्णु च्चन्द वरु स्य कि र्द व ता य स्वाः
 हा ॥ ॐ वरु स्य नू ॥ ल ता न ॥ ५ ॥ ॥
 ॐ स ह्यङ्गु ग नी च्चन्द विष्णु द वा द व ता य
 स्वाहा ॥ ॐ विष्णु द व स्य न नु म् म रु च्चः
 नी न स रु म् ॥ विष्णु ना य ५ वृ ष्ठा नि द्यु
 म् मी वृ णि न य ष्ठा स स्वाहा ॥ मूर्द्धि ॥ य न ४

दवयामूतमनु विथ ॥ १४ ॥

ॐ सकसयः युक्तिरिनाः सवीत्रसक
वक्रनि सदमयमादी। सकायः स्वय
नालाकमीयसुनया गृही अस्वप्रज्ञा
सुसुसदोवदवो ॥ ॥ रुति सकयुव
वन्नासः ॥ ॥

धनार्यवारिषकयूजा ॥ वद ॥ ॐ याः
रुतिनि ॥ रुत ॥ ॐ यूनत्वादि स्यान्नडा
वसवः समिन्धर्गा यूनर्बुक्का (मवः
सूनीथयक्के ॥ यूननर्बुक्कवर्दयः
स्वसखाः सनुयजमानस्य कामाः ॥
यथा ॥ ॐ मनारुति ॥ लाजा ॥ ॐ स्ताकाः
नामिन्दुम्यनिगूत्रः रुत्याव्यायमाः
(मव्यरुमुना साद ॥ धनयूषामन
सामादमानाः स्वारुदवाः अमृताः
मादयन्ताम् ॥ माद ॥ ॐ गिवा नामा ॥
अरुत ॥

यद्ममभुयसवादाव॥ दवया मूलः
मनुनचुहिति विय॥ ध्रुवाकाय॥
नायकुफुनिकाय॥ वद॥
ॐ स्मिन्नारुववीष्ट्रं गेष्टुर्ववाः
क्षर्वमायथर्वसूषदस्त्वमप्य॥
यूनीषवाहन॥

दवस्मायनथायसवादाव॥ नायः
जादावध्रुवाजादाव॥ यास्मिन्नाः
जासि, जायार्थ॥ यजमानमानका
स्मिन्नाववना॥ ॥ स्मिन्नाववनायानि
सर॥ ध्रुवानकाययावन॥ यूनादिगडा
सिआचार्ययायात्रीमालकयजमानस
रुस्मिन्नावन॥ ॐ अथवात्राकल्या
दि॥ ॐ यन्निष्कसिदवग, सुयन्निष्करुव
विर्य॥ मानिषनियुक्त, यजमानाऽव
वर्द्धन॥ गन्तामुद्वियदनिर्णय, गन्तामुः
वचउद्यद। गन्तामुसर्वलाकानां, गन्ता
नास्मात्तथैववायजमानसरुथायं, यस्
युक्तस्यवाभवा॥ नक्षत्रसर्वदयानां दश
क्षायनभामुक्त॥ यद्विनुक्तयनसूर्येक्ष

ऊषवत्तवर्धनि॥ गावद्वर्षसहस्राणि. नि
 वलाकमहीयन॥ रुमलक्षयदानन. यू
 ष्यकाटिगुणध्वजा॥ यावच्चन्द्रस्यसूर्यस्य
 भदनीसकसागना॥ यावदाकाशगङ्गाव.
 गावत्त्वंकुम्भिनारुवा॥ वद॥ ॐ स्मिन्नारुववी
 र्वंगमागुरुववाक्चर्वमायथूरुवसुंदसु
 मय्य॥ यूनीषवाहन॥ मूलमनुषस्मिन्नारु
 वश॥ ॥ थनादवयूजायाय॥ न्यासादि॥
 ॐ नत्वाजामि॥ ॐ दवस्यत्वा॥ ॐ गितानामा
 सि॥ ॐ नमः सरुवाय॥ ॐ श्रीश्वर॥ ॐ द्या
 माल॥ थनामात्रकायूजादवयादान॥ व
 न्याञ्जनक्रमन॥ धूय. दीय. नेत्रद्यादि.
 सर्वन्याययत्न॥ जाय॥ स्तुत॥ अष्टगन्ध
 दि॥ यैवारुषिक॥ ॐ याः रुलिना॥ सीसा॥
 ॐ यनस्त्रादि॥ नाय॥ ॐ मनाङ्गुलि॥ व्रश्मा
 र॥ ॐ स्नाकानामि॥ स्नान॥ ॐ हृदयिष्णु॥
 अङ्गन॥ ॥ यैवसूत्रकानदवचस्य॥
 जादावन्नाङ्गुलि॥ मूलमनुषविस्म्यत्वा
 य॥ वद॥ ॐ गितानामा॥ ॐ द्यामात्र॥

यूननादृगि॥ गायकाय॥ उंमनादृगि॥
 यगिष्टा॥ ॥ चनूक्षाम॥ यऊमानयगि
 ष्ठा॥ वायूक्षाम॥ ॥ शानिकयूक्षिक
 ॥ यवक्षान्यादिविदिहाम॥ विधिथं यऊधू
 नक॥ यऊमानअरिषक॥ ॥ यूर्ध्वचनू
 ॥ ॥ साक्षीथय॥ ॥ कोमात्रायाग॥ ॥
 ॥ निदवस्ययनविधिसमाय॥ ॥

अथदानस्ययनविधिः लिखत॥ ॥
 अग्निकार्यमाकलशमर्चय॥ विधिथं
 मालकावाप्तय॥ ॥ यागासनवाय॥ न
 यनहाल॥ गिवगकि कलशवलिथय
 या॥ अनूयनमालकशमग्रस॥ कोमाला
 सयुग॥ ॥ विप्रहृनन॥ वलिविय॥ यः
 अगव्यादि॥ गिवगकि उमनादि॥ यऊया
 य॥ ॥ यूननादृगि॥ गिलादृगि॥ कलश
 यगिष्टा॥ गिर्यादृगि॥ ॥ गतायथकर्म॥
 यऊमधुयया॥ ॥ शीशमनकागग॥ स्नानम
 धुयवन॥ ॥ यूर्ध्वसदानयागा॥ दानय

सिमानकागय ॥ ह्यहा यादानरुनसुननय
 ॥ ॥ चवकिचायावचकुललननयाय
 क ॥ चन्दनादिना ॥ ॥ कलगायुडा ॥ यू
 द्वादि ॥ उंगंमये ॥ उं नाम्ने ॥ निर्मदाये
 ॥ सुनखये ॥ वद ॥ उं जाजिद्यक ॥ उं मृ
 रिकार्ये ॥ उं जखकान ॥ उं डाषधीर्या
 ॥ उं याडाषधी ॥ ॥ दवगक दमा ॥ उं
 दवदवजगनाथ ॥ सुष्टिसीरुनेकानक ॥
 ॥ निर्मिगायं त्रयादव ॥ त्रयायामूरुचन
 सा ॥ न्यनां ह्यधिकीणवा ॥ वीणवायिक
 न ॥ कविगुरुमुमरुसिगत्सर्वकृमगीय
 नमश्चन ॥ ॥ निर्मचुनादि ॥ लाहनका
 ॥ सुकय ॥ ॥ सुान ॥ किलादरुने ॥ उं न
 त्वायामी ॥ मृहिका ॥ उं महिद्यो ॥ कषाय ॥
 उं विष्णुननाट ॥ यंचगय ॥ उं वाचन ॥ यं
 चामृग ॥ उं अनवसु ॥ ॥ गंधदक ॥ उं
 गन्धदा ॥ रुलादक ॥ उं या ॥ रुलुनी ॥ नर्त
 दक ॥ उं हिनक्षगरु ॥ सुवक्षुदक ॥ उं व
 कवक्षसुना ॥ चउ ॥ कलगा ॥ ॥ यू ॥

ॐ गन्नादवी॥ दक्षिणा॥ ॐ यंचनय॥ यश्चिम
॥ ॐ डयकन॥ डरुन॥ ॐ आयाहिसु॥ गुरु
प्रधान॥ ॐ वसा॥ यविषु॥ गिखादका॥ गीग
ऊलनयाव॥ ॐ गस्यनय॥ दक्षिवियका॥ ॐ
रुऊनिव॥ चन्दनादिना॥ कायालनयय॥
सूरुआनमि॥ ॥ यूर्ध्वचन्द्र॥ ॥ लीख
धनधस्यनेमस्यदानन॥ दूर्गयन॥ ॥
यक्कूधुया॥ यूर्ध्वसुनय॥ ॥ यंचसुगुका
नयस्य॥ मधनय॥ वायु॥ धन॥ कृष्णनय
सुगु॥ मर्कु॥ ॐ रु॥ स्वाहा॥ ॐ वयस्यकान॥
दानाध॥ ॐ रु॥ स्वाहा॥ ॐ वृ॥ दविष्कु॥
दानमध॥ ॐ रु॥ स्वाहा॥ ॐ नम॥ ॐ रु॥
दानाध॥ लामविलामन॥ धनीआरुमिदि
स्यत्वाय॥ ॥ मूलमनुगकहिलिवियाव
त्वाय॥ सजीवरुकायाय॥ ॥ गन्नादगकि
या॥ अरुमिदिस्यत्वाय॥ ॐ गरु॥ अस्या॥ ॐ
यष्टवनाय॥ ॐ रु॥ स्वाहा॥ ॐ गीमना
नयनाय॥ ॐ माहिरुम्या॥ ॐ या॥ कर्मय
॥ यूर्ध्व॥ गयाकायालल॥ ॐ नामकनना

ॐ गद्दिनाय॥ ॥ ४

॥ इत्युक्तं त्वं कुतः पाय २ त्वं कुतः नृपाय २ विष्णवे २ त्वं

सुवेमि रूपाय २ ॥ ५

य २ ॥ ॐ काय स्वाहा ॥ कर्म २ कर्म २ कर्म २ स्वा
हा धिमा धीः ॥ गाय २ मनः ॥ य २ जाय गय २ ॥
चिरं चिह्ना गाय २ दिहो २ दिहो मयो २ दिहो
समृणी काये २ स न स्वहो ॥ स न स्वहो याव का
ये २ स न स्वहो वरुहो २ पूष २ पूष २ पूष २
॥ य २ पूष न रसि ॥ य २ विष्णु वं गियिः
विष्णुय २ ॥ ॥ ॐ रुत नृन्या ग नाय २ ॥
ॐ नृनय न ॥ ॐ नृग क न नाय २ ॥ ॐ मूर्द्धा
नधि ॥ ॐ व ग व न नाय २ ॥ ॐ य धर्मा ॥ ॐ वि
वाहाय २ ॥ ॐ ग्रा म्बर्क ॥ ॐ रु मन या गाय २ ॥
ॐ काष्ठ ॥ ॥ य २ व स्रु का हाय ॥ ॥ ग
गा रु ग रुधि ॥ ॥ क्रय द वा य ग वा हा व ध
म निया न्म याम न्या स याय ॥ ॥ धर्मा न्नि द व
न्या स ॥ ॥ ॐ य धि वी न्म याय २ ॥ ॐ य धि वी
न्म या धि य य व द्म ॥ ॥ य २ ॥ ॐ नृय न्म या
य २ ॥ ॐ नृय न्म या धि य य विष्णु य २ ॥ ॐ नृय
ॐ नृय न्म याय २ ॥ ॐ नृय न्म या धि य य नृदा
य २ ॥ ॐ नृय ॥ ॐ वाय न्म याय २ ॥ ॐ वाय न्म
धि य य न्म याय २ ॥ नारि ॥ ॐ नृका ग

गत्वाय २॥ ॐ आकाश गत्वा धियय सदाणि
 वाय २॥ मूढि ॥ ध्वननी आकृति वियावसक
 नादत्वाय ॥ ध्वनसकलरुनागसासु स्थितिनि
 संलानकमनयाय ॥ ॥ गंगाजीवन्यासः ॥
 मूलमनुनं कुरुलिश् वियावत्वाय ॥ वद ॥
 ॐ यूनाकूत्रस्य ॥ ॐ निजिर्वन्यासः ॥ ॥
 कलमियूजा ॥ धनायूजायाय ॥ चन्द्रनादि ॥
 धूपदीया ॥ जाय ॥ स्नात ॥ अग्न्यादि ॥ ॥
 आकृतिविय ॥ गायकाय, शुवाकाय ॥ वद ॥
 ॐ स्त्रीभारुववी ॥ ॥ दहल्यादिस्वष्ठानया
 दावकर्मिन्ववज्ञाय ॥ दानास्त्रयनथयव
 ना ॥ खनस्त्रयन ॥ वद ॥ ॐ नमोभारुयूगभय ॥ ख
 सिसदिक, द्यालसुलंनं गव, डाहनीनं गव, क
 लशथयावग ॥ दवयादान, वाहनीनं गय ॥
 दानस्त्रयनं ॥ ॐ वक्रयक्र ॥ गदास्त्रयनं ॥
 ॐ नमस्त्रय ॥ ॥ गुरुस्त्रिन्वाक् ॥ वाक्त्रय
 यजमानाचार्य विश्वकर्मा सरु रुक्मनस्य
 भर्तु ॥ अथवालाहकल्य ॥ ॐ नन्दनन्दिना
 र्यं सांत्वामगुस्त्रययाम्यहं ॥ अथस्त्रं सन्निष्ठ

नाहं यथावदाचन्द्रनामकी। आयुः कामप्रिय
 नन्ददहिल्वसर्वदानृणां। अस्मिन् नृणां त्वया
 कार्या। यासादयत्नः ४ त्वया॥ यावच्चन्द्रश्च
 सूर्यश्च। भदिनिसफसागना। यावदाकासग
 ज्ञायनावर्त्तयस्मिन्नारुयावद॥ ॐ ह्रीं नारुष्टी
 ॥ ॥ यजुजायायविधिः ॥ ॥ यं च सूर्यका
 नवयावरुपावज्जुनिविय्यावत्वाय॥ वद॥
 ॐ नमो नारुष्टीभ्यः॥ ॐ वक्रयद्वा॥ ॐ नमस्तु
 ॥ यूनज्जुनि॥ ॐ मनाङ्गुनि॥ ॥ च नूरुम
 नि॥ यजमानयं ह्रीं॥ वाक्मनयजुः॥ गन्धिकाय
 द्विक॥ यवधन्यादिषोडशम॥ विधिर्थाय
 ह्रीं धूनक॥ यजमानञ्जुरिषक॥ पूर्णचन्द्र॥
 साक्षात्साय॥ कोमानायाग॥ ॥ ॐ निदाने
 ह्यनयचमक्रमविधिः॥ ॥

अथ चूनि कासिकायविधिः॥ ॥ वाक्मन
 आचार्य यजमान कर्मि वाला मालकासा
 मप्रिकाशवकालवना॥ ॥ जिवमजिवसा
 य॥ विष्ठाङ्गमरुणास्तूला समादार्यकवर्णि

२५

नानिमा वलौधन्या सिकायुधनदाऊले
 ॥ ॥ धयनिरिह ॥ वृद्धावालकविम्बानि. वि
 दकोलकसंधयशसूषिलिष्टकं व्यामंग
 लायठलजालकं। द्वादशोत्तमहाया. सर्व
 स्मनषुवर्जिताः॥ धयिंश्मरिह ॥ ॥ रिंजू
 लदावकर्मयाय ॥ ॥ क्लानदृष्टिनसाय ॥
 अकृगनगाउंथ ॥ ॥ विधिधर्मआचार्यो
 वलिचक्रयागविय ॥ धूय. दीय. जाय ॥ स्फाप्र ॥
 वलिविमर्जनं ॥ ॥ गिमादायकं वाय ॥ ॥
 गिमाकाया लनयासंगय ॥ ॥ गिमासूय
 जा ॥ गिगल्वनाचमय ॥ गुनूस्मवर्णन्यासाद्य
 यागयूजा ॥ आत्मयूजा ॥ गिमासूचगुःसर्क
 न ॥ ॥ रुसीजलियादावक्रमा ॥ धानिक
 नननममुख्यंदवशुषुवनस्यन। संक्रमाना
 दिनःस्फुना. कुषावद्यन्मनारुनी ॥ क्रमस्व ॥
 स्नान. चन्दन. यक्षायवीन. यूस्य. धूय. दीय.
 नेवद्य. जाय. स्फाप्र ॥ यंचसूत्रकानचय ॥
 नागिसममावियावक्रमायाय ॥ ॥ उंदवा
 र्थयद्रुवत्कार्यो. यष्माकमयिनद्रुवन्। नमा

जयति नगाय. पिङ्गलाय महात्मना वामा
 यविश्वनूयाय. स्वप्नाश्रिय नयनमः॥ स्वप्न
 कंयमं नथं. सर्वकार्यसमयनः॥ कायासिः
 द्विविधस्यामि स्वत्यसादात्मरुच्यनः॥ ॥
 ध्वक्कृधनादन॥ स्वप्नसाय॥ रिद. मरिद॥
 मरिन्नाभवसाय॥ सायरिनसाधुर्लिका
 य॥ भवलक्षणमदसादस्वप्नसाकियाय॥
 ॥ ॥ सन्निनियधूनक॥ याकायाव. यंवा
 मृगस्तानयाय॥ चन्दनादिन॥ ॥ अस्म
 नुनकयनय. या॥ कस्मिजयनयगभयणी
 न॥ ॥ कस्मिपूजा॥ या. नवज्ञाय॥ ॥ ॥
 नारिमूखनसिमादनक॥ कस्मिन्ना॥ ॥
 वावनञ्जाङ्कायाय॥ ॥ धर्नलियूनाः
 रिगनसहिगयाग्रायादरु॥ ॥ ॥ अकश्च
 यसदवयाञ्जुनूयनवलिवियावरु॥ वा
 नानरुवगजानकद्वयवलिहलमान
 ॥ ॥ ॥ लंभास्यदूकाय॥ ॥ ॥ अन्ननसंमयिधि
 नागृहीता. दानूरुवत्सर्वसूखावहासा
 नस्मान्ययत्ननय॥ अकभग. दनयवश

सकलं हि कुर्यात् ॥ ॥ ॐ नित्या नृगृह न वि
धिः ॥ ॥ न कन विया च कर्मिय निर्यन
आचक ॥ भन चास्य नया ॥ ॥

अथ वूलिका स्नायन विधिं लिख्यते ॥ ॥
विधिर्धर्मा न का वा सथ ॥ या ना सन चाय ॥
नायन शाल ॥ गिव शकि कल ग. वलि थ
नल ॥ यया अनू नूयन माल क. गभ य स. को मा
ली. सगु णा ॥ थ न वा सथ ॥ ॥ वि द्य रु न
न वलि विय य श्र ग या दि ॥ गिव शकि रु
म ना दिय रु या य ॥ ॥ दृ ना रु मि ॥ गिला
रु मि ॥ कल ग य मि ह्वा र्ग र्वा रु मि ॥ ग ना य
थ क र्मा ॥ ॥ य रु म धु य या णी ग भ का व
ग. स्नान म धु य व न ॥ सु क्क लि मि ॥ स्नान आ
ल न ॥ अं जल म ल ॥ थ न आ का व व न ॥ च
व का वा या व द थू स का ठाल. कृ क न न य ॥
यिव समु द कल ग न दू य क ॥ दूर्ध्व न क ना
ग ॥ दक्षि ण नी ल ना ग ॥ यश्चि म (ध्व न ना ग
॥ डरु न या न ना ग ॥ दि ग श या ली ख य श्व र्म

पा २

नया॥ पूजा॥ न्यासादि॥ अर्घ्यपात्रपूजा॥ ॐ न
 त्वांमि॥ आसनी॥ ॐ दधस्य स्वा॥ अरुद्रकणी॥ पू
 र्व॥ ॐ श्रानसमुद्राय नमः॥ दक्षि॥ ॐ दधि
 समुद्राय नमः॥ यज्ञि॥ ॐ ॐ रुद्रसमुद्राय
 नमः॥ डर्कन॥ ॐ गरुडक समुद्राय नमः॥
 ॥ वद॥ ॐ समुद्रं श्रुत्वा॥ गलिलस्य मधुयून
 नार्यगिगमाखमाना॥ ॐ द्यायावकीवृषस
 वनाजगन्नाथादवीनिहमारुवन्तु॥ ॥

५ ॐ समुद्रां स्वावागाय स्वाहा सन्निवाय स्वावा
 गाय स्वाहा नूनाधृष्याय स्वावागाय स्वाहाय
 मिथिष्याय स्वावागाय स्वाहा नूवस्य स्वायत्वं
 वागाय स्वाहा गिमिदाय स्वावागाय स्वाहा ॥
 ॐ समुद्रादूर्मि॥ ॐ समुद्रासिनरुस्वानाद
 दानू॥ गमू मथारु नहिमावाहि स्वाहामा
 नूनामनूनाङ्ग ॥ गमू मथारु नहिमावा
 हि स्वाहा वस्यूनसिद्वस्वा शू मथारु न
 हिमावाहि स्वाहा ॥ ॥ मूर्ति का॥ ॐ ध्यानं
 यथि॥ सर्वोषधी॥ ॐ याडाषधी॥ वृत्रिका
 स कामा॥ ॐ दधदधजगन्नाथसृष्टिर्माहा

नकानकः॥ निर्मिगार्थत्वाद्यदवत्त्वदीया
मूढचगमा॥ न्यूनांगस्त्वधिकीं गमया॥ वृ
क्षवायिकवः॥ कचिन्ना॥ कनुमरुसिक्त
वै॥ कम्पनाम्यनमध्वन॥ यजमाननन
जलिहस्तनकनन॥ सिलिदास्यमान
या॥ ॥ गगानिर्मकुदिलाकायवानक
त्वा॥ ॥ सक्ताया॥ उंकाष्टुत्काष्टुत्वा॥ च
नन॥ उंदीर्घायत्वा॥ काठनवय॥ गुल
नानहय॥ ॥ गगानिकास्तान॥ यज
माननलीखयक॥ वाक्कननमृलिक
दि॥ उंनत्वायामि॥ गिलादरुनी॥ उंत्वम
प्यदुरि॥ गजदकमृलिका॥ ॥ उंआर्थ
दवामधूमनीनगृह्यन्तुस्त्वनिवाजस्व
चिगाना॥ याहिर्मिआवब्रह्मावयुषि
न्यारिनिद्रमनयनत्वावागा॥ यात्वा
त्वा॥ ॥ उंअवरुथनि॥ नाजद्वान॥ उंम
हीद्यो॥ यद्वनायमृग॥ उंआर्यंते॥ गम
गृह्य॥ उंवब्रह्माष्टुलं॥ समिधमृ॥ उंअ
ध्वकान॥ गगामागि॥ उंनाजकमध्व॥

वाल्मीक॥ ॐ ह्यसुमरिका॥ ॥ ॐ वः
क्रदास्यना॥ कश्चदिक॥ ॥ ॐ वक्रवध
तूनायात्मनः स्वनस्यया वृषनमिथूनसं
गमा॥ गुत्रार्धनादिगमनार्धं गत्यावमा
निविनरुयूनामि॥ मलादक॥ ॥ ॐ रु
विषमगी॥ यूथ्यादक॥ ॐ यारुलिनी॥ रु
लादक॥ ॐ दीर्घायुस्त्रा॥ गमुलाद॥ ॐ ग
न्धदाना॥ गन्ध्यादक॥ ॥ ॐ ॐ दसाय४
युवरुणावद्यश्च मलश्चयन्॥ यच्चारि
द्वद्वाहानुर्गयश्च षष्ठ्यश्च अरुणी नृणां॥ नृ
यामागस्मादनस४ यवन्मानश्च मूश्च
उ॥ नृसादक॥ ॥ ॐ ॐ मभमगी॥ गंग
जल॥ ॐ ह्यश्च दकस्नान॥ ॥ ॐ यय४
युथिव्या॥ दूदस्नान॥ ॐ दक्षिकाया॥ विनि
॥ ॐ नञ्जसि॥ यल॥ ॐ मधुवागा॥ कस्मी॥
ॐ नम४ गीरुवा॥ साखन॥ ॐ वयु४ कल
लभदकस्नान॥ गन्धश्च नसगयाव॥ ॥ ॐ
गन्नादवी॥ पूर्वकस॥ ॐ यश्च नद्या॥ द
क्षिणा॥ ॐ डयकन॥ यश्चिम॥ ॐ आथाः

दिष्टा॥ उरुन॥ ॥ उंजाडाधधीयूर्वाजा
गादवस्यमिरुगंयुनामनेनूवन्नामह
०सर्गधामानिस्तकच॥ सुर्वाधधी॥ ॥ उं
स्वस्तिनः॥ उदक॥ उंयविश्व॥ यं
गया॥ उंवसा॥ यविश्व॥ गरुधधन॥ गं
खादक॥ नस्यगयविश्व॥ नृनिगुक्कस्ना
नविधि॥ वैश्वकानयारुस्तयूजा॥ चूनक
सदृष्टिवियक॥ उंनचक्रुदवदिनी॥ दृष्टि
वियथयसविष्णुरागदधुगुयाचनक
गुविश्व॥ ॥ नासाकश्चननचूनकासव
य॥ दनसायाननमदनसाकायाननः
दिन॥ यंयसुगकानदिन॥ ॥ चन्दना
दिस्तवनविय॥ ॥ मरुजालनिय
निष्टा॥ उंयूर्वचन्द्र॥ द्रक्तनकन॥ विम
रुण॥ उंउदयनम॥ उक्तान॥ उंउग्रिस्त
नाजसासुदीतीनिप्रजुययय॥ साममि
द्वचमसुर्ग॥ चूनकायाग्रायाय॥ मधुयं
उाम्य॥ वाक्कनस्वस्तिवाचनीय॥ ०
॥ नेमस्यदालसलीमाय॥ ॥ वदनीक

नमनदक्षिण॥ थलिलनडरुन॥ चूनि का
नय॥ रुदयोरिकास्माय॥ ॐ अना रुदा॥ ॥
चूनि कास्मायन॥ ॐ नमो रूवाय॥ ॥ चूनि
काया ज्ञेयस्यार्थास्मायन॥ गृहाय कनना
दि॥ वद॥ ॐ काष्ठात्का॥ निद्रा कलशस्माय॥
ॐ वायव्ये वाय॥ वसुधैव कुटुम्बकम्॥ ॥ कूणद
यनलक्ष्म चूनि कास॥ यादन गिननी॥ गि
ननयादनी॥ न्यासयायदवयादान॥ लक्ष्म
श्च॥ याद॥ ॐ रुखाहा॥ ॐ कौं आत्मनत्वाय
वद्वलनमः॥ ॐ वद्वलयल्लोनी॥ ॥ रुद
या॥ ॐ रुवः॥ ॐ कौं विद्यानत्वाय वि
सुवनमः॥ ॐ विष्णुनत्वा॥ गिनस॥ ॐ रुवः
खाहा॥ ॐ कौं गिवनत्वाय सदा गिवायनमः॥
ॐ गिवानामासि॥ यूनः॥ गिननयादनीका
पिसीह॥ ॥ यूनः॥ धमनुनी आदुनि विस्वा
त्वाय॥ वदनी॥ लाम, विलासन, काथिसी
त्वाय॥ ॥ दवयामूलमनुलसायानलक्ष्म
धनयावसजीवयूकायाय॥ ॥ ननाद
गकिया॥ यश्चसूत्रकाडादाव॥ आदुनि॥

स्य

[illegible]

म४र्गरु॥ अनिननखाय॥ ॐ यजायन
॥ सत्तावविय॥ ॐ नववाय॥ हामान
मल॥ वध्मवनचुचक॥ जाक॥ दाम॥
ॐ दयागुमनजागार॥ ॐ काधुक्का॥
क्कायरुष्टिदुन॥ ॐ नि॥ दगक्रिया॥ ॥
ननारुगमुष्टि॥ ॥ क्रयंदवायगवा
दावधमनियान्मयामन्यासयाय॥ (थ
नीलिदवन्मास॥ ॥ ॐ पृथिवीगत्वाः
य२॥ ॐ पृथिवीगत्वाधिययवक्र॥ (ध
२॥ याद॥ ॐ आयनत्वाय२॥ ॐ आय
नत्वाधिययविष्णुव२॥ युक्ता॥ ॐ न
ऊनत्वाय२॥ ॐ नऊनत्वाधिययब्रह्मा
य२॥ रुदि॥ ॐ वायुनत्वाय२॥ ॐ वायु
नत्वाधिययवृक्षेत्रायाय२॥ नारि॥ ॐ
आकाशनत्वाय२॥ ॐ आकाशनत्वाधि
ययसदानिवाय२॥ मूर्ध्नि॥ ॥ यून४
यचविगगिनत्वन्यास॥ ॐ क्रां॥ आयन
त्वाय॥ आयनत्वाधिययवक्र॥ (ध२॥
ॐ क्रां॥ कामूर्धय॥ कामूर्थाधिययवक्र॥

यश॥ॐ द्रौ वक्रि मूर्त्यै वक्रि मूर्त्या धियः न
ययगुयनयनम॥ॐ द्रौ यजमान मूर्त्यै
यजमान मूर्त्या धियः नयडग्रयश॥ॐ द्रौ
अर्क मूर्त्यै अर्क मूर्त्या धियः नयनूदा
यश॥ॐ द्रौ जल मूर्त्यै जल मूर्त्या धियः
नयरुवायश॥ॐ द्रौ वायु मूर्त्यै वायु मू
र्त्या धियः नयः ॐ गमनायश॥ॐ द्रौ ॐ न्द्र
मूर्त्यै ॐ न्द्र मूर्त्या धियः नयमरुदवायश
॥ॐ द्रौ रव मूर्त्यै रव मूर्त्या धियः नयहीमा
यश॥ ॐ गियाददिना ह्यार्कः ॥ ॥ॐ द्रौ
विद्या नत्वाय विद्या नत्वा धियः नय वि
भुवश॥ॐ द्रौ काम मूर्त्यै काम मूर्त्या धियः न
यसर्वायश॥ॐ द्रौ वक्रि मूर्त्यै वक्रि मू
र्त्या धियः नययगुयनयश॥ॐ द्रौ यजमा
न मूर्त्यै यजमान मूर्त्या धियः नयडग्र
यश॥ॐ द्रौ अर्क मूर्त्यै अर्क मूर्त्या धि
यः नयनूदायश॥ॐ द्रौ जल मूर्त्यै ज
ल मूर्त्या धियः नयरुवायश॥ॐ द्रौ वायु
मूर्त्यै वायु मूर्त्या धियः नयः ॐ गमना

य२॥ॐ क्रांॐ न्द्रमूर्त्यै न्द्रमूल्याधिय
नयमहादेवाय२॥ॐ क्रांॐ खमूर्त्यै खमू
ल्याधियनयलीमाय२॥ नाद्यादियीवानं
॥ ॥ॐ क्रांॐ गिवनत्वाय गिवनत्वाधियन
यनूदाय२॥ॐ क्रांॐ कामूर्त्यै कामूल्याधि
यनयसर्वाय२॥ॐ क्रांॐ वक्रिमूर्त्यै वक्रिः
मूल्याधियनययगुयनय२॥ॐ क्रांॐ यजमा
नमूर्त्यै यजमानमूल्याधियनयउग्रय
२॥ॐ क्रांॐ अर्कमूर्त्यै अर्कमूल्याधियन
यनूदाय२॥ॐ क्रांॐ जलमूर्त्यै जलमूल्या
धियनयरुवाय२॥ॐ क्रांॐ वायूमूर्त्यै वा
यूमूल्याधियनयव्रीहनाय२॥ॐ क्रांॐ न्द्र
मूर्त्यै न्द्रमूल्याधियनयमहादेवाय२॥
ॐ क्रांॐ खमूर्त्यै खमूल्याधियनयलीमाय२
॥यीवादिललानां॥ ॥ॐ क्रांॐ वक्राक्षु
मूर्त्यै वक्राक्षुमूल्याधियनयवक्राक्ष२॥

ॐ क्रांॐ कामूर्त्यै कामूल्याधियनयसर्वा
य२॥ॐ क्रांॐ वक्रिमूर्त्यै वक्रिमूल्याधिय

नययगुयनयश॥ॐ कौयजमानमूर्कथय
जमानमूर्कधियनयडग्रयश॥ॐ कौअ
र्कमूर्कथ.अर्कमूर्कधियनयनूदायश॥
ॐ कौजलमूर्कथ.जलमूर्कधियनयरुवा
यश॥ॐ कौवायमूर्कथ.वायमूर्कधियन
यशीगनायश॥ॐ कौवृन्दमूर्कथ.वृन्दमू
र्कधियनयमहादवायश॥ॐ कौखमूर्क
थ.खमूर्कधियनयरीमायश॥गिनसाः
र्द॥न्यसु०॥ ॥धननञ्जदुगिवियावः
त्वाय॥धनसकलदनागसासृष्टिथिनिर्
हानकमनयाय॥ ॥गगादवानिकंग
त्वा.अर्थयागसमन्विन॥यथाविधानं ॥
नगुद्यादियागयुनिष्ठानं कानयन॥विष्णु
नमलवासीनया॥ ॥यूनःकधुनिकी
गत्वा॥आदुनि॥गुवाकाय॥यूष्म॥वद॥
ॐयूनाक्कूनस्यविहयाविनयिनूदादा
ययथिवीअरीवदानूम॥यामेनयगुन्द
मसिहवधरिहूमध्वीनासाःअनूदिग्यः
यजर्क॥आकृणीनासादयद्विषगावध
सि॥ॐनिजिर्वन्यासः॥ ॥धवयादः

नयचवलिविय॥ उंगणनीत्वा॥ उं
मानुदाय॥ उं नमावा॥ उं अम्बिः अम्बि॥
उं यागव॥ ॥ यूननाकृति॥ उं यंचरु
गणधयामि॥ उं वाचनकुशमिः य्या
नचरुः (अरुः नारिः मरुः
यायुः चनिद्राकुशमि॥ उं नमस्तु
आय्यायगां वाक् य्याः चरुः ॥
यरुः कुनयदाहिनकः ॥ आय्यायगानि
य्यायगानकः कुशुगमहाकाः ॥ डावध
कायस्वस्वधिनमेन० हि० सी० ॥ ॥ यं
चरुगणधर्क॥ उं यंचरुगणायनी॥ उं
आयुर्दानाय स्वाहा॥ उं आयुर्धनकः
ल्यगाः स्वाहा॥ य्याः यानाः वानाः दा
नाः समानाः चरुः (अरुः वाक् मनाः मा
ताः वक्ताः अग्निः स्वर्गः नः पृथुः यक्षा
यः नकल्यगाः स्वाहा॥ आयुर्धनी॥ ॥
नगः सययगवन्मासः ॥ उं रुः अग्निर्द
वगागयणी चन्द्रसस्वाहा॥ उं अम्बिः अ
म्बि॥ नाहो॥ उं रुवः डक्षिः कुन्दवायुद

वगायशः॥६॥ॐ नववायु॥२॥ॐ ह्रस्व
 नूयुन्द आदिर्यदवगायशः॥ॐ आदिर्य
 गरुं ययसासमहिसरुमंयुनिमांवि
 ष्वनूयम्पायनिवृद्धिरुनसामारिमः॥५॥
 ह्याः॥गगायसकृद्गुहियीयमानः॥३॥
 कः॥ॐ मरुः॥वृहन्नुन्दवन्वदव
 गायशः॥ॐ वन्वदस्थारुं॥मरुः॥४॥ॐ जन
 ॥यीकिचुन्दः॥ॐ आदवगायशः॥ॐ वृन्द
 सानेनावृहस्यनिदकिष्मयः॥४॥यूनः॥
 उतामः॥॥दवसनानामरिहः॥३॥नीनाः
 ॥यनीनामनूगायन्त्रम्॥५॥ॐ वि॥
 ॥॥ॐ नयः॥विष्णुयुन्दवृहस्यनिदवगा
 यशः॥ॐ वृहस्यनः॥ललानः॥४॥॥ॐ
 सयः॥गगायन्त्रम्॥५॥ॐ वि॥
 ॥ॐ वि॥॥दवस्यनः॥४॥ॐ वृन्नागस
 स्कम्॥॥वि॥॥नायः॥४॥ॐ वृन्नागस
 वृन्नागस्यस्यस्य॥४॥ॐ वि॥॥यूनः॥
 दयामूलमनुजवियः॥५॥ॐ सयः॥
 ॥ॐ सयः॥यूनः॥४॥ॐ ननादव

मरुत न्यासः॥ आदितिविष्णुशुक्रः
या॥ ॐ क्रौंचदयाय स्वाहा॥ ॐ यः कुंभ
शा ददया॥ ॐ क्रौंचि न (ग) स्वाहा॥ ॐ सह
सर्गार्थः॥ नित्र॥ ॐ क्रौंचिखायेव षट्॥
ॐ अहं सह॥ निखा॥ ॐ क्रौंच कवचाय द्रु
॥ ॐ अहं ४ निष्ठा॥ कवच॥ ॐ क्रौंच नृप
याय वषट्॥ ॐ विशाक्त॥ नृप॥ ॐ क्रौंच
प्रायस्वट्॥ ॐ नमस्तु न॥ अमु॥ ॥
ॐ निवद सती न्यासः॥ ॥ थ नाचूः
निकायूजायाया॥ विधिर्था दवयादाना
धूय दीय जाय॥ स्नातृ त्वयाय॥ ॥
यं चारिष कयूजा॥ ॐ यारुलि॥ रुल॥ ॐ
यून ह्वा॥ यय॥ ॐ मना क्रुनि॥ लाजा॥ ॐ
ॐ उन्नत रुच्य काम्य चन्द्र शुभ निदिनि
सुन ह्वनि महि विष्णु नि॥ वना न श्रु ग्या
नामानि दव श्यामा सुक न मुना न॥ ॥
व्रुमाष्ट॥ ॥ ॐ निवाना मा॥ अक्षः
न॥ ॥ थ नाव सुसि चू नि का वि ण ऊ
न या दव र्थ माय न क॥ ॥ थ हा वा

काव. वसुनसि सचाठ. नवकाथसु. न
ल. बाहि. धाउ. डायधी. लाहा. कथस
नस्य. नलन्यासयाय ॥ ॥ पूर्वकाथ
स ॥ रुन. रुविनाल. लू. उगलहा. यूवाः
॥ ॥ अग्रय ॥ सूर्यकानि. गिङलम
नगील. चटरूलि. का ॥ ॥ दक्षिण ॥
ॐ दुनील. न्या. वीगममनि. नकचन्दन.
हामल ॥ ॥ नैमल ॥ मरुनाल. कीस.
सुवर्णमाक्षी. अंगुनि. करुगुति ॥ ॥
यश्चिम ॥ मुनिडाहा. याधन. घाखधुमु
ग ॥ ॥ वायव्य ॥ यथनाग. लीठि. या
नयिनू. रुकालसि. र्यंका ॥ ॥ डरुन.
यमनाग. कंसनाद. गंधक. कूट. का
लाठ ॥ ॥ ग्रीष्मन ॥ वयाल. क
ल. रियनि. गखषुधि. र्यंका ॥ ॥ म
ध्यावसुनसिया. ऊव. खवसुनया ॥
सर्वनल. सर्वधाउ. सूरिक. सर्वविधी.
सर्वद्रव्य. अष्टबाहि. सुवर्ण. लयनडा
हायन ॥ थववृत्तानूसा. ननरुकारु

न्दानधना ॥ कास्तूयजायाय ॥ यूर्वा
 दिष्णीमनार्क ॥ ॐ ह्र्वायश ॥ ॐ जूग्नः
 यश ॥ ॐ यमायश ॥ ॐ नेमहायश ॥ ॐ वः
 नूष्मयश ॥ ॐ वायवश ॥ ॐ कुवलायश ॥
 ॐ ण्नीमनायश ॥ ॥ वद ॥ ॐ गानानमि
 द ॥ ॐ अग्निर्मू ॥ ॐ यमनदहं ॥ ॐ यनद ॥
 ॐ ह्रमम ॥ ॐ नववायू ॥ ॐ कविदंग ॥
 ॐ अरित्वा ॥ ॥ मध्वयजन ॥ मूलमकु
 ष ॥ वंद ॥ गितानामा ॥ ॐ द्यामाला ॥ धू
 यदीयजायस्तु ॥ ॥ यनः कृष्णि
 कीगत्वा ॥ आदुनि ॥ गायकाय ॥ ध्रुवान
 यूर्वा ॥ वद ॥ ॐ हिलरुवद्वी ॥ व्यायालि
 सरुथरुवाना ॥ हिनरुवा ॥ ध्रुवानः
 कायास्त्यिस्त्यनय ॥ ॥ ॐ जूयवाना
 रुकल्यस्यादि ॥ ॐ वूलिकलमरुग्नर्
 दुर्दलिंगलिवस्त्या ॥ प्रासादाद्विद्वैद्वै
 ननूयनमास्तुका ॥ नादुग्ननिर्जयीनाजा
 सुखिनश्चयजास्तुथा ॥ स्वकलवृद्धिनाः
 निरूपिस्तुकिना ॥ गयमवचायथगिव

सुधाचूलायधुलागधुगिध॥ गिव
 चूलीसर्मयूषं सर्वकामरुलप्रदं ॥
 उंयगिधिनासिदवसु सुयगिधिरुर्वीचि
 नं। सानिधुयगियधन ऊऊमानानव
 दय॥ गन्नामुसर्वलाकानां गन्नागण
 सुधेववाऊऊमानसरुधायं यस्ययुग
 ह्यवांधव॥ नकं उंसर्वदवायदगधाय
 नभामुग॥ यावदुगयगसुधधुऊव
 लवर्धिन॥ गावदधसुधमागिधिवला
 कमहियग॥ रुमलकयदाननयूषं
 काठियुंधुजा॥ जावचदुस्यसुधस्यभद
 निसकसागना॥ जावगुजाकागगंभय
 गावत्वंकुहिनारुव॥ वद॥ उंहिनारु
 ववीधं ॥ ॥ यंचारिषक॥ रुल॥ उंया
 ४रुलिनी॥ सुसा॥ उंयूनस्त्रादि॥ गाय॥
 उंमनाहूनि॥ उरुमा॥ उं उरुनका॥
 स्वान॥ उं उं दं विष्णु॥ अकन॥ यनाय
 स्वाय॥ उं अस्माकमिन्द्र॥ ॥ यंचसु
 प्रकानचूनिकां सचस्यैरुयावज्ज

कृतिविह्यं त्वाया॥ वद॥ ॐ शिवा नामागि॥
ॐ द्यामाला॥ यनः॥ कृति॥ वद॥ ॐ मना
रुति॥ यनिह्मा॥ ॥ मात्रकादिगयूजाः
काया॥ ॥ धनाविधिर्धनदवयूजा॥ विधि
र्धनयामृगस्ताना॥ चन्दनादिना॥ वदनं
॥ दवयादनविधिर्धनयाया॥ धूय दीयर्ज
या॥ भ्राता॥ जगन्धरादि॥ ॥ वनरुहाम
॥ यजमानयनिह्मा॥ ब्राह्मणयूजा॥ ॥
भक्तिकयूक्तिक॥ यवधन्यादिषीहिरा
म॥ विधिर्धनयर्जधूनक॥ यजमानजुः
रिषक॥ ॥ यूर्जचन्द॥ ॥ साक्षीध
या॥ ॥ कोमात्रीयागा॥ ॥ ॐ निवृ
त्तिकायनिह्माविधिः समाय॥ ॥
चूलिकायायमानदवलयायमाननः
वाथयदावादावाप्तवदादतवहिरु
ता॥ ॥ दूदानयायमाननदृक्कि॥ यवध
खरागिनयायमाननरुगा॥ ॥ चारु
गमालककर्मि॥ आवायकाकदवाव
दमालकक॥ धनसर्जयुलिनस्यडयन

न॥ ॥ द्वात्रया रागयमान न स्रवाथ
य॥ थकन लिचन कथन लिगल॥ थ
कसकलभकावनमूल॥ वाथकयान
गुवासुचिवाग॥ ॥ वसुत्रसिद्धिहान
उक्त॥ ॥ थयालखानयुवाला॥ ॥ द्
थयायालद्ववनीन॥ चूलिकाया वाथय
वस्रवासुचिवाग॥ रियाचूलिकाभाक
याययागा॥ ॥ चूलिकायायूनभाकया
ययागादावासुचिवाग॥ चूलियून॥ न
यदवमनयदव॥ ॥ गहूलियालक
नद्वात्रयमानन॥ ॥ चूलिकाथनस
ननेकाकायजियकन॥ विनाधमनव
॥ ॥ रुलजियककायमान॥ चूराम
निनवचिनकायाचक॥ दक्षिवियवि
ब्रूरागस॥ गहनककाय॥ लकनश्च
न॥ ॥

नकसं पंचमूला भूतनादाव
हकायुत्रं नलयाय ॥ हकायाध्वनयाय २

रघोगणायनमः ॥ अथमूर्धन्यः
कलशध्वजावलाहनविधिः लिख्यतां
अथ गिजवसाधनविधिः ॥ नकसक
लभर्चनयाय ॥ वासयविधिः ॥ गुरुं
रुयाकलगाय ॥ थयखवसचाकं सुती न २
धर्मदकः ॥ वलिमालकः ॥ झारान
मालका कसिस्नानडावधीमालकवास
था ॥ विधिध्याय ॥ वाकलग्ना
नडावधीथयश्चदनयूजा ॥ ॐ याडा
वधी ॥ वाक्कयूजा गमनिक यूमि
क ॥ यथकर्मसा गिजलकायावनि
र्मकनादियाय ॥ मर्गं गुरुवाप्तगुणन
वाय ॥ स्नान ॥ गिलादकं ॥ ॐ गला
यामि ॥ गीधर्मदक ॥ ॐ यमीधर्मनि ॥ यं वाम
गा यं वगया ॥ वदनं गंभमृत्तिका नव
या ॥ ॐ अश्वकान्त ॥ गंभदक नखय ॥
ॐ मम्मगंगा ॥ कृष्णदक ॥ ॐ वनूना
ध्यातुं ॥ रुलादक ॥ ॐ यारुलिनी ॥ गंभ
दक ॥ ॐ गन्धदानी ॥ वाक्कादक ॥ ॐ वारु

यश्चम॥ सद्योदक॥ उं यनीर्धनि॥ गीवा
दक॥ उं यविशेष॥ मूर्ति कलगास्ताना॥
उं वसा४ यवि॥ काया रु नय स्यीन॥ कूश
कायावलाधन॥ ॥ चतुस्यमचनन
काचन्दननदययामूलमनुवायशि
जलस॥ चन्दनादि सयुन यूजन॥ ॥
विश्वकर्मायूजा॥ दक्षिण॥ आहान
लवङ्गाय॥ गिजन लवङ्गाय॥ वाक्
॥ उं विश्वकर्मानमसुहृन्नेलाकसु
ष्टिकानकहायथयूगकनाह्याच वि
श्वकर्मानमासुहृन्नेलाय॥ द्या न
कयर्क॥ द्या नकयाथयसकसिन्धुया॥
गिजनचूनवानवलिप्तकाय॥ जूनस
कल्या दक्षिण वाचन॥ वलिविस्तर्जन॥
कलभहिषक॥ ॥ गिगिजनसाध
नविधि॥ ॥

महामद्युयगमयविधि॥ मद्युयया यश्चि
मकसकलभर्चनवासया॥ ॥ गारुड

यकलसगमठा ॥ गगनश ॥ वलिमाल
का **स्नान** यादाना ॥ गघ. गमग्रग. कोमलि.
कवा ॥ **धनवध** या ॥ ॥ कलयायालिवध
धन गय ॥ रुकस्नान. एका. यल्का. गुलका.
सासक. अरुण. यस्त्रनल. श ॥ लंडाहा
न. अथवा रुडयग्रसवाया ॥ कायदकाया.
थवरवाहान. दयक. दूधूकाययादा ॥
ऊयमानन. यादयका नदी. सूर्यार्घ्य ॥ **यना**
हिग. जासि. आचार्य. यादार्घ्य ॥ ॥ जयर्म
न. पूष्यराजन. अद्यादि ॥ वाक्का ॥ मधुपा.
नमून. कलधमर्चननिमित्तार्थ. पूष्यराज
नैसमर्पयामि ॥ ऊधमदवस्यलूक ॥ सिद्धि
नमुक्रिया नमूत्यादि ॥ ॥ मधुयगम
यथमयसवन ॥ न्यासादिनिनिर्वाहदि.
चउसस्का न ॥ नमस्कृत. अमून. अण्णय
दिमध्मार्क. वास्वाथ ॥ ॐ क ॥ अम्मायरु.
६ ॥ भववान. ॐ क्रादययायनम ॥ भव
वानथन्या ॥ ॥ धनीलि. रुवकवलिक
यागकायाव. वलिविय ॥ ॥ गुनूस्मन

नीं॥ न्यासः॥ वमीसाना॥ जलयात्रा॥ अर्घ्य
 यात्रयूजा॥ श्रीसर्वलोकानावाहन॥ शि
 दवा॥ धाम्नि॥ ॥ ॐ न्यादि॥ अस्मिन्नाम
 दि॥ ब्रह्मान्यादि॥ विष्णु॥ नागाँनक
 गिव॥ यूजनं वलिं॥ सर्वस्य॥ स्वाहा॥ सर्व
 विष्णुकृष्णस्वाहा॥ ॥ रुद्रकादि॥ ववूः
 सति॥ अजलादि॥ ॥ स्वाकमलवलि॥
 धनं विद नयूजा॥ ॐ अस्मिन्नामा॥ ॐ धर्म
 दृयावाना॥ ॐ नमो ववूः॥ ॐ अस्मिन्
 विक॥ ॐ गनानीत्वा॥ ॐ ज्ञानवदस॥ ॐ वि
 धनवा॥ ॐ अस्मिन्नामा॥ ॐ धर्मदृग्यावा
 ना॥ ॐ नमो ववूः॥ ॥ धृय॥ दीयज्ञा
 य॥ स्वाहा॥ ॐ पूज्यन्दि॥ अस्मिन्नामादि॥
 नय्येत्वा॥ ॥ धर्मवलि॥ विद्याव॥ चानकाः
 स्मिन्नामासयाचकस्तकाय॥ ॥ धर्मलि
 कलसाश्च नया॥ ॥ ॐ नत्वायामित्यादि
 ॥ ॐ अस्मिन्नामा॥ ॐ अस्मिन्नामादि
 ॥ ॐ अस्मिन्नामा॥ ॐ अस्मिन्नामादि॥
 ॐ अस्मिन्नामा॥ ॥ रुद्रस्वाना॥

दिनयूजा. उं नक्षत्ररुषी. उं त्वजविष्णु ॥
सुलगना. वलिमालका. कवायूजा ॥
ब्राह्मणयूजा ॥ गमनिक. यूपिका ॥ यथ
कर्मा ॥ कलगाया. पूर्वसु. धननया ॥
चलक. गमल ४ मसिमालका. यानमथा
यर्क. यिथूकाय गमल १२ ॥ दूयूकाय गम
ल ४. टियूज. लूशि. टि. सु. धर्ग. कलगाः
या. पूर्वसुग ॥ ॥ थं वमाञ्जु दिनयूजा ॥
अर्थपाशादकनहाय ॥ व ३४ म्हाकान ॥
चन्दनादिगमकनरिनी ॥ आपन ॥ उं न
त्वाजामिथादि ॥ ॥ यिथूकाययूजा ॥
वृन्दादि १० नागग. गुन ॥ उं गाना नमिन्द
१० ॥ उं गनानीत्वा ॥ उं वृहस्पति ॥ अ. दादस
नूदनयूजा ॥ उं गीक वायनमः ॥ उं गम
वायनमः ॥ उं मरुध्व वायनमः ॥ उं गि
वायनमः ॥ उं स्कानवनमः ॥ उं यशुपा
यनमः ॥ उं डग्रयनमः ॥ उं गाम्बकाय
उं वृषे वायनमः ॥ उं रुवायनमः ॥ उं
सर्वायनमः ॥ उं नीनगि वायनमः ॥

[illegible]

[illegible]

नमः॥ॐ नमो भगवते॥ॐ नमो भगवते॥ॐ नमो भगवते॥
 संक्रादवस्था नमः॥ॐ नमो भगवते॥ॐ नमो भगवते॥
 आवाहनादि॥धूप, दिय, यगिह्वा॥अ
 गगन्धदि॥ ॥ध्वनीलिध्वमात्रादि
 नविसर्जनयाया॥ ॥मधुयगमयधम
 यमवना॥न्यासादि॥निनीकृष्णदिवदु
 सीकात्र॥नमो भगवते॥आग्रेयादि॥
 सानार्कवाखाय॥अमुमकुन॥वकासा
 सखिआदिननयानसुनय॥भववानः
 धनरुदयमनुन॥धवावलिसुखायव
 वदुययसवाय॥ ॥वालायूजायाय॥
 दक्षिण, कलिलवहाय॥सिकर्मि, आवा
 लदक्षिण, आहल, लवहाय॥ ॥वाल
 वादावपूर्ववन॥ ॥अर्थयात्रादकन
 हय॥ ॥अयमाननक्रमा, वाक्॥ॐ का
 उलदात्रयनायिकालकाटि गनेत्रयि
 क्षमाणीयुथिवीमान, सुहृस्त्रयनहनः
 व॥ ॥कायदका, सुहृयकवालान॥
 काययात्रावासद्विवावासधून॥सुकले

दध्नुयधूनदावकाथरकायस्त्राय॥ वा
फनन॥ अर्थयाशादकनहाया॥ अणवा
लुयलडाहायलर्यचनलथवरवाहः
नथयानय॥ ॥ असन॥ ॐ द्रौ गजास
नायनमः॥ ॥ सुसुस्त्राय॥ ॐ द्रौ लै ॐ
द्रुसुसुलाययामि॥ ॥ ॐ द्रौ द्वागसुन
यनमः॥ ॐ द्रौ नै अग्निसुसुलाययामि॥ ॥
ॐ द्रौ यद्वासनायनमः॥ ॥ ॐ द्रौ युं युनू
सुसुलाययामि॥ ॥ ॐ द्रौ मरुषासना
यनमः॥ ॐ द्रौ मूं यमसुसुलाययामि॥ ॥
ॐ द्रौ यगासनायनमः॥ ॐ द्रौ द्रूं नै मरुसु
सुलाययामि॥ ॥ ॐ द्रौ कूर्मास्त्रायनम
ः॥ ॐ द्रौ नै अननसुसुलाययामि॥ ॥
ॐ द्रौ मकनास्त्रायनमः॥ ॐ द्रौ वूं वनू
सुसुलाययामि॥ ॥ ॐ द्रौ मृगस्त्राय
नमः॥ ॐ द्रौ यूं वायूसुसुलाययामि॥ ॥
ॐ द्रौ मृगस्त्रायनमः॥ ॐ द्रौ गं गदासुसु
लाययामि॥ ॥ ॐ द्रौ रुयास्त्रायनमः॥
ॐ द्रौ मूं वनसुसुलाययामि॥ ॥

ॐ कौं वृषास्त्राय नमः ॥ ॐ कौं द्रुं ष्ठीभनः
सुमं लाययामि ॥ ॥ ॐ कौं रं सास्त्राय नमः
॥ ॐ कौं वं वक्रसुमं लाययामि ॥ ॥ दू
थ्यास्त्राय ॥ आग्नेय ॥ ॐ कौं गन्नास्त्राय
नमः ॥ ॐ कौं सधाजानसुमं लाययामि ॥ ॥
नेमह्य ॥ ॐ कौं वृषास्त्राय नमः ॥ ॐ कौं वा
सुमं लाययामि ॥ ॥ वायव्य ॥ ॐ कौं स
वास्त्राय नमः ॥ ॐ कौं जधानसुमं लाय
यामि ॥ ॥ ष्ठीभन ॥ ॐ कौं रं सास्त्राय न
मः ॥ ॐ कौं गत्यवसुमं लाययामि ॥ ॥
यूजन ॥ ॥ चन्द्रनादि ॥ ॐ कौं रुद्राय न
मः ॥ ॐ कौं गिकाय नमः ॥ ॥ वेद ॥ ॐ
प्राणानमिह ॥ ॐ नमः ॥ गं मूवा ॥ ॥ वलि
॥ द्रुं ॥ ॐ कौं रुद्रं प्रयासाय वलिंगु क
द्रुं स्वाहा ॥ वेद ॥ ॐ नमः ॥ गं मूवा ॥ आव
रुनादि ॥ ध्रुवदिया ॥ अग्न्यादि ॥ ॥
आग्नेय ॥ ॐ कौं अग्नय नमः ॥ ॐ कौं रं
मूवाय नमः ॥ ॥ वेद ॥ ॐ अग्निमूर्धा ॥
ॐ नमः ॥ स्वय ॥ ॥ वलि ॥ ॐ कौं प्रियाना

ककुग्रयालावलिगृह २ स्त्राहा ॥ वेद ॥ ॐ
 गाम्बकीजया ॥ आवाहनादि ॥ धूय दीय ॥
 जूगगन्धादि ॥ ॥ आत्मनयधिभा ॥ ॐ
 गुनवनमः ॥ ॐ क्रोमहृषवायनमः ॥
 वेद ॥ ॐ वृहस्पति ॥ ॐ नमस्तुते ॥
 वलि ॥ ॐ क्रोमसिगाङ्गरेनवायवलिगृ
 ह २ स्त्राहा ॥ वेद ॥ ॐ अर्धक्रागा ॥ आवाह
 नादि ॥ धूय दीय ॥ जूगगन्धादि ॥ ॥ नम
 ह्यनयर्थ ॥ ॐ क्रोयमायनमः ॥ ॐ क्रोमि
 वायनमः ॥ ॥ वेद ॥ ॐ यमनदरुणि ॥
 ॐ गितानामासि ॥ ॥ वलि ॥ ॐ क्रोमि
 वगालकृग्रयालायवलिगृह २ स्त्राहा ॥ वे
 द ॥ ॐ अर्थेगानमो ॥ आवाहनादि ॥ धूय
 दीय ॥ जूगगन्धादि ॥ ॥ नमः ॥ ॐ क्रोम
 ह्यायनमः ॥ ॐ क्रोमनवनमः ॥ ॥ वे
 द ॥ ॐ यमनदवि ॥ ॐ गिवनवच ॥ ॥ वलि
 ॐ क्रोमिजिक्काकृग्रयालायवलिगृह
 २ स्त्राहा ॥ वेद ॥ ॐ युषदस्त्रा ॥ आवाहना
 दि ॥ धूय दीय ॥ जूगगन्धादि ॥ ॥ नम
 ह्यनदरुन ॥ अनन ॥ ॐ क्रोमननायन
 मः ॥ ॐ क्रोमयनयनमः ॥ ॥ वेद ॥

ॐ श्रीनियदा॥ ॐ नमः शिवाय॥ ॥ वलि
ॐ कौं वरुन नवाय वलि गृह २ स्वारु॥ वे
द॥ ॐ अस्मिन्मह॥ आवाहनादि॥ धूप दी
प॥ अग्न्यादि॥ ॥ वायुवनदक्षिण
॥ वरुण॥ ॐ कौं वरुणाय नमः॥ ॐ कौं उ
पाय नमः॥ ॥ वेद॥ ॐ ॐ मम्म वरुण
॥ ॐ यागः अग्न्यादि॥ ॥ वलि॥ ॐ कौं का
लाक्षक ग्यालाय वलि गृह २ स्वारु॥ ॐ
याग वरुण॥ आवाहनादि॥ धूप दीप॥ अ
ग्न्यादि॥ ॥ वायुया॥ ॐ कौं वायु व
नमः॥ ॐ कौं शम्भु काय नमः॥ ॥ वेद॥
ॐ नव वायु॥ ॐ शम्भु कय जा॥ ॥ वलि॥
ॐ कौं काल वरुण ग्यालाय वलि गृह २
स्वारु॥ वेद॥ ॐ द्युर्ग द्युग्यावा॥ आवाह
नादि॥ धूप दीप॥ अग्न्यादि॥ ॥ वा
युवनयुर्व॥ गह॥ ॐ कौं गहाय नय न
मः॥ ॐ कौं श्नीश्व नाय नमः॥ ॥ वेद॥ ॐ
आहुत नमः॥ ॐ ॐ मानुषाय॥ ॥ वलि
॥ ॐ कौं वरुण नवाय वलि गृह २ स्वारु॥
वेद॥ ॐ नीलयीवा॥ आवाहनादि॥ धूप
दीप॥ अग्न्यादि॥ ॥ श्नीश्व ननयः॥

[illegible]

ॐ अरु नाजाय ॥ ॥ वलि ॥ ॐ क्रोडनम
रुहे नवाय वलिगृह २ स्वाहा ॥ वेद ॥ ॐ
यहू नाना ॥ आवाहनादि ॥ धूय दीया ॥ अ
ग्नगन्धदि ॥ ॥ नेमया ॥ ॐ क्रो वामदवा
यनमः ॥ ॐ क्रो गतायुगमयनमः ॥ ॥
वेद ॥ ॐ वाममय ॥ ॐ अरु नाजाय ॥ ॥
वलि ॥ ॐ क्रो कयालीग रुहे नवाय वलिगृ
ह २ स्वाहा ॥ वेद ॥ ॐ ययं थं य ॥ आवाहन
दि ॥ धूय दीया ॥ अग्नगन्धदि ॥ ॥ वायू
या ॥ ॐ क्रो अथावायनमः ॥ ॐ क्रो दाय
नरुगमयनमः ॥ ॥ वेद ॥ ॐ यान नूद ॥
ॐ अरु नाजाय ॥ ॥ वलि ॥ ॐ क्रो ही
षह रुहे नवाय वलिगृह २ स्वाहा ॥ वेद ॥
ॐ यनय वि ॥ आवाहनादि ॥ धूय दीया ॥
अग्नगन्धदि ॥ ॥ वीगमहा ॥ ॐ क्रो नत्य
नूयायनमः ॥ ॐ क्रो कलिगमयनमः
॥ ॥ वेद ॥ ॐ यत्यनूय ॥ ॐ अरु नाजा
या ॥ ॥ वलि ॥ ॐ क्रो सीरुन रुहे नवाय व
लिगृह २ स्वाहा ॥ वेद ॥ ॐ यनवाव ॥ आ
वाहनादि ॥ धूय दीया ॥ अग्नगन्धदि ॥ ॥

जवचलक खवचलक धीचमा यूज ॥
ॐ क्रां वक्र धनमः ॥ ॐ क्रां विष्णु वनमः ॥ ॐ
क्रां गिवायनमः ॥ वेद ॥ ॐ वक्र यज्ञानं ॥
ॐ विष्णु नट ॥ ॐ नमः ॥ ॐ मुवा ॥ ॥ मुसि ॥
ॐ क्रां कयालिसादिरु नवायनमः ॥ ॐ क्रां
अगिनासादिरु नवायनमः ॥ ॐ क्रां रुड
कादिरु नवायनमः ॥ ॐ दूर्ग दूर्गयावा
नः ॥ ॥ टि ॥ ॐ क्रां नक्र गायनमः ॥ ॐ न
क्र गायनमः ॥ ॥ लुवि ॥ ॐ क्रां सर्वनाः
गयानमः ॥ ॐ नमः ॥ मुस्य ॥ ॥ टिवूज ॥
ॐ क्रां अर्षि दव गायनमः ॥ ॐ अर्षि द
गा ॥ ॥ अर्षि कल्या ॥ दक्षिणा ॥ वाच
न ॥ मलिविसर्जन ॥ कलसाहिरक ॥ यू
र्ष चन्द्र ॥ साक्षि आय ॥ ॥ ॐ निमद्युय
गयविधि ॥ ॥ कृ ॥ क्रा ॥ १२ ॥ १४ ॥
१६ ॥ १८ ॥ २० ॥ २२ ॥ २४ ॥ ॥ रुया अर्षि
क्रम ॥ गय ॥ वृषधुल्लाचक ॥ ॥
घनायाया विनाऊधु कौचनाकामना
ऊक ॥ सूवनाय सनादक ॥ मद्युयान
वनामः ॥ ॥ यूवृद्धदवधायसू

वृद्धसिनादत्ता आचार्यनमालकायाचक ६

नमामात्रक आचार्यनयायिव ॥ ॥
मधुयमाथरुन्. माल ॥ वृद्धसिनाद
नसा आचार्यनमानकायाचक ॥ ॥
ॐ निमधुयगमयविधिः ॥ ॥

गणाम्नि कृदुद्भूयविधिः ॥ दिवसांक न
मनदकाय. गनक ॥ ॥ आचार्यन
कृदुवलि कयागवियक ॥ ॥ वाक्क
नकलसार्चनयाय ॥ ॥ वसुधविधिः ॥
कलसम्भूत ॥ अग्या ४ थयादाथयत्रा
गमराज्या न्याकल. लूनमलावय ३४
स्वसिकिल. दू. काला १ हाक. विद्यागमाल
का. दारिविद्याग. गमलावनचन. वासु
ला ॥ धनकलगायालिवनन ॥ कस्मि. लं
उहाका ४ ॥ यश्चमृ. गंगमजल. धनंजु
मिकानसना ॥ ॥ गहंरुयकलस. स
गमन. वलि. कवा. मालका. वसुध ॥ वि
धिर्था. कलगमर्चनयाय ॥ वाक्कगयूजा
॥ गानिक. यूरिक ॥ ॐ स्वसिवाचयनया
थनायथकर्मयाय ॥ ॥ अग्या. चाला

ॐ कल वासुन ॥ निर्मल ॥ मर्तुगल
वा सखन लाय ॥ लखन लाय ॥ वन्दन
दिन ॥ ॥ पूजन ॥ ॥ ॐ कौसुम नन्दाय
॥ ॐ रुद्राय ॥ ॐ जयाय ॥ ॐ सकाय ॥
ॐ ३ पूष्पाय ॥ ॐ पूष्प कलभाय ॥ ॐ
सिक्काय ॥ ३ कलालाय ॥ ३ मूर्त्तिकाय
॥ ॥ वन्द ॥ ॐ नारिर्मचिर्ल विज्ञानाय
युर्मय चगिरुसुत ॥ ज्ञानन्दन न्यावा ॥
भरुग ॥ सोरुङ्गय ॥ ३ जयाय ॥ ३ धर्मा
सि विजिनाय निष्ठित ॥ ॥ ॐ रुद्रक ॥
॥ ॐ यान नृप ॥ ॐ सकामया ॥ गिल्या ॥
सुवामा नरुतमाया तमा स्याय ॥ तस्या ॥
व ॥ गम्मा सिगममय नमस्तु ॥ अमुमा
माहि ॥ ॥ ॥ ॐ पूष्पदधि ॥ ॐ अक
कर्म ॥ ॐ मरुदो ॥ ॐ अजिघा ॥ ॥ धू
य दीय जाय स्तोत्र ॥ ॐ कलाल ॥ स्वर्ण
नृयत्वं ह मोखन न कर्मनि ॥ विश्वकर्मा
युर्न निर्यनम सुवामु मूर्त्तया ॥ ॥ अ
प्रगन्धदि ॥ ॥ धन धन दाव कलुषा
धनयाय ॥ ॥ सासखिन वाथले ॥ ग

मज्जलनहाय॥ चउ॥ सस्का न॥ ॥ कीः
लयाचासूर्यचामननवय॥ आचार्यन
यनगुकायाव. कार्य२ किलनासीह॥ उं
स्वस्तिवाचन॥ ॥ दल्लयानडावकिल
उवनयनगुकायावकिलनाय॥ वाक्का
उं विसनुरुतलनामलाकयालाश्चकाम
दा॥ अस्मिन्कधुशुनिष्ठनु आयुर्वलः
कलसदा॥ ॥ मनु॥ उं द्वाँ दयायः
नमः॥ यनगुं चायालनाय॥ नानावाद्य
थायाव॥

मुकुन्दस्वयाव. कार्य२ सूर्यस्वरूपनाय॥ ॥
कार्य२ विद्यागन. काश्च२ यन॥

विद्यागयन. व्रीगननधून
क॥ थथ्थविद्यागय दवमयागसा चउ॥
मष्टिकाथवाय. यनवासन. थथ्थदव॥
किलसचन्दनाग॥ दथ्थस. यद्म. वायक.
वागयमाल. वाय. नायहाल॥ ॥ लय
नकागस. थ. कवागन॥ ३॥ लयनकासः ८॥
हामल. कीलजा. थल. म्वाव. रुदास॥ क
वायनि. नैवद्यन॥ ॥ चन्दनादिन॥ वा

यद्यथाकाशसुवर्णलियागं॥ प्रितुलनाचम्य
३॥ ॥सूर्यार्घ्यं॥ न्यास॥ अर्घ्यपात्रयूजा॥
आत्मयूजा॥ वलिसुत्रन्दनादिना॥ यूजन॥
उंगनानां त्वा॥ उंजागवदस्या॥ उं ॐमानू
द्राया॥ उं दूर्गं दूर्गयावान॥ उं नमाव हू
गभय॥ धूप॥ दीप॥ अङ्गनादि॥ ॥ वा
मुयूजा॥ मधुसूत॥ ॥ उं वक्रावामुमु
रुं य ॐ दमासर्जनम॥ पूर्यनम॥ ॥
ध्यान॥ उं आर्कं चिन्मूर्तिं वासु मूलान
मकनाकर्ति॥ समन्त्यूजासूकर्यादिनि
वसुत्वधनानर्न॥ जानूनी कूर्यनाकर्क
दिगिवागदुगासथये गाम्यादयुगा नो
द्यागिनासुदुदयं कुलि॥ वासुमूरुं य
ध्यानपूर्यनम॥ ॥ ग्रं कुलि॥ ॥ उं
वक्रावामुमुरुं य २॥ ३॥ धूपं दीपं २॥
॥ ॥ सतिलचूतयायसर्जनं वदं २॥ क
दलियनसरुर्लनम॥ जाया॥ स्नाप॥ उं
यद्ययानिष्ठुमूर्तिं वासुस्नाननिवा
गिन॥ गृह्णिकर्त्तुमकानित्यं गमेव
धनमानम॥ वद॥ उं यथिविदवा॥ अ

गगनार्धं ॥ ब्रामुदवयूजायाय काथाशस
 क्लित्वावननिष्ठा ॥ ॥ यद्व ॥ ॐ मनीव
 यनमः ॥ ॐ मनीवयवषवर्लिनमः ॥
 दक्षिण ॥ ॐ विवक्ष्मनाय नमः ॥ ॐ विव
 क्ष्मनाय वषवर्लिनमः ॥ ॐ वंक्रमन ॥
 यद्युम ॥ ॐ मित्राय ॥ वषवर्लिनमः ॥
 उरुव ॥ ॐ धनाधनाय ॥ वषवर्लिनमः ॥
 वृक्ष ॥ ॐ आयाय ॥ वषवर्लिनमः ॥
 ॐ आयवक्त्राय ॥ वषवर्लिनमः ॥
 आत्मय ॥ ॐ सवित्राय ॥ वषवर्लिनमः ॥
 ॐ सवित्राय ॥ वषवर्लिनमः ॥ ॥ नेम
 र्या ॥ ॐ वृद्धाय ॥ वषवर्लिनमः ॥ ॐ वृ
 द्धाय ॥ वषवर्लिनमः ॥ ॥ वाय
 वा ॥ ॐ वृद्धाय ॥ वषवर्लिनमः ॥ ॐ वृद्ध
 दायाय ॥ वषवर्लिनमः ॥ ॥ वृक्ष
 नादिआत्मयान् ॥ ॐ वृक्षाय ॥ वषवर्लि
 नमः ॥ ॐ यर्यानाय ॥ वषवर्लिनमः ॥
 ॐ ऊयनाय ॥ वषवर्लिनमः ॥ ॐ माह
 द्याय ॥ वषवर्लिनमः ॥ ॐ आदिख्याय
 ॥ वषवर्लिनमः ॥ ॐ सख्याय ॥ वष

वर्तिनमः॥ॐ हृसाय॥ नमः वर्तिनमः
॥ॐ जूवनाय॥ नमः वर्तिनमः॥ ॥
आमेयादिनेमयाः॥ॐ अग्निशाय॥
नमः वर्तिनमः॥ॐ यूषाय॥ नमः वर्तिनमः
॥ॐ विनयय॥ नमः वर्तिनमः॥ॐ
ॐ गुरुकनय॥ नमः वर्तिनमः॥ॐ यमा
य॥ नमः वर्तिनमः॥ॐ गन्धर्वाय॥ नमः
वर्तिनमः॥ॐ हृगनाजाय॥ नमः वर्तिनमः
॥ॐ मृषाय॥ नमः वर्तिनमः॥ ॥
नेमयादिवायुवाः॥ॐ यिननाय॥
नमः वर्तिनमः॥ॐ नदिन॥ नमः वर्तिनमः
॥ॐ मृषाय॥ नमः वर्तिनमः॥
ॐ यूषादनाय॥ नमः वर्तिनमः॥ॐ वन
नाय॥ नमः वर्तिनमः॥ॐ अमृषाय॥
नमः वर्तिनमः॥ॐ अमृषाय॥ नमः वर्तिनमः
॥ॐ यायाय॥ नमः वर्तिनमः॥ ॥
वायुवादिष्णीमनान्॥ॐ वायव॥ नमः
वर्तिनमः॥ॐ नागनाय॥ नमः वर्तिनमः
॥ॐ मृषाय॥ नमः वर्तिनमः॥ॐ रुः
ल्लानाय॥ नमः वर्तिनमः॥ॐ सामाय॥

नमः॥ उं गिनय २॥ नमः॥
नमः॥ उं अदिनय २॥ नमः॥
दिनित्या २॥ नमः॥ ॥ ॐ नमः॥
न॥ उं चनक नमः॥ नमः॥ ॥
आयय ॥ उं विजय २॥ नमः॥
॥ ॥ नमः॥ उं युननाय २॥ नमः॥
मः॥ ॥ वायय ॥ उं पायनाय २॥ नमः॥
नमः॥ ॥ यूर्ध्व ॥ उं स्कन्दाय २॥
नमः॥ ॥ दक्षिण ॥ उं अर्यामा
य २॥ नमः॥ ॥ यष्टिम ॥ उं उं
हकाय २॥ नमः॥ ॥ उरुना
उं यिलियिचु कायनमः॥ उं यिलियिचु
काय नमः॥ ॥ अरुहनादि ॥ धू
य. दीयजाय ॥ ॥ ॐ चतुष्टययुगं का
रुं सर्वस्मिन्दरु नूयिणी। कृत्तान्नच
मकंच. सार्वस्मिन्दरु नूयिणी॥ निरु
दरुलककृत्तान्. कृत्तान्नच
वापुनयमरुभन. खाम हनोमिकर्म
नि॥ अरुगन्धदि॥ ॥ वानायुजा ॥
वलान्नकमनकलिलवद्राय ॥ ॥

दाहलल्लानननयनकायावचनचय॥वा
क॥ॐकादावदानयनकायिकालकाणि
यतिष्ठिर्ग।कमार्गायधिविमान॥अग्निः
स्मायनरुगव॥द्यालकयक॥द्यालक
याचाचुकागधमिनिनक॥चुकाचवलि
सुगयक॥द्यालकयाधयसंकस्तिवया॥
कवासमसंस्वस्मानयाय॥कवानवद्य
स्वसचय॥कलुयायमाननमालकाकुर्य
॥ ॥कलगावालाअजुगविसर्जनी॥क
र्मिआवाल्यूजा॥चाअजुगवासूनलव
काय॥आचार्यमालकसामग्रीयादावर्ग
लवन॥ ॥अग्निका॥अर्घ्यादादक
नहाय॥अमुना॥अग्यार्वथथययावा
सीमल्लाचनचननअदास्वस्तिकवाया
वर्गयूलकंदालाचकंअगस्वना॥लुय
लडाहायलनवानयय॥ॐस्वस्तिवाचन
यठय॥वाक्यन॥ ॥अग्निका॥अयूज
नी॥ॐवगिष्ठसूनायेनन्यायेनम॥आ
चार्यकर्मिप्रहृतिनस्तिवहा॥ॐनन्द
नदिनियंसीलामगस्माययाम्यहं।अ

सिन्धुनिकित्तादृष्ट्या यावत्कर्मनसिद्धि
 नि॥ आयुःकामंघ्रियंनन्दनावदासर्व
 नानृणां अस्मिन्नकात्वयाकार्या कृष्ण
 यंयत्नतः सदा॥ कलसलंखनलूया॥
 वद॥ ॐ नारिभविर्लं विज्ञानंयायुर्भय
 चकिरुसगु॥ अनन्दनन्दावाधुभरुग
 ॥ सीरुल्लंयसः॥ जयाह्यायश्चाध्वर्मास्मि
 विगिनायनिष्ठिगः॥ अगगन्नादि॥ ॥
 नैसत्यकाधयूर्ध्वं॥ यादस्मायन॥ पूज
 ना॥ ॐ कंभयसूनायेरुद्रायेश॥ ॐ रुद्रः
 त्वंसर्वदारुद्र॥ पूसां कनूदितावहा॥ अ
 यदा कामदादविश्रायदाधनदारुव
 ॥ अस्मिन्नकात्वयाकार्या कृष्णययन्न
 गसदा॥ कलसलंखनलूया॥ ॐ रुद्रः
 व्र॥ अगगन्नादि॥ ॥ वायवाका॥
 पूर्ववत्यादस्मायन॥ पूजनी॥ ॐ रुद्रः
 नायेययायेश॥ स्मिन्न॥ वाक्का॥ ॐ रुद्रः
 सर्वदारुद्र॥ सतिष्ठास्मायिगामया॥ निर्या
 जयावहादवि॥ स्वामिनः॥ धीयदाहाव
 ॥ अस्मिन्नकात्वयाकार्या कृष्णयय

२२

३३

त्रगः सदा ॥ कलः गलः खनलः यः ॥ वद ॥ ॐ
 या न नूद ॥ जगन्नादि ॥ ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥
 न ॥ पूर्ववत्त्यादस्माय नमः ॥ यूज नमः ॥ ॐ हान
 दाज सुगायि मकार्ये नमः ॥ स्मिन् ॥ वाक् ॥
 ॐ निकानिक दावय सिद्धि मूकिय दं गुरु
 सर्वदा सर्वदा वस्तु निवृत्तमीग नूय कः ॥
 जस्मिन् वक्षा त्वया कार्या कृष्णयत्न गः
 सदा ॥ कलः गलः खनलः यः ॥ ॐ मकार्ये नमः ॥
 गिल्यस्तु मवा मान रुत माया न माया यः
 त्स्यादवः ॥ गमा सिग मभय दून मस्तु
 जमुमामादि ॥ ॐ ॥ जगन्नादि ॥ ॥
 मकार्ये नमः ॥ यूज नमः ॥ ॐ जगिन स
 सुगायि मकार्ये नमः ॥ मूल मनुज यूज ॥
 स्मिन् ॥ वाक् ॥ ॐ यूक्ष्व सर्वदा विद्युः स
 र्वसिं दारु लक्ष्मि ॥ सर्वसिं यूक्ष्व भवा प्रक
 शुभं यन सर्वदा ॥ जस्मिन् वक्षा त्वया का
 र्या कृष्णयत्न गः सदा ॥ कलः गलः खनलः
 यः ॥ वद ॥ ॐ यूक्ष्व दद्वि ॥ जगन्नादि ॥
 ॥ ॥ जून संकल्य ॥ दक्षिण ॥ वाचन ॥
 वलि विमर्जन ॥ कलः सारिषक ॥ यूक्ष्व चन्द्र ॥

४ निविद्युय रुक म्मादि कृष्णनीयादभशुरुः ॥ या
 वत्क म्मादि सिध्दिक तावत्त वस्तु कारुव ॥ ॐ स्मि
 नारुव वि ॥ ४

साक्षिथाय॥ ॥ कर्मार्थनस्तान् कर्म
मधुलयादस्मायनं॥ मत्पेदादिचतुर्थ
दीयादस्मायनं॥ ॥ ॐ निजग्निकृपा
दस्मायनविधिः॥ ॥

कृत्तुलक्षणास्मायनं॥ ॥

श्रीगुलि २४ धननकृत्ति चतुलस॥ था
थूमखला श्री ४ दधूमखला श्री ३ काथूम
खला श्री २॥ यानिदु श्री ५ वा श्री ४ जाव
श्री २॥ कं ० श्री १॥ चतुलस यन् श्री ४
जाव श्री २॥ वदि श्री ४॥ ॥ धनं नृणां नृणां॥ ॥

श्रीगुलि ३४ चतुलस॥ थाथूमखला श्री ५ दधु श्री ४
नवग्व ५ काथ श्री ३॥ यानिदु श्री १ नवग्व ५ वा श्री ४

नव ४ जाव श्री ३॥ चतुलस यन् श्री ५ जाव श्री २

कं ० श्री १ नव श्री ४ ॥ ॥ व
दि श्री ५॥ ॥ धनं नृणां नृणां॥ ॥ कृत्तु श्री

५८ चतुलस॥ थाथूमखला श्री ८ दधु श्री ५
काथ श्री ४॥ यानिदु श्री २ नव २॥ वा श्री ५

जाव श्री ४॥ वदि श्री ८॥ कं ० श्री २॥ चतुलस
यन् श्री ८ जाव श्री २ नव ८॥ ॥

॥ ॥ धनं नृणां नृणां॥ ॥

विष्णुदेवता नाम ॥ ॐ पूनवा ॥
ॐ मानवा ॥ ५

अथ उवाच कविप्रिय ॥ ॥ नियच्छुद्धः
वज्रप्रियासनन ॥ द्वागच्छुद्धः नाहिनयजः
मानायादलसिवायस्वठिस्तानयायवम्
हिल ॥ ॥ सन्निच्छुद्धविप्रिथ्यायमालका
वासया ॥ ॥ नकसंदः आचार्यनयिथूय
जाह्वाया ॥ धनैलिजवाचकयाया ॥
धयाडरुनसवसाहोनायाययानासिज
लथालासाथलकाथालक ॥ ॥ विप्रिथ्याज
वाचकयाया ॥ ॥ यथकर्म ॥ यजमानमि
गहननासिय ॥ ३ ॥ विष्णुस्मन ॥ ॥ न्यास ॥ ग
यमीन ॥ अर्घ्याययूजा ॥ गुरुयस ॥ आत्म
यूजा ॥ सिजलथालासवकनस्वस्तिकवाय
॥ ॥ यथजमानीनधलनयक ॥ ॐ महीना
यथासि ॥ यजमाननमभगच्छुयावकानक
॥ ॥ यथयूजायाय ॥ वन्दनादिन ॥ ॐ वक्ष्ये
नयायय ॥ ३ ॥ वद ॥ ॐ धमच्छुदयि ॥ आ
दसदधुत्वाकसल्लेखनहाय ॥ ॐ हस्तिनः
ॐ ॥ गमयमीनजयनय ॥ यजमाननय
जमानीधलनवहाय ॥ ॥ गमयाथानः
धनसधुत्वावक्ष्येनाकायक ॥ ॐ वसा ॥

॥॥
यविर्ग॥ स्वयाल ३॥ चार्गाथनकावा॥ थयू
जा॥ चन्दनादि॥ वदन॥ उं वसुधैव कुटुम्बकम्
श्रमकर्मवमगकि॥ श्रमर्थश्रमः प्रमश्र
मः ॥ ॐ ह्याचमगनिश्रमयकूनकल्पना
म॥ उं सयसयय॥ धूपदीयादि॥ अङ्गुलि
दि॥ विविधधूनक॥ ॥ कायालगयू
थ॥ उं वसा॥ यविर्ग॥ क्रिधदयायजूधि
वासनकद्रुधूनक॥ ॥ ॐ गिऊवादक
विधि॥ ॥ ॥

अथ जंकलार्थ॥ ॥ मधुययाडरु
जसमधुयगय॥ मधुययायमाधद्रु
व्ययधिमक १० व्यादक्रिणडरुनकडा
थर्थदव॥ यव्ययधिमवाद्रुकडादक्रिण
डरुनवावाक २ थर्थदव॥ ॥ सलाव
दयकयाविधि॥ अजावदूर्जगुलि १५ व्या
जगुलि १५ ग्वरु ४॥ दामूयसलाव अज
वर्जगुलि १२ व्याजगुलि १२ ग्वरु ४॥ स
लाव अजावदूर्जगुलि ६ व्याजगुलि ६
ग्वरु ४॥ अलखनिदव ग्वलथा ग्व १॥ ॥

विजयधनदयक॥ रुमि॥ मूग॥ हामल॥ ना
 यवमात॥ नयका॥ कालाठ॥ स्यंक॥ मास
 नका॥ चिचिनानयायुचि॥ लहलिया॥
 हलव्रीदिधन॥ सालिवारु॥ साददयात
 श॥ वडुसमचन॥ ॥ नादधन॥ नायव॥ न
 यव॥ झादू॥ हाकू॥ ॥ रुमभायावकाथ
 शवाय॥ (ध) जूनकमनलंदनधन॥ आश्या
 दिकावननिस्या॥ नायव॥ नयव॥ झादू॥
 हाकू॥ थकाथरस॥ लंगनधन॥ यलस
 कचुवाकलंहाकूनधन॥ (ध) दवनसा
 लिवा नाया॥ काथरयगियविग्रुचुलिग
 ॥ सुलाववाय॥ यधिमसा॥ अगुति॥ १५ यात५
 वाय॥ दयसर्ज॥ १२ यात५ दामखसनाववाय॥
 पूर्वसा॥ अ०५ यात५ वाय॥ वलंगनहवहावादि

न॥ दालदक्षिणसदयक॥ डरुनसायावया
 या॥ ॥ नभायूजा॥ चन्द्रम नूनालयाय
 मरुव॥ मिगलनावम५॥ गमयमा न्या
 स५॥ अर्ययागु॥ जलयागुयूजा॥ आत्मयू
 जा॥ सुलावसा॥ यं वसूयकानहिना॥ उंसा
 भा॥ धन० साभा॥ अर्धनमागु० साभावीन

कर्मधर्मदयागि सादनी विदथा ० सुरुय
यिरुधवर्षया दयागदहमे ॥ ॥ दवनच
उ४ समनकन ॥ उंग न्यदानी ॥ गलाववाय
१२ ॥ गदसासखि ॥ यांख ॥ हिंवागीर्थजल
नझाकावथन ॥ ब्रह्मसकलदसादून
वाले ॥ वननयामूलमनुषा ॥ ॥ याण
यूजा ॥ उं वक्र (६२) ॥ उं रुलिरुनायश ॥ वेद
॥ उं विष्णानना ॥ या नम ॥ उं वक्र (६२) ॥ उं
वक्रयज्ञान ॥ कामखस ॥ उं नूदायश ॥ उं गि
वानामासि ॥ सलाव ॥ ॥ चन्द्रमामनूना
लालमनवा ॥ चन्द्रयूजा ॥ उं चन्द्रमस
॥ ३ ॥ उं चन्द्रमाजयन ननासयध्वधव
नदिविनयिधिगवकलंयनूस्यरु०
रुनिननिकनिकदग ॥ ॥ धनर्लिप्त
कलवीजंजयनया ॥ मूलगयपीनना ॥ व
नूनावीजन ॥ १२ ॥ ॥ ब्राह्मणयाजुगि
खकायावमनसु चियादावयंनगात्रस
वाद्यध्वकावव नूनावीजयठयावहा
ले ॥ ॥ उं सदगस्यनि ॥ रुलिलनियालं
खविथ ॥ स्वस्तिवाचनयठया ॥ काथालन

यूय॥ ॥यन॥यूजा॥दगदिगर्गलाक=
यालयानाकवाग॥नेवद्यक्षानजाधलसा
खलगा॥०॥वन्दनादिग॥वदन॥ ॥
उंनयगानेवद्य॥गाय.हामल.रुलसिध
लिसवू॥ ॥यूजा॥उं वन्दमस॥उं
हगाय॥३॥उंरुगायसलाजकिलरु
मिदाननेवद्यनिम॥ ॥ॐ॥द्रादिला
कयालयजा॥उंॐ॥द्रायनेलावगास
नाय॥२॥द्युगसर्कनासकिलक्षीनानने
वद्य॥२॥उंजगम्यकागमनायनम॥४॥द्युग
सर्कनासकिलक्षीनाननेवद्य॥२॥ ॥
उंयमायमहिषास्नाय॥२॥द्युगसर्कना
सकिलक्षीनाननेवद्य॥२॥ ॥उंनेमर्थ
ययगास्नायनम॥४॥द्युगसर्कनासकिल
क्षीनाननेवद्य॥२॥ ॥उंवनूधमथम
कालास्नायनम॥४॥द्युगसर्कनासकिल
क्षीनाननेवद्य॥२॥ ॥उंवायूयागुगम
स्नायनम॥४॥द्युगसर्कनासकिलक्षीना
ननेवद्य॥२॥ ॥उंकवनायरुयास्नाः
यनम॥४॥द्युगसर्कनासकिलक्षीनानने

पूजाः

नायक

सा नागयागानेवद्या ॥ सा उया नरुमाड
 ॥ पूजा क्रयायाथीद ॥ ॥ उं नागभयनमः
 उं नागभयगकुपिष्ठनेवद्या ॥ लाकयालयू
 जाडथी ॥ ४ ॥ ॥ यश्चमदिन ॥ वक्रयागाने
 वद्या ॥ यलखान अक्रग ॥ सकगादडथी
 द ॥ ॥ उं वक्रधनमः ॥ उं वक्रधर्यकड
 क्रगनेवद्यानमः ॥ लाकयालयूजाडथीद
 ॥ ५ ॥ ॥ यश्चमदिन ॥ सवेयागानेवद्या
 वाकमाड ॥ ॥ पूजा क्रयायाथीद ॥ ॥
 उं सवेयनमः ॥ उं सवेयपूयमन्नने
 वद्यानमः ॥ लाकयालयूजाडथी ॥ ६ ॥
 सकमदिन ॥ विष्णुयानेवद्या ॥ वाकजा
 ॥ पूजा क्रयायाथी ॥ ॥ उं विष्णुवनमः
 उं विष्णुवयुठादलनेवद्यानमः ॥ लाक
 यालयूजाडथी ॥ ७ ॥ ॥ धनक्रिथीः
 दसनिनसियायमान ॥ धनजुधिवा
 सनदगककूनधनकावयायमान
 ॥ ॥ अग्निनरुमानयायमान ॥ ॥
 वृगिर्जकनाय्येविधि ॥ ॥

१ गुक्रयागसादवतावेष्टवनेवद्याजाडद ॥ ८ ॥
 वताविष्टवनेवद्याविधि ॥ ९ ॥

४ यन्मन्त्रनया दावगया गुति अरुग यं वसूपाका
धनं नय ४

१ अथ मधुय (मधुनं) ॥ यद्गुह्यवथ
रुन अमिवासन कद्रुथरुन ॥ ॥ नैमय
दानाया ॥ लकामाला ॥ कसुखिगान ॥ यंच
सूयका ॥ कद्रुलका ॥ स्नानमाला ॥ कासाक
वया ॥ यल्लवमाला ॥ न्यागिगुलय ॥ ४ ॥ दानवृ
का ॥ धुज ॥ यनाका ॥ धुजदन्दा ॥ मरुधुज ॥ ॥
यंचगवा ॥ गंगसुल ॥ यंचवृद्धि ॥ नकायका
॥ कृग ॥ दालयाचूनि कासि ॥ खचयनि ॥ यूषा
स्वतादुक्त ॥ ॥ यातासनमधुलदयकाव
धनवसुय ॥ ॥ वलिचुयान ॥ अर्ययाग
ताचंदनादियक्कायविन ॥ ॥ नासियश
सूर्यार्थ ॥ न्यास ॥ अर्ययागयूजा ॥ आत्म
यूजा ॥ ॥ भकायावर्ममकुनयाय ॥ मधु
यं द्रुवनवाकसामर्था ॥ ॥ यंचगवा नहा
या ॥ ॥ वद ॥ ॐ त्वमप्यद्विस्त्वमाधुगुद्रु
निस्त्वमद्रुस्त्वमग्मनस्यनिस्त्वमनस्यस्त्वम
यधीत्यस्त्वनृषीं नृयनं जायमधुविश ॥ ॥
मायणीयदयाव मधुयसाय ॥ अर्ययाग
दकनरुय ॥ ॐ नत्वाजामि ॥ ॥ ॐ त्वामि
द्विरुवामरुसातोसाजस्य कानवध ॥ त्वावृषि

नमस्तस्मात्काष्ठासर्वगशा गच्छनी ॥
 ॐ त्वीवरुर्द्धि ॥ ज्ञानखड्गस्यधुनी ॥ ॥
 ॐ सर्वनशिष्ठद्वन्द्वरुसुधप्रयामरुसुवान्
 अदिवशागमश्च नश्वरमिन्द्रसंकिनसुषाव
 जन्नजिष्णु ॥ उद्वनर्न ॥ ॥ ॐ रुनसिरुमि
 नस्यदिमिनसिविष्वधया विष्वस्यरुवन
 सधर्मा यथिर्वायर्क्यथिर्वामाहि ० सा ॥ यून
 न ॥ ॥ ॐ महिद्योः ॥ समीकलनर्न ॥ ॥
 ॐ गत्वायामि ॥ जलनसिचनी ॥ ॐ ध्यानयथि
 ॥ कर्तुर्न ज्ञानखड्गयायान ॥ ॥ ॐ यद्यथाः
 द ॥ कृष्णनसिमाऊर्न ॥ ॐ मानसकाक ॥ ग
 मयनलयनी ॥ ॐ उद्वर्णयागव ॥ सायनवि
 विर्ण ॥ ॥ कलायनिकल्यनी ॥ कृष्णयू
 जकृष्णखानग ॥ मधुयमध्व ॥ ॐ कीसर्वक
 लाय ॥ ॥ ॐ गानिकलायेश ॥ यूर्व ॥ ॐ
 विद्याकलाय ॥ दक्षिण ॥ ॥ ॐ यमिष्ठा
 कलाय ॥ यमिष्ठा ॥ ॐ निवृत्तिकलाय ॥
 उर्द्ध ॥ ॥ लक्षायास्तु अदिनसमर्कज
 यलय ॥ मूलगयपीन ॥ ॥ मधुयजय
 लय ॥ ॥ कृष्णकायाव ॥ गयपीन ॥ ॥ ॥

[illegible]

मसि॥ दानस्मायन॥ उंक्रां निवर्त्ति दानसाखा
 लाययामिनम॥ वद॥ उंजन्मजाया॥ गानन
 ॥ उंक्रां वल्लगाननसाखा लाययामिनम॥ उं
 वल्लगानिगृह्ण॥ ध्यायदवनप्रिगृह्णनय॥ उंक्रां
 प्रिगृह्णलाययामिनम॥ उं विकि नृद॥ ॥
 उंक्रां यत्राखसि॥ दानस्मायन॥ उंक्रां यतिः
 दानसाखा लाययामिनम॥ उंक्रां नादवी॥
 गानन॥ उंक्रां आनागाननसाखा लाययामि
 नम॥ उं वल्लगानिगृह्ण॥ ध्यायदवनप्रिगृह्णन
 य॥ उंक्रां प्रिगृह्णलाययामिनम॥ उं विकि नृ
 द॥ ॥ उयदान॥ आग्रय॥ खयनसि॥ उं दाना
 नादवी॥ ॥ नेमरु॥ दवदानसि॥ उं दाना
 दवी॥ ॥ वायव्या॥ आयसि॥ उं दानादवी॥ ॥
 वीगान॥ नृयखानसि॥ उं दानादवी॥ ॥
 अथा॥ असाकसि॥ उं दानादवी॥ ॥ उद्व॥ वा
 यखानसि॥ उं दानादवी॥ ॥ कनिनरुसि
 गुरुयखलसि॥ मिहकिसि॥ निवृज॥ नयमान
 कीनय॥ ॥ धुजासाय॥ यथ॥ मडन॥ उंक्रां
 त्वं वक्राकि नयतां नाययामि॥ ॥ ५३॥ ॥
 उंक्रां कर्मयक्र धृजा नाययामि॥ ॥ आग्र
 य॥ काद॥ उंक्रां गच्छीकि नयतां लाययामि॥

का१

का३

॥ दानययामि॥ ५३॥ ॥ उंक्रां वल्लगाननसाखा लाययामि॥ ॥

का ३

का ४

कडनधुजा ४

हाकधुजा २

का २

धजा ॥ उंकां कमदाहधुजा लाययामि ॥
 दक्षिणां उंकां उधुकिरयनं लाययामि ॥ ॥ ध
 जा ॥ उंकां यधुनिक धजा लाययामि ॥
 नमस्त्वां उंकां रक्ताकिरयनं लाययामि ॥ ॥ धजा ॥
 उंकां वामनाह धजा लाययामि ॥ ॥ यधिम
 नायवधुजा ॥ उंकां यागकिरयनं लाययामि ॥ ध
 जा ॥ उंकां संपूकर्ण धजा लाययामि ॥ ॥ वायव
 ॥ वाधुधुजा ॥ उंकां धजाकिरयनं लाययामि ॥
 धजा ॥ उंकां सर्वनप धजा लाययामि ॥ ॥ इरुन
 ॥ नयधुजा ॥ उंकां गजाकिरयनं लाययामि ॥
 धजा ॥ उंकां समूय धजा लाययामि ॥ ॥ धी
 गाना ॥ नायवधुजा ॥ उंकां विधुयकिरयनं लाय
 यामि ॥ धजा ॥ उंकां सुयतिषा धजा लाययामि ॥
 ॥ अंधा ॥ वाधुधुजा ॥ उंकां वकाकिरयनं लाय
 यामि ॥ ॥ यधुसक्त्या ॥ मरुधुजा ॥ उंकां मरुधुजा
 लाययामि ॥ उंकां सुमाकमिदु ॥ ॥ दूर्नदधु
 जायनायनय ॥ थवथववर्धन ॥ ॥ स्वर्न
 वृत्तनय ॥ दूर्ध्व ॥ दक्षिणा ॥ हाका ॥ य
 धिम ॥ नायव ॥ इरुन ॥ नयव ॥ यिवन
 थवसंधानय ॥ थवयतिरय ॥ दूर्ध्व ॥ दक्षिणा ॥
 वकाचिद्रा ॥ दक्षिणा ॥ हाका ॥ चिद्राजमदधु ॥

॥ यधिम ॥ नायव ॥ इरुन ॥ नयव ॥ यिवन
 थवसंधानय ॥ थवयतिरय ॥ दूर्ध्व ॥ दक्षिणा ॥
 वकाचिद्रा ॥ दक्षिणा ॥ हाका ॥ चिद्राजमदधु ॥

॥ यधिम ॥ नायव ॥ इरुन ॥ नयव ॥ यिवन
 थवसंधानय ॥ थवयतिरय ॥ दूर्ध्व ॥ दक्षिणा ॥
 वकाचिद्रा ॥ दक्षिणा ॥ हाका ॥ चिद्राजमदधु ॥

॥ यधिम ॥ नायव ॥ इरुन ॥ नयव ॥ यिवन
 थवसंधानय ॥ थवयतिरय ॥ दूर्ध्व ॥ दक्षिणा ॥
 वकाचिद्रा ॥ दक्षिणा ॥ हाका ॥ चिद्राजमदधु ॥

यश्चिमा॥ नायवा॥ नागविद्रा॥ डरुन॥ नयवा॥
 क्रुसिचिद्रा॥ ॥ स्वयनागद्याया॥ ॥
 मधुययूजा॥ वचनादिगय॥ न्यासा॥ अर्घ्या
 नयूजा॥ आत्मयूजा॥ ॐ न स्वायामि॥ अर्हं ॥
 ॐ देवस्यत्वा॥ ॐ कलामयमधुयायश॥ व
 लि॥ दानायश॥ ॐ गावनायश॥ वृक्षायश॥
 ॐ ध्वजायश॥ ॐ यत्ताकायश॥ ॐ द्वायश॥
 वलि॥ धूया॥ दीया॥ जाय॥ ॥ नायकायाः
 वहाला॥ ॐ सुकर्तुं अर्हं ॥ कलामयकूर्तुं
 रावयन् ॥ वलिविसर्जुनयादावमधुयः
 दायकं वाय॥ दक्षिणा॥ वाचनारिषका॥ ॥
 यत्ताकायावद्वहा॥ व्याह्वला३॥ द्रुक्स्था
 १५॥ अर्हं वाय॥ व्याह्वला३ दूनकूरय
 द्रुया॥ व्याजिमनला१२ दूर्यकू४ लक्ष्मि
 क्रिया॥ वर्ध्वावधवन॥ महाध्वजायावाप्त
 सिनदयकावरुनमन्तरय॥ यरूयायुमा
 ननध्वजदधुनावकमाला॥ ॥ ॐ निम
 लुयसाधन॥ ॥ ध्वजायानायन॥ व्याश्रु
 १५॥ यनकूर२॥ व्याह्वला३ दूर्यकूरयनकूर३
 ॥ व्याजिमनला१२ दूर्यकू४ यनकूर३॥ महा

४ दानयाथावतः कस्तनः सिधनमूढतयावः वरुमा
 नयदावतया॥ ययुनिदानर्हं ॥ ४

२ महाध्वज्या धावन रुद्रमन्त्रयमान यश्चि
मसावकाव२

ध्वजाद्या जंगुनि २० दूका १० यगका ४ धीने
घायमान यश्च नंगनदयक ॥ ॥

जथजप्रिवासनविधि ॥ ॥ दूथकक्रम
नकासुल्लसियाय दूनकमयाय ॥ खनि
मान यविगुवमुल्लगय ॥ नित्यकर्मयाय
॥ ॥ यरुमधुयसनकर्मय दकयाय
विधिथ ॥ विष्टदक्यानाम ॥ यूनवा मान
वा ॥ ॥ यथाकर्मसु ॥ कक्रमका ॥ नृमृ
नयाय ॥ मगारु गारुवा सुल्लननखाय
॥ गगविदिकावाय ॥ मानकासुदयक ॥
कायात्रयाय ॥ नयकावक्रिया ॥ चन्दनादि
सुल्लनविद्या विधिथ धूनक ॥ थकयवा
दकविधि ॥ ॥ मधुययायिवनयूथः
रुवात्रनयाय ॥ ॥ यथागकिस्त्रययू
जायाय ॥ ॥ यिवनयाक्रमकाननादि
दानयूजायाय ॥ यूव्वदानननिमजुधउ
इल्लियाय ॥ ॥ जथनृमरुनायिविधि
॥ कनकनसकय धावसिहवादन ॥ वलि
कय ॥ यववलि वडिहयान ॥ ॥ कनस

यूजा॥ आसनं॥ ॐ नत्वायामि॥ अर्यु कर्णी॥
ॐ देवस्य त्वा॥ ॐ अजिद्य कलर्णी॥ ॥
वलियूजा॥ ॐ क्रीकृयालायवर्लिगृक्र
ह्वाहा॥ विद॥ ॐ विश्वनयकृनिनि॥ ॥
रामयाय॥ कृनकागिसनयाव डरुनस्वः
यावयाय॥ ॥ सुयार्धयाय॥ गुननम
ह्वाह, न्यास॥ अर्ययाग्यूजा॥ आत्मयू
जा॥ ॥ कधुसंस्कारं॥ ॐ कं अम्नायरुट्
॥ ॐ कर्त्तव्यामि॥ ॐ कं अम्नायरुट्॥ ॐ ऊद
वायवरुनि॥ ॐ कं कवचायकं॥ ॐ मानकी
कनि॥ ॐ कौद्रयायनम॥ ॐ त्वीरु ॥
गमयणीजया॥ यमलिरवह॥ ॐ हिनवधः
गरु॥ धान्या॥ ॐ सदमसनिमनि॥ वीहि॥
ॐ वीरुयवम॥ युगाजानसि, कानदवदव
कायाव, कासिसनय॥ ॐ त्वीरु॥ अर्यु
कर्णी॥ ॐ ॐ श्वनात्वा॥ यूननं॥ ॐ अग्निम
द्रो॥ अग्निमानिय॥ ॐ मयिगृक्रा॥ अग्नि
स्वायनं॥ ॥ ॐ स्वस्तिवाचनं॥ ॐ ममा
नि॥ ॐ ॐ धननयस्वया॥ ॐ यथादिविः
यूननं च॥ ॥ अक्रयागन॥ ॐ मयदाय

ॐ दमासं शयुषीं ॥ ॐ यरु वदाय ॐ दमासं
 नं शयुषीं ॥ ॐ साम वदाय ॐ दमासं शयुषीं
 ॥ ॐ अं वदाय ॐ दमासं शयुषीं ॥ ॥
 ॐ अग्निमिध ॥ दक्षिण ॥ ॐ ॐ ॐ ॐ
 ॥ यज्ञिभ ॥ ॐ अग्र आर्या ॥ इरुन ॥ ॐ सनी
 दवि ॥ ॥ यरुन ॥ ॐ मरु वदाय अग्निग
 गाय साम वदाय गायत्री चन्द्रस्य नमः ॥
 ॐ यरु वदाय रुद्राङ्गणाय वक्रदव
 नाय वक्षु चन्द्रस्य नमः ॥ ॐ साम वदाय काम
 वलगाय नृद दव नाय अगनि चन्द्रस्य नमः
 ॥ ॐ अथ वदाय वदामानसुलगाय ॐ उद
 व नाय अनूयु चन्द्रस्य नमः ॥ ॥ लोकया
 लयज्ञा ॥ ॐ ॐ दाय ॥ ॐ अग्रय नमः ॥ ॐ
 यमाय ॥ ॐ नैमल्लाय ॥ ॐ वनू ल्लाय ॥
 ॐ वायव ॥ ॐ क वनाय ॥ ॐ ॐ ॐ ॐ
 य ॥ ॐ अननाय ॥ ॐ वक्रन ॥ ॥
 अग्निनाम रुवदायि ॥ दयसमिधहाम ॥
 ॐ उषारुदव ॥ अग्निर्ममुखिकनर्न ॥ ॥
 अरुनि ॥ दूर्वाहाम ॥ ॐ दूर्वाय स्वाहा ॥ ॥
 क्षानसि सुगय कावकन गया वयुष्म ॥ ॥

ॐ काष्ठाकाष्ठाग्नः॥ सकलैर्दध्यदः॥ नक्षः॥
 ॐ कांजवायस्वाहा३॥ ॐ गगानमिन्द्रा॥ न
 कायस्वा॥ ॐ कांसर्वयायस्वाहा३॥ यक्ष्म
 ॥ ॐ ॐ मानूदाय॥ रामल॥ ॐ कां गिनायः
 स्वाहा३॥ ॐ मानर्त्तिक॥ चाक॥ ॐ कां कू
 दस्तुलायस्वाहा३॥ ॐ यज्ञायमन॥ झा
 या॥ ॐ कां कपासायस्वाहा३॥ ॐ कामीका
 मधुध॥ ॐ नयू॥ ॐ कां मूलवीस्वाहा३॥ ॐ क
 यानिष्प्रिण॥ रुवदायिनाम॥ ॥ वाला
 ॐ ॐ कां रुल्वाटकायस्वाहा३॥ ॐ विकि
 निदविलारिण॥ लारुधुर्ग॥ ॐ कां लारुधु
 र्धुयस्वाहा३॥ ॐ अस्मायममरुिकायम
 गिनयश्चमयर्चगाश्चमसिकगाश्चमध्वनू
 त्वायश्चमरुिनध्वश्चमयश्चमग्नामश्चल
 रुश्चमसीसश्चमगुयूयमयक्लनकल्यानो
 म॥ अयामार्ग॥ ॐ कां अयामार्गयस्वाहा
 ३॥ ॐ अयायमयकिल्विषमयकृत्वामया
 नयधअयामार्गत्वमस्म दयदः४४४४०
 सूवा॥ ॥ अम्बरुल॥ ॐ कां वृगवीज्ञायस्वा
 हा३॥ ॐ यागयागुदगध्वनाश्चमवर्गस्वा

दिगन्त्राधायनु॥ अम्बनिष्ठाप्रसमना
 विदाम॥ ॥ द्वाद॥ उंक्रोययाम्बाराह
 ॥ उंययैयथिया॥ नासाक॥ उंक्रोमन्ध
 यम्बाराह॥ उंगुम्बक॥ कसव॥ उंक्रोक्
 सायम्बाराह॥ उंक्रोक्कृष्ण॥ धानमि॥ उं
 क्रोसमिधायम्बाराह॥ उंसमिधार्मि॥ ध
 नदवकनसहिननदूय॥ ॥ वलियू
 डा॥ उंक्रोक्रोक्कृष्णालांश॥ वद॥ उंविष्णु यम
 नवद्वनिमि॥ ॥ वाक्क्रायवकायुक्
 विधननहामिधाययाम्बाराह॥ अम्बमनु
 न॥ उंनक्रोहर्न॥ आक्रोहनि॥ धानिक॥
 उंक्रोहनि॥ यष्टिक॥ उंगुम्बक॥ ॥
 धानमिसवयकावकननयावयुध्मया
 य॥ उंक्रोहनि॥ ॥ अम्बमनु॥ उंक्रो
 वक्रोवाक्रना॥ उंयथमाधिनियो॥ उंमय
 दायम्या॥ अम्बमनुनाथाम्बुकलसम्बु
 लिलदिद्ववनासूयागावनदरुवनुगम
 वाक्रोहर्न॥ उंक्रोहर्न॥ वाजधर्मविजया
 उंयजाम्बुविनसनुमयासत्वासुखारुव
 नुंदिथयद्वयुषादानांनिर्गुवयुष्टि
 यम्बनिकालवर्षरुवतुनाष्टसुहंरुवतु

रुद्र॥ अग्न्यादि॥ ॐ अग्निर्विष्णो॥ अग्नि
 आसिर्वाय॥ वदिक॥ दय॥ ॐ सर्वहिना॥ भ
 यान॥ ॐ ननुयाज॥ अग्नि॥ अग्निर्विष्णो॥ न
 ॥ ॐ यक्षयक्ष्मिण॥ ॥ यक्षानसंवासा
 दाव॥ वलिस्तुकायाव॥ स्नानस्तवाचकनरु
 या॥ काशिश्वामचयकनरुकाया॥ कुरु॥ कल
 णकायाव॥ वाक्कननयि॥ रुकायाव॥ वय॥ ॐ ४
 णानि॥ ॥ दय॥ चार्यमानमाननी॥ यय
 णिजाया॥ ॐ निनिर्मलनविधि॥ ॥
 अथगुणमधुलायनी॥ यय॥ रुजन॥ य॥
 मानन॥ सुय्या॥ द्य॥ न्यास॥ अथयानयूज
 ॥ आत्मयूजा॥ ॥ गुणयूजा॥ आसन॥
 ॐ गुणयूजा॥ चार्या॥ यय॥ मकय॥ निमित्तार्थ
 ॐ दमासन॥ यय॥ यय॥ नर्वकभन॥ याः
 दार्थ॥ ॥ शिवसुल॥ दद॥ नयाव॥ वर्वरुकाय
 ॥ चन्दन॥ जज॥ मका॥ खान॥ धूय॥ दीय॥ अ
 णगन्धादि॥ ॥ नासाक॥ वन॥ लखकाया
 वद्धवनवासकायमनु॥ ॐ मधुकेठरु
 मय॥ न॥ युनिगा॥ निवसु॥ न्धना॥ न॥ द्या॥ य॥
 म॥ न॥ ॥ सि॥ क्षमि॥ ग॥ व॥ नि॥ न॥ ॥ नासाक

त्यत्राय २॥ ॐ अथात्राय २॥ ॐ ऋणनाय २॥
 ॥ ५॥ ॥ रुगाय २॥ ॐ वक्रमधुलाय २॥ ॐ विष्णु
 मधुलाय २॥ ॐ गिवमधुलाय २॥ ३॥ ॥ वः
 र्थः ॥ ॐ अखधुमधुलाय २॥ यचमः ॥ ह्वान
 नि ॥ ॐ गायत्रय २॥ ॐ युनः २॥ ॐ दान
 यालाय २॥ ॐ कृपयालाय २॥ ॐ आधनग
 कय २॥ ॐ कालाग्रिबूदाय २॥ ॐ कूमास
 नाय २॥ ॐ अननासनाय २॥ ॐ यमासना
 य २॥ ॐ मयवदाय २॥ ॐ यरुवदाय २॥ ॐ
 सामवदाय २॥ ॐ अथवदाय २॥ ॐ कृत्तुग
 य २॥ ॐ कृत्तुगमय २॥ ॐ दायनरुगमय २॥
 ॐ कृत्तुगमय २॥ रुदयादि ॥ चन्दन ॥ सिन्दू
 र ॥ ज्ञानाज्जमका ॥ आश्चदन ॥ ह्वान ॥ दक्षि
 णदम २॥ धूप दीप रुत ॥ गाम्बूल ॥ नैवः
 द्रा ॥ रुतयय गाम्बूलादियमिष्ठा ॥ ॐ मनाः
 रुतिवद ॥ जाय ॥ सु ॥ ॐ मधुलायनममु
 र्धं सर्वगत्वाधियाय च ॥ रुतव ॥ ह्वय का
 गाय विष्णुब्रूयाय नमः ॥ ॥ सुकसाः
 दानयर्थं नमः सुकदीयसमन्विता ॥ अखधु
 मधुला काली मधुलीर्गनमाम्यहं ॥ १ ॥

वहु नमो सुमायुक्तं करुणासागरा रुमी
 नन्म (ध) साम विम्वरु मना नमो नमाम्यहं
 ॥ २ ॥ यथा कृत्तमरु विद्या म (ध) पूर्युक्तुथा
 मका गन्धयुष्म समरु च्च नाना रुमधुलन
 मथा ३ ॥ विष्णुयाया विगंगल्वं सरुजानन्द
 लक्ष्मीं क्लान क्रियात्मसा नल विदूयमधु
 लनमथा ४ ॥ यस्यानादिनवाकासि नम
 धीवर्गवर्द्धिनी ॥ अखद्यु मधुला कार्त्तमधु
 लननमाम्यहं ॥ ५ ॥ अविचार्यो मुसुदाय
 निर्यायय नमानन ॥ वगना वगना गकि
 यूक्तं वमधुलनमथा ६ ॥ मधुलाय नममु
 ह्यं सर्वगत्वाधियाय व ॥ रुद्धवत्त नूयाय
 विष्णु नूयाय नमथा ७ ॥ नवमधुलन कृत्वा
 अक्षरु कृत्तमिनी ॥ यु नूयादाय मर्द्धुः
 निष्ठा मुयश्चिमानन ॥ ८ ॥ किमधुलक
 व ॥ ॥ नमो यु नूमुनि ॥ य १० ॥ ॥ यु नू
 स्था २ ॥ अखद्यु मधुला कार्त्त व्याययनव
 नाचनीय ह्यदयगिगंथन नमो ध्या यु नू
 वनमथा १ ॥ ॥ अकथमधुनल्व ३ वाद्यना
 ता नलवनी गं नल्वंथन स्यायं नमो ध्या यु

३
 २

नूवनमः॥२॥ अज्ञानमिमिर्नृन्धस्य ज्ञाना
 अज्ञानगलाकया॥ वदून्मीर्नृन्धस्य ज्ञाना
 युनून्मः॥३॥ अनादिद्यानृन्धस्य ज्ञाना
 धर्मैकलुगवा॥ नमः॥ गीनाथवेद्याय ज्ञाना
 धर्मिविधायिन॥४॥ दूर्नकनामिथादीक्षा
 कर्णकत्वामलक्यं॥ अकथञ्ज्ञानमवृत्तिः
 नृन्धस्य युनून्मः॥५॥ ज्ञानगकि समानू
 दं गत्वमालाविरुषिर्गं॥ रुकिमूकियदाग
 नं युनून्मः॥६॥ युनून्मः॥ युनून्मः॥ युनून्मः॥
 वयवर्ना युनून्मः॥ अन्धयिक्साञ्छा म३
 विधुद्धात्मानमाम्भदं॥७॥ युनून्मः॥ युनून्मः॥
 विष्णु युनून्मः॥ युनून्मः॥ युनून्मः॥ युनून्मः॥
 दं नृन्धस्य युनून्मः॥८॥ यादुर्कास्यगम
 दन जायकवृद्धिर्नृन्धमान्॥ गत्वालीनसि
 नृन्धस्य नृन्धस्य युनून्मः॥९॥ यणसर्वस
 मृत्युर्नृन्धस्य नृन्धस्य युनून्मः॥१०॥ अज्ञायगम
 दं नृन्धस्य नृन्धस्य युनून्मः॥११॥ अज्ञायगम
 मधुलाकारं॥ द्यागयर्नृन्धस्य नृन्धस्य युनून्मः॥१२॥ अज्ञायगम

समाख्यार्ण अचलववावहिक ४॥ १२॥ अङ्ग
न्यादि ॥ ॥ उं कायद्युद्धिसननममु ॥ उं वाक्
द्युद्धिसननममु ॥ उं चिन्मद्युद्धिसननममु ॥
उं उं कायवाक्मनश्चिरुसद्युद्धिसननममु
म ॥ उं त्वेगनिस्वरुगानी संहिर्गचवनावन
॥ अन्कश्चनरुगानी दृष्ट्वाद्यनमश्चन
॥ कर्ममनसावावा गलाया व्याकृताम
म ॥ मनुहिर्नक्रियाहानं रुकिहीनं उयकु
नी जयहामाश्चनानीनं कर्गनिर्धमयागव
॥ अकर्गवाक्हीनम दामनयाम्यरुयुना
॥ याथारुयाय कर्माहं यायात्मायाय संहव
गहिमीयुना ॥ १४॥ सर्वयाय कर्गं कर्नु ॥ अ
ङ्गन्यादि ॥ ॥ यूनश्चुनावायाय कर्नाङ्ग
लिं वद्याय ॥ १५॥ उं अङ्गनील युष्मद्वाहि वि
ददन्वयसंहव ॥ अन्वयहयवियुष्मद्वाहि
वममाधन ॥ अन्वयहयवियुष्मद्वाहि सर्वदहि
स्वगन्तुना ॥ धर्मवार्थवमाधन कामवयन
मौगर्गि ॥ कर्ममनसावावा मयात्माविनि
वद्यन ॥ अन्वयहयवियुष्मद्वाहि दामनयाम्यरुयु
ना ॥ अङ्गन्यादि ॥ ॥ मधुलविस्कर्णी ॥ ॥

म३

मा ५

नदाज ॥ गाय ॥ ॐ वददवगायनेमु
 च्छन्दसः ॥ वाक् ॥ ॐ यद्वेदः काठना
 दः ॥ मुरुवददवगायनेमुविद्य
 मत्विक्त्वंममखरुव ॥ यथैदद्यात् ॥ ॥ म
 खिजनक्षय ॥ रुवामि ॥ ॥ सामवेदि ॥ धूमि
 ज्युक्त्वा ॥ यजन ॥ ॐ सामवेदाय ॥ ॐ का
 यगाय ॥ ॐ नृददवगायजगनीच्छन्दस
 ॥ वाक् ॥ ॐ सामवेदमुयिज्ञाकाज्ञाय
 ना नृददेवग ॥ कासायाक्रमुविद्य ॥ मत्वि
 क्त्वंममखरुव ॥ यथैदद्यात् ॥ ॥ मखिज
 नक्षय ॥ रुवामि ॥ ॥ अथैवेदि ॥ धूमिज
 युक्त्वा ॥ यजन ॥ ॐ अथैवेदाय ॥ ॐ वेदासगा
 गाय ॥ ॐ नृददवगायजनमुच्छन्दस
 ॥ वाक् ॥ ॐ अथैवेदानकाकाइन
 दुरुक्त्वादेवगवेगानसमुविद्य ॥ मत्वि
 क्त्वंममखरुव ॥ यथैदद्यात् ॥ ॥ मखि
 जनक्षय ॥ रुवामि ॥ ॥ कर्माचार्य ॥ धूमि
 ज्युक्त्वा ॥ यजन ॥ ॐ कर्माचार्यमूर्त्य ॥ ॥
 वाक् ॥ ॐ गकिदवीसीयुक्त्वा सर्व
 निविनासनी ॥ दवदवगायगकि कर्माचा

र्यनमाक्षर्य॥यथैरुक्तंयद्वाग॥ ॥आवा
र्यनक्षय॥रुवामि॥ ॥मूलाचार्य॥धूनि
अयुवा॥यूजन॥ॐमूलाचार्यमूर्त्यशवा
क्य॥०॥ॐधूनीलसुप्तमि विद्याध
यनस्युर्ग॥अनूयकायविथन्दा हागारुव
ममाक्षन॥मूलाचार्यनक्षय॥रुवामि॥ ॥
ॐगियष्टावधुविधिः॥ ॥अथनऊयूज
॥थागासनमधुनवाय॥नऊवाय॥यूव॥भा
यूव॥ ॥दक्षिणा॥रुक्॥ ॥यश्चिम॥न
यूव॥ ॥डरुन॥वाद्॥ ॥मक्षा॥क्राद्॥
यूजन॥यश्चिम॥ॐकौलसुधाजागायय
श्चिमवकायनमः॥ ॥डरुन॥ॐकौव
चामदवाय॥डरुनवकायनमः॥ ॥द
क्षिणा॥ॐकौनऊधानाय॥दक्षिणवका
यनमः॥ ॥यूव॥ॐकौयंगत्यनूषायय
ववकायनमः॥ ॥मक्षा॥ॐकौकौ
मनाय॥डरुवकायनमः॥ ॥वद॥ॐ
सुधाजागा॥ॐवामममद्यसविड॥ॐयान
नूद॥ॐयत्यनूष॥ॐगमीमनी॥अण्ण
क्षदि॥ ॥सूययाकनयाय॥चउममव

गता॥ नञ्जथाना॥ ॥ श्वनधूनववनञ्जयू
 जायाया॥ दवयाधानयाय॥ धूयदीय जाय
 स्ताग्रत्वायाय॥ ॥ अथकालिकालायनवि
 धि॥ यागासनमद्युलदयका॥ धञ्जसियू
 ज्युलिहमद्युलसगया॥ न्यामूगलयू॥ यू
 जन॥ न्यासा॥ मूङ्गल कोलकोस्ताकी॥ चन्द
 नादियूजनी॥ पूर्वकिलकयूजा॥ उंकांलांली
 लूंलूं ॐ दायनमः॥ ॥ आग्रया॥ उंकां
 नां ॐ नौनूं नूं अग्रयनमः॥ ॥ यम॥
 उंकां मांमां ॐ मूंमां यमायनमः॥ ॥
 नोमया॥ उंकांकां ॐ दूं दूं नोमया
 यनमः॥ ॥ वनू॥ उं कां ॐ वांवां
 वूंवां वनूयनमः॥ ॥ वा यय॥
 उं ॐ कांयांयांयूंयूं वाययनमः॥ ॥
 कूव ॐ ला॥ उंकांसां ॐ सांसांसां कूव
 नायनमः॥ ॥ ॐ न ॥ ॐ उंकां
 कांकां ॐ ननायनमः॥ ॥ ॐ म
 ॐ ॐ न्यायामूगलयूजा॥ उंशीयगुं
 कूरु ॐ माहायागुं गामायलारुमूङ्ग
 नायनमः॥ कीलयूजामूलमनु॥ ॥

पूर्वदिगं निःसकिलनाया ॥ खवधानकील
 जाना ॥ उवधानन्यामूगलननाया ॥ आना
 नः ॥ वाक् ॥ उं विससुतुगलनागम. लोक
 यालाश्रकामदा ॥ निष्ठनिगं गुरुदक्षि. म्ना
 पूर्वनकन स्मदा ॥ कीलकयूजन ॥ उं स्त्री
 यगुं दं रुद्रजुम्फायनमहाद्वीप ॥ निवग ॥ वा
 य ॥ वलिमन्त्र ॥ उं ॐ न्द्ररुखेव सर्वथा यथा
 न्यगत्समाधिना वलिगं यथा यथा मि. स
 र्वगुद्रनुमन्त्रिणी ॥ वलिगुद्र २ स्त्राहा ॥ ॥
 आग्रय ॥ पूर्ववगुसह ॥ कीलकगुरुन ॥
 वाक् ॥ उं विससुतुगलनायादि ॥ यूजन ॥ उं
 स्त्रीयगुं दं रुद्रजुम्फायरुद्र ॥ वलिमन्त्र ॥
 उं जगन्निशाथ सर्वथा यथान्यगत्समाधि
 ना ॥ वलिगं यथा यथा मि. सर्वगुद्रनुमन्त्रि
 णी ॥ वलिगुद्र २ स्त्राहा ॥ ॥ दक्षिण ॥ यू
 र्ववगुसह ॥ कीलकगुरुन ॥ वाक् ॥ उं वि
 ससुतुगलनायादि ॥ यूजन ॥ उं स्त्रीयगुं दं रु
 द्रजुम्फायरुद्र ॥ वलिमन्त्र ॥ उं दक्षिणमधिय
 निष्ठेव दक्षिणायवसंस्तिगा ॥ वलिगं यथा
 यथा मि. सर्वगुद्रनुमन्त्रिणी ॥ ॥ नैमया ॥

वलिगुद्र २ स्त्राहा ॥

युर्ववत्सरु॥ कीलकगठनं॥ वाक्॥ उं वि
सुत्तुत्तुत्तुत्तु॥ युञ्जनी॥ उं स्त्रीयष्टुं दं रुद्र अम्माय
रुद्र॥ वलिमन्तु॥ उं नमो भ्याधियनि (धेव) नमः
स्यायवनाक्षसा॥ वलिं नरुयययकामि॥ सुर्वगुः
क्रनुमन्तिर्ग॥ वलिं गृह्ण २ स्वारु॥ ॥ वन॥
युर्ववत्सरु॥ कीलकगठनं॥ वाक्॥ उं वि
सुत्तुत्तुत्तुत्तु॥ युञ्जनी॥ उं स्त्रीयष्टुं दं रुद्र अम्माय
रुद्र॥ वलिमन्तु॥ उं नमो नागनाक्षसा॥ यवा
न्यगत्समाधिमा॥ वलिं नरुयययकामि॥ गृह्ण
नुयून्मादनी॥ वलिं गृह्ण २ स्वारु॥ ॥ वाय
वा॥ युर्ववत्सरु॥ कीलकगठनं॥ वाक्॥ उं
वि सुत्तुत्तुत्तुत्तु॥ युञ्जनी॥ उं स्त्रीयष्टुं दं रुद्र अम्माय
रुद्र॥ वलिमन्तु॥ उं वायुवाधियनि (धेव) वा
यवयवसंस्किना॥ वलिं नरुयययकामि॥ गृह्ण
नुयून्मादनी॥ वलिं गृह्ण २ स्वारु॥ ॥ क
वन॥ युर्ववत्सरु॥ कीलकगठनं॥ वाक्॥
उं वि सुत्तुत्तुत्तुत्तु॥ युञ्जनी॥ उं स्त्रीयष्टुं दं रुद्र
अम्माय रुद्र॥ वलिमन्तु॥ उं कवनस्याथस
र्वशा॥ यवान्यडरुनास्किना॥ वलिं नरुयय
कामि॥ गृह्ण नुसमनात्सुका॥ वलिं गृह्ण २ स्

२० नमिहृदयस्वाहादव० सविता नमः स्वाहा मित्राव न
क्षेमि गच्छ स्वाहा वायु गच्छ २ बुद्ध्या प्रसि गच्छ स्वाहा यक्ष
गच्छ २ भामि गच्छ २ दिव्य नरु गच्छ २ गिर्वेधान नमः
२ मनामहादियच्छ दिवन्त धूमा गच्छ ३ स्वस्ति ४ य
थिवी मृत्माना यथा स्वाहा ॥ २०

स्वा ॥ ॥ श्रीभगवत् ॥ पूर्ववत्सह ॥ कीलकगारु
नी ॥ वाक् ॥ ॐ विमलसुखल ॥ यजन ॥ ॐ ह्रीं य
हं हूं हूं अमायहूं ॥ वलिमन्त्र ॥ ॐ नमः
धर्मसर्वथा यवान्यनत्समाधिना ॥ वलिमन्त्र ॥
ययक्वामि गच्छ नु समनात्सुका ॥ वलिगृह
स्वाहा ॥ ॥ म ॥ अग्नि कृष्णाय पूर्वम् ॥

पूर्ववत्सह ॥ कीलकगारुनी ॥ वाक् ॥ ॐ वि
मलसुखल ॥ यजन ॥ मूलमन्त्र ॥ ॐ ह्रीं य
हं हूं हूं अमायहूं ॥ वलिमन्त्र ॥ वलिगृह
स्वाहा ॥ यमिहृद ॥ ॐ मनाशुनि ॥ धर्म कील
कातायनी ॥ ॥ मायका कृतवाय ॥ ॥

कका कृतवाय ॥ यातामनयद्वयाय ॥ स्वस्ति न
वरुणाय स्वाहा ॥ सूर्याय ॥ न्यास ॥ अथ यात्रयू
जा ॥ अन्तयूजा ॥ चन्दनाक्षरद्वयायादाक्षर
स्तौतियाय ॥ तीर्थ आचारनयाय ॥ ॥ म

न्त्र ॥ ॐ गणवत्समनवेव महिमानमदाक
थासिन्धू ॥ सनत्सनीवेव अन्यातीर्थ ॥ ॐ विम
ला ॥ ॐ यावन्ति ॥ ॐ वितीथ ॥ निवामर्गमसमः

निवामा ॥ आया ॥ यजमानस्य द्रविण ॥ द्रयका

नका ॥ वद ॥ ॐ समष्टि गच्छ स्वाहा ॥ ॐ सकसम ॥

ॐ हूं दविष्णु ॥ ॐ हूं तावती ॥ ॐ यावका ॥ ॐ य

वनदा ॥ ॐ आया ॥ अस्मान् ॥ ॐ यतीर्थमि ॥ चमद

नादिकया॥ नागनाडयुक्ता॥ उं हं स ४ अनतायश॥ ३ क
 दकायश॥ ३ कृतिकायश॥ ३ यमनारायश॥ ३ मरु
 यदायश॥ ३ शीखयालायश॥ ३ आम्बिकायश॥ ३ क
 क्राटकायश॥ उं हं स ४ मरुमुगीर्षायमूरुयश॥ आ
 वारुनादि॥ यं व नर्त्त॥ लडाक्षयादका॥ दूर्वायुय
 ॥ दस्यु श्रीहि॥ सुवर्ध॥ सर्वोषधी॥ तीर्थोदकनथा
 ना॥ गंखमा॥ गंगमजलतया॥ उं हं स ४ मभगणि॥ उं गितागि
 न॥ उं तन्मिष्टया॥ आवारुनादि॥ धूपदीपनेवद्या॥ डा
 य॥ अग्न्यादि॥ कायालनयय॥ विसर्जन॥ यजमा
 ननर्गखजाकाव॥ यजमानिनर्गख॥ ॥ कर्मम
 धुलसञ्जायायनसूत्रयाकनयाय॥ विधि
 (थीर्लिंगनधमना॥ कर्ममालास॥ कलशवा
 यण्मउ४ प्रवलिआदिन॥ वाय॥ विधियूर्ध्व
 न॥ साधनादि॥ सांगयाङ्गकर्मार्चनयाय॥
 यजमानआदिन॥ रुविद्धरुजनयाय॥ गम
 यकीजययादन॥ यक्षमधुयसदन॥ आवा
 र्योडरुयर्ग॥ ॥ स्वयंशुहाशुरुविवाज
 ॥ किञ्चिद्विवासनविधि॥ ॥

रमतायागस्तांनादिनिव्यकर्मकृयाण॥

११ डाहावा॥ वाक्कनसस्त्रिवाक्य॥ १०५॥ मधुयसवाकल
 गीस॥ दारिनावरुर्गखनलूय॥ मूलकलभादि॥ ११

मयरायरुगवन्हेनववृषिन्ः मायषीः
अलिवलियिनिगवलियूजागृक्र २३ नृशम
वृशखल ४ महाशामयादिकयक्रमस्वः
ववदारुवसर्वविद्यानुडकादयश्मद्यार्थ
सिद्धिभययच्छस्वारा॥ वाक् ॥ उं यननिक्षः
ययहनायहनाहुविमंस्तिना। यागालसीहि
नाथचभुगृक्रनुमिमांवलिंगृक्र २ स्वाहा॥
उं जम्मां वलिंगृक्र २ स्वाहा॥ ॥ अदि
लाक मे यातवलि॥ उं लूं न्यायवलिं
गृक्र २ स्वाहा॥ उं नूं नृमयवलिंगृक्र २
स्वाहा॥ उं मूं यमायवलिंगृक्र २ स्वाहा
॥ उं दूं नमयायवलिंगृक्र २ स्वाहा॥ उं वूं
वननायवलिंगृक्र २ स्वाहा॥ उं यूं वायव
वलिंगृक्र २ स्वाहा॥ उं हूं कवनायवलिं
गृक्र २ स्वाहा॥ उं ङूं ङनायवलिंगृक्र २
स्वाहा॥ उं ञूं ञननायवलिंगृक्र २ स्वाहा॥ उं
उं वक्रवलिंगृक्र २ स्वाहा॥ ॥
॥ उं कौ कौ कौ कौ कौ कौ कौ कौ कौ कौ
लिंगृक्र २ स्वाहा॥ ॥ उं कौ कौ कौ कौ कौ कौ कौ कौ कौ कौ
नाथयवलिंगृक्र २ स्वाहा॥ ॥ उं गं गं गं गं गं

ॐ ॥ या क्रमां ॥ ॐ ॥ द्रविलिकमूरुयूजनं ॥
 ॐ ॥ कां ॥ गद्ययतिमसास्नायनमः ॥ ॐ ॥ कां ॥
 सनस्वनीयद्रासनायनमः ॥ ॐ ॥ कां ॥ कां ॥
 लालक्रीसिंहास्नायनमः ॥ मूलयागुपद
 भुग ॥ ॥ अन्ननीकक्राधेनिनीकनं ॥
 विधिनागयन् ॥ मूलजुमृगदक्षिणयादंत
 लः ॥ विद्वानरुमिनागयन् ॥ रुमिसिधनी ॥
 वाय ॥ ॐ ॥ अयाननिकयरुगा यरुगायुवि
 संस्तिगायनरुगाविद्यककान ननश्चकिगि
 वाक्या ॥ यागालंसीस्तिनायच रुविदिवो
 ननीकम ॥ विधिकरुचयकूना ननश्च
 नुगिवाक्या ॥ नानानमयायां ॥ मूलमक
 यथित्वा ॥ दक्षिणयादमधुलयविश्व ॥ स
 र्वयां ॥ मूलजुमृगदानयूष्यनका ॥ अयन
 नंगद्व ॥ ॥ नैमययाडरुनस ॥ अमृ
 कलगयूजनं ॥ ॐ ॥ स्त्रीयसुंरुंरुं अमृक
 लगमूरुयनमः ॥ ॐ ॥ कां ॥ कां ॥ अमृकलग
 यनमः ॥ ॥ मूलाचार्यदवाग्रगद्व ॥ रु
 माश्लिवक्ष ॥ ॥ ॐ ॥ भनूकाश्चनदखाना
 गवांकाटिगनिनयायश्चकाटिउत्रज्ञानाः

गुरुलिंगिवदर्शनं ॥ आकाशार्थयन् ॥ वाक् ॥
 उंरुगवत्तत्त्वसामादनस्य क्लार्थगवमंश्चिनी
 निक्षिप्तिद्विदददि युनूगनुनमामुनी ॥ नि
 ऊमूर्खयुमूर्खयूककगलिलनलावि
 दादाकृष्टिनेवायि लिङ्गस्थयनमूरुमी ॥
 अस्मगुलकृष्टमयक्क निमित्तार्थ आकाश
 सन्नारुवा ॥ गिव ॥ ॥ क्रमाचार्यदेवी अ
 षगकृ ॥ ॥ ॥ उं नकात्रास्तनमा नूरा
 वक्षयद्मासनस्किना ॥ षट्पकात्रागादवी
 कृत्तिकायनमाम्यहं ॥ आकाशार्थयन् ॥ वा
 क् ॥ उं नमामुदवदवनि निमिर्नीयक्या
 गया ॥ रुवनि सिद्धिनिद्धिर्त्वं आकाशदेवउद
 दिमा ॥ अस्मगुलकृष्टमयक्क निमित्तार्थ अ
 काशसन्नारुवा ॥ गकि ॥ ॥ ॥

गगाने मयद्वात्रा यविधि रुननवल्याच्च
 नावलियाग ३ अथवायाग ३ ॥ भलानिव
 गयू १ ॥ गमउकायू १ ॥ दावर्षयू ४ निवनयू ४
 विधिर्थायाय ॥ विस्तलभलवास्तनया ॥ ॥

गकार्यचगवसाधनं॥अथयमानमारु॥म
 कयलंचलमसूर्यं अरुक्षार्द्धनुलमसूर्यं॥
 क्षीनमकयलंक्षया दधिरुयलडवभा॥
 अक्षमकयलंचव यंचगवयकीरिगा॥
 वर्धमाह॥लमसूर्यनीलवर्ध्या कृष्णया
 लमसूर्यकथा क्षीननुगामवर्ध्या॥
 याध्वदधिरुथा॥कयिलायाद्युगियाक्षमिथ
 ताथ्यश्चरुमवय॥ ॥यश्चगवयूजनी॥

पुद्द अमयलिङ्ग
 दधि

लम

इड

दध

लम

सूर्यार्थ॥न्यास॥अरुयागयूजा॥आत्मयू
 जा॥ ॥वलि॥उंक्षांक्षयालायवलिङ्ग

[illegible]

यदक्षिणवक्त्राय नमः॥ वद॥ गङ्गा गीति॥ स
 ता उं वन्द्य कयस्थारुमसं. निरुंगं स्यात्तनू
 शमूनिर्वदितागं। ममामिरानुमनः सत्
 वायिवृजं सदायद्यधनं नमार्ति॥ अङ्गं ध
 दि॥ ॥ यच्चिमलमय॥ उं जनाद्वयं य
 दमासं नमयूष्यं नमः॥ ध्यान॥ वदुवाकधनं
 निरुं लक्ष्मीवा माङ्गुलिं गी सदा देव्या
 त्मकंदवी ध्यायद्वा वदुवा सदा ध्या॥ ध्यानयूष्य
 नमः॥ चियाङ्गुलि॥ उं क्रीं सः जनाद्वयं नायन
 मः॥ उं क्रीं क्रीं सदा जनाय ययि मवक्त्रा
 यनमः॥ वद॥ उं गंधवा॥ सः॥ उं द्विजः
 नाजामुनी विष्णु दूर्वा मनीरुविग्रहं। गीरव
 कगदाया वि. वन्दरुं मा नूनादिनि॥ अङ्गं
 ध्यादि॥ ॥ उरु नमः॥ उं वद्विदवना
 यः॥ दमासं नमयूष्यं नमः॥ ध्यान॥ ध्यायन्
 ताङ्गुलिं वद्वि सिंदुवा नून विग्रहं। वदुवाक
 धनं वन्दवी रुविष्णु नमः॥ सदा॥ ध्यानयूष्य
 नमः॥ चियाङ्गुलि॥ उं नो नो नूना मूलावद्वि
 दवनाय नमः॥ उं क्रीं क्रीं वदुवा मदवाय उरु
 वक्त्राय नमः॥ गायत्री॥ उं क्रीं गिरवानाथ

यविद्वारु. खरु न्यायधीमहि. नन्ना नूदय
 वादयाह ॥ वद ॥ ॐ अग्निः मूर्धा ॥ ॥ ॥
 वेवधनमर्हन्तं. लाहि गाङ्गा गङ्गा सुनी
 कालनी गकि सय कंया भाव क्रिनमाः
 मर्ह ॥ अग्निः मूर्धादि ॥ ॥ मध्यमि ल ॥ ॐ
 मामदवताय हूद मासुनमयूर्यश ॥ ध्यान
 ॥ अग्निः मूर्धा मयूर्यद्व. नाहिनी सहिर्गुरी
 रंससुद्ध धृति यद्वा. क्षीत्रवन्द्य विरावयन्
 ॥ ध्यानयूर्यनमः ॥ गिर्याङ्गलि ॥ ॐ सांसां सूं
 मामदवतायनमः ॥ ॐ कौं कौं कौं हूँ गना
 यद्वद्वकायनमः ॥ वद ॥ ॐ आया यमान
 ॥ ॥ नागयी ० स्तिर्गदव कून्द कर्ष्यनवि
 यर्ह. नातिर्वचननीसामी. वन्दर्ह गगनाः
 त्मर्ह ॥ अग्निः मूर्धादि ॥ ॥ आये गमयलि
 गा ॥ ॐ गिवाय हूद मासुननमयूर्यश ॥ ध्या
 न ॥ रावयत्तमयूर्यलिङ्ग. गिवसर्वरूपय
 कं. वक्राव्यायिर्गद्व. मलयरुवनध्वनी ॥
 ध्यानयूर्यनमः ॥ गिर्याङ्गलि ॥ ॐ कौं गमय
 लिङ्ग गिवायनमः ॥ वद ॥ ॐ गिवा नामसि ॥
 ॥ ॥ हिमकून्द निरुंदर्ह. गङ्गा रुट्टद्वध

निर्गं। सर्वयायह नमिर्गं वन्द्यं यनमं नि
र्वं॥ अर्गं धादि॥ ॥ यनः पूजनयादा
कमधयवश्चदनमून॥ दथसुन॥ ॥
यविग्ननवाला॥ वद॥ ॐ संभयामिसमाय
डावधीरिःसभाषधया नसन॥ स० नवता
ऊगागीरिःयश्चाना॥ समधूमगामधूम
गीरिःयश्चानाम्॥ ॥ पूजनं॥ ॐ जनयश्च
ह्यासथ्यामीदमप्रेनिदमन्नीयामथानिष
त्वायमांसिद्विष्वायूनूयथ॥ इदूयथस्वा
नूतयकूयनिःयथगामनिष्कृत्ववमादि
० सादवस्त्रासंविनाश्रययउच्चसिद्धिना
का॥ ॥ विरुगंका नथ॥ स्वयुलियूज
नी॥ ॐ रुर्वुवः॥ स्वः सुयुजाः॥ युजाहिः॥ साध
सुवानादीनिः॥ सुथायः॥ याये॥ नय्ययुजान्म
यादिगष्टययगून्वायाश्चर्थय्ययिमुन्मयाः
दि॥ ॥ दवलिं गरुगा॥ ॐ नमः॥ सुर्ववाय
॥ ॥ अगिरुगा॥ ॐ ॐ नावताधूममगादि
रुत० सुयवसिनामनवदगस्या॥ द्वास्त्रयु
नादसाद्विष्वावतदाधर्थयथिवीमहागाम
युर्वेः॥ स्वाहा॥ ॥ यजमानागा॥ ॐ दमि

ब्रू॥ सुगुलिंथि स्यात्तथा जयलथ धा॥
 उंकां गिरवानाथाय विद्महे सुखाय धीम
 हि॥ न नानुदयचायया॥ ॥ यमिष्टा॥ उं
 मनादूनि॥ ॥ मुनि॥ उं निर्मलं काय नू
 यानि वक्रकलानानि वरुणं ॥ शुद्धाभयाय
 यं सानां॥ विनिर्गं वक्र नूयिर्न॥ जूगं ध
 दि॥ ॥ लामयं लिंगयूजा॥ ॥ उं स्वस्तिः
 नन्द॥ ॥ ॥ स्नाना॥ चन्दनादियर्थ॥ यूजा
 ॥ प्रियाङ्गुलि॥ ३॥ वद॥ उं गिरवानामाप्ति॥
 आवाहनादि॥ धूय॥ दाय॥ उं मनादूनि
 मिष्टा॥ जाय॥ मुनि॥ ॥ भगवन्तं भगवन्तं
 साध्वन्तं दाय॥ भगवन्तं विष्णुं विष्णुं नन्दवन्
 गं कर्णयनमाप्त्यर्थं॥ जूगं धादि॥ ॥
 लामयं लिंगविमूर्त्तं नयादाव॥ ॥ श्रीभगवन्ति
 वगकिं स्यात्तन्निधाय॥ ॥ मन्त्रिणादिः
 आचार्यद्वय॥ यजमान आदिनमालकार्य
 वगव्यकार्य॥ वद॥ उं वाचनं शुभमि॥ ॥
 ॥ गिरिवंशगव्यसाधनविधि॥ ॥

नानाभूयया कृसाधनं॥ याममध्व॥ ॥

आयक्षी न कृष्णायुषि सिद्धार्थं गिले नन्द
 ला कीलजवसमायुक्तं अक्षरं दयदय
 न॥ धर्मदय॥ यागसुत॥ अथानन्यास॥
 अर्थयागयुजा॥ अथानमूलमन्त्र॥ ख
 उ॥ अ॥ आवाहनादि॥ धनमूदादर्थय
 न॥ अर्थयागलखनहाय अथानमूल
 मन्त्र॥ उं॥ अथानकायधानकायानर्थ
 नरुनदू॥ सर्व॥ सर्व॥ सर्व॥ सर्व॥ सर्व॥ सर्व॥
 दनूयक॥ गिरिवास्तु नन्दमहादेव वाय
 सदागिरिवाय नमः॥ गायत्री॥ उं॥ गिरिवाः
 नाथाय विद्महे स्वस्त्याय धीमहि न नान्
 दयचादया न॥ धर्ममन्त्रं धर्ममादिन॥ स
 कलगादहाय॥ वेद॥ उं॥ आथा अस्मान्मा
 नन॥ शुभयन्तु यन्तु ननायुक्तय॥ यूननुः
 विष्णु॥ हिनिययवर्हति ददी नदी दाय॥
 शुचिनायुक्तमि॥ ॥ धर्म अर्थयागसा
 धनविधि॥ ॥

नगाहकगुदि॥ उं॥ अं॥ निवृत्ति कलाय
 यथीनखायवक्र नसथाजागायदूरुट्

॥ आध्याना ॥ ॥ उंकांकांयगिष्ठाकलांनर्व
यविष्णुववामदवायदूरुदू॥ लिंणा ॥
उंकांकांविद्याकलायनजनत्वायनूददव
नायनूध्यानायदूरुदू॥ नारि ॥ ॥ उंकां
कैसानिकलायवायनत्वाय॥ ध्वनदव
नायनत्वनूध्यायदूरुदू॥ ददया ॥ ॥
उंकांकांसात्कानिककलायनकासकर्व
यसदागिवदवनाय॥ ध्वननायदूरु
दू॥ ललाटा ॥ ॥ उंकांकांआकावका॥
निरुनमुद्रि ॥ ॥ ॥

धनान्यासयाय॥ उंकांकांययदूरुदू
मशा॥ उंकांकांययदूरुदू॥ नमः॥ उंकांकांयय
येदूरुदू॥ नमः॥ उंकांकांययदूरुदू॥ नमः॥
॥ उंकांकांययदूरुदू॥ नमः॥ उंकांकांयय
दूरुदू॥ नमः॥ ॥ अध्यानन्यासांमालि
नी॥ गद्यनागि॥ ध्यानि॥ काकु॥ विविद्या॥ नर्व
यंयक॥ यन्कि॥ न्यास॥ द्वादशभक्त॥ खड्ग॥
खोटा॥ न्यास॥ धन॥ न्यास॥ याय॥ न्यास॥ भले
वासीनया॥ ॥

५ मन्त्रादिन्यास॥ साहका॥ न्यास॥ वक्त्रं॥ न्यास॥ श्रीकृष्ण
दिन्यास॥ ५

१७
नमो गिबुरुसा अद्या न न्यासा ॥ यव लास
वरुनं थक थाय ॥ □ ॥ ॥ थयूजनय
या अद्या न दयु लिखा दा ययाया ॥ ददया
दिना ॥ जावा रुनादि ॥ धस्वानमा रुस दूया ॥
यूजाया दा ला हा नन ॥ सदा अल यनय ॥ स्व
दुन्दरे न व र्व धम रु नय ॥ ॐ गिबिबुरुसा ॥

नमो क्लामरवजसा धन ॥ संथूथुदा थं थुदा
कुण काया ॥ अद्या ना मुम कु वा यूजन ॥ ॐ
कां कां कुं कां थय सु न र ददया यनम ॥ ॐ
कां धा न र न न न नू य गि न स स्वा हा ॥ ॐ
कां व न र थ व र गि वा य वी व द ॥ ॐ कां
करु र व म र क व वा य द ॥ ॐ कां द म र थ
नय र न व य या य व व द ॥ ॐ कां वि धि र द
इ अ म्मा य दं रु द ॥ यूजन ॥ ॥ व द ॥ ॐ म
हं र १ ॐ दा व द रु सु १ या उ गी ग म य द उ
॥ रु नु या क्लानं थ्या म्मा न्द वि थं व व र्थ र
षा ॥ ॥ यून शा अद्या ना मुन उ व न थ ध
व न ॥ ख व लान क द न ॥ ॐ गि क्लान व म्मा
धन वा ॥

[illegible]

अमृताय रुद्र ॥ ॐ न त्वायामि ॥ या क्रुर्ग ॥ ३ ॥
ॐ क्रां क्रां अमृताय रुद्र ॥ वद ॥ ॐ त्वा मिदि रु
वाम रु मागी वाजस्य कान वधा त्वां वृत्तं चि
न्दस्य गिन न त्वां काष्ठा सर्व कथा नारु न
॥ ४ ॥ ॐ क्रां क्रां कवचाय दू ॥ ॐ त्वा वरु विद स
स्य ॥ यिनि ॥ ज्ञान रक्त्त नख धुनी ॥ ५ ॥ ॐ क्रां
क्रां कवचाय दू ॥ वद ॥ ॐ सर्वं न चिन्तय
रुक्त धृष्ट्या मरुत्तवानां रुद्रिवशात् ॥ गमः
ध्व ० न च मिन्दसं कि न सृष्टा वाज न कि ग्धुः
सा ॥ उद नर्ग ॥ ६ ॥ ॐ क्रां क्रां कवचाय दू ॥ ॐ
रु न सि रु मि न स्य दि नि न सि वि श्व धरा वि
श्व स्य रु व न स्य धर्मा य धि वी ऊरु य धि वी
५० रु य धि वी न्मा हि ० सा ॥ यून नर्ग ॥ ७ ॥ ॐ क्रां
क्रां कवचाय दू ॥ ॐ मही शो य धि वी ॥ समा
क नर्ग ॥ ८ ॥ ॐ क्रां क्रां कवचाय दू ॥ न त्वाय
मि ॥ सचनी ॥ ९ ॥ ॐ क्रां क्रां अमृताय रुद्र ॥ ॐ
यद वा द व रु नर्ग ॥ कृ नर्ग ॥ १० ॥ ॐ क्रां क्रां
कवचाय दू ॥ ॐ माना पृथ्वी ना ॥ सीमा ऊ
नी ॥ ११ ॥ ॐ क्रां क्रां कवचाय दू ॥ ॐ माना
क ॥ समालयनी ॥ १२ ॥ वदि ह्माय न ॥ यू

वैद्वानमप्यदीक्षायनं ॥ ॥ चतुर्वेः
दायः कृष्णसुनीनीधाय ॥ मध्या ॥ उं द्वां ग
ह्यगीगकलायनमायुर्व ॥ उं द्वां गनिक
लायनमशादक्षि ॥ उं द्वां विद्याकलाय
नमशायसिमा ॥ उं द्वां निवृत्तिकलायनम
शाडरुन ॥ उं द्वां यगिष्ठाकलायनमशा ॥
उं मप्यदाय नूदमासुनं रयुर्थ ॥ वदाम्
यनं ॥ उं द्वां सियनल्वदवधददवध्याव
दारुवसुनमश्च द्वां ह्याशा रूसायादि
॥ वक्रनीलज्वासनकाश्यान जलयात्र
यूजायात्र जूलिका नंदयात्र ॥ यूजन ॥ उं
द्वां मप्यदाय नूदिगणाय सामदवगाय
गयणी चन्द्रसनमशा वद ॥ उं नू मिमीठ
॥ धूयादि ॥ सात्र ॥ उं मप्यदामूर्तिमात्र नु
नूदनीलसमद्युकि दिवाग न्मनलिः
फाञ्जी दिवारु नदहृषिग ॥ संहिग ॥ यू
वैदिराग दीव्यमानसुनऊसशा जगुर्गध
दि ॥ मप्यदिनाय ॥ ॥ धीसूक्यावमाना
श्रुनागदागी श्रुवाजि कं वृषा कयिश्चमे
गश्रु वद्वच ॥ यूर्वभाजय ॥ ॥ दक्षि

षडानयश्चर्चदीप्तायनी॥ॐ यश्चर्चदाय
 दमासंरयुषीश॥वदीप्तायनी॥ॐ वदासि
 ॥समायादियुर्ववत्॥अथ वसुः सुगुः आ
 सनादिः सर्वयुर्ववत्॥यूजनी॥ॐ दं यरुः
 चर्चदायरात्रदाजस्रगमगायवक्रदवना
 यरुसूयचुन्दस्यनमः॥वद॥ॐ ॐ स्वा
 ऊत्वा॥सा॥दक्षिणायि यश्चर्चदः शुद्धसू
 टिकसन्निहः॥दियाकृद्गुलक्षनाचमल
 कायामहाउजः॥संस्मितादक्षिणरागा
 यश्चर्चदनमासुगा॥अथ गन्धादि॥यश्चर्चदी
 नाय॥ॐ॥ ॥नदीयनूषसुकुश्रः (ध्रुवा
 क्षायश्चसुगिर्यं वाक्रगमनुमेगश्च अश्व
 र्यः॥दक्षिणजयत्॥ ॥यश्चिमाद्यन॥सा
 मवादिस्मायनी॥ॐ सामवदाय ॐ दमासं
 नमयुषीश॥वदिस्मायनी॥ॐ वदासि॥रु
 सायादियुर्ववत्॥नकावसुः सुगुः॥आस
 नादियुर्ववत्॥यूजनी॥ॐ दं सामवदाय ॐ
 ददवगायजगतिचुन्दस्यनमः॥वद॥ॐ अ
 यिजायाहि॥सा॥स्मिन् ४ यश्चिमादिः
 ग॥सामवदसनागन॥नकास्व नधनधीमा

नयन्नागसमयर्हः। सुयामरुषर्षीवि
या. लसलक्ष्मिगिगा. अगगन्धादि॥
सामवदिनाय॥ ०॥ दववृत्तश्चयुगाम्.
क्षुसामनर्थनर्. रुान्धुनिवसामानि
वामदवांगयेवर्हः। यमिद्यादिगमास्तु
यस्तुन्दागस्तुत्तयस्तुत्तदा॥ ॥ इरुनक्ष
नञ्जथर्वदिस्मायन॥ ॐ अथर्वदायस्तु
मासनेरयुष्यं॥ वदिस्मायन॥ ॐ वदसि
॥ रुसाद्योदियुर्ववर्हः॥ रुष्ववर्हः॥ रुष्व
गनादियुर्ववर्हः॥ यज्ञन॥ ॐ द्वाञ्जथर्व
दायवदानस्य॥ लमगाय॥ रुदवगायञ्ज
नृक्षयस्तुन्दायनम॥ ॐ गन्नादिवी॥ मम
॥ अथर्वोक्तनकगाम॥ स्मिग॥ इरुनक्ष
था. रिगमश्चा. नाहिनयावा. रुनीकलमह
मनिशा. अगगन्धादि॥ अथर्वदिनाय॥ ०॥
॥ अथर्वगिनसस्तुत्तव. स्तुन्दायस्तुत्तव
क्षमिकनिलनृद्वगर्हायनिषदादिका
। कालीकलाविकनृद. मूर्खनथर्ववर्हः॥
यस्तु॥ ॐ निक्कलानृयं॥ १३ ॥ ॐ द्वाञ्ज
ववायस्तु॥ ॐ नक्षत्रन॥ यन्मस्तुत्तकयाम

धुमवधूनं यंचयल्लवमालीव॥ उंकां द
 दयां नम॥ उंत्वेजविष्टदासुमाना॥ यूजनं॥
 नक्षमालाविधि॥ १४ ॥ उंकां कलायम
 धुयायनम॥ मधुया॥ यूजनं॥ १५ ॥ उं
 कांकां जम्भायरु॥ यूवाय नखाग्रयं॥ जू
 धल्यारुनाय नखेका॥ कृगवउधुयनवि
 यर्याष्टं॥ १६ ॥ उंकांकां जम्भायरु॥ वद॥
 उंमहां २२॥ उंदावर्कुरुह॥ धारुणीगमय
 कडा॥ रुनुयाध्मानंयासमाद्वष्ट्रियां वध्वं
 य॥ कृगानवजीकनदी॥ १७ ॥ उंकां द
 यायनम॥ उंदिनधगरु॥ कृगवयनच
 उधुयायनं॥ १८ ॥ उंयधुदगमधुयमं
 कानी॥ ॥ उंकां जूधावकां सर्वानदद
 यायनम॥ वद॥ उंमयकुरुं किनधमक
 वकमकाजूध्वरुगिसयमाना॥ एध
 रिचकमनध्वयरुनविष्मउवनानिगु
 शा॥ मधुययगिगु॥ ॥ रियूजा॥ दक्षिध
 ॥ वीरि॥ उंकांकांकां गानिकायमरुदवा
 यजुमुरुयकुरुनम॥ ध्यान॥ उंया
 नवधुलोवधुयं गिगुलवधुधुं॥ ध्मय
 यो

यामादयूजनं॥ उंयत्तामश्मिच्चनूदाय
याभदनत्वावक्रासवितासुभवा॥ मम
स्यजानोमूकगस्यलाकमस्तंस्वोमह्य
स्यादधमि॥ उंद्योऽभिनि॥ ॥ गताविक
क्षयनी॥ लाजाचदन. सिद्धार्थ. विरुक्ति.
दूर्वाञ्जुन. कृष्ण. विकामूकना॥ यक्ष्य
ना॥ अमूमनु॥ अथात्रामूमनुन. क्षि
यन्॥ वद॥ उं नक्षारुनं॥ विप्रिचलरा
नया॥ धर्ममद्युयसाधन॥ ॥

गतागिवशकिचनासनयूजा॥ मूल
गमन्यास॥ अर्धयात्रयूजा॥ आत्मयूजा
॥ यूजन॥ उंक्रौंचलास्त्रायनमः॥ उंक्रौंच
चलवृषास्त्रायनमः॥ उंक्रौंचलसिंहा
स्त्रायनमः॥ उंक्रौंचनमस्कनूदनूयकं॥
महायाद्युयताक्रायनूक्रायनूदय
यनमः॥ अमूक्रायगिवसनमः॥ अमूक्रा
यगिखायनमः॥ अमूक्रायकवचायन
मः॥ अमूक्रायनूकयायनमः॥ अमूक्राय
अमूक्रायनमः॥ अमूक्रादि॥ लिङ्गया

निमदां॥ ॥ वद॥ उं गत्वा जामि॥ उं अ
मिद्विन्द॥ उं त्वमत्ययुनि॥ उं दवस्य
त्वा॥ उं वक्रयज्ञानयधर्म॥ उं दं वि
ष्णु॥ उं नमः शम्भु॥ उं द्योः शम्भु॥ ॥
ध्या॥ उं धूमसि॥ ध्या॥ उं न जामि॥ उं या
रुलिना॥ उं जूनयन॥ जामि॥ ध्या॥ उं
नत्तामधीसकलगीर्थजलनयुष्मत्स्व
वृणयन्तु वयमाहितयुष्मत्स्वमाला॥ यत्नव
जागविषयमनिरिः यमस्तं॥ गोकुम्भमू
लिगिवशकियुर्गनमामि॥ नमः शम्भु॥

नमः शम्भु॥ दिवा नमः शम्भु॥ यूर्व॥ उं गत्वा
यामि॥ जामि॥ उं दवस्यत्वा॥ नमः शम्भुः
द्या॥ उं द्योः शम्भु॥ दिवा नमः शम्भु॥ उं द्योः शम्भु॥
उं द्योः शम्भु॥ नमः शम्भु॥ उं द्योः शम्भु॥
उं द्योः शम्भु॥ नमः शम्भु॥ उं द्योः शम्भु॥
यश॥ उं द्योः शम्भु॥ नमः शम्भु॥ उं द्योः शम्भु॥
नमः शम्भु॥ उं द्योः शम्भु॥ नमः शम्भु॥ उं द्योः शम्भु॥
नमः शम्भु॥ उं द्योः शम्भु॥ नमः शम्भु॥ उं द्योः शम्भु॥
नमः शम्भु॥ उं द्योः शम्भु॥ नमः शम्भु॥ उं द्योः शम्भु॥ ॥

दानदक्षिणेनदि॥ ध्यान॥ उंयुवा रुं क्षः
जटाधनी नकाकायादिवारु कषासाकमा
लाणीगुलाच नन्दी गमदा नयानकषा उंका
नदिनशावदा॥ उं डयनः सुववागिनः ॥ ५७
धुल्लमगुहाय॥ सुमृती कारुवनुना॥ आ
वारुनादि॥ जाया॥ स्माग॥ उं ध्वनयद्रास
नल्लव नकावर्धमरुध्वन॥ सर्वगमनिक
नल्लेव नदिमूर्तिनमा मुन॥ अगुगध
दि॥ ॥ दानवाममहाकाल॥ ध्यान॥ उं
चउर्वादिनिनगुध्व स्वस्ववटकया लह
न॥ विगुलाक्कामहाका ना दानवे वामन
॥ ५८ ॥ उंकां महाकालाय ॥ वद॥ उं अ
स्मन्नदमरुनायर्षनासावृण रु त्य व
~~~~ द्रुनोसजाया ॥ य ४१० सुनक्तव  
नधायिवरु ॥ उं उं उं उं उं उं उं उं उं उं  
वनुदवा॥ आवारुनादि॥ जाया॥ स्माग॥  
उंयनासनसमानुर्द कषुवर्धमहावल  
सर्वोनिधिर्वदव महाकालनमा मुन॥  
॥ गम॥ उं सुदन्तदक्षिणेयालो वाम  
रुक्मवल्लुकी॥ यनगुवामकदक्ष साक्ष



मालागणेश्वरी॥ ध्यान॥ ॥ उंकांग(घ  
घनायश॥ उंकांगनात्वा॥ ॥ मनस्वनी  
॥ ध्यान॥ ध्वनाङ्गस्मात्स्वययाच(ध्वनारुन  
नस्वयिनायस्मात्कुमालिकारुस्मा. वीधरु  
स्वमनस्वनी॥ उंकांसनस्वयेश॥ वद॥ उंम  
रुद्रमनस्वनी॥ ॥ महालक्ष्मी॥ ध्यान॥  
रुमवर्धुङ्गस्मात्स्वयानाननययाध्वना॥  
सदावामकर्त्रीशङ्कादमृग्याऽशीरुलवि  
ना॥ उंकांसमहालक्ष्मीश॥ उंकांगनलक्ष्मी  
वनी॥ वद॥ ॥ उर्द्धाद्वलिक॥ मन्त्रवद॥  
ध्यान॥ उंकांगवर्द्धाङ्गसूयागाङ्ग. मङ्गमालासू  
यस्कर्त्री॥ वनदारुयुरुस्वयमन्त्रवदायनः  
मामुनी॥ उंकांसमन्त्रवदायश॥ वद॥ उंज  
ग्रिमाङ्ग॥ स्मात्॥ उंकांगवर्द्धाङ्गवर्द्धाङ्गम  
ङ्गमालासूयस्कर्त्री॥ वनदारुयुरुस्वय  
मन्त्रवदायवध्वयनी॥ ॥ उंकांगकनय  
गयनमा॥ वद॥ उंजङ्गनाजायकिगवङ्ग  
नायादिनवदङ्गुलीगार्थकल्येनन्दाय  
नायाधिकल्येनमास्काद्यायमरुह्या  
गुम्भस्वयगाद्याङ्गमन्त्रकायगमद्याङ्ग



ध्यागर्गविक्रननमिदमागइडयनिष्ठ  
 निदृष्टगायत्रनकाचार्यम्याक्कनमेत  
 गम् ॥ ॥ वामदक्षिणया॥ उंक्रां ॐ द्या  
 यश॥ वद॥ उं नमिद्रस्यवन्नूतस्यहिव  
 दसुथ्यान्नयद्वर्गन्धान्नयस्या॥ जनन  
 मन्नाद्गदस्ययजः॥ कृष्णमन्नाद्विग्नस  
 मूननि॥ ॥ उं ध्रुवश॥ उं नागियदा॥ ॥  
 उंक्रां रुग्मयश॥ उं ॐ मीमवन्नूत॥ निगूल  
 ॥ ॥ उंक्रां गंगयश॥ उंक्रां यमनायश॥  
 वद॥ उं नदाह्यः॥ योजिष्टमन्नाकाह्यः  
 नेषादम्यन्नस्यद्यायायदर्मदङ्गन्धर्वा  
 यन्नाह्याद्याह्यस्ययन्नाइडन्नरु० स्य  
 दङ्गनह्यायनिदमयह्य॥ किन्नवमीयर्ग  
 याइअकिन्नवमिग्नवह्याविदलकानी  
 याउधनह्य॥ कलु कीकानीम् ॥ ॥  
 दानग्नयश॥ उंक्रां यशूषायश॥ वद॥  
 उं यज्जगमनइडयज्जगन्धियाविया  
 वियास्यवृहन्धियाग्निः॥ विह्वलाद  
 धेवयूनाविदकइ ॐ न्नाह्यदवस्यसवि  
 उ० यनिष्टनि० स्वाहा॥ उंक्रां यहासायश॥



[illegible]



॥ यनाकाया ॥ उँकां अर्धवर्षकां शो ॥ उँ  
 कां कवर्षमाह ध्यो ॥ शो ॥ अर्धवर्षविक्रमा  
 हक ॥ उँकां यं गत्य नूमाय यूव्वकाः  
 यश ॥ उँवाय गत्वाय ण्णं धनाधीदेवता  
 यश ॥ उँयत्य नूमाय वक्ता ॥ ॥ उँकां मेव  
 वश ॥ उँयामिषु जिनिग नरुह्लुविरुह  
 ह्लुया ॥ गिवाजिनि सग ॥ उँ नूमाहि ०  
 सा ॥ यनूष ॥ उँग ॥ ॥ उँयवमूर्ति का  
 यश ॥ उँनकारुनी ॥ उँकां नूमायश ॥ गाम  
 मयश ॥ उँग ॥ धनानां दूना ॥ उँदूर्वायश ॥  
 उँकां धुक्काधुक्का ॥ उँसर्वायश ॥ उँ  
 मावुदायश ॥ उँयल्लवायश ॥ उँनूष मुः  
 यनागमा ॥ ॥ उँकां नूमायश ॥ उँहृः  
 स्यनूक निन सिवायाना वामन धरिग  
 उमायसमा वामन धरि ॥ ॥ उँकां कम्  
 दायश ॥ उँनूमा कसिन्धु ॥ उँकां नूमाय  
 श ॥ उँल्लुविषया ॥ वलि ॥ उँकां यूव्वदि  
 ग्वासिखा वलिगृह ॥ उँकां रुड  
 ककृग्यालाय वलिगृह ॥ उँ  
 नूषवावदधिवक्ता ॥ ॥ ॥ ॥ उँम



[illegible][illegible]



जग्निआवाहन॥ वक्रहिसर्वात्मनरुव्यः  
 वाहमूनियवानेनरिगाहिरुषुधनकीवि  
 तालाकगघनसार्द्धममाधुननक्रकवेन  
 मस्त॥ ॥ ध्यान॥ ॐ अगयष्टसमानुरं ॥  
 किरुसंमहावली॥ आवाहयामिनमहंला  
 कनाथकृणासनी॥ ॐ कौं नौ नौ नू नः नू नः  
 मयश॥ ॐ अग्निर्मूर्धा॥ स्तुत॥ सर्वे न वः  
 कामयादवा न क कर्म्म महाद्युति॥ स्वर्ग  
 सनागकिरुसंम मियवनमास्तुत॥ ॥  
 ॐ कौं लमयायश॥ ॐ गन्धदाना॥ ॐ कौं दू  
 र्वायश॥ ॐ काधुम॥ ॐ कौं सुषयायश॥ ॐ  
 मानुषाय॥ ॐ कौं सुणायश॥ ॐ नक्षारुनी॥ ॐ  
 कौं नक्षायश॥ ॐ त्वं विष्णुदा॥ ॐ कौं यलवा  
 यश॥ ॐ अश्वमुखनागा॥ ॥ ॐ कौं रुद्र  
 यश॥ ॐ वृहस्यनक्षुदिनसि॥ ॐ कौं कमूदा  
 दायश॥ ॐ अस्माकमिन्द्र॥ वलि॥ ॐ कौं मि  
 यूनानककृष्णालायवलीगृक्षरस्वाहा  
 ॥ ॐ शम्भुकी॥ स्तुत॥ ॐ अर्यवयङ्गनवनक्र  
 नीयं सर्वायिदुष्टाविनियानिगार्य॥ दानाद  
 दिवस्तिनिन्दसर्व नक्षनुमसर्वस्वदिभ







मानुदं यागुना वृद्ध नूयिर्गं ॥ यद्गु सिद्धिय  
दाना नं रुद्रि नूयनमा मुनं ॥ ॥ दान  
वाम विनायकी ॥ ध्यान ॥ ॐ ह्रव न ४ स्वगा ३  
निरवर्धेन च उवा कर्म ह्यद नं ॥ गजाय  
ह्यवकाद नं कृपनी नूयका अरु ॥  
ॐ कौ विनायकाय २ ॥ वद ॥ ॐ नमा ग  
ह्या ॥ ॥ ॐ मूगमनसमानुदं कृष्ण  
वर्धम ह्यद नं ॥ सर्व विधि रु वी नार्थ गज  
नाउनमा मुनं ॥ ॥ गम ॥ ध्यान ॥ ॐ ह्र  
द नं दक्षिणायामो वाम रुक्त च ल उ की ॥  
यन ह्यु वाम कंद कृ सा कृ माला गा ॥ ॥  
नी ॥ ॐ कौ गद्यय नय २ ॥ वद ॥ ॐ ग नै ॥  
त्वा ॥ ॥ सन स्वगी ॥ ध्यान ॥ ॥ ॐ कौ कृ  
स्व नूया च ॥ ॐ नारु न ह रु विना ॥ य स्ता कृ  
मालिका रुक्ता वीणा रुद्रा सन स्वगी ॥ ॐ स  
न स्व र्थे २ ॥ वद ॥ ॐ महा ३ नूय ४ सन स्व  
नी य च नय न क उ ना ॥ धिया विज्ञा वि  
नाउनि ॥ ॥ महा लक्ष्मी ॥ ध्यान ॥ ॥ रुम  
वर्ध कृ स स्ता च यी ना न नय या ध ना ॥ स  
दा वाम क नी रु जा द मृ गी ४ गी रु ला नि



ना॥ उं कौमल लक्ष्मी ॥ वद ॥ उं श्री गुरु  
लक्ष्मी ॥ ॥ उं श्री देव लिकाम ॥ वद ॥  
धनना॥ उं श्री गुरु वरुण रुच्यदा च उं श्री कुरु  
भारुना॥ मद्रुमाला विदधुमय वानेव  
धन ॥ श्री हर्षिणी ॥ वद ॥ उं श्री लक्ष्मी ॥  
॥ उं श्री गुरु वरुण रुच्यदा मद्रुमाला वि  
दधुर्की वानेव धन सूर्यकां यरुच्यदन  
माम्बरी ॥ ॥ उं कौमल यगमय ॥ वद  
॥ उं अक्षरा जायकि गुरु नाया दिन वद  
गुरु नाथे कलिन न्दाय नाया धि कलिय  
नमास्कु न्दाय सरुह्या ॥ मद्रुमाला वगमय  
कुरुन काय गमया न कुरुधया गमि विरुन  
नमि कुरुमा ॥ उं यगि विदधु कुरु नाय वः  
वकायार्थ म्या कुरुन से लगम् ॥ ॥ वि  
सुल ॥ उं कौमल न्दायेश ॥ उं कौमल नर्मदा  
येश ॥ वद ॥ उं येशु वाजी कनि कुरुदना  
नद द्वासरु ॥ यत्ना ॥ रुन नन्नि म्युनीया  
माया द्यायुष ॥ यत्ना ॥ वृषाग्नि वृषा म्  
वनया कुरु ॥ समदियम् ॥ अग्नि आया  
हिष्ठा नथ ॥ ॥ उं कौमल निलायेश ॥ उं



कौञ्जललाय २॥ वद॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
 गीतिरुग ॥ सुयवसिनामनवदगस्या ॥  
 द्यास्तुष्टुनादसाविष्णुवक्तदाधर्षयथिवा  
 महितामयूरवेष्टाह्ला ॥ ॐ दव ॥ नोदव  
 स्वाद्यासकम्याचीयनमद्वनकल्यायनी  
 ॥ ॐ यरुन्नयनमाजिह्वननमा ॥ स्वाहा  
 सुमावदगन्दवीदूर्य ॥ आयुर्मानिर्वादि  
 सुम्यजामानिर्वादिष्टमरुनमथावर्णा  
 न्यथिद्या ॥ वसु ॥ ॐ कौयासायनम ॥ ॐ  
 कौरुनमनायनम ॥ वद ॥ ॐ यस्याकृमा  
 ॥ ॐ गीवीद्याया ॥ ॥ ॐ कौवक्षय ॥ ॐ  
 दक्षस्वाया ॥ ॐ कौवुरुस्यनय ॥ ॐ वरुः  
 स्यनञ्जि ॥ ॥ ॐ कौयर्कन्याय ॥ ॐ कौ  
 जलकाय ॥ ॐ ज्ञाजिह्वकलगा ॥ ॥  
 यमनावारुन ॥ नक्षत्रिर्वेवस्वतधर्म  
 नाङ्गसर्वामयेनचिन्तदिव्यमूर्त ॥ गुरु  
 गुरुनन्दगुरुमधीग ॥ गिवायनयादि  
 मश्वनमस्तु ॥ ॥ ध्यान ॥ ॐ महामहि  
 यमायुर्द ॥ नकाश्चदधिनीयमी ॥ कृष्णार्जुन  
 समञ्जय ॥ भारुयामियमकल ॥ ॐ कौमा



मौमूंम४मूं यमायश॥ वद॥ उंयमनद  
रुं॥ साय ॥ उंदधुरुसायमायवाध  
मादक्षामहावलायश॥ आवाहयिष्या  
मिधर्मनाजायननम॥ ॥ उंकावव  
गं कोमायश॥ उंकाठवर्गवेषूवोश॥ उं  
जं वज्रविक॥ मारुका॥ ॥ उंकांनैज  
या नायदक्षिणवक्त्रायनम॥ उंनऊनखा  
यनूदाधिदेवतायश॥ उंकांनूदगिवा  
॥ ॥ उंकांकेलासायश॥ उंकांमलयाय  
श॥ उंयामिषगिनिर्ष॥ गिनि॥ ॥ उंकां  
लमयायश॥ उंगन्धदाना॥ उंद्वयायश॥  
उं काधुमा॥ उंसर्वयायश॥ उंरुमानूदाः  
य॥ ॥ उंनकायश॥ उंत्वंजवीरुदा॥ उं  
उंयश्रुगायश॥ उंनकाहनी॥ उंयश्रु  
वायश॥ उंजुसुमु॥ ॥ उंकांरुगायश  
॥ उंवरुस्यनकुदिप्रसि॥ उंकांयधुनीका  
यश॥ उंजुस्माकमिन्द्र॥ ॥ वलि॥ उं  
कांदक्षिणविग्रसिखावलिगृक्षरसुहा  
॥ उंकांअग्निवनालक्षण्यालायवलिगृ  
क्षसुहा॥ उंजुथेनानथेविनूयानाल



रुक्मिणीदीर्घशक्तिद्वारुक्मिणीसुलक्ष्मि  
 निरुक्मिणीशक्तिगुक्मिणीशक्तिशुक्लशक्ति  
 लक्ष्मिशक्तिमगशक्ति॥ अगुद्वारुक्मिणी  
 क्षम्युक्मिणीशक्ति॥ मागधुक्मिणीशक्ति  
 नवशक्तिवागुद्वारुक्मिणीक्षम्युक्मिणी  
 यक्ष्मिणी॥ ॥ स्तुति॥ ॐ महावीर्यमहाक  
 या हि न्नाश्रनसमयरुक्मिणीशक्ति  
 शोलेकैलाशधुक्मिणीशक्ति॥ ॐ अयं  
 यक्ष्मिणीशक्तिनीयं सर्वविदुषः विनिय  
 मितार्थ॥ दानादिदत्तकिं न च सर्व  
 कुतुम्भसर्वस्वदिसम्पत्तयः॥ अगुगन्धदि ॥  
 रुक्मिणीशक्तिद्वारुक्मिणीशक्तिविधिः॥ ॥

रुक्मिणीशक्तिद्वारुक्मिणीशक्ति॥ न्यासादि॥ ॐ न  
 त्वायामि॥ आसना॥ ॐ दत्तस्वस्वा॥ अगु  
 नी॥ ॐ द्वांकीर्तिदानाय॥ ॐ द्वां दत्त  
 ॐ द्वां रुक्मिणीशक्तिाय॥ ॐ दत्तस्वस्वा॥ ॐ  
 द्वां अगुशक्तिवृक्षाय॥ ॐ रुक्मिणीशक्तिना  
 नयस्वस्वस्वस्वस्वस्वस्वस्वस्वस्वस्वस्व  
 धिद्यामूर्ध्वनिकुम्भमन्त्रमिष्टिध्यास्ताना



होसादयाम्मादिरुहाऽऽयस्त्रुद्व्याधन  
दा ॥ ॥ उंकां उयवदायश ॥ उं ॐ यत्वा ॥  
उंकां चन्द्रसंश ॥ वदा ॥ उं ॐ रुद्रवः ॥ सुः ॥  
सुखजाऽय्यजालिः ॥ सुयाऽसुयाऽनाचीनेऽ  
सुयाऽयऽयाऽये ॥ नय्यऽय्यजाम्मादिरुहाऽ  
सुयऽगुन्मायाऽय्यऽय्यऽयिऽभयादि ॥ ॥  
नेमयज्जावाहन ॥ नक्षत्रि नक्षत्रागलना  
यक. स्त्रीविग्नलवगालयिग्नचर्मद्योऽ  
ममाध्वन्यादि सुहाधिनाथ. लाकऽवन  
स्त्रीरुगवऽवमस्त ॥ ॥ ध्यान ॥ उं नीव  
नूर्यसवा नूरु. खरु रुद्रमहाद्युनि ॥ ॐ  
द्यनीलसमयरा. माहोयामिचनेमय्य  
॥ उंकां कां कां कां कां ॥ नैमऽयायश ॥  
उंय नदवी ॥ सु ॥ ॐ सर्वयका  
धियल्लेव. नैमऽयानिलविग्रह. खरु  
रुक्मा महावीना. नक्षत्रासायनमाऽमुन  
॥ ॥ उंकां गमयायश ॥ उं गन्धदाया ॥  
उंकां द्विवायश ॥ उं कां धुक् ॥ उंकां सुष  
यायश ॥ उं ॐ मानूदाय ॥ उंकां सुगाय  
श ॥ उं नक्षत्राहन ॥ उंकां नक्षत्रायश ॥ उं व



उविष्णुदा॥ उंकांयलवायश॥ उंअग्रमुप  
 नाग॥ ॥ उंकांरुगायश॥ उंवरुस्यन  
 दुदिनसि॥ उंकांवामनायश॥ उंअस्माः  
 कमिन्द॥ वलि॥ उंकांअग्निदाऊपया  
 लायवलिगृह्ण२स्वाहा॥ उंवृषदस्वाम  
 नूना॥ स्मा॥ उंअर्यवयङ्कनवनकनीयं  
 सर्वायिदृष्टा॥ विनियानिनायं॥ दानादि  
 दवस्मिनि॥ नन्दसर्व॥ नकनुनसर्वस्वस्व  
 दिमेष॥ अङ्गगन्नादि॥ ॥ निनेमयदानविधि॥

गमयविद्वामेनयूजा॥ न्यास॥ उंनखाय  
 मि॥ अमर्षनी॥ उंयवस्यत्वा॥ अङ्गकनी  
 ॥ उंकांनिवर्लिदावायश॥ उंदावादेवी॥  
 उंकांवलनामयश॥ उंयत्वाग्निगृह्ण  
 ॥ उंकांउद्वनवृक्षायश॥ उंरुगायन्वा  
 नानागयस्वपरिविष्णुयन्दु० रुक्माद्  
 र्या॥ यथिद्यासर्वननिद्रमत्स्यमियथि  
 द्यास्त्रानासीसादयाम्मादिद्या॥ इयस्व  
 (मृरुद्या० नक्र॥ ॥ दानदक्षिणा॥ वृष  
 रु॥ ध्यान॥ उंनिनरु॥ कवलायना॥ द्यो



वामनरुचिगहावधावधाकनिधेवर्मा  
कसूतविगुलवान्॥ उं वृषरायशाव  
दा॥ उं येरु घांजी कनिक्कादन्नानदद्वा  
सरुयत्सा॥ रुचन्नगिम्यनीष्यामायाद्य  
यूषयूना॥ वृषान्निवृषणमरुचन्नयाङ्ग  
द्वे० समदियम॥ नून्ना॥ न्याहिवीन  
या॥ न्यावारुनादि॥ स्मिन्॥ उं गाकसुहि  
मारुसं यश्चिमद्वानदक्कि॥ ६॥ सर्वयुधि  
कर्ननिर्णयवृद्धनूयनमासुन॥ ॥ द्वा  
नवामा॥ स्कीदा॥ ध्यान॥ उं गिरिवागूशन  
कावमा॥ वालनूयाधमासन॥ स्कीन्दा  
नूष्ठा॥ रुयारिनिगकिक्कूट्याधिः  
क॥ उं द्वां स्कीन्दायशावद॥ उं यदकन्द  
यथर्मा॥ स्मिन्॥ उं भयानादासनसुचन  
कावर्द्धमहाद्युनि॥ मन्त्रसिद्धिरुलदागा  
स्कीन्दासुर्लिनमा॥ सुन॥ ॥ गवा॥ ध्या  
ना॥ उं स्वदन्तदक्षि॥ ६॥ या॥ नो॥ वामरुक्त  
वल्लभुर्का॥ यनगुवामकदक्ष॥ साक्षर्म  
लाग॥ ६॥ ध्वन॥ उं द्वां ग॥ धयनयशा॥ उं ग  
दा॥ नीत्वा॥ ॥ सनस्वमी॥ ध्यान॥ उं ध



नाडास्मास्व नूयाच. ध्वनाहननरुविना  
यस्माद्रुमालिकाहस्मा. वीणाहृद्यासुनः  
स्वना॥ उंकांसनस्वये२॥ उंमरु॥ धूसन  
स्वनी॥ ॥ महालक्ष्मी॥ ध्वन॥ रुम  
वर्ध्मजसंस्माच. यीनाननयथाधवा॥  
सदावामकनांशाजा. दभाघी॥ धीरुले  
विना॥ उंकांसरुलक्ष्मीनमा॥ उंघीध्वन  
लक्ष्मी॥ ॥ उदोदिवनिक॥ उंकांसा  
मधदाय२॥ ध्वन॥ उंवालसुथामया  
सम. यन्निमयविरावयन्॥ यस्माकंच  
विदधुनि. मरुमालाकमधुल॥ वेद॥  
उंजुयज्यायाहि॥ रुम॥ उंनकावर्ध्म  
रादीयि. विदधुनिचयस्माकं॥ कमधु  
नूवास्माला. सामवदनमाम्भरुं॥ ॥  
उंकांदायनयगभय२॥ वेद॥ उंजुका  
जायकिनवृक्षनायादिनवद॥ विना  
येकल्यिनंदायनायाधिकल्यिनमास्मा  
दायसुसास्मा. नृमृशव. यथावयमन  
कायाणमयानंरु. ध्वनागं विकननरुहि  
रुमानडयनिष्ठनिष्ठुनायचनकार्ये



र्यायामनसेलगमा ॥ ॐ कौसिध्वो  
ॐ कौसगस्येशावद ॥ ॐ नदीशः योऽशि  
ष्टमक्षीकाशानेष्टादम्यनृषद्यायाय  
दर्मदस्रध्वोयं नाकावाख्यस्यपन्ना  
उन्नारु० सूर्यदजनकायानिदमयका  
किन्तवमीर्योनायाऽज्जकिन्तवमिधमवका  
विदलकार्नायाउधनका० कण्ठकीका  
नामा ॥ ॐ कौसामयश ॥ ॐ विश्वान्नृकं  
वीर्याविष्यवावयः पार्थिवानिचिमम  
नजाक्षसि ॥ याऽअस्करायदूरुन० सध  
स्वविवक्तामागम्भु (धनृगयाविष्णुवन्वा  
॥ ॐ कौधृगयश ॥ वद ॥ ॐ दिवावा विष्णुऽ  
नवायथिद्यामहावाविष्णुऽनावननि  
क्षात् ॥ ॐ रुहि रुक्मवसुनायुधस्वायय  
वृद्धिदक्षिणादागसद्याविष्णुवन्वा ॥ वसुः  
॥ ॥ ॐ कौविरुषधायनम ॥ ॐ कौक्य  
यश ॥ वद ॥ ॐ नक्षसीरागमा ॥ ॐ जय० स  
रुमा ॥ ॐ कौशुक्रायनम ॥ ॐ जूनात्य  
विष्णुमी ॥ ॐ कौगनेधनायश ॥ ॐ गन्नाद  
वी ॥ ॥ ॐ कौरुगसंजावनायश ॥ ॐ कौ



जमनसंजावनायश॥ॐ अजिद्यकल  
र्ण॥ ॥ वनूना आवाहन॥ ॥ अक्षरि  
दागलवानिधीनां गणनयर्धनसह  
प्सनाहि॥ विद्याधनाद्यामनगामयानं  
याहिन्वमत्मीरुगर्वनमस्तु॥ ॥ ध्याना  
ॐ शुक्लाविनधनंदवधुतयागकमल  
ल॥ आवाहयामि नमस्तु वनूनीयादना  
यनि॥ ॐ क्रांवांवांवांवां॥ वनूनीयश  
वद॥ ॐ ॐ मीमवन्ना॥ ॐ ॐ ॐ  
नागयाभक्तकनित्यं कलनाजामहाव  
लधनिर्मगणोवविद्वाना नागनाजानम  
मस्तु॥ ॥ ॐ क्रांवांवांवांवां॥ ॐ य  
वर्ग ॐ दायदीश॥ ॐ जम्बजम्बिका॥ ॥  
ॐ क्रांलंसथाजानाययधिभवकायश॥  
ॐ क्रांयथीनत्वायवक्राधिदवनायश॥  
वद॥ ॐ सथाजानाद्यामिमानयक्रमि  
ध्वानामरुवत्यनाग॥ ॐ अस्तु॥ ॐ  
यदिगुणस्यवाचिस्वाहाकृत्त० रुविन  
दनुदवा॥ ॥ ॐ क्रांर्गधर्मदनायश॥ ॐ  
क्रांणीयव्वनायश॥ ॐ यामिषुगिनिर्ष॥ ॥



ॐ कौण्डिन्याय ॥ ॐ गङ्गाय ॥ ॐ दूर्वा  
 य ॥ ॐ काष्ठाय ॥ ॐ कौसर्व्याय ॥ ॐ  
 मान्दयाय ॥ ॐ कौस्तुभाय ॥ ॐ नक्षत्रा  
 य ॥ ॐ नक्षत्राय ॥ ॐ खंजविष्टाय ॥ ॐ  
 कौयल्याय ॥ ॐ अश्वमेधाय ॥ ॐ कौ  
 वल्याय ॥ ॐ वृहस्पतये ॥ ॐ कौ  
 णिकेय ॥ ॐ अस्माकमिन्द्र ॥ ॥ वलि ॥ ॐ  
 कौयल्यमदिग्यामिस्थायलिङ्गद्रु ॥ ॐ  
 कौकालाक्षाय ॥ ॐ कौकालाय ॥ ॐ  
 वद ॥ ॐ यक्षगाना ॥ ॥ ॐ  
 महावीर्यामहाकायः ॥ सुवर्णसदृश  
 नि ॥ मण्डानमृगः ॥ लोलागंधमादनः  
 ॥ ॐ अर्यचयः ॥ नवनक्षत्राय  
 सर्वविदुषा ॥ विनियोगिनार्य ॥ दानादि  
 यवस्मिन् ॥ ॐ सर्वत्र नक्षत्रसर्वत्र  
 स्वदिशु ॥ अङ्गनादि ॥ ॐ निवर्त्तुः  
 मदानयुजाविधिः ॥ ॥

नमः वायवाद्या नयूजा॥ न्यासादि॥ ॐ  
नवायामि॥ आसनी॥ ॐ देवस्य स्वा॥



सुदधी॥ उंकायूषिद्वनायश॥ उंकावाप  
वी॥ उंकावलनानर्गयश॥ उंचत्वात्रिगु  
गा॥ उंकाउद्वलवृक्षायश॥ वद॥ उंरु  
नायत्वानावाकयस्वपरिविश्वायैवैरु  
कान्दर्यायैयथिद्यामर्चनकनिद्रमन्त्रमि  
यथिद्यास्तानाहोसादयाम्प्रदिष्ट्याऽ  
यस्त्वग्नेरुद्यानक्र॥ उंउयवदाम॥ उं  
अग्नायादि॥ उंकाचन्द्रस॥ वद॥  
उंरुर्दुवःखःसुयजाऽयजारिःसुय  
सुवावावीनेऽसुयायऽयाधेशानययुः  
काम्प्रयादिगऽसुयगून्मयाश्चधययि  
उंमयादि॥ ॥ वायूआवाहन॥ नक्र  
हियक्रममनक्रमयःसुगमधिनूरुस  
रुसिद्धिमयो। यागमधियःकालकवेऽ  
सुहायागृहानयूजारुगर्वनमस्तु ॥  
ध्यान॥ उंधुजरुर्मृगा नूरुसुयामवर्ग  
महावर्त। आवाहयामि नमस्तु यवन  
यागनायक॥ उंकायाँयाँयूयऽयूः  
वायवश॥ वद॥ उंरुववायवृरु वूः  
सुक्त॥ सुक्त॥ उं सर्वयागमकवेव



2243

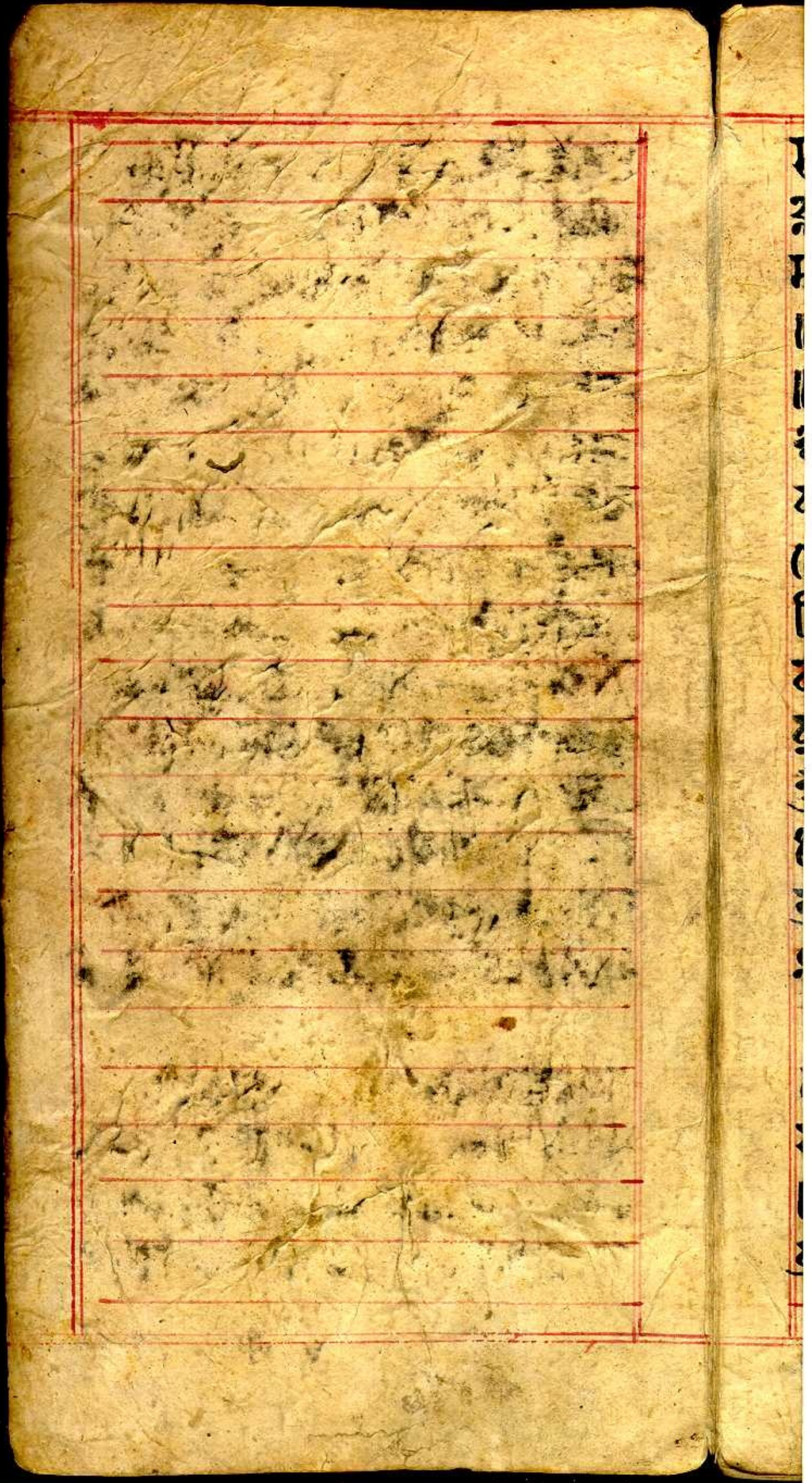














सर्वज्ञावायूदवना॥ ध्वजहस्तामहाय  
 ज्ञावायूदवनमामुन॥ ॥ उं कौण  
 मयायश॥ उं गन्धदाना॥ उं कौद्वीयश  
 ॥ उं काष्ठाग्निकाष्ठाग्निका॥ उं कौसर्वयायश  
 ॥ उं कौमानदायश॥ उं कौसुगायश॥ उं न  
 क्षाहनी॥ उं कौनक्षायश॥ उं त्वंजविष्ट  
 दा॥ उं यलवायश॥ उं जूधस्वमुयना  
 ग्ना॥ उं कौचुगायश॥ उं वृहस्पतयुदिनः  
 सि॥ उं सर्वनगायश॥ उं जूस्माकमिन्द्र॥  
 वलि॥ उं कौकालाक्षकणयालायवलि  
 क्रस्त्राहना॥ उं दूर्गयुगावावा॥ स्माग्न॥  
 उं जूयवयस्कृन्वन्नक्षत्रीयं सर्वोयिदक्ष  
 विनियानिगायी॥ दानादिदवस्मिन्नि  
 दसर्वं नक्षत्रं सर्वस्वस्वदिस्व॥ जूग  
 धादि॥ ॐ निवायवादानाश्चनविधिः॥ ॥

नमः॥ डलनदानयूजा॥ न्यास॥ उं नत्वा  
 यामि॥ जूसनी॥ उं दवस्यत्वा॥ जूयूकर्ष  
 ॥ उं यमिस्त्रदानायश॥ उं दानादवी॥ उं  
 कौजानाङ्गनामयश॥ उं वत्तानिगृह्णा



॥ उं द्रौं यक्षवक्षाय श ॥ उं द्रौं दानाधिदेवता  
य श ॥ व द ॥ उं ह गायत्र्या नाना गायत्र्या नरि  
विश्वस्य नृ ० रुना नृ यो ४ यथि वामूर्ध्व न  
निकमन्नमियथि वामूर्ध्व नाना रौ साद याम्मा  
दिह्या १ ५ यस्मिन् रुचा ० न द ॥ ॥ दानद  
क्षि (गदवी ॥ ध्यान ॥ उं न काष्ठादि रुजा द  
वी यी नाना नयया धना ॥ यी नासिंह सनाथ  
श्वा ॥ धन सात्य लद यो ध्या ॥ उं द्रौं दवी श ॥ व  
द ॥ उं द वासि माद वी न श्विन रास न स्वः  
नी ॥ गृध्र नम द्या नास्मा मि दाय द धू निद्रि  
य व सून न व सूर धय स्य चानु ऊं ये ॥ सा  
॥ उं रु नि यक्ष सना दवी यी न व धर्म स्यो वनि  
॥ उं द्रा सिद्धि रु ली दाना दवी नू य न मा मुक्ता ॥  
॥ ॥ दान वामा ॥ च धु ॥ ध्यान ॥ उं रु सूर्य  
उर्म रव मा ध्र च धु रु या रु सूर्य वाना ॥ क  
म धु लू धन ४ गू ली व्या ध्र च मा रु रु य व ॥  
उं द्रौं च धु य श ॥ व द ॥ उं द ० रु स्र द वी य  
थि विश्व सूर्य १ नू नी मा या स्व ध या रु ना  
सि ॥ रु द न्द व द्या १ उं द म सूरु द्या म विष्ट  
नमं दि हिय रु १ नू सि नू ॥ सा ॥ उं यी र्ण



रुनक्षमाग्रुं कृष्णवर्णनिमर्दन। सर्व  
सिद्धियदागानं चक्षुमूर्तिनमाः मुनि॥  
गदा॥ ध्यान॥ ॐ स्वदन्तदक्षिणायो व  
महर्षचलशुकी॥ यत्र गुं वामकदक्षसा  
क्षमालागदध्वनी॥ ॐ द्वागदध्वनायश  
ॐ गधनांत्वा॥ ॥ सनसुनी॥ ध्यान॥ ध्व  
नाक्षमासुनूयाच ध्वनारुनक्षमासुनूयाच  
साक्षमालिकारुखा वीक्षारुद्धासनसु  
नी॥ ॐ द्वासनसुनूयेश॥ वद॥ ॐ महर्षसु  
नसुनी॥ ॥ महालक्ष्मी॥ ध्यान॥ रुमव  
र्णसुसुखाच यीनान्नगयथाधना॥ सदा  
वामकनीराजा दुमृग्याः धीरुलान्विता  
॥ ॐ द्वा महालक्ष्मी॥ ॐ द्वा ध्वनलक्ष्मीवर्ण॥  
॥ ॥ इन्द्रोदयनिक॥ ॐ द्वा अथर्ववदाय  
शा ध्यान॥ ॐ अथर्वकृष्णवर्णराखनरु  
लकध्वनिर्णानवयसुकरुर्षव काल  
मूर्तिविहवयन॥ वद॥ ॐ गनादवा ॥  
साध॥ ॐ वधुः नमहा नोदः खनरुल  
कध्वनिर्ण॥ वलयसुकरुर्षव वदार्थ  
वर्णनमामुन॥ ॥ ॐ द्वा कलियुगभय॥



ॐ अक्षयनाशाय कितव कृतायादि नव  
 दर्शन कृताये कलियन न्दाय नायाधिक  
 लियन मास्क न्दाय साका ल्याय म्मृष्य  
 व (ग) वाचु म न का य (ग) द्या नं कृ (ध)  
 या गं वि क न न मि क मा ध १५ य नि कृ  
 ति द कृ ता य यं न का वा र्य म्या कृ न मे  
 ल ग म ॥ ॥ ॐ द्रौ ग धु केश ॥ ॐ द्रौ को  
 गि केश ॥ ॥ व द ॥ ॐ न दी कृ ॥ यो जि  
 ष्म म् दौ का क्शो ने षा द ॥

[illegible]



[illegible]



मा॥ ॥ॐ कौमादुदायश॥ॐ कौमक  
 टायश॥ॐ यामिषुमिनिर्ग॥ॐ कौगमया  
 यश॥ॐ गन्धदा॥ॐ दूर्वायश॥ॐ काधुग्न॥  
 ॐ कौसर्वयायश॥ॐ ॐ मानूदाय॥ॐ कौसू  
 णायश॥ॐ नक्षारुनी॥ॐ कौनकायश॥ॐ  
 खंडविषदा॥ॐ कौयलवायश॥ॐ अश्वमु  
 यनामा॥ॐ कृणायश॥ॐ वृहस्पतकृदिन  
 सि॥ॐ कौसुमखायश॥ॐ अस्माकमिन्द्र  
 ॥वलि॥ॐ कौडरुनदानदिवासिखाव  
 लिगृह्णस्वारु॥ॐ कौत्रकयादकृणय  
 लायवलिगृह्णस्वारु॥ॐ नीलयावा  
 णिककृष्ण॥ॐ कौ॥ॐ महावीर्यामहा  
 काय॥ॐ द्वाहृदिकसुनिर्ह॥ॐ कृद्वान  
 णिका॥ॐ ला॥ॐ मवांघ्रसुधरुनी॥ॐ अ  
 र्यचयकृणव नक्षनीय॥ॐ सर्वायिदूखावि  
 नियानिनायी॥ॐ दानादिदवस्मिनि॥ॐ न्य  
 सर्व नक्षनुनसर्वस्वस्वदिमयू॥ॐ अग्न  
 श्वादि॥ॐ निडरुनदानार्चनविधि॥॥

नक्ष॥ॐ शीमानदानयूजनी॥ॐ न्यासादि॥

दय दीप जायरे



[illegible]



ॐ सर्वविद्याधिया दत्वा ॐ नमो नानामना  
मना गूलया निधना दत्वा ॐ नमो नायन  
मामुन ॥

॥ ॐ कौलमयाय  
शा ॐ गम्बदना ॥ ॐ कौद्वीयश ॥ ॐ का  
मुगकाकुग ॥ ॐ कौसर्वयायश ॥ ॐ ॐ  
मानुदायश ॥ ॐ कौसूयायश ॥ ॐ नक्षारु  
नी ॥ ॐ कौनक्षायश ॥ ॐ खंडविषदा ॥ ॐ  
कौयलयायश ॥ ॐ अक्षमुयनाग ॥ ॐ कौ  
क्षुयायश ॥ ॐ वरुस्यनक्षदिनसि ॥ ॐ कौ  
सूयमिह्मिनायश ॥ ॐ अस्माकमिन्द्र ॥ व  
लि ॥ ॐ कौलीमनूयक्षयालायवलि  
गृक्षरस्वारु ॥ ॐ अक्षवाचदधिवका ॥  
माग ॥ ॐ अयंचयक्षनवनक्षनीयस  
वोयिदक्ष ॥ ६ विनियानिनाय ॥ दानादि  
दयस्मिनि ॐ नृसर्वे नक्षनुनसर्वस्व  
स्वदिमय ॥ अक्षगंधादि ॥ ॐ मित्रोभा  
दानार्थेन विधिः ॥ ॥

नमः अक्षदानप्रज्ञा ॥ न्यासादि ॥ ॐ  
नत्वायामि ॥ आसनी ॥ ॐ दधस्यत्वा ॥ अ



सुकृष्ण॥ उंक्रां यथा दानाय २॥ उंक्रां  
 दवा॥ उंक्रां अमुं मानवमाय २॥ उंक्रां  
 निगृह्णा॥ उंक्रां अमुं सुवृक्षां २॥ वद॥  
 उंक्रां अदिह्यास्तु गम्यादिह्येसदः ॥ आसी  
 द॥ अमुं वृद्धां वृषकां ॥ अमुं निद्राम  
 मिनां वृनिमां मयि विद्या ॥ आसीद  
 द्विगुणं वृनानि सप्तमाद्विगुणं निव  
 नृणां वृनानि ॥ उंक्रां अमुं चन्द्रनाय २  
 ॥ उंक्रां विद्यया ॥ ॥ अमुं ननु आचारुन  
 ॥ नक्षत्रियां तालधनाधनं ननु नागभि  
 षाकिं ननु गीयमानं ॥ यथा ननु द्रा  
 मन्तलाकसाद्वं मनीषा ननु धनमस्म  
 दीयं ॥ ॥ ध्यानं ॥ उंक्रां मनायाय न  
 दवं गीरवचकगदाधनं ॥ आचारुयामि  
 दीविष्णुयां तालनवासिनीं ॥ उंक्रां अं  
 अं विष्णुवश ॥ उंक्रां दं विष्णु ॥ ॥ ॥  
 उंक्रां ननु गमधियनिदव अमुं ननु नामवि  
 ष्णुं ॥ या तालवसुनिह्यं अमुं ननु काय  
 नमामुं ॥ उंक्रां लभसयाय २॥ उंक्रां म  
 दाना ॥ उंक्रां दूर्वाय २॥ उंक्रां लभुं ॥ उं



कौमुदीयाय २॥ ॐ ॐ मानूदाय ॥ ॐ कौ  
 मुख्याय २॥ ॐ नकारुनी ॥ ॐ कौ नकार  
 २॥ ॐ खंड विषदा ॥ ॐ कौ यलुवाय २॥  
 ॐ अश्वमुयनाय ॥ ॥ ॐ कौ चक्राय  
 २॥ ॐ वृहस्पति ॥ ॐ कौ धर्म २॥ ॐ  
 अस्माकमिन्द्र ॥ वलि ॥ ॐ कौ जं अश्वधि  
 यनयलानककक्षया लायवलिगृह २  
 स्वाहा ॥ ॐ यवृक्ष ॥ स्वाहा ॥ ॐ अयं वय  
 र्कमव नक्षत्राणीं सर्वानि दृष्ट्वा विनिय  
 त्तितायां ॥ दानादिदवस्मिन् ॐ नृसर्व  
 नक्षत्रानुसर्वस्वस्वदिमेषु ॥ अग्नय  
 दि ॥ ॐ अग्नि अश्वाना च न विप्रिष्टा ॥

नक्षत्राणां नक्षत्राणां ॥ नक्षत्राणां ॥ ॐ नक्षत्र  
 यामि ॥ अस्मिन् ॥ ॐ दवस्वत्वा ॥ अश्व  
 ती ॥ ॐ कौ खर्जदानाय २॥ ॐ दानादवी ॥  
 ॐ कौ ददयमानाय २॥ ॐ चत्वारिंश  
 स्ता ॥ ॐ कौ वर्तवृक्षाय २॥ वद ॥ ॐ अदि  
 त्यास्तु गायदिहो मद ॥ अस्माद ॥ अस्म  
 द्वाद्यां वृषरा ॥ अन्तर्निक्षममिना नक्षत्रि



माहामयथिद्याहा॥ अमीदद्विष्टाकुवः  
 नानिसममाडि॥ अरुनिब्रूहस्यवृता  
 नि॥ ॥ उंक्रां दुर्दुन्दुनायश॥ उं वक्र  
 हास्यन॥ ॥ वक्रां जावारुनी॥ नक्षत्रि  
 विष्वाधियनमूनिद्र॥ लाकनसाईयिष्ट  
 दवकारि॥ सर्वस्य धातास्यस्यनियताः  
 वा॥ विद्याधर्ममसुगर्गनिवाया॥ ॥ धानि  
 ॥ उं यागवर्धुमहावाक॥ रुमानुदं महाव  
 लहाजावारुयामिगमरु॥ वक्राधर्मा  
 नायक॥ उंक्रां उं उं उं वक्रासश॥ वद॥  
 उं वक्रायज्ञानं॥ साग॥ उं यदयानिब्र  
 उमूर्ति॥ मूर्धस्माननिवासिनं॥ सुखि  
 कर्त्तात्मकानित्यं॥ नमीवक्रानमाधुन  
 ॥ ॥ उंक्रां गमयायश॥ उं गन्धदाना  
 या॥ उंक्रां दूर्वायश॥ उंक्रां गुग्गुलु॥ उंक्रां स  
 उंक्रां मानुदाय॥ उंक्रां यवसूयायश॥ उं  
 नक्षारुनी॥ उंक्रां नक्षायश॥ उं त्रैलुवि  
 रुदा॥ उंक्रां यलवायश॥ उं अश्वमुयवा  
 त्मा॥ ॥ उंक्रां वृषायश॥ उं वरुस्यन  
 रुदिनसि॥ उंक्रां विष्वायश॥ उं अस्माक

र्षपा  
 यश॥



मिन्द्र॥ वलि॥ उंक्रौं उंङुङाधियनयनू  
 वलक्षेययालायवलिगृह्णस्वाहा॥ वद  
 ॥ उंङुरुयिवनमग्निनारानूगमयस्क  
 नाअरुदियारुनूतिरिहोमा॥ उंअ  
 यंययङ्गनवनक्षनीयं सर्वायिदृश्यावि  
 नियानितार्यं॥ दानादिदवस्त्रिकिञ्चुद  
 सर्वेनक्षत्रुनसर्वस्वस्वदिसय॥ अणग  
 म्नादि॥ इतिदुर्द्धानाचनविधि॥ ॥

तन्नामधुयमधुयुजनं॥ उंक्रौंक्रौं  
 वास्त्रादिययङ्गुरु॥ उंक्रौंयजायतिद  
 वनायङ्गुरु॥ उंक्रौंशौयगूङ्गुरुअम्ना  
 यङ्गुरु॥ उंक्रौंनमस्तुनूदनूयक्रमरु  
 याधुयनायअम्नायङ्गुरु॥ उंक्रौंक्रौं  
 कवचाययवस्त्रायङ्गु॥ उंक्रौंरुदया  
 यगमयायश॥ उंक्रौंक्रौंनिनसायदूवा  
 यश॥ उंक्रौंक्रौंनिखायसर्वर्थायश॥ उंक्रौं  
 क्रौंकवाचायनक्षायङ्गु॥ उंक्रौंक्रौंअम्ना  
 यङ्गु॥ उंक्रौंक्रौंनिखायवीषङ्गु॥ उंक्रौंः  
 सयनिस्त्ररुय॥ वद॥ उंअस्माकमिन्द्र॥



ॐ नमो भगवते ॥ ॐ लक्ष्मी नमो ॥ ॐ गन्धर्व  
 ना ॥ ॐ काष्ठान् ॥ ॐ मा नूदाय ॥ ॐ ल  
 कवि सदा ॥ गिराज ॥ ॐ यव कृष्ण ॥ ग  
 यि ऊरु नाना लक्ष्मी वा विलासिना ॥  
 नमो भगवते मया जन वध न्नामि नम  
 सि ॥ ॐ वरुण नमः ॥ ॐ य न य न्नामः  
 विनः ॥ पूर्वो मा दिव दिव मारुग मा मूव  
 नि ॥ ॐ न्याया वायु यिवा सिंधु नदिवादि  
 हो ॥ ॐ अदि कि नर्म य मरु ॥ ॥ समाप्त  
 ॥ ॐ लोका यानि रुगानि स्माव लानि  
 वलानि वा ॥ वक्र विष्णु गिव मरु नरु  
 कुरुर्वनु सर्वदा ॥ अष्टमी धादि ॥ ॥

पूर्व ॐ न्य कल भगवते ॥ ॐ कान्ति न  
 श ॥ ॐ कान्ति मरु कालाय श ॥ ॐ कान्ति मरु  
 दाय श ॥ ॐ कान्ति कनय मय श ॥ ॐ कान्ति ग  
 य श ॥ ॐ कान्ति मनाय श ॥ ॐ कान्ति मा माय श  
 ॥ ॐ कान्ति मनाय श ॥ ॐ कान्ति ॐ न्याय सुवा  
 रुनाय सुय निवा नाय श ॥ ॥ वद ॥ ॐ  
 डयन ॥ मून वा गिनः ॥ गृध्र न्य मरु न्या



या॥समृतीकारुवतुन॥ ॥ॐअस्म  
 न्दमरुनायवेगासावगुरुत्यव  
 ॥ॐदुर्गासजाया॥य॥ॐ०सुनक्तव  
 वधायिवद॥ॐदुर्गासजाया॥अस्मा  
 न्दवतुदवा॥ ॥ॐअग्निमा॥ॐअ  
 दनाजायकिरुवदुगायादिनवदर्ग  
 नुगायेकल्यिनन्द्यायनायाधिकल्यि  
 नमास्तुदायसदास्याममस्तुवत्तम  
 न्दमनकायत्तमद्यानदुधेयागंविदु  
 ननरिदामा॥ॐयतिदुधेयिदुधेय  
 दनकावायम्याम्ननसेलगमा॥ॐ  
 मंदवा॥ॐअग्निमूर्द्धा॥ॐगानमिन्द्रा  
 ॐमनाङ्गुति॥यतिस्तु॥ॐकयानशि  
 व॥कृष्णनयनिस्तुनदी॥अग्निमादि॥

आद्यवकलगायुजा॥ॐदुर्गाजागवद  
 मसवारुनायमयतिवानायनम॥व  
 द॥ॐअग्निमूर्द्धा॥ॐमनाङ्गुति॥यति  
 स्तु॥ॐकयानशि॥कृष्णनयनिः  
 स्तुनदी॥अग्निमादि॥ ॥



दक्षिणायमकलशाचर्चनी॥ॐ ह्रीं गिम्  
नमा॥ॐ ह्रीं विनायकाय नमः॥ॐ ह्रीं यश  
वदाय नमः॥ॐ ह्रीं प्रतापयशाय नमः॥ॐ ह्रीं  
महदाय नमः॥ॐ ह्रीं नमोदाय नमः॥ॐ ह्रीं वृक्ष  
यश॥ॐ ह्रीं वृक्षयश॥ॐ ह्रीं यय  
मायसुवाहनायसुयनिवा नायश॥ ॥  
वद॥ॐ ह्रीं श्रीमहादेवाय नमः॥ॐ ह्रीं श्री  
नन्दोद्भवस्य नन्दस्य कान्तस्य नमः॥ॐ ह्रीं श्री  
लनसाक्षात्प्रमूढा॥ॐ ह्रीं श्रीकृष्णाय नमः॥ॐ ह्रीं  
श्यामस्य नमः॥ॐ ह्रीं श्रीमहादेवाय नमः॥ॐ ह्रीं श्री  
वनिष्ठा॥ॐ ह्रीं श्रीमहादेवाय नमः॥ॐ ह्रीं श्री  
ध्याय॥ॐ ह्रीं श्रीमहादेवाय नमः॥ॐ ह्रीं श्री  
उद्दवाहनाय॥ॐ ह्रीं वृक्षयश॥ॐ ह्रीं यमनदह  
॥ॐ ह्रीं वृक्षयश॥ॐ ह्रीं यमनदह  
॥ॐ ह्रीं वृक्षयश॥ॐ ह्रीं यमनदह  
॥ॐ ह्रीं वृक्षयश॥ॐ ह्रीं यमनदह  
॥ॐ ह्रीं वृक्षयश॥ॐ ह्रीं यमनदह

नेमस्यकलशाचर्चनी॥ॐ ह्रीं श्रीमहादेवाय नमः॥ॐ ह्रीं श्री  
यवाहनायसुयनिवा नायश॥ॐ ह्रीं श्री  
यमनदह॥ॐ ह्रीं वृक्षयश॥ॐ ह्रीं यमनदह  
॥ॐ ह्रीं वृक्षयश॥ॐ ह्रीं यमनदह  
॥ॐ ह्रीं वृक्षयश॥ॐ ह्रीं यमनदह



यनिस्तननी॥ अङ्गुलिधदि॥

॥

यन्निमवगूढकलभार्चनी॥ उं कौ वृष  
राय२॥ उं कौ स्कन्दाय२॥ उं कौ सामवे  
दाय२॥ उं कौ दायत्रयूगय२॥ उं कौ सि  
ध्वर२॥ उं कौ सनखर्ये२॥ उं कौ पुकाय२  
॥ उं कौ गनेध्वनाय२॥ उं कौ वंदनूनाय  
सुवाहनायसयनिवानाय२॥ ॥ वदा॥  
उं य उवाजी कनिक्कादनानदद्यासुरु  
पत्ना॥ रुमन्ननिम्यनाश्चामायाद्याय  
यः यना॥ वृषाग्निवृषधमृगनयाः रु  
० समदियम्॥ अङ्गुलिधदि॥ अङ्गुलिधदि  
॥ उं यद्वन्द॥ उं अङ्गुलिधदि॥ उं अङ्गुलिधदि  
जायकिरवदृतायादिनवदृता  
येकल्यिनन्द्यायनायाधिकल्यिनमा  
स्कन्दायसुरास्याङ्गुलिधदि॥ अङ्गुलिधदि  
मनकायल्लद्यागङ्गुलिधदि॥ अङ्गुलिधदि  
नकिरुमागङ्गुलिधदि॥ अङ्गुलिधदि  
नकावायम्याङ्गुलिधदि॥ उं अङ्गुलिधदि  
त्यनिध्नी॥ उं अङ्गुलिधदि॥ उं अङ्गुलिधदि



ब्रह्म॥ आवाहनादि॥ उंमनाहूति॥ य  
निष्ठा॥ उं कयानघ्रि॥ कृष्णनयनिम  
ननी॥ अंगनादि॥

वायव्यकलभार्चनं॥ उं द्रौं यं यवनाधि  
यतयसवारुनायसयजिवा नायश॥ व  
द॥ उं नववायू॥ अवारुनादि॥ उं मना  
रूति॥ यनिष्ठा॥ उं कयानश्चिष्ट॥ कृष्ण  
नयनिस्तननं॥ नृगगन्धदिष्ट॥ ॥

डरुनक वनकल गभर्वनी ॥ उं द्रौं यथ  
 नमः ॥ उं द्रौं यद्युयशः ॥ उं द्रौं जूथर्वदाय  
 शः ॥ उं द्रौं कलियूगभयशः ॥ उं द्रौं गधुर्व  
 शः ॥ उं द्रौं कीर्तिर्वशः ॥ उं द्रौं नादर्वशः ॥  
 उं द्रौं कर्णर्वशः ॥ उं द्रौं सूजद्वनाकायस  
 वारुनायसयनिवा नायशः ॥ वद ॥ उं  
 द्रौं द्वास्त्रिमादवान्धिनगामनस्वगी ॥  
 धूषनमद्यनाश्यामिन्द्रायदध्वनिन्द्रि  
 यं वसुवनद्वसू (धयस्य द्वा नुयज ॥  
 उं द्रौं रुखदद्यायुधिविस्वसूयः ॥



श्रीमायास्वध्याकृतासि॥ इष्टं ददुः  
 १०० दमसुहृद्वामनिष्टं नृदिहियस्तु ॥ अ  
 स्मिन् ॥ ॐ गन्नादवा ॥ ॐ अक्षराजायकि  
 नवदृगायादिनवदर्शनं नायेकल्येन  
 द्वायनायाधिकल्येन मास्का द्वायसस्तु  
 ह्यास्तु मस्तु वस्तु वस्तु मस्तु कायात्मय  
 नस्तु ध्यातामस्तु वस्तु नस्तु मस्तु मास्तु इष्ट  
 तिष्ठतिष्ठु नायस्तु नकायार्थम्यास्तु  
 नस्तु लगस्तु ॥ ॐ कयानधिष्ठा ॥ ॐ कर्तुं कृ  
 त्वा ॥ ॐ कविर्दगास्तु ॥ अक्षराहनादि ॥ ॐ म  
 नास्तु नि ॥ यतिष्ठा ॥ ॐ यानधिष्ठा ॥ कृष्ण  
 नयतिस्तु नर्न ॥ अक्षराध्यादि ॥ ॥

वृक्षानकलमस्तु नर्न ॥ ॐ कर्तुं वृक्षान  
 यस्तु वारुनायस्तु यतिवा नायस्तु ॥ वद ॥  
 ॐ ममास्तु ॥ अक्षराहनादि ॥ ॐ मनास्तु  
 नि ॥ यतिष्ठा ॥ ॐ कयानधिष्ठा ॥ कृष्ण  
 यतिस्तु नर्न ॥ अक्षराध्यादि ॥ ॥

अक्षकलमस्तु नर्न ॥ ॐ कर्तुं अक्षकलमस्तु



वारुनायसयनिवात्रायशावद॥ॐं  
हियदा॥आवारुनादि॥ॐंमनाकूणि॥  
यमिष्टा॥ॐंकयानधिग॥कूणनयनिस्त  
ननी॥अगुगन्धादि॥ ॥

दुर्धकलगाश्चनी॥ॐंकाॐंदुर्धधियन  
यसवारुनायसयनिवात्रायशावद॥  
ॐंवद्वक्तस्यन॥आवारुनादि॥ॐंमना  
कूणि॥यमिष्टा॥ॐंकयानधिग॥कूणः  
नयनिस्तननी॥अगुगन्धादि॥ ॥

वायुर्वायुयुर्वगगकलसयूज॥गभय  
वीमिनित्राकूणि॥आसनी॥ॐंमत्वाजामि  
॥अस्यकूणि॥दवस्यत्वा॥ॐंकाॐंकाय  
नमः॥ॐंकायनाकायनमः॥वद॥ॐं  
वरुस्यनक॥ॐंॐंदआसाननना॥ॐंका  
मूणमनायशाध्वाना॥गजानननभक  
दनीयदनालदसायमी॥वद्वुजास्व  
दकश्चलकूक॥यनगुध्वननी॥नाग  
यक्षायवीमिश्च॥विधिवाडनमाम्मदी॥



ॐ द्वांगं गद्यमि मूर्ख्यनमः ॥ वद ॥ ॐ  
 आदुन ॐ द्वांगं गद्यमि मूर्ख्यनमः ॥ वद ॥ ॐ  
 हिमलान्महासिन्धुमिनि ॥ आदुन  
 नादि ॥ वलि ॥ ॐ द्वांगं गद्यमि मूर्ख्यनमः ॥  
 स्वावलिगृह्यस्वस्व ॥ ॐ गद्यनात्वा ॥  
 ध्या ॥ दीया ॥ रुल ॥ नवद्या ॥ ॐ मनाहूति  
 ॥ यनिष्ठ ॥ जाया ॥ म्हा ॥ सर्वकार्येषु  
 कर्तव्यं सर्वविद्यनिदानदी ॥ विद्यरु  
 नंगद्यगच्छ ॥ मूषा नृद नमाम्यहं ॥ न  
 यगन्मादि ॥ ॥

ॐ गद्यनस्य यन्मिभगुनकलनयुजा ॥  
 गद्यनी निनी दक्षी ॥ आसनी ॥ ॐ तत्त्वा  
 जामि ॥ अस्वदक्षी ॥ ॐ दवस्यत्वा ॥ ॐ द्वा  
 वृषायनमः ॥ ॐ द्वायनाकायनमः ॥ व  
 द ॥ ॐ द्वायनस्य ॥ ॐ आस्माकमि ॥ य  
 द्वासनायनमः ॥ ध्यान ॥ कंकमानुदमा  
 राहं ॥ अद्वयसुकक्षत्रिणा ॥ सर्वभक्त  
 विदह ॥ स्वगुन्युदमास्यहं ॥ ॐ द्वा  
 गुं गुनमूर्ख्यनमः ॥ वद ॥ यज्ञानी ॥ न



वारुणादि॥वलि॥ॐ क्रां गुं गुं मूरुय  
वलिं शुक्रं रत्ना॥ॐ वरुस्य न अकि॥धू  
यसादीया॥रुला॥नेवद्य॥ॐ मनी कृति॥  
युक्ति॥जाय॥स्फा॥सूत्रध्वं वध्वं सिके  
ई॥युक्तका कृक नदयी॥सर्वभक्त किर्य  
दिहं गुन्यदर्वनमाम्यहं॥अर्गं धादि॥

नेमस्यस्य पूर्व यागिनी कलशयुजा॥  
गमयन्ता निनी कृती॥असनी॥ॐ नत्वाः  
जामि॥अस्य कृती॥ॐ दवस्यत्वा॥ॐ क्रां  
चुणायनम॥ॐ क्रां यना कायनम॥व  
द॥ॐ वरुस्य न च॥ॐ यत्वा मश्चामि च न  
दस्य यागं नत्वा वक्ता मयि नाम मवा  
शमनस्य जानो मृक्त नस्य लोक विष्ठीः  
त्वी मरुयस्याद धमि॥ॐ क्रां यना मना  
यनम॥धमन॥विद्युत् अरु निरुंदरु नि  
यावानमम निगा॥दक न विद्युत् वि  
द्यु अमु नूय विहावथ॥ॐ क्रां अमुः  
ना जायनम॥वद॥ॐ वसुध्वमवम नि  
ध्वम कर्म चम ग कि ध्वम ह ध्वम इ न



मध्वमरं ख्याचमगतिध्वमयकूनक  
ल्यनामा॥ अवारुनादि॥ वलि॥ ॐ  
यांयागिनीयावलिगृहशस्त्राह॥ ॐ  
मज्जमिक॥ धूय॥ दाय॥ रुला॥ नेवद्य  
॥ ॐ मनाहूनि॥ यनिष्ठा॥ जाय॥ साया॥  
करिकाददि॥ धरुसं॥ वामरुसुचरवः  
र्यनीनीलमद्याहूनि॥ नृयं॥ अमुनाई  
नमामाहं॥ अगगन्धमदि॥ ॥

वायव्यास्यदक्षिण॥ क्षणकलशयूज॥ ग  
यणी॥ निनाहूनी॥ असनी॥ ॐ तत्सवामि॥  
अस्यहूनी॥ ॐ दवस्यत्वा॥ ॐ द्वायन  
मा॥ ॐ द्वायनायनमहा॥ वद॥ ॐ वरुस्यत  
हू॥ ॐ अस्माकमि॥ ॐ द्वायनायन  
मा॥ धमना॥ कयालमालारुगर्ह॥ खदाह  
काधरुसुका॥ नदिनीसर्वकर्मानि॥ क्षण  
यालययूजय॥ ॐ द्वायनायलमूर्त  
यनमा॥ वद॥ ॐ अथेमानयूद्विभूया  
नालरुगदिदीर्घशक्तिद्वस्तशक्तिस्य  
लक्षशक्तिद्वस्तशक्तिगुक्तशक्तिद्वस्तशक्ति



यश्चिमस्य दक्षिण्यी कलशयूजा ॥ ग  
यजा ॥ निवाक्षणी ॥ आसनी ॥ उं कलाजामि  
॥ अरुक्षणी ॥ उं दवष्टावा ॥ उं कौं च्छुणाय  
नमः ॥ उं कौं यनाकायनमः ॥ उं वृहस्पति  
॥ उं अस्माकमि ॥ उं कौं मकनासना  
यनमः ॥ ध्यान ॥ यद्भयत्रिस्तुतिदवीना  
लात्यलदलयरा ॥ सिद्धनयद्रुस्तु  
कान्तिथीवनसंस्तुति ॥ उं कौं धां धामू  
रुथनमः ॥ उं धीधन ॥ आवाहनादि ॥  
वलि ॥ उं कौं धामूरुथवलिगृह्रमाहा ॥

यश्चिमस्य दक्षिण्यी कलशयूजा ॥ ग  
यका ॥ निवाक्षणी ॥ आसनी ॥ उं कलाजामि  
॥ अरुक्षणी ॥ उं दवष्टा ॥ उं कौक्षणीय  
नमः ॥ उं कौयनाकायनमः ॥ उं वृहस्पति  
का ॥ उं अस्माकमि ॥ उं कौमकनासना  
यनमः ॥ अना ॥ यद्रयत्रिस्तिकादवीना  
लात्यलदलयरा ॥ सिद्धनयद्रुस्तु  
कानिथीवनसंस्तिका ॥ उं कौष्टाष्टा मू  
रुथनमः ॥ उं धीष्टन ॥ आवाहनादि ॥  
वलि ॥ उं कौष्टाष्टा मूरुथवलिगृह्रमाहा ॥



ॐ अक्षवात्रा॥ ध्रुवा॥ दीया॥ रुला॥ नेवद्या॥  
ॐ मनाकृति॥ यतिषा॥ जायभक्ता॥ मक  
नाकृतिमादवी॥ लाकणयसयूजिनी॥ सिद्धि  
त्यलयानिर्हृद्यादवी॥ यिदामास्यहं॥ अक्षगंधादि॥

यंमिमस्य॥ उरुगलक्ष्मीकलणयूजा॥ ग  
यणा॥ निनाकृती॥ आसनी॥ ॐ कलाजामि  
॥ अक्षुक्ष्मी॥ ॐ देवस्यत्वा॥ ॐ कालक्ष्मीक  
णायनमः॥ ॐ कायगाकायनमः॥ ॐ वरु  
ह्यक्षुदि॥ ॐ उरुद्विआसी॥ ॐ काकृमासने  
यनमः॥ ध्यान॥ यद्मासनसिर्गादवी॥ मूर्ध  
स्तुटिकसंनिहा॥ अक्षुदर्थमरुस्तुष्टधन  
धन्यवनयदा॥ ॐ कांशीलक्ष्मीमूर्खयन  
मः॥ ॐ द्यामालक्ष्मी॥ आचारुनादि॥ वलि  
॥ ॐ कालक्ष्मीमूरुयवलिगृक्षस्त्राह॥  
ॐ अक्षवावनधि॥ ध्रुवा॥ दीया॥ रुला॥ ने  
वद्या॥ ॐ मनाकृति॥ यतिषा॥ जायभक्ता  
॥ कृमायाजसनासानी॥ उखानकृमुदा  
यमा॥ यद्मादर्थमसंयुक्ता॥ लक्ष्मीदर्वनिर्म  
महं॥ अक्षगंधादि॥



दि॥

गणस्य पूर्वविधिर्मर्दनं कलगायुजा॥  
गमयणी निगाद्वर्णी॥ उं नत्वा कामि॥ अ  
सनी॥ उं दवस्यत्वा॥ अरुद्वर्णी॥ न॥  
उं आनन्दधसुनन्दधसुमखादुनमख  
सुथा॥ अविधाविद्यकर्तुं धसुमयाल  
कावुमा॥ उं द्रौ आनन्दाय २॥ वद॥ उं  
नारिर्माचिरुं विज्ञानेयाय मयचगिरुं  
सगु॥ अनन्दनन्दावा (धुमरुगु॥ मो  
रुङ्गयसु॥ उं द्याह्याय द्याधममासि वि  
गिनाय निष्ठि ४॥ उं मना कृति॥ यनिष्ठ  
॥ अगगन्धादि॥ ॥

कणकलगास्य दक्षिणं विनूया क क  
लगायुजा॥ उं नत्वा कामि॥ असनी॥ उं  
दवस्यत्वा॥ अरुद्वर्णी॥ गिया कृति॥  
उं द्रौ द्रौ विनूया द्याय नमः ॥ वद॥ उं  
अथे नानथे विनूया नालरुगदिदीग्य  
शानि कलशानि सुलशानि कृगश  
निधु कृशानि कृशानि कृलशानि  
लामगश॥ अगुदा अवा यमा ६॥ सु



यथाजायख्याधामागधः यैश्चलीकिरवः  
क्रीवागुद्धाः अवाक्महास्त्रियाजायख्या  
धामंमनाकृति॥यमिष्टा॥अणगन्धारा॥

अधकलगायः उरुः न अमुकलगाय  
का॥गमयणी निनी कर्मा॥ अमनी॥ उं  
बायामि॥ अरुकर्मा॥ उं दवस्यत्वा॥ उं  
कां कृपायनमः॥ उं कां यनाकायनमः॥  
वद॥ उं वरुस्यनिकु॥ उं ॐ न्य आसा॥  
ध्यान॥ उं वरुलाग्मविगलाक्षीधर्मा  
मायासूयोवना रुमवर्धुः कर्मावया  
नानगययाधना॥ वावसुवर्धुः कर्मावया  
दिव्यारुनगरुषिमा॥ सयावामक नारु  
का वामग्रीरीरुलादिना॥ उं कां कर्मा  
मायरु॥ कां अमुकमूर्त्यनमः॥ वद॥  
उं नमस्तु नृपमनी॥ आवाहनादि॥ वलि  
॥ उं कां अमुकलगायवलिगृह्णस्वा  
त्वा॥ उं अक्षवाचद॥ धूया॥ दीया॥ नव  
द्या॥ उं मनाकृति॥ यमिष्टा॥ जाय॥ स्माद॥  
अध्यादानस्त्रिगादक रुमवर्धुः सूयोवनः॥



विधिगानिकनादवीजमुमूर्तिनमामु  
न॥ अग्न्यादि॥

असकलगाय उरुग वामुकलगाः  
यूजा॥ गायत्री निनीकृष्णीं उं नखाडा  
मि॥ आसनी॥ अत्युक्षणीं उं दवस्यत्  
॥ उं कां वृणायनम॥ उं कायनाकायनम॥  
वद॥ उं वरुमयगुं ॥ उं ॐ नृनासी॥ ध्यान  
॥ योगवर्धुच उवाकू च उर्वकू कजासनश  
रुसयानीचविकाम अरुमाला कमधुर्ल॥  
उं कां कां कू वास्त्राधिकयवक्र (वनमथा  
उं वक्रयज्ञानी॥ आवाहनादि॥ वलि॥ उं  
कां वास्त्राधिकयवलिङ्गकूरुस्वाहा॥ उं व  
क्रदास्यन॥ धूप दीप रुत नैवय॥ उं म  
नाहूनि॥ यतिष्ठा॥ ज्ञाय॥ मंग॥ यीरुव  
र्धमहादीपं च उवाकू सुसारुनी यूसुर्क  
चाकसुर्गव वामुवक्रनमामुन॥ अ  
ग्न्यादि॥

नेमस्यस्य पूर्व वसुकलगायूजा॥ गाय



ॐ॥ निनीक्षणी॥ ॐ गत्वायामि॥ आसनी॥ ॐ  
दवस्यत्वा॥ अरुक्षणी॥ ॐ द्वायनम॥  
ॐ द्वायनाकायनम॥ वदा॥ ॐ वृहस्पति॥  
ॐ अस्माकमिन्द्रा॥ ध्यान॥ सर्वसत्वाय कर्त्तुं  
त्वं वनदानलमाधुका॥ अस्मि अरुक्षणी  
नद्या॥ कनूषक विधाना॥ ॐ द्वायनम॥  
समूर्त्तयनम॥ ॐ वसुधैव कुटुम्बकम्  
कर्मवमगकिश्वर॥ कृष्णमवमध्वम  
वृत्त्यावमगकिश्वरमयकूनकल्यणाम्॥  
वलि॥ ॐ द्वायनमकलगायवलिगृह २  
स्वाहा॥ ॐ अरुक्षणी॥ धृष्टद्युम्न  
वदा॥ ॐ मनाकृति॥ यतिश्वर॥ ज्ञाय॥ सा  
जगत्मानानमामुख्यं सर्वसत्वाय  
कात्रिणी॥ वसुधैव कुटुम्बकम्  
प्रिविदानर्णी॥ अरुक्षणी॥ ॥

ॐ गम्भस्य यश्चिन्म सान्निक् यश्चिक्  
कलगायुजा॥ गम्भयणी॥ निनीक्षणी॥ ॐ  
गत्वायामि॥ आसनी॥ ॐ दवस्यत्वा॥ अरु  
क्षणी॥ ध्यान॥ सर्वसत्वाय सान्निक् कर्त्तुं



कानां यष्टिदायकं। गयानेखी विहायार्थ  
यूजयगुयरुसंनिधौ॥ उंकांकांकां॥ भक्ति  
कायनम॥ उंकांकांसं॥ यष्टिकायनम॥  
उंकां॥ भक्ति॥ उं प्रियवर्क॥ वलि॥ उंकां  
सानिक यष्टिकाय वलिगृह २ स्त्राहा॥  
उं अक्ष वाचद॥ धूयदाय रूल नवय  
॥ भक्ति॥ भक्ति॥ यमिष्टा॥ जाय॥ भक्ति॥  
सानिक कायनमा मुखं यष्टिदायन  
मानम॥ सदा ममा ध्वननका कयुधि  
धिना सयन॥ अणनक्षदि॥ ॥

नाना नागकमूयूजनं॥ अणनक्ष॥ उं न  
खायामि॥ अणनक्ष॥ उं दवस्यत्वा॥  
ध्यान॥ पुष्टरुटिक संकां वनदयम  
ध्वनिर्धरुणसय विरुवांगं ध्वयनः  
उजगंधिया॥ उंकां अणनकादि मूर्तिः  
स्थानम॥ उं नमामु सय्यरु॥ आवारु  
नादि॥ वलि॥ उंकां अणनकादि नागक  
माय वलिगृह २ स्त्राहा॥ वद॥ उं अ  
नय स्त्राहा॥ सामाय स्त्राहा॥ यामादाय



स्वाहा. सवित्र स्वाहा. वायव स्वाहा. वि  
ष्णवे स्वाहा. द्याय स्वाहा. बृहस्पतये  
स्वाहा. मित्राय स्वाहा. वरूणाय स्वाहा  
॥ धृष्ट्या दीयते रुतं न वद्या ॥ ॐ मना इ  
ति ॥ यमिषा ॥ जाय ॥ क्षाप्र ॥ रुद्रं रुद्रं  
विष्णुं शयं. नाना नल विरुषधी विषक  
लावक धर्मयं. नमो नागाय नमः ॥ अङ्गुलि धादि ॥

ननाय दधीय दधूजा ॥ अस्मनी ॥ ॐ  
नत्वायामि ॥ अस्तु दधी ॥ ॐ देवस्य स्वा  
॥ ध्यान ॥ यी नवधर्म महाकाय वाजयू  
नश्च धानदी रुमालं कान्तमालं ध  
नधान्ययमियतु ॥ म्यामवधर्म महानि  
जां सर्वो लक्षणमसारिणी ॥ नलपूर्व  
श्च कलगी यदधीर्गी नमाम्यहं ॥ ॐ  
काय द्वाय नमः ॥ ॐ काय द्वाये नमः ॥  
ॐ अस्तु अस्तु वद नः प्रणि नः  
४ म म नारुवाय नायक सहस्र  
जित ॥ हि धनदा ॥ अस्मि स्वाहा ॥ ॐ य  
॥ धा यस्तु न्यो मय यूवाय बृहस्पति



श्रदि॥

॥यवा॥ अदवीददाहुन॥ स्वाहा॥ अवा  
रुनादि॥ वलि॥ उंकायकृणीयकाय  
वलिगृह्णस्वाहा॥ उंअधवाचदधि  
॥धूपदीप॥ रुत॥ नवद्या॥ उंमनाकृति॥  
यविष्ठा॥ जाय॥ शुभ॥ रुमनत्तावः  
लीयकं॥ मूकनाकृलक्षारिनी॥ गदाया  
निमहायकं॥ यनेमामिधनाधिर्य॥  
दिव्यवसुयत्रीधनानां॥ सर्वालक्षान  
रुषिनी॥ नमामि यकृणीयवी॥ स  
र्वसंयलिदायिनी॥ अग्नगन्धदि॥

नकागिषडाकि कलमयघीलका  
यूजा॥ अमनी॥ उंरत्ताजामि॥ अर्य  
कृणी॥ उंदवस्यत्वा॥ ध्यान॥ यथाय  
विस्मितादवी॥ नीलात्यलदलयरु  
॥ सिद्धवयधरुसुख॥ कान्धियावन  
संस्मिता॥ यथाएनस्मितादवी॥ शुद्ध  
रुटिकसंनिरु॥ अकृदर्थदरुसुख  
धनधन्यवनयया॥ उंकांशीशीद  
थोनमः॥ उंकांशीलक्ष्मीदथोनमः॥



ॐ धाम्ना ॥ ॐ धाम्ना ॥ आवाहनादि  
 ॥ वलि ॥ ॐ कौंशीलक्ष्मी देवी स्वावति  
 गृह्णतु स्वाहा ॥ ॐ अक्षवाचद ॥ धूय  
 दीयतु नो वद ॥ ॐ मनाशुनि ॥ य  
 निष्ठा ॥ जाय ॥ सु ॥ य नमामि मरु  
 देवीं धीमन्मङ्गलदायनी ॥ यत्नमङ्ग  
 लकार्येषु निर्येषु व्यापकप्रिया ॥  
 नैलाक्षवन्दिता देवी सर्वलक्ष्मी  
 यदास्येका ॥ यदा ममि सदा देवी ल  
 क्ष्मी नामाह निप्रिया ॥ अङ्गनाम्नादि ॥

धौलिसमादक्षिण आदित्य कलश  
 पूजा ॥ न्यास ॥ ॐ सफास्व वाहनाय  
 नमः ॥ ॐ कृत्वा यामि ॥ आसनी ॥ ॐ देव  
 स्यत्वा ॥ अस्तु कृष्णी ॥ ॐ दानाय ॥ ॐ  
 कालनाय ॥ ॐ नक्तु गाय ॥ ॐ  
 अगुप्तयं काय नमः ॥ ॐ दूज्जय ॥  
 ॐ आकाशाय ॥ ॐ वायवे ॥ ॐ कृ  
 मानाय ॥ ॐ देव ॥ ॐ दाना देवी ॥ ॐ  
 वत्तानि ॥ ॐ वरुह्य ॥ ॐ अस्माक ॥



ॐ आगूनं वृद्धवृद्धं नस्माकमद्व  
मागहिमहान्महीहि नूतिहि ॥ ॥  
ॐ यातवदसा ॥ ॐ उरायिव नमो धिने  
रान् ॥ ॐ गम्यय नमः ॥ अहिद्वियाहि  
नूतिहि ॥ ॐ यमं यमः ॥ ॐ आनानिय  
हि ॥ गतिनाहि नद्व नमः ॥ मिनीहि  
नययाहि ॥ ॐ या ॥ अस्मिन् नवन  
मादयस्वयय न्या नस्मि ॥ ॐ सदाः  
न ॥ ॥ ध्यान ॥ यद्वासन ॥ यद्वाकन  
॥ यद्वाग ॥ रुसमद्युति ॥ सफाध्वनय  
मायूरं ॥ ॐ द्विउयसात्सदानवि ॥ ध्या  
नयूरं ॥ ॐ प्रिया ॥ ॐ लि ॥ ॐ आदिह  
य ॥ ॐ ध्याय अग्नियस्य धिदवताय ॥  
॥ वदा ॥ ॐ आकृष्ट ॥ ॐ ग्रायवर्क ॥ ॐ  
अग्निद्व ॥ आवाहनादि ॥ कृष्णनय  
निम्ननर्न ॥ ॐ कयानधि ॥ वलि ॥  
ॐ आदिह्यादिनय ॥ ॐ रुखावलिगृ  
कृ ॥ ॐ ग्रावर्क ॥ ॐ आम ॥ धूया ॥  
दाय ॥ रुल ॥ नवय ॥ यति ॥ ॐ म  
रुति ॥ आय ॥ ॐ ग ॥ ॐ कलिगदम



गिरुर्न विष्णुमयमयमरुर्वीनका  
यद्रकनददं नोमिजादिरामधु  
ली ॥ ॥ अरुगन्धादि ॥ ॥

थधिलस्य डरुनमस्यं ऊयकलन  
पूजा ॥ न्यास ॥ गयत्री नित्रीक्षणी ॥  
ॐ आक्षनगक्ष्यादि ॥ वृषासना  
यश ॥ ॐ कत्वा यामि ॥ आसनी ॥ ॐ दव  
स्यत्वा ॥ असूक्ष्मी ॥ ॐ दानायश ॥ ॐ  
नलीकिनतागभयश ॥ ॐ धवन्नव  
जायश ॥ ॐ वृषरुध्वजायश ॥ वद ॥ ॐ  
दानादवा ॥ ॐ वत्तामि ॥ ॐ वरुस्य  
ता ॥ ॐ अस्माक ॥ ॐ आचारुनक्ष ॥  
ॐ नूदमाचारुयिष्यामि. तिनूर्णं  
लयानिनी. वरुिणं कनस्रवात्मन  
महागणगणेश्वरनक्ष ॥ ॥ ॐ दं आ  
वारुिष अचारुयामि ॥ ध्यान ॥ ॐ  
कृष्णकूमूदसंकासं. वधुमधुलम  
ध्वर्गं. प्रयलावनमकासं. मृस्यं  
ऊयविरुवयं ॥ ध्यानयूष्यं श ॥ ॥



प्रियाङ्गुलि ३॥ ॐ मर्यादयाय अङ्ग  
 धनाङ्गकिमहिनाय २॥ वद ॥ ॐ ना  
 अस्या ॥ ॐ मयममया ॥ ॐ यूनस्त्वादि ॥  
 ॐ मृदवा ॥ ॐ ग्रीष्म ॥ ॐ अग्नि  
 वा ॥ अवारुनादि ॥ वलि ॥ ॐ मर्याद  
 याय वलिङ्ग २ स्त्वा ॥ ॐ अक्षया  
 वा ॥ ॐ कयानधि ॥ कृष्णनयनिमन  
 ती ॥ धूपदीप रुत नवद्य ॥ यनिष्ठा ॥  
 ॐ मनाहूति ॥ जाया ॥ स्तुति ॥ ॐ मया  
 यस्त्वाङ्गुलि २ धदिन्द्रविस्व ॥ कुरु  
 वरुविस्वमरुतकमरुतावि ॥ अङ्क  
 प्रियाविवनदारुययानिगरवा मर्या  
 उयाङ्गुलि २ कनिष्ठाकले ॥ अङ्गुलि २ ॥

अथ धिगुला चर्चनं दवानुक्रमना ॥ अ  
 नुक्रमना ॥ न्यास ॥ अर्चया प्रयुजा ॥  
 आत्मयुजा ॥ आसनी ॥ ॐ नत्वाङ्गामि ॥  
 अत्युद्धर्षी ॥ ॐ दवस्य स्वा ॥ ॐ दाना  
 य २ ॥ ॐ दानाय २ ॥ ॐ दायना का  
 य २ ॥ ॐ दानाय २ ॥ वद ॥ ॐ दाना  
 दवा ॥ ॐ वरुस्य नद्व ॥ ॐ नद्व आमा ॥



ॐ अस्माकमिन्द्र ॥ ॐ कौं वृषासनाय ॥ ॐ  
 ॥ दवयादान ॥ विद्याऽऽलि ॥ दवयादान ॥ व  
 द ॥ ॐ याग नूद ॥ ॐ यामाला ॥ वदार्चदवय  
 दानमात्रकायाय ॥ धूय दीय नैवद्या ॥ य नि  
 ष्ठा ॥ वलि ॥ दवयादाना ॥ जाया ॥ माता ॥ दव  
 यादाना ॥ सा नायसान नूयाय यस्वकुश्रुणा  
 यवानमग्निगूलरुमाय सर्वयापन कायवा ॥ अग्नौ ॥ दि ॥

समस्तकल गयूजा ॥ ॐ अजिद्यकलसी ॥  
 लामयलि गयूजा ॥ ॐ कौं लामयलि गयूनम्  
 ॥ ॐ शिवानामासि ॥ सूर्यना गयूजा ॥ ॐ कौं न  
 गयूनमथा ॥ वद ॥ ॐ या ॥ ॐ ववा ॥ उधनाना  
 थवावनह्यगी ॥ १ नन ॥ यवावट वृक्षान  
 ननह्यः ॥ सूर्यशानमः ॥ ॥

शिवशक्ति कल गयूजा ॥ अमुक विष्णुर्जन ॥ यज  
 मानन शिवशक्ति कल गयूजा ॥ १ नन वं सु  
 चालमधुयदं नदं रु मनयाया ॥ आचार्य  
 न अर्थपात्रादकना ह्युक्त अर्थ गयूजा ॥  
 ॐ सराला कया लाखायूक्षामनहारुव



थ नक्षार्थं मङ्गकर्म धनया मङ्ग  
धनी। आचार्यान्नामयत्या० सर्वविघ्न  
निवान्ना। नाथामरुध्वनायूकं ययंक  
मममानरुत्। यासादक्रियन नक्षीर्य  
वत्कर्मममानरुत्॥ यत्कर्म नक्षधार्थ  
य विद्यानां धर्मनायवयूर्यमवारुर्न  
म्राय सनिधिविवाहया॥ उं नक्षारु  
नी॥ उं स्वस्तिवाचनीय०॥ ॥

गिवगकिथिलासनयूजा॥ गिवदक्ष  
गकिवाम॥ नरिं लीखसाय॥ उं मम  
गंगा॥ सखन॥ उं हि नक्षगर्त॥ ययनक्ष  
निधाय॥ गयगामनक्षनिनीक्षणी॥  
न्यास॥ अर्थयागयूजात्मयूजा॥ उं का  
धर्मायनमः॥ यूर्व॥ उं काक्षानायन  
मः॥ दक्षिण॥ उं कावेनाक्षायनमः॥  
यधिम॥ उं कात्रेध्यायनमः॥ इरुं न  
॥ उं काअधर्मायनमः॥ अण॥ उं का  
अक्षानायनमः॥ नेमय॥ उं काअव  
नाक्षायनमः॥ वायूर्व॥ उं काअनेध्व



[illegible]



महर्षिरागज्ञानिर्देवैर्वयम् ॥ नृनिष्कान  
यर्थनमः ॥ ॥ विद्याऽहलि ॥ नृजम्  
ज्ञानन्दशक्तिर्गङ्गाययावन्ति स हि  
गायनमः ॥ मृगायादकी ॥ नृजम्  
ज्ञानन्दशक्तिर्गङ्गाययावन्ति स हि  
सहिगायनमः ॥ मृगायादकी  
॥ उंकांलीसद्याज्ञागा मृगायादकी  
कायशः ॥ उंकांवीवा मृगायादकी  
नवकायशः ॥ उंकांनृज्यानाय दक्षिः  
नवकायशः ॥ उंकांयंगत्यनृसाय पूर्वव  
कायशः ॥ उंकांनृगमनाय उद्वकाय  
शः ॥ ॥ नृगायामादि ॥ उंकांवामायशः ॥  
उंकांजषीशः ॥ उंकांनोदीशः ॥ उंकांकालीशः ॥  
उंकांकलविक्रीशः ॥ उंकांवलविक्रीशः ॥  
उंकांवलपयधनीशः ॥ उंकांसर्वरुगदमः  
नीशः ॥ नृगाकयालीसादियूजनी ॥ उंकां  
नृगाकयालीशरुनवायशः ॥ पूर्वदि ॥  
उंकांनृगिखिवारुनरुनवायशः ॥  
उंकांनृगाधरुनवायशः ॥ उंकांनृगि  
नालरुनवायशः ॥ उंकांनृगमन्मधरु  
नवायशः ॥ उंकांनृगमयनादरुनवायशः ॥



ॐ कौं स्तू सामध्वनरु नवाय २॥ ॐ कौं स्तू  
विद्यानाजरु नवाय २॥ ॐ कौं स्तू  
॥ ॥ ममावनी गायत्र्यध्वनावनी  
संपूजा ॥ ॐ कौं जं १ वन्द्याय २॥ ॐ कौं धौ १ घ  
धाय २॥ ॐ कौं नै १ महानासाय २॥ ॐ कौं सु  
मखाय २॥ ॐ कौं थ १ मखाय २॥ ॐ कौं धौ १ व  
नाय २॥ ॐ कौं नै १ नवमी २॥ ॐ कौं कौ १ प्रथ  
माय २॥ ॐ कौं धौ १ धानाय २॥ ॐ कौं नै १ साम  
य २॥ ॐ कौं धौ १ रुमाय २॥ ॐ कौं नै १ महा  
बलाय २॥ ॐ कौं नै १ जयाय २॥ ॐ कौं नै १ वि  
जयाय २॥ ॐ कौं नै १ जित्नाय २॥ ॐ कौं  
स १ अयनाजित्नाय २॥ ॐ कौं नै १ महात्क  
टाय २॥ ॐ कौं नै १ सक्ताय २॥ ॐ कौं स १ स  
हानिनी २॥ ॐ कौं व १ विकटाय २॥ ॐ कौं स  
जानहानिनी २॥ ॐ कौं नै १ दक्षानिनी २॥  
ॐ कौं नै १ सुक्ताय २॥ ॐ कौं नै १ यष्य  
हानिनी २॥ ॐ कौं स १ नृसिंहाय २॥ ॐ कौं  
स १ नृसिंहाय २॥ ॐ कौं नै १ रुद्रकल्य  
२॥ ॐ कौं नै १ रुद्राय २॥ ॐ कौं नै १ नृदाय  
२॥ ॐ कौं नै १ रुमाय २॥ ॐ कौं नै १ गुरुदि  
काय २॥ ॐ कौं नै १ गुरुद्वन्द्व ॥ ॐ कौं नै १



पूजा॥ आवाहनादि॥ लिङ्गयानिमूर्त्या॥ ॥  
 वद॥ ॐ नत्वायामि॥ ॐ त्वमाग्र्यरित्वमाधु  
 धुमित्वमस्य त्वमभनस्यनित्वमनस्य  
 त्वमावधीत्यस्त्वनृणां नयनजायमधुवि॥  
 ॐ आयाजस्मान्मातृनः ॥ ॐ धृयन्धुर्गन  
 नायनयः ॥ ॐ ननु विश्वरुद्रियैरुक्ति  
 दवीन्दीदात्यः ॥ ॐ विनायक नमि॥ ॐ द  
 वस्यत्वासविदुः ॥ ॐ दानादवीनः ॥ ॐ वत्वा  
 निसृज्यया ॥ ॐ आर्मादुविन्दु ॥ ॐ रुद्र  
 म्भगर्ह ॥ ॐ विश्वाकर्मा ॥ ॐ नमः ॥ ॐ स्वय  
 ॥ ॐ आजिद्यक ॥ ॐ यश्च नय ॥ ॐ ॐ मीमा  
 गी ॥ ॐ सितासिन्ध ॥ ॐ उयश्च नः ॥ आवाह  
 नादि॥ धूय दीय नवय ॥ ॐ मनाहृति ॥  
 यतिष्ठा ॥ जाया ॥ स्तुत ॥ ॐ नत्वावधीसकल  
 तीर्थजलनयूधम् स्वच्छयस्त्ववधूसाहि  
 नयूधमाला ॥ यत्नयुजागविषयमनि  
 रिह्यसर्मा गोकुम्भमूरिगियशकि य  
 नं नमामि ॥ ॐ दुष्टं नर्कं ॐ दुष्टं सृष्टि कम  
 निमययन्त्रवर्चयूकं वाष्पं तीर्थयश्च  
 सर्कं सकलजलनिधियश्च नत्वावधि  
 वाज्जङ्गयागयिगिदमनिजनसकलीस



विनीसर्वराव. त्वाम्बद नोमिरुक्तागिवस  
 गतियुगं कम्भमूर्तिनमाम्भु॥ जगन्ध्रिदि॥  
 उंक्रान्तमस्तु नृपयुक्तं मरुतासुयाधुय  
 नाम्नाय अम्नाय. ज्ञानरक्ताय नमः॥ उं  
 क्रान्तमस्तु स्यात्स्ययतिस्वदि. मूर्तिनमाम्भु  
 यसी॥ नमस्तु ज्ञाननिर्यास. त्वंगुहानस्व  
 सायुध॥ ॥ ज्ञानरक्ताय॥ दृढयादि  
 नयूजायाम्॥ ॥ कलश. कालान. बाल  
 न. धिस्यं रुगलिङ्गा कलर्गं॥ उंक्रान्तमाय  
 रुगनयुक्त. लिङ्गनृपयुक्तवा. गिना  
 यनमस्तु रुक्ता नृपयुक्तमर्गि॥ ज्ञा  
 य॥ ॥ क्रमा॥ उं य. धर्दृष्टनयत्नरु  
 गवन्मुखमन्दिनी. नक्षत्रीयजगन्ना  
 थ. सच्चिध्वनवन्त्रया॥ नक्षत्रीयकनधाय॥

कर्ममधुनयूजा॥ वद॥ उं वसुध्वमवस  
 तिध्वमकर्मवमधुकिध्वमध्वमश्न  
 मध्वमः॥ स्वायमगतिध्वमयज्ञनक  
 ल्यानाम्॥ जगन्ध्रिदि॥ ॥  
 उं जगन्ध्रिदि. सकलनयूजा॥ ॥  
 वलिनयूजा॥ उं स्वस्मानक्षय्यालायवलिः



गृह २ स्वाहा ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ ॐ  
 धर्मा ॥ ॐ यागवद ॥ ॐ मातृदा ॥ ॐ  
 धर्मधृता ॥ ॐ नर्मविरु ॥ ॐ अर्धस्वार्त  
 ॥ ॐ यात्रीदि ॥ ॥ अययादान दवयादा  
 न अनुकामनमालकविय ॥ दखा पि  
 खा ॥ ॐ समखादा ॥ ॥ ॐ नभाग ॥ ॥  
 गायनि ॥ ॐ आयगो ॥ ॥ ॐ यागव  
 द ॥ कोमाना ॥ ॥ ॐ युगयुजा ॥ ॐ  
 वसा ॥ ॐ विष्ट ॥ ॐ दधिकाप्रति ॥ ॥  
 ॐ समिष्ट ॥ ॐ कन ॥ ॐ श्रीधर ॥ सिंधु  
 मू ॥ ॥ सर्वकल ॥ ॐ अजिष्टकल  
 गी ॥ ॐ च ॥ ॐ स्वस्ती ख्यादिय ॥ ॐ ॥ धूप ॥  
 दीया ॥ रुत ॥ नवद्य ॥ यमिष्टा ॥ ॐ मना  
 ह्नि ॥ जाया ॥ ॐ ॥ दवयादान ॥ ॥

ननायजमानन क्षिप्रवारुर्न ॥ ॥  
 क्षिप्रवारुर्न जानकाव यजमानन नोप  
 खदानस लीलायाव दगायन यक्रमधु  
 यदायकाव यमकलगाया यमिमने  
 मखाया यवस सिद्धासनगयाव (ध.क्ष  
 प्रियाखरुगय ॥ चन्दनादिकय ॥ ॥



(धनु॥ नृसिंहाय नमः ॥ यक्षस्य ग्रहविघ्ननिवा  
त्रर्षा। समस्तयक्षपूजायामर्लक्ष्यगृहान  
कशा। नननाऊनिर्णयनक्षकारुव॥ क्षत्रिणी  
नवमस्तु॥ ॥

सिंहासनकासवादाव॥ साधनवद॥ ॐ अ  
ग्निमग्निहवीमरुसदावँड। विद्मंतिहव  
वरुनयन्नयाय॥ ॐ नजमययनायठसू  
ययननायन। अस्याययनकार्यगरुम  
दहिनः यमान्॥ क्रौमयलायनम॥ ॐ अ  
ग्निपूर्वाह्निमग्निर्विशानाकनसूतसूद  
वाः॥ वरुवर्षर्षि॥ अग्निनात्रेमस्तुवरुयः  
गमवदिवदावयगसंविनवकनी॥ ॥

कृद्युयाडरुनम॥ सकसायानेयूजनं॥  
ॐ क्रौंस्तुलाकायगमयणीचुन्दजग्निदवना  
यश॥ १॥ ॐ क्रौंरुवलाकायडष्टिकचुंवा न्दो  
यदवनायश॥ २॥ ॐ क्रौंस्वर्गलाकायजु  
नमुयचुन्दआदित्यदवायश॥ ३॥ ॐ क्रौं  
मरुलाकायवरुस्यतिदवनायश॥ ४॥  
ॐ क्रौंजनलाकाययकिचुन्दवनूनदव  
नायश॥ ५॥ ॐ क्रौंनयलाकायरष्टयु



बुन्द बुन्द देवनाय २॥ ४॥ ॐ कां सखलाः  
कायजगती बुन्द विष्ट देवनाय २॥ ५॥  
ॐ गगनाय २॥ ॐ रुद्राजाय २॥ ॐ वि  
ष्णुमित्राय २॥ ॐ यमदये २॥ ॐ व  
शिष्ठाय २॥ ॐ कास्यपाय २॥ ॐ रुद्राय  
२॥ वद ॥ ॐ सफ मयय ॥ ॐ जामिषु नि  
निगन रुद्र विरु निषा रुद्रा गिवा नि  
वर निरुगा क नूमा माहि ० सीत्य नूयं चङ्गा ॥  
ॐ द्वाक निरुन सा ॥ मय लिङ्ग यूजा ॥ ॐ मम म  
क धु रु मि यूज न ॥ य द्वा मि त्वा य न म न रुया ॥  
मृ थि द्वा ॥ य द्वा मि य न रु व न स्य ना हि  
॥ य द्वा मि त्वा द्वा ॥ अ ध्व स्य न रु य द्वा  
मि द्वा य ॥ य न म द्वा म ॥ ॐ क धु रु मि नि  
नी द्वा न ॥ ॐ मा न व यू न य थि वी यू नी द्वा म  
मि ॥ ध याना व रु नू या ॥ ना मि ॥ धे द व म  
ड रि ॥ स मि दान य जा य नि वि ष्ट क म्मा  
वि मं य ड ॥ ॐ क धु रु मि न रु म य ला यू ज  
न ॥ ॐ का नू स्य व द रु व न स्य न रु का स्य  
वा य थि वी नू न म द्वा ॥ क ॥ मू या स्य व द व  
रु ना रु नि रु का व द व न्द म मं य ना डा ॥  
अ र्थ या नू ली ख न रु या ॥ ॐ य वि ष्ट ॥



अग्निमानसवाह अग्निमूर्ति पूजा ॥ ॐ अ  
 त्मसहस्राक्षं गन्तव्यं नृणां सदा ॥ सदा  
 प्रदानां शतं सदा सदा नारायणं विष्णुं  
 न विष्णुं मवाजां स्वाहा ॥ कृष्णं नृणां अग्निद  
 वनाय पूजनं ॥ ॐ अनादिं हि ४ गतिं न हि  
 न ध्वनं ० सदा सिद्धीं हि नृणां दियं क्लृप्तं ॥  
 वाया अस्मिन् सवनमादयस्व पूर्ययागं स्व  
 स्मिन् ४ सदानं ॥ ॥ यासां दयं पूजनं ॥ ॐ अ  
 त्मवयं कृष्णं सादाय २ ॥ वद ॥ ॐ यत्नां मुखं  
 मिव नृणां सायासां दनत्वा वक्षां सविता सप्त  
 वाधं सप्तज्ञानं मुक्तं सत्ताकं विष्णुं  
 त्वीं सदायत्ता दक्षमि ॥

धर्मं लिखितं सनकासवादावज्जलि  
 वदयं ॥ ॐ अग्निं कार्यं कृत्वा मां स  
 गर्हयं कृत्वा सयुक्तं ॥ नृणां सर्वं विद्या नि  
 वनमाज्ञा वदहि म ॥ ॥ धर्मं प्रार्थना  
 ॥ ॐ अथ वद ॥ यत्नं वदतां सवदत्तं यत्नं  
 ॥ यत्नं साधकं यत्नं वदतां सवदत्तं यत्नं  
 ॐ न ॥ क्रिया कर्म विधनं यत्नं सत्यं चि  
 त्तं नमस्कृतं ॥ ॥ यत्नं प्रार्थना ॥ ॐ अ



कालाकयाला ॐ मां सुष्ठु ल्याद्यादीनां द  
 यागना अग्निकार्य आह्वयसन्नाहव ॥  
 आह्वयना ॥ ॥ हामा अऊलि विधाय १०  
 नू ॥ ॥ ॐ लाक्या निरुगानि स्काव  
 नानि वनानि वा वक्रविष्णु निवेष्टमाह न  
 द्वां कृत्तुमसदा ॥ दवदानवर्गधर्वाय  
 कनाक्षमय नगाममध्वामनवागमवादि  
 वमानन नववा सर्वममाध्वनन द्वां कृ  
 वनुचमदान्विनाशा सिंहासनसमाग्राह  
 कनामिगुनूजवृक्षानमामियुष्मानय  
 लो ॥ आह्वयदधसत्वन ॥ ॥ ॐ गिया  
 ध्या ॥ सर्ववाक्त्रलेयनिवचन ॥ ॥ ॐ  
 मानाहय ॥ ॥ धर्नालिगुनूजननमस्क  
 नयादावस्वदवतामननयूर्ध्वकसिंहा  
 सनमानाहय ॥ ॥

अथ निवाग्निकर्म कुर्यात् ॥ यजमानन  
 यथारुजन ॥ अद्यादिवाक्त्र ॥ ॥ यथः  
 निमिरुमन्त्रार्थ ॥ ॥ यज्ञेन मुनिमित्य  
 र्थयथारुजन समर्थयामि ॥ दवानुक्रम  
 नमुनि ॥ सिद्धि नमु ॥ ॥ आचार्याय



यूयराजनसमर्थयामि॥ ॥ अद्यादि॥ सु  
यार्थ॥ युनस्मानन॥ मूलनन्यास॥ अद्य  
यायुजा॥ रुक्मिणुदि॥ प्राणायाम॥ ॥  
आत्माश्चर्मा॥ उंमहंरुन्दनि॥ युग्मकृष्ण  
समिधवामरुक्मिणधृत्वा॥ उं गन्धनांत्वा॥  
गन्धयनिवलि॥ उं नभावरुक्मिणय॥ कृष्ण  
वलि॥ उं यागवदस॥ दूर्गावलि॥ उं य  
नयुक्तया॥ दिगवलि॥ वलिंवरुक्मिणय॥

उंक्रांक्र॥ अम्नायरुक्मिण॥ उं त्वंजविष्णुदासखा  
॥ लाङ्कश्रयणी॥ ॥ रुक्मिणकृष्णयुक्मिणदगर्भ  
स्मान॥ उंक्रांनमस्कृद्दयादि॥ उं त्वमाग्र  
द्वरि॥ यवगव्याश्रयणी॥ उंक्रांनमस्कृद्दयादि॥  
नूयक्र॥ मन्त्रायाद्युयनाम्नायरुक्मिण॥ उं निखा  
नाथायविद्मरुक्मिणयधामहि नन्ना  
दयवाययान्॥ निनीश्रयणी॥ २॥ उंक्रांनम  
स्कृद्दयादि॥ मन्त्रायाद्युयनाम्नायरुक्मिण॥  
उं त्वमाग्र॥ यवगव्याश्रयणी॥ ३॥ उंक्रांनमस्कृद्  
दयादि॥ मन्त्रायाद्युयनाम्नायरुक्मिण॥  
उं त्वामिदिरुक्मिणयधामहि नन्ना  
वावृक्मिणयधामहि नन्नाकाशसर्वरुक्मिण॥



नाउनी ॥ ४ ॥ ॐ क्रां सर्वगः सर्वसर्वं कियिज्ञ  
 लकववायदू ॥ ॐ त्वीवृथेक्षदग ॥ ज्ञान  
 स्वभूतस्युनी ॥ ५ ॥ ॐ क्रां सर्वगः सर्वस  
 र्वं कियिज्ञ लकववायदू ॥ ॐ सर्वनधि  
 प्रवक्ररुसधुप्रयामरुसवानाऽजदि  
 वः ॥ गममध्व० नथमिन्द्रसंकिनसुग  
 वाजनजिग्यध ॥ ६ ॥ ॐ क्रां स  
 र्वगः सर्वसर्वं कियिज्ञ लकववायदू ॥  
 ॐ त्वनसिरुमिनस्यदिनिगविश्वधाय  
 विश्वस्यत्वनस्यधर्मायथिर्वीऽकृय  
 थिर्वीद० रुयथिर्वीन्मादि० सी ॥ यूनर्ध  
 ॥ ७ ॥ ॐ क्रां सर्वगः सर्वसर्वं कियिज्ञ लक  
 ववायदू ॥ ॐ मरुधायथिवा ॥ समीक  
 नर्ध ॥ ८ ॥ ॐ क्रां सर्वगः सर्वसर्वं कियिज्ञ  
 लकववायदू ॥ ॐ त्वायामि ॥ भवनर्ध ॥  
 ९ ॥ ॐ क्रां नमस्तु नूद नूयदू ॥ मरुयाधु  
 यनास्त्रायरुदू ॥ ॐ यद्ववायदू ॥ क  
 र्धनी ॥ १० ॥ ॐ क्रां सर्वगः सर्वसर्वं कियिज्ञ  
 लकववायदू ॥ ॐ मीनायथिवा ॥ स  
 माऊनी ॥ ११ ॥ ॐ क्रां सर्वगः सर्वसर्वं क  
 यिज्ञ लकववायदू ॥ ॐ क्रां श्रुगानिकः ॥

ॐ क्रां सर्वगः सर्वसर्वं कियिज्ञ लकववायदू ॥ १२ ॥ ॐ क्रां सर्वगः सर्वसर्वं कियिज्ञ लकववायदू ॥

१ ॐ मानसक ॥ समस्तवर्धनी ॥ १२ ॥ ॐ मध्वनी विदित्य ॥



[illegible]



(६) अजिनिशर्मयाम् ॥ कृष्णद्वयनवतु  
स्यथादानं ॥ + ॥ १३ ॥ वृत्त्यष्टादशकमु  
संस्मानविधिः ॥

[illegible]

॥ १ ॥



त्रिंशत् ॥ यूजनी ॥ ॐ क्रां ददयाय वागध्वनाय  
२ ॥ ॐ क्रां कलामय कृधुयनम ॥ ॐ क्रां वा  
गीध्वनाय वागीध्वयो विस्मै स्त्रायनमः ॥  
ॐ क्रां वागीध्वनमः ॥ ॐ क्रां वागीध्वनाय  
नमः ॥ वद ॥ ॐ यूकनमनसा ॥ ॐ हिनक्ष  
वर्ध ॥ आवाहनादि ॥ धनू मूर्धादस्ययम् ॥

यः

यजमानस्य सिं वियक ॥ ॐ क्रां सर्वरुः सर्व  
सर्वकै पिङ्गलकववायदू ॥ ॐ स्वावुरु ॥ क  
षग्रुर्ध ॥ ॐ क्रां नमस्तु नूद नूयदू ॥ दुरु  
द्ययाधुयना म्नायरु ॥ ॐ म (ग्रयू कि ॥ या ल  
दुर्ध ॥ सिर्गिन ॥ ॐ ॐ न्धनास्त्रा ॥ क्रसना  
मानन ॥ यक ४ विमानश्चन्दनादिय  
क्षायवातिन ॥ यूजा ॥ ॐ रुलाकाय २ ॥ ॐ  
रुवलाकाय २ ॥ ॐ स्व १ लाकाय २ ॥ ॐ रुय  
लाकाय २ ॥ ॐ स रुयलाकाय २ ॥ ॐ मगव  
४ ॥ ॥ यजमानन जूग्रिमादाय ॥ सूर्य  
कानादिहिकं सवागासमनयाव ॥ दिवि  
उदयक विधि ॥ अद्रु न प्र ३ कि ॥ लू न कि  
श्यश्च वलज गर्ह ॥ आदू कायठ नयठ व  
स्य सिमिर्ग गर्हयाद आवाद स्य दिवति

१ ॐ मरुल्ल १ काय २ ॥ ॐ जनलाकायनमः ॥ १ ३



२ सथा व श्रीशक्तिर्वर्चः सारुशक्तिः सूर्यः १ सथा शक्ति

२ सारु ॥ २

दयक. गिजलखा नामथर. द्युन नवाल  
खजयिगारुकादू. श्रोदूखान ॥ यजमा  
नसी. नोमयदा नम. विधि. थं. लीखस्य  
दंकाय. मधुयदरिनावरुयादन. था  
यक. आचार्यनीलवक्राय ॥ ॥ भव्या  
य ॥ मूलमनुना ॥ यूनभा उं नो नो नूवक्रि  
य ॥ नम ॥ वद ॥ ॥ अग्निशक्तिः  
तिनग्निः ॥ सारु ॥ सथा शक्तिः शक्तिः  
थः ॥ सारु ॥ अग्निर्वर्चः शक्तिर्वर्चः ॥ सारु ॥ क  
द्यादोग्रियिकायमनु ॥ उं कानममममम  
थकः मरुयाधुयगा अमुयकव्यागिदू  
रुट ॥ यिकाय ॥ अमुमनुन निवचुन ॥  
वद ॥ उं नक्षारुन ॥ वलिमनु ॥ उं कः  
रुगायविविधकाना. उमिदिवाननी  
यका ॥ यागालनलवागित्या. ननुमनुमि  
वाह्या ॥ सर्वविधिक्कनस्यमवहकसाव  
लिगृह २ सारु ॥ वद ॥ उं अक्षवाच ॥ दे  
य ॥ उं नक्षामि ॥ ॥ अदुमि ॥ उं कः क  
यां ग्रयसारु ॥ ३ ॥ द्युन ॥ उं कानमममम  
दनुयकः मरुयाधुयगा अमुयः अमुयः  
कव्याग्रियिदू रुट नमानमशावद ॥ उं



कथादमग्नि॥ कथादमग्निविसर्ज्य॥ दियता॥  
॥ यूनःसद्वाग्निनित्राक्षर्षी॥ मूलमर्क  
दा॥ जूमनजूर्ययाषादकनजूर्यक्षर्षी॥ र्व  
दनादि. यूजन॥ कउमकात्रा॥ जूमनया  
क्षर्षी॥ मूलननित्राक्षर्षी॥ कयचनाव. गु  
धुर्न॥ नवनजूमनीकवन॥ मूलनयूज  
नी॥ उंअग्निमूखा॥ ककाअग्नित्रास॥ रुत  
॥ आ०२॥ मद्रव॥ अग्निमकेकृत्यानल  
कय॥ रुवयता॥ उंवक्तननम॥ उंविष्णु  
वनम॥ उंवद्रायनम॥ मूलनसंयक्ष॥  
खठ॥ इनसंयक्ष॥ आवाहनादि॥ अनम  
दा॥ उंअग्निमवि॥ ॥ ककाअग्निमृहा  
त्वा॥ उंअवग्निवृषा॥ असमरुयजमान  
स्ययक्षनिमिलिर्दुकिरुनिमिर्यार्थ  
नअग्निस्त्रयनसमदूरुमु॥ उंमयिगृक्षा  
म्य॥ रुद्रामा३॥ मूलमपडश्वाय॥ ॥  
उंहुंलांकांघीमीकांक्षाकजससका  
स्त्रिधस्त्राहा॥ उंकांनानावृत्र४वद्विअग्नि  
स्त्रयर्षी॥ ॥ अग्निस्त्रायनीमूलनवीर्यवा  
गीधनीगरुर्गसमवह॥ ॥ सर्ववायुध  
स्त्रिवाचनीय१०॥ अग्निअग्निस्त्रयनविधि॥



ॐ नमः शिवाय ॥ उं ह्रीं क्लीं श्रीं

ॐ कौवागीश्वरीस्वारा॥ वद॥ ॐ यथादि

वि॥ ॥ जममर्तुना ॥ वद ॥ ॐ नृगिञ्ज

निर्झा निनयिः स्वाहा सुथोऽर्क्षानिर्झा नि

४सूय ४स्वाद ॥ अग्निर्वैश्वानरिर्वैश्व ॥

स्वाहासूयावचोक्तानि च ४ स्वाहाक्ता

निःसृत्योःसृत्योःक्रानिः स्वाहा॥भक्त्याय

क॥ ॥ उं ध्रुन सिनि ॥ डययमन कधमा



मन्त्राष्टकक्रिया॥ पूजन॥ उंङ्गां गरुडं

यनमः॥ अमुमकुदाजयनपक्षन॥ ॥

वद॥ उं ह्रीं ज विष्णवे ॥ कूण कंकन नक्ष

विद्यवागीश्वरी स्त्री ॥ ॥ यूजन ॥ ॐ ह्रीं

लसश्वाङ्गनाययश्चि मवक्राय नमः ४॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

गुरुक्षानायस्वारु॥ वद॥ ॐ गुरुं भूषाय धी॥

गरुडान॥ ॥यूऊनी॥ उं व वाम द वा य ड रु

नवकायनम॥ अङ्गुलि॥ ॐ ह्रीं थद्या नङ्गुलि

नमोऽस्तु कदहायस्त्राहा॥ वद॥ ॐ स्वस्ति नमः॥

॥ यजुनी ॐ नमः ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥



दधिवक्त्राय नमः॥ आरुणि॥ ॐ कं ध्या न ध्या

नरु नंदं कालनागिवायसिमन्ताय स्वाहा॥ व

द॥ ॐ मा हिरु म्मा॥ सीमन्त॥ ॥ यूजनी॥ ॐ

कं यं गत्य नृभययुधैव काय नमः॥ आरुणि

॥ ॐ कं सर्वं ॥ सर्वं सर्वं कं यिं ग न क व चाय ज्ञा

न क म्माय स्वाहा॥ वद॥ ॐ ध्या न्माय स्वाहा या ध

य स्वाहा ध्या नाय स्वाहा च दूष स्वाहा॥ ध्या य

स्वाहा वा य स्वाहा मन स स्वाहा॥ ज्ञा न क म्मा॥ ॥

ध्या न॥ ॐ कं काला मा ना कलं ध्या त्वा पि न्म

व न द क्षि णा॥ ज्ञा ना यि ध्या य न द वी वा भ द्ध क

क म्मा कलं॥ स क जि क्षा म हा न ज्ञा भ या नू र्ण न

मा म्मा र्ण॥ ॥ लं व नं हा य॥ ॐ कं न म्मा नू द

नू य द ॥ म हा या धु य ना म्मा य दू रू रू॥ यूजनी॥

ॐ कं स द्य सू न क ना गं य न मः॥ आरुणि॥ ॐ

कं स द्य सू न क ना ध्या य स्वाहा॥ वद॥ ॐ आ या

ज्ज्मान॥ ॥

ॐ कं वा गी ध्या य न मः॥ रु मा रु न ना द वी वि

वि द्या॥ ॐ कं न म्मा नू द नू य द ॥ म हा या धु य

ना म्मा य दू रू रू॥ कं न यून यूरि ना द न या॥

॥

न ना व दी स्वाय न॥ यूजनी॥ ॐ कं व द्वा स्नाय न॥



ॐ द्वां वक्ता मूर्त्तयः ॥ ॐ द्वां वक्ता यः ॥ ॥

दक्षिणे॥ उंक्रां गंकनाय श॥ उंक्रां गंक  
नमूरुयनम॥ उंक्रां गंकनाय श॥ ॥

यन्मिमा॥ उंक्राविष्णुस्त्रायनम॥ उंक्रावि  
ष्णुमरुयश॥ उंक्राविष्णुवश॥ ॥ इति ॥

ॐ क्रां नून तास्त्रायश ॥ ॐ क्रां नून नमूक  
यश ॥ ॐ क्रां नून तायश ॥ ॥ वलंगतरुः

लं कृष्णार्थि समिध तय ॥ यूर्ध्व ॥ ॐ नृगिमी  
ॐ ॥ ॥ दक्षिण ॥ ॐ नृषत्वाङ्गत्वा ॥ ॥ य

ॐ अन्नं आहि ॥ ॥ इह न ॥ ॐ  
नादवी ॥ ॥ यूर्वयूजनं ॥ ॐ प्रत्यदायज

॥ ॥ ददितुं यत्नः ॥ ॐ द्वाय रुर्ध्व दाय रुग्ण

दाङ्गलगायत्र्यक्षदवनायजिष्णुष्टुधमर  
॥ यच्चिमैयूजनं॥ उँकांसामवेदायका

॥ उल्लंघयुक्ता ॥ उंक्रां अथर्वदायवदामा

नमः शिवाय नमः शिवाय नमः शिवाय नमः शिवाय  
॥ लो कयालयूजा ॥ उं कां लूं न्या

यश॥ ॐ क्लीं नमः शिवाय ॥ ॐ क्लीं नमः शिवाय ॥ ॐ क्लीं नमः शिवाय ॥ ॐ क्लीं नमः शिवाय ॥



ॐ कौंयं वायव्यं ॥ ॐ कौंमूंकवनाय ॥ ॐ कौं  
कौं००॥ नाय ॥ ॐ कौंअध्वकृन्दाऽयनम॥  
ॐ कौंउर्ध्वकृन्दाऽय ॥ ॥ मध्वसमस्त॥ ॐ  
कौंअध्वानकौंददयाय ॥ ॥ दसमिध्व  
म॥ नर्क॥ ॐ काननस्वाहा॥ नर्क॥ नृष्णीः  
कृयात् ॥ ॐ नृष्णीदव॥ अग्निस्मृया कनर्णी॥

वक्रास्त्री॥ यनीगास्त्री॥ यनवनआत्मासर्ध  
॥ ॐ निवलास्त्री॥ ॐ कौंवैवक्रास्त्रायनम॥ ॐ  
ॐ दिनध्वगर्भ॥ ॐ कौंसध्वनीगास्त्राय ॥  
ॐ ॐ दविष्णु॥ ॐ यत्तुष्ट० नक्रा॥ अक्रुणात्तुष्ट  
नी॥ ॥ आकाशेदकेनयुनीनयूननी॥ ॐ  
कौंअध्वानकौंसर्वोत्तमनददयाय ॥ ॐ कौंशं  
स॥ आकाशजलाय ॥ ॐ अथाहिष्ठा॥ ॥ वेद  
नादियूजनी॥ वक्रायूजनी॥ न्यास॥ ॐ कौंरुं  
सास्त्रायनम॥ ॐ कौंयद्मास्त्रायनम॥ ध्यान॥  
यद्मासनस्मिन्निदवर्हसस्त्ववशुनाननी॥ यीन  
यीनवशुवोर्ध्वकृन्दाऽयनम॥ ॐ कौं  
वक्राननम॥ ॐ कौंयजायनयनम॥ ॐ कौं  
सर्वथादवस्थानम॥ ॐ वक्रायज्ञानं॥ ॥  
यनीनयूजनी॥ विष्णुन्यास॥ ॐ कौंयद्मास्त्रायनम॥



ॐ कौंग नूग स्नाय नमः॥ ध्यान॥ पद्मसु  
नाक्रमानुरं नार्कस्मि कटानिरी। सख  
वक्रगदायद्म विष्णुकुलुस्यवारुनी॥ ॐ कौ  
विष्णुवनमः॥ ॐ कौयनागायः॥ ॐ कौअक्ष  
२॥ ॐ कौअयाम्यनयः॥ ॐ कौवन्नूधायः॥  
ॐ ह्रीं विष्णु॥ ॥ धनावर्कविजययाय॥  
वन्दनादि॥ पूष्य॥ धूय दीप॥ अयगन्धादि॥  
वाक्का॥ ॐ अक्षलक्षमकर्मगिक्कनाक  
नावक्षगन्धयवक्ककर्मकर्म्मसमूकगन्ध  
समूकगन्धवाक्कगन्धरिः पूष्यवन्दनग  
मूलवासारिवक्कखनखामरुवृक्षे निवृ  
ष्ट्यानुं वृक्षामिनि यत्कं॥ ॐ यथाविदि  
नं कर्मकृन् ॐ कवनवागिनि॥ गन्धायद्वि  
नकृष्णनासीय॥ ॐ अग्रखमवक्कारुवनि  
गन्धायवन्ध॥ ॐ अग्रवक्क॥ वक्कास्काया॥ वि  
ष्णुनगाठमनि॥ विष्णुस्काया॥ पूष्यवत्कृनी॥  
॥ ॐ कयानिग्विगवक्ककृष्णनयनिस्तन  
ही॥ ॥ यथायथाविधि मन्त्रनवक्रिदवाधेनी॥

अग्निपूजायाय॥ गुननमस्तुत॥ न्यासः॥  
मन्त्रादिन्यासः॥ अस्याग्निमन्त्रस्य रुग्मसि



मोयणीकुन्दारिनिदवना कोवीड स्वारागकिन  
मिकायाथेविनिथाग ॥ न्यास ॥ रुगुममथन  
म ॥ गिनमि ॥ गमयणीकुन्दसनम ॥ मखा ॥ अ  
मिदवनायेनम ॥ ददया ॥ कोवीडायनम ॥  
लि ॥ ॥ स्वारागकयनम ॥ गु ॥ अमिका  
याथेविनिथाग ॥ ॥ मउङ्गन्यास ॥ उं स  
रुमात्रियददयायनम ॥ उं स्वस्तियुधुय  
गिनमखा ॥ उं ड निषयनूषायगिखायेवा  
षट् ॥ उं धूमव्यापिनकववायदू ॥ उं सफजि  
कायेवपुषयायवषट् ॥ उं धनूदनायामुय  
रु ॥ ॥ सफजिद्वान्यास ॥ मूर्धिरिनमय  
स्वारा ॥ लि ॥ ॥ गगमथेस्वारा ॥ ॥ ॥ धू  
नकायेस्वारा ॥ गिनमि ॥ वू कषायस्वारा ॥  
मखा ॥ लूमयरायेस्वारा ॥ नासिकाया ॥ यूज  
गिनकायेस्वारा ॥ नमथा ॥ यूवदूनूषायस्वा  
रा ॥ सवा ॥ ॥ अक्षमूर्तिन्यास ॥ उं नौ अ  
मयडाकवदसनम ॥ गिनमि ॥ उं नौ अमय  
सफजिद्वायनम ॥ दका ॥ ॥ उं नूअमयरु  
ववाहनायनम ॥ दकया ॥ ॥ उं नौ अमयज  
ध्वदनायेनम ॥ दककया ॥ ॥ उं नौ अमयवेष्ठा  
ननायनम ॥ गु ॥ ॥ उं नौ अमयकीमानकड



भनमः॥ वामकः॥ ॐ नमः॥ अथ विष्णुमन्त्रः॥  
 यनमः॥ वामयाः॥ ॐ नमः॥ अथ दशमः॥  
 यनमः॥ वामाः॥ ॥ ध्यानः॥ वरुणः॥  
 नारीतिगकिस्वसि कलशः॥ कागमनीय  
 मखं कालायिज्ञललावनं॥ वधूकार्य  
 मयजिदा विधुनाभ्यतिरीषः॥ धनः॥  
 पूजा॥ ॥ अग्नियूजनी॥ अमनकलयः॥  
 ॐ नमः॥ अथ नमः॥ कथयति॥ ॐ नमः॥  
 नायः॥ ध्यानः॥ ॐ नमः॥ किलस्वसि कारीतिम  
 वेदीयदीर्घिर्द्वानयनं कयारु॥ रुमा कलय  
 मसं नृनिर्गु॥ अथ दक्षिणं वर्द्धमानं लिङ्गं  
 ॥ कलनयनिर्षिच॥ मखलायनि॥ यायाव  
 ऊयनिष्कनं॥ यदक्षिणं कभनयूयः॥ वक्र  
 दिमूर्तिः॥ मध्ववक्रिगन्धदिरि॥ वक्रा  
 जिदायूज॥ मूर्तिनमः॥ अथ स्वाहा॥ ॐ नमः॥  
 ये स्वाहा॥ ॐ नमः॥ अथ स्वाहा॥ ॐ नमः॥  
 नमः॥ अथ स्वाहा॥ ॐ नमः॥ अथ स्वाहा॥  
 यौ वक्रनयय स्वाहा॥ कभनयूयः॥  
 ॐ नमः॥ अथ स्वाहा॥ ॐ नमः॥ अथ स्वाहा॥  
 निगम स्वाहा॥ ॐ नमः॥ अथ स्वाहा॥  
 ॥ ॐ नमः॥ अथ स्वाहा॥ ॐ नमः॥



नमः प्रयायवयवः॥ उं धनं दुःखायाः क्लायरुहः॥  
 दलमूलियूजा॥ उं अग्रयजा नवदसनमः॥  
 उं अग्रयस्य किकायनमः॥ उं अग्रयरुवावे  
 रुनायनमः॥ उं अग्रयश्वादनयनमः॥ उं अ  
 ग्रयवेष्मननायनमः॥ उं अग्रयकोमायनमः॥  
 उं अग्रयविष्णुमूखायनमः॥ उं अग्र  
 यदवमूखायनमः॥ गमुदवयूजा॥ उं अक्ष  
 नमः॥ उं अग्रयनमः॥ स्वस्तिकयनमः॥ ला  
 कयालयूजा॥ ॥

अर्थयदासाधनं ॥ य  
 क्षिप्तकमलुलुययराजनं यविकुच्यदध  
 नियविक्रयाक्षणीयार्णः आश्रमालीचनरु  
 लीसम्माजनकृष्णः दुयमैयेन कृष्णः समिध  
 धृक् आश्रमितकवुल उरुषलमृगालः मूः  
 यः कृष्णीजिनयुष्मयुष्माव्वागमरुनी ॥ ॥  
 अमृगारिद्वर्णी॥ उं कानमसु नूद नूथकृष्ण  
 हायागुयनाक्कायरुहः॥ उं यागयागः॥ ॥  
 अमृगयविकुच्यदनी॥ उं यविकुचः॥ कवचन  
 यविकुचवन्धनी॥ उं कानसर्वकृष्णसर्वकृष्ण  
 इकैलेवचायद्वः॥ उं विष्णुननाट॥ अर्थ



यागनिधाय॥ ॐ न्यादिलाकयालानगिवाक्रीं  
 वयम्॥ ॐ निर्वीर्यविघ्नसंघानं बालकं बालयि  
 ष्यथा॥ ॐ गोवामाक्रीमीमांसां गार्गां धावयन् नदनरु  
 र्नी॥ समार्जनं कृणां गृहीत्वा श्रुत्वा ॥ ॐ धयन्॥ त  
 नः ॥ ॐ कृष्णवासाधनी॥ अमुं गायत्रिं॥ नमो  
 तपनी॥ ॐ यत्पुष्पं नमः॥ अमुं यत्पुष्पं नमः  
 ॐ सुस्मान्॥ कृष्णकृष्णि कृष्णनयनं वायव  
 न॥ ॐ ॐ आत्मनः स्वायनमः॥ कृष्णयलनं  
 वायलसथियक॥ ॐ ॐ विद्यानः स्वायनमः॥  
 मध्वनमध्वसथियक॥ ॐ ॐ गिवनः स्वायन  
 मः॥ वानवासथियक॥ अमुं गडकयूननी॥  
 ॐ समद्रादुमि॥ आकाशवायूयूननी॥ ॥ य  
 विष्णुः ॥ ॐ ॐ न॥ ॐ देवीनाया॥ ॐ देवयगिव  
 रुन॥ ॐ यथा ॐ न्या॥ विष्णुः कृष्णमर्धं॥ ॐ  
 सवित्रस्ता॥ ॐ देवयकर्म॥ अग्निनी गयाम्  
 धस्माया॥ ॥

नमो आशस्माली च नमो स्मालीयनयनी॥ गिवा  
 मनु॥ ॐ यत्पुष्पं नमः॥ अमुं कृष्णकृष्णदय  
 मनु॥ ॐ यत्पुष्पं नमः॥ ॐ महीनायथासि॥ ॥  
 आशस्माली अमुं यत्पुष्पं नमः॥ ॐ ॐ यत्पुष्पं नमः॥  
 नक॥ ॥ ॐ ॐ अमुं यत्पुष्पं नमः॥ यत्पुष्पं नमः



मयी ध्यात्वा ॥ ॥ कृष्णयन्त्रालय ० यमजाना  
दथनः कृष्णमध्याक्षिप ॥ ॐ कौंक्षदयाय नमः ॥  
ॐ अयं रुगा अमृतागि ॥ अज्ञानकं गृहीत्वा य  
न अनादनी कृष्णमध्याक्षिप ॥ ॐ कौंक्षदया  
य ॥ ॐ नमो दम्भा ॥ ॥ कृष्णयन्त्रि (ध्यादय  
न विन्दु दानं ॥ ॐ कौं विष्णु वस्त्रा ॥ वं कलि स  
विष्णु या ध्यात्वा ॥ कृष्णयन्त्रि (ध्यादभ सहायको ॥  
ॐ कौं नृदाय स्वाहा ॥ कृष्णमध्या नृदमयी ध्यात्वे  
॥ कृष्णयन्त्रि (ध्यादभ सहायको ॥ ॥ ॐ सवित्र स्वा  
॥ चद्रवाकाया व अमृताया कर्णा ॥ ॐ प्रागान  
मिन्द्र ॥ ॐ दव स्वाहा ॥ मूलन आला उनी ॥ ॐ  
धत्वा र्था ॥ न कृष्णय विष्णु कर्णा ॥ ॐ य विष्णु ॥  
इत्यवन सयवन ॥ ॐ सवित्रे इयं आसूय  
जनी ॥ ॐ न आसिगु क्रम ॥ आसूय काली गृही  
त्वा आचार्य यज्ञमानन वी कर्णा ॥ आसूय  
यद न दृष्ट आसूय यद न धनी आसूय  
गन्धायीत्वा सर्वमासूय निश्चिन् ॥ ॥  
नमः ॥ यूर्ध्व लीका नी ॥ ॐ दवी ना ॥ ॐ यूर्ध्व  
॥ ॐ सवित्रे इयं स ॥ ॐ कृष्णाय नमः ॥ अग्नि  
कृष्णाय नमः ॥ ॐ अदिते विन्द ॥ अग्नौ कृन्त  
॥ ॥ ॐ दकं यनि न निक्षयः सय विष्णु ॥ ॥



नरवज्रक ॥ ॥ नमः शिवाय ॥ ॐ नमः शिवाय ॥ ॐ नमः शिवाय ॥  
 शिवाय शिवनमः ॥ ॐ नमः शिवाय ॥ ॐ नमः शिवाय ॥  
 शिवनमः ॥ ॐ नमः शिवाय ॥ ॐ नमः शिवाय ॥ ॐ नमः शिवाय ॥  
 नमः शिवाय ॥ ॐ नमः शिवाय ॥ ॐ नमः शिवाय ॥ ॐ नमः शिवाय ॥  
 अथ वज्रसाधनं ॥ ॐ धन्यमसि ॥ ककुभसु  
 ॥ ॐ ककुभसि ॥ समिधनकृदनी ॥ ॐ वयव  
 र्दमसि ॥ सूर्यनिधाय ॥ ॐ यनायूत ॥ ॐ व  
 निनीकृत् ॥ ॐ दवावः सवि ॥ वनूराधुनि  
 धाययूनः धन्यमसि ॥ निधायकृत् ॥ ॥  
 वनू अग्निमधे निधाय ॥ ॐ वसुत्वा ॥ ककु  
 यामकायावयूलिकासुत ॥ ॐ वनूथया  
 नकानक ॥ ॥ वनूयूजा ॥ वन्दनादिन ॥ य  
 य ॥ ॐ नमः शिवाय ॥ ॐ नमः शिवाय ॥ ॐ नमः शिवाय ॥  
 धमिषाय ॥ ॐ यमदय ॥ ॐ नमः शिवाय ॥  
 ॥ ॐ ककुभ ॥ ॐ यूनरुषाय ॥ ॐ वक्र  
 ॥ ॐ विषुव ॥ ॐ मरुधनाय ॥ ॐ यकाय ॥

थनावसाधनमाहयक ॥ शिवनखासियन  
 र्थनी ॥ शिवामन्त्र ॥ ॐ ययुष ० नक ॥ न  
 र्थनी ॥ रवामिषय ॥ ॐ स्तानयाय ॥ य  
 नमः शिवाय ॥ ॐ ययुषमाननयनयक ॥



ॐ मही नीयथासि ॥ धनदायक ॥ मूलमन्त्र ॥ ॐ  
ॐ वत्स ॥ ॥ यूजन ॥ वन्दनादि नया ॥ ॐ कौ  
वक्रा (घ) युगया ज्ञाय नमा विद ॥ ॐ धम च्छद  
मि ॥ ॐ वसां य विर्ण ॥ ॐ वसुधैव कुटुम्बकम्  
कर्म वमण किं धमश्च धमश्च नमश्च मः ॐ  
ह्या वमग निश्चम यज्ञ न कल्प नाम ॥ ॥

कृष्ण निः श्व क याम धम मला य का वर ॥ व  
कृष्ण मया य ॥ इव स काय ॥ ॐ कौ अं अग्र यस्व  
ह ॥ ॐ दम यथा ग ॥ दक्षिण न ॥ स्वव स  
काय ॥ ॐ कौ सामा यस्वा ह ॥ ॐ दं सामा यथा ग ॥  
धम न ॥ दथु स क सृग्धि काया व दथु स द  
य ॥ ॐ कौ अग्नि सा मा र्था स्वा ह ॥ ॐ दम ग्नि सा  
म र्था र्था ग ॥ मध्व स ॥ ॐ कौ अग्नि सुष्ठि क न य  
स्वा ह ॥ र्था ग ॥ मूय ॥ ॐ अग्नि जिज्ञा सिधु ॥ ॥

नमा व का रि द्या न ॥ ॐ कौ लं स द्या ज्ञा ना यस्व  
ह ॥ यश्चि म ॥ ॐ कौ वं वाम द वा य स्वा ह ॥ दक्ष  
॥ ॐ कौ नं अथा ना य स्वा ह ॥ दक्षिण ॥ ॐ  
कौ यं न्यून वा य स्वा ह ॥ पूर्व ॥ ॐ कौ दं णी  
धना य स्वा ह ॥ मध्व ॥ ॐ कौ कौ की स द्या ज्ञा



[illegible]

नमोऽस्मिन् कल्याणं ॥ उं क्रौं मूं हिनक्षत्राय स्वाहा ॥  
 नेमय ॥ उं क्रौं यूं कनकाय स्वाहा ॥ यश्चिम ॥ उं क्रौं  
 धूं नकाय स्वाहा ॥ वायवा ॥ उं क्रौं वूं कृष्णाय स्वा  
 हा ॥ ज (गो) ॥ उं क्रौं लूं मयराय स्वाहा ॥ पूर्व ॥ उं  
 क्रौं यूं अग्निनाय स्वाहा ॥ वीरान ॥ उं क्रौं यूं  
 वक्रनूयाय स्वाहा ॥ म (ध) ॥ उं क्रौं मूं हिनक्षत्र  
 कनकाय स्वाहा ॥ नेमय यश्चिमया ॥ उं क्रौं यूं  
 धूं कनकाय स्वाहा ॥ यश्चिमवाया ॥ उं  
 क्रौं धूं वूं नकाय स्वाहा ॥ वायव (गो) ॥ ॥



ॐ कौं वृं लूं कृष्णाय स्वाहा ॥ अ० यूर्वे ४ ॥  
 ॐ कौं लूं यूं सूर्यस्य अग्निं काय स्वाहा ॥ यूर्वे ०० गी  
 ना ॥ ॐ कौं यूं यूं अग्निं काय वद नूयाय स्वाहा ॥  
 ०० गी नमः ॥ ॐ कौं कूं वद नूयाय स्वाहा ॥ म  
 (ध) सूर्य नमः ॥ ॐ कौं कूं वद नूयाय स्वाहा ॥ सूर्य गिरिवान  
 सिकल्यया वद नूयाय क गिरिवा काय ॥ ॐ स  
 यक अ० य० ॥ यूर्वे ०० गी नमः ॥ ॐ कौं कूं वद नूयाय स्वाहा ॥ ॥

(ध)

मरुतः कृति ॥ ॐ सहस्राक्षि नमः ४ स्वाहा ॥ ॐ ह्रः  
 सूर्य (ध) गिरि नमः स्वाहा ॥ ॐ उरिष्ठय नूय गिरि  
 यो वीर्य स्वाहा ॥ ॐ धूमवायि नमः कवचाय कूं स्वाहा ॥  
 ॥ ॐ सूर्य जिह्वाय नमः कवचाय वद स्वाहा ॥ ॐ ध  
 नूदनाय माय रुद्र स्वाहा ॥ ॥ अ० यूर्वे ०० गी  
 म ॥ ॐ अ० यूर्वे ०० गी नमः ४ स्वाहा ॥ ॐ अ० यूर्वे ०० गी  
 जिह्वाय स्वाहा ॥ ॐ अ० यूर्वे ०० गी नमः ४ स्वाहा ॥ दा  
 ॐ अ० यूर्वे ०० गी नमः ४ स्वाहा ॥ ॐ अ० यूर्वे ०० गी नमः ४  
 नाय स्वाहा ॥ ॐ अ० यूर्वे ०० गी नमः ४ स्वाहा ॥  
 ॐ अ० यूर्वे ०० गी नमः ४ स्वाहा ॥ ॐ अ० यूर्वे ०० गी नमः ४  
 स्वाय स्वाहा ॥ ॥ मरुतः गिरि नमः ४ स्वा  
 हा ॥ कौं स्वाहा ॥ ग्रीं स्वाहा ॥ कूं स्वाहा ॥ (ध) स्वाहा ॥  
 गं स्वाहा ॥ मरुतः गिरि नमः ४ स्वाहा ॥ वन स्वाहा ॥ व  
 ३ यत्ना कृति ॥ ॐ कौं वं कौं स्वाहा ॥ २ नूय काय २ ॥ द  
 भुयः स्वस्वायः पासायः धृजायः गदायः पिशूनायः वक्र  
 यः ॥ ॐ कौं ॐ यं स्वाहा ॥ ३



नदस्वारा॥ सर्वजनस्वारा॥ भस्वारा॥ वगमानय  
स्वारा॥ अननवान ४ शक्रया ७॥ ॥

अक्रानि॥ उंकांकां गिवायनामायनामकनक्ष  
यस्वारा॥ वद॥ उंकायस्वाराकस्मोस्वाराकन  
मस्मोस्वारास्वाराधिमाधीगायस्वारासनः॥ य  
जायनयस्वाराविरुविल्लागायादित्येस्वारादि  
त्येमस्मोस्वारादित्येसमृतीकार्येस्वारासनस्व  
त्येस्वारासनस्वत्येयावकार्येस्वारासनस्वत्ये  
त्येवृत्त्येस्वारायुष्मस्वारायुष्मयुष्मयुष्मयुष्मयुष्म  
त्येयुष्मननन्धियायस्वारात्वष्टस्वारात्वष्टउ  
नीयायस्वारात्वष्टयूनूयायस्वाराविष्मवः  
स्वाराविष्मवनिरुययायस्वाराविष्मवगियिवि  
ष्टयस्वारा॥ नामकनक्ष॥ ॥ अक्रानि॥ उंकां  
अधानकांसर्वोत्तमनददयायस्वारा॥ उंयारु  
लनी॥ रुत्तयासन॥ ॥ अक्रानि॥ उंकांअधा  
नकांसर्वोत्तमनददयायस्वारा॥ उंअनयगा॥  
अनयासन॥ ॥ अक्रानि॥ उंकांनमस्कनूद  
नूयकः मरुयाधुयनाम्नायरुदस्वारा॥ उं  
मूर्धोर्न॥ वृशकनक्ष॥ ॥ अक्रानि॥ उंकां  
नमस्कनूदनूयकः मरुयाधुयनाम्नायरु



ह्रस्वाह॥ उं रुद्रं कर्षि॥ कर्षवध॥ ॥ आह  
नि॥ उं कां सर्वं न॥ सर्वं सर्वं कं यि॥ नलकवचाय  
ह्रस्वाह॥ उं यथेमां वाची॥ वनवन्धन॥ गमय  
मीयदान॥ ॥ आह नि॥ उं कां नमस्तु नृद्वय  
यद्र॥ मरुयाधुयनास्तुय नृमाय नृमाय रुद्रस्वाह॥  
उं आह नृ॥ वनमाह॥ ॥ आह नि॥ उं कां  
नृधानकां सर्वोत्तमनदयाय स्वाह॥ उं नृ  
म्वकं यजामह॥ विवाह॥ ॥ आह नि॥ उं  
कां नमस्तु नृद्वय यद्र॥ मरुयाधुयनास्तुय  
नृमाय रुद्रस्वाह॥ उं काधु काधु॥ उम  
नजाया॥ ॥ निदग क्रिया॥ ॥

नृक्षदगसमिधराम॥ मूलमनु॥ वद॥  
उं समिधार्णि॥ ॥ धादगसमिधराम॥ उं कं  
ददयाय॥ उं नदवायिस्तुदा॥ नकं उं स्वा  
हा॥ नकं यनिनं निधाय॥ ॥ रुर्गवा  
र्यो कृषो वक्राष्टक॥ उं कां मन॥ यजाय गथस्व  
हा॥ ॥ दं मन॥ यजाय गथस्वाग॥ उं कां रु  
॥ स्वाहा॥ ॥ दं रु॥ ॥ स्वाग॥ उं कां रुव॥ स्वाहा  
॥ ॥ दं रुव॥ स्वाग॥ उं कां स्व॥ स्वाहा॥ ॥ दं स्व॥  
स्वाग॥ उं कां रुवुव॥ स्वस्वाहा॥ ॥ दं रुवुव॥



स्व॥ स्वाग॥ ॥ डययमनकृणे रुक्मवन्धनं  
॥ उं गामो स्यवधूत॥ ॥ पूजन॥ उं ॐ ह्यस्य  
वकासि॥ उं कौ ॐ दायमम॥ उं कौ सना  
धियनय॥ उं कौ वक्ररुक्माय॥ उं कौ नेना  
वनासनायनम॥ ॥

नन॥ यज्ञायनिदवनामानसस्त्रिय॥ पूज  
नी॥ उं कौ वक्र (धनम॥ उं कौ युगीताय॥  
उं कौ सत्वदाय॥ उं कौ यज्ञवदाय॥ उं कौ  
सामवदाय॥ उं कौ अथर्ववदाय॥ उं कौ स  
ॐ दाय॥ उं कौ मं अग्रय॥ उं कौ मं यमाय  
॥ उं कौ दं नमस्याय॥ उं कौ वैव नूधाय॥  
उं कौ यवाय॥ उं कौ सुकवनाय॥ उं कौ  
कृष्णनाय॥ उं कौ अन्ननाय॥ उं कौ  
उं वक्र (॥ ॥ यूनरुमवृद्धवार्धनी॥ उं  
कौ प्रियश्चयनम॥ उं कौ वं चक्षुष्य॥ उं ३४  
कौ दवागमयनम॥ उं कौ दि॥ उं कौ विदि  
॥ उं कौ स्वर्माय॥ उं कौ मत्याय॥ उं  
कौ यामाताय॥ उं कौ गोथ॥ उं कौ कुन्  
य॥ उं कौ सूर्याय॥ उं कौ चन्द्राय॥ उं कौ  
आगीध्वनाय॥ उं कौ रुक्म॥ उं कौ अ  
वधिरा॥ उं कौ सर्व॥ उं कौ दधनम॥



ॐ कौं वक्र (व) श ॥ ॐ कौं विष्णु व श ॥ ॐ कौं नृदाय श ॥  
ॐ कौं शिवाग्रयन म श ॥ इह न न माद व र ॥  
यूजनी ॥ दक्षि (म) पि रु र ॥ स्व धा ॥ तिला द की ॥ इ  
य स्य र्ग नी ॥ ॐ न न द्या ॥ इह ना घा ट ॥ ॥

न ना व द्या क नि ॥ त्याग स हि न ॥ ॐ कौं म ग्द द्या  
य स्वा रु ॥ ॐ द म ग्द द्या य ॥ ॐ कौं य थि यो स्वा  
रु ॥ ॐ द य थि यो ॥ ॐ कौं अ न य स्वा रु ॥ ॐ द म  
ग य ॥ ॐ कौं व क्र (व) स्वा रु ॥ ॐ द व क्र (व) ॥ ॐ  
कौं य जा य न य स्वा रु ॥ ॐ द य जा य न य ॥ ॐ कौं  
द व र ॥ ॐ द द व र ॥ ॐ कौं म पि रु र ॥  
स्वा रु ॥ ॐ द म पि रु र ॥ ॐ कौं व न्द र ॥ ॐ द व न्द र ॥  
ॐ द व न्द र ॥ ॐ कौं म ध य स्वा रु ॥ ॐ द मः  
ध य ॥ ॐ कौं म ध य स्वा रु ॥ ॐ द म ध य ॥ ॐ  
कौं स द स स्य न य स्वा रु ॥ ॐ द स द स स्य न य ॥  
ॐ कौं अ न म न य स्वा रु ॥ ॐ द अ न म न य ॥ त्याग ॥  
ॐ कौं य रु र्व द्या य स्वा रु ॥ ॐ द य रु र्व द्या य ॥ ॐ  
कौं वा य व स्वा रु ॥ ॐ द वा य व ॥ ॐ कौं अ न  
नि द्या य स्वा रु ॥ ॐ द अ न नि द्या य ॥ ॐ कौं व  
क्र (व) स्वा रु र्वा दि ॥ ॥ ॥  
ॐ कौं सा म व द्या य स्वा रु ॥ ॐ द सा म व द्या य ॥



ॐ कौ दिव स्वाहा ॥ ॐ द दिव ॥ ॐ कौ सूर्या य स्वा  
 हा ॥ ॐ द सूर्या य ॥ ॐ कौ वक्र (घ) स्वा रु ह्या दि ॥  
 हा ॥ ॐ कौ अथर्व व दाय स्वा हा ॥ ॐ द अथ  
 र्व व दाय ॥ ॐ कौ दिग्ग ॥ स्वा हा ॥ ॐ द दिग्ग ॥  
 ॐ कौ चन्द्र म (ग) स्वा हा ॥ ॐ द चन्द्र म (ग) ॥ ॐ कौ  
 वक्र (घ) स्वा रु ह्या दि ॥ हा ॥ ॥ ॐ कौ रु ॥ स्वा हा  
 ॥ ॐ द रु ॥ ह्या ग ॥ ॐ कौ रु व ॥ स्वा हा ॥ ॐ द रु व  
 ॥ ॐ कौ स्व ॥ स्वा हा ॥ ॐ द स्व ॥ ॐ कौ रु र्गु व ॥ स्व  
 स्वा हा ॥ ॐ द रु र्गु व ॥ स्व ॥ थ नाम रु वा द नि  
 द ग वा नू ने हाम ॥ ॐ र्व नाजू (ग्र) ॥ ॐ द म ग्नि व  
 नू ण र्णा ॥ ॥ ॐ स र्व नाजू (ग्र) ॥ ॐ द म ग्नि व नू  
 ण र्णा ॥ ॥ ॐ म म व नू ण ॥ ॐ द म ग्नि व नू ण  
 र्णा ॥ ॥ ॐ क स्वा या मि ॥ ॐ द म ग्नि व नू ण र्णा ॥ ॥  
 ॐ अय (ग्र) म्य न रि ग क्तिया ष्व स ख मि त्व  
 म या अ सि । अ या ना य र्ग व रु म्य या ना द रि  
 रु म रु ॥ स्वा हा ॥ ॐ द म्पा ष्व (न्न) ॥ ॥ ॐ क  
 न ग र्ग ॥ ॐ द म्ब नू ण य स वि ष्व वि ष्व क र्म  
 (ग) वि ष्व र्णा द व र्णा म नू र्ग ॥ स्व र्क र्ण ॥ ॥  
 ॐ उ र्ग र्म व नू ने या स म म्म द वा ध र्म वि म  
 ध म ॥ य थ य । अ थ र्ग य मा दि र्ग य र्ग न  
 वा ना ग सा अ दि र्ग म्पा म स्वा हा ॥ ॐ द व नू



भयदित्याधियतयथाग॥ ॥ उं उदु० हि  
नाडा॥ ॐ दममिव नूषास्या॥ ॥ उं वनूष  
स्यारुमनमसि वनूषास्यारुमनसुनीत्या  
वनूषास्य स्मनसदन्यासि वनूषास्य स्मनसद  
नमसि वनूषास्य स्मनसदनमासीद॥ ॐ दम  
मिव नूषास्या॥ ॥ उं रुवतन्नः समनसो सव  
नसावनयसो॥ मायरु० हि० सिद्धमायरु  
यतिः शनवदसो गिबोरुवतमद्यनः॥ ॐ द  
ममिव नूषास्या॥ ॐ तिदगवानूषास्यमः॥ ॥  
उं रुवतन्नः स्यात्॥ उं वनूषास्य स्यात्॥ ॥  
उं द्वावागीश्वर्ये नमः॥ उं द्वावागीश्वराय नम  
ः॥ यित्तो द्वययूजनी॥ ॥ स्वास्तु नः रुद्रयात्  
॥ १०॥ उं द्वावागीश्वरावागीश्वराय स्वास्तु नमो  
नमः॥ यूक्त॥ यित्तो विसृजनी॥ समवयति  
ननिष्प्राय॥ ॥ यंचवानूषास्य यंचगवयश्च  
म॥ वद॥ उं ॐ नावती॥ उं ॐ देविष्णु॥ उं मान  
साक॥ उं नवद्वयवा॥ उं चिद्वदवानां॥ ॥  
गलयनिदुःसादि॥ द्यूता कृतिविय॥ समस्त  
मालकाविय॥ द्यूता कृतियूक्त्याय॥ वदवा  
न॥ उं सफरुअसमिध॥ ॥  
नकाशमयाप्रयनर्थी॥ अमुकया द्रव्य॥



१० मूकटमूल गभयणी नरकचक्र ५५ न १०॥ १०

उंययय० नैयनयो० ॥ यव अक्षत ॥ तिल ॥  
गुल ॥ दध्ना ॥ दधि ॥ घृण ॥ मधु ॥ गुण ॥ शर्करा  
ना ॥ जाम्बिन ॥ किम्वरुन ॥ गभय ॥ धीरुल ॥  
नानिकन ॥ नकवक्तु ॥ समिधद्वय ॥ उय  
माना ॥ ॥ आचार्यपूजन ॥ चन्दनादिरुक्ता  
र्या ॥ ॥ दिनधामूकनादि ॥ मूदिका ॥ दिनध  
नरुनादि ॥ कंकनादि अलंकाल ॥ यजमान  
नगुनयना द्वायवाक् ॥ सर्वलंकालसिद्ध  
कंकनं मूदिका सुधा कुटुलानिमक  
ठानि गुनूयाय किगृह्णतां ॥ ॥ मालासा  
धनी ॥ यं च गायनहाय ॥ चउ १ संस्कार ॥  
प्रित्तत्वा ॥ मारुकाक्ष नद्या ॥ मूलमनुष्य  
नियुथकयुथक ॥ गभयणी ॥ ॥  
विदियाष्टसाधनो अर्थयात्रा दकनहाय ॥ च  
उ १ संस्कार ॥ गभयणी उय ॥ ॥ यजमाननः  
आययकवाक् ॥ यरूया खयकिष्ठरि निर्वि  
ष्टिकउकर्मणि ॥ ०० रुद्रहागुरुं कियनयव  
गिवाङ्गनि ॥ यजमानादिसर्वर्षा नाञ्जनाक्ष  
गुणदय ॥ सर्वभानिक नचैव सर्वदवषु  
क्षय ॥ नवममुगृहीत्वा च सर्वभानिकना  
मार्द ॥ सर्वद्विगना गभय लक्ष्मी सर्वार्थसिद्ध

मूलमनुष्यलक्ष्मी



४ पूर्वमहावाहदि॥ उंक्रौं अग्रस्वाहा॥ उंक्रौं संसायश॥  
उंक्रौं वनस्वायश॥ उंक्रौं यज्ञायश॥ उंक्रौं लीमायश॥ उंक्रौं  
उग्रायश॥ उंक्रौं गगनकनकवश॥ उंक्रौं व्यष्टश॥ उंक्रौं स्वस्वा  
या॥ उंक्रौं दधुवि॥ आचार्यस्वस्वाया॥

अग्रिवर्मुचक्षानयत्॥ नकवर्मुचकुंरुस्वाम  
धमस्वनावक्षयत्॥ ॥ तिलाकनिर्मकल्या  
॥ डिमनक्रयाश्चनमर्नयक्रयाश्चनमर्नर्मक  
ल्याया॥ ॥ जयमालीगृहीत्वा॥ रुसीधु  
कनीमृगिवामदयानिलाकनिर्मकल्या॥ ॥

आकनिवियां॥ उंक्रौं गंगधयनयस्वाहा॥ उंक्रौं  
गुंगुनूयास्वाहा॥ उंक्रौं द्वाक्षययालायस्वाहा  
॥ उंक्रौं द्दमयस्वाहा॥ उंक्रौं रुक्षस्वाहा॥ उंक्रौं रु  
वस्वाहा॥ उंक्रौं स्वस्वाहा॥ उंक्रौं रुक्वस्वस्वस्व  
हा॥ उंक्रौं द्वावक्रवस्वाहा॥ उंक्रौं वक्रज्ज्ञानं॥  
वक्रा॥ ॥ उंक्रौं द्वाविष्णवस्वाहा॥ उंक्रौं विष्ण  
वनाट॥ यगीत॥ ॥ उंक्रौं मयदायस्वाहा॥  
उंक्रौं यरुर्वदायस्वाहा॥ उंक्रौं सामवदायस्वा  
हा॥ उंक्रौं अथर्ववदायस्वाहा॥ ॥  
उंक्रौं लुब्दायस्वाहा॥ उंक्रौं नूअग्रयस्वाहा॥  
उंक्रौं मयमायस्वाहा॥ उंक्रौं द्वानेमहायस्वाहा॥  
उंक्रौं वनस्वाहा॥ उंक्रौं यवायस्वाहा॥  
उंक्रौं संकववायस्वाहा॥ उंक्रौं द्वाभनायस्वाहा॥  
उंक्रौं उंक्रौं वक्रवस्वाहा॥ उंक्रौं अविष्णवस्वाहा॥

यश॥ उंक्रौं अग्रयसुक्षिकनयस्वाहा॥ २



ॐ कं ज्वर्जवक्राष्टौ स्वाहा ॥ ॐ कं कवर्जमाष्टौ स्वाहा ॥



दवनायस्वहा॥ उं कौं रुक्मिणस्वहा॥ उं कौं विना  
 यकायस्वहा॥ उं कौं गङ्गा नयस्वहा॥ उं कौं मनस  
 होस्वहा॥ उं कौं महालक्ष्म्यास्वहा॥ उं कौं यशोधरा  
 यस्वहा॥ उं कौं शनैश्च नयस्वहा॥ उं कौं मरुदाय  
 स्वाहा॥ उं कौं नर्मदायस्वहा॥ उं कौं अनिलायस्व  
 हा॥ उं कौं जूननायस्वहा॥ उं कौं वासायस्वहा॥ उं  
 कौं रुक्मिणायस्वहा॥ उं कौं विष्णवेस्वहा॥ उं कौं  
 वरुणायस्वहा॥ उं कौं यक्ष्मिणायस्वहा॥ उं कौं  
 अक्ष्मिणायस्वहा॥ उं कौं सन्ध्यायस्वहा॥ उं कौं म  
 रुतायस्वहा॥ उं कौं यममायस्वहा॥ उं कौं य  
 मदध्यायस्वहा॥ उं कौं अश्विदवनायस्वहा॥ उं कौं  
 चवर्गकोमायस्वहा॥ उं कौं टवर्गवेस्वहा॥  
 उं कौं नैज्यानाय दक्षिणवक्रायस्वहा॥ उं कौं ज  
 वनालक्ष्म्यायस्वहा॥ वद॥ उं यमनदलीं  
 उं कौं पाणिनिश्यास्वहा॥ वद॥ उं अम्बुजम्बिकां  
 उं कौं वधुश्यास्वहा॥ वद॥ उं वधुध्वमि॥ वद॥  
 उं कौं नैमस्यायस्वहा॥ उं कौं खड्गायस्वहा॥  
 उं कौं अग्निद्विधाक्ष्म्यायस्वहा॥ उं यमदवा॥  
 ~~~~~॥ उं कौं निवृत्ति दाना  
 यस्वहा॥ उं कौं वल्लभायस्वहा॥ उं कौं उदय
 ऋक्षायस्वहा॥ उं कौं दानाश्विदवनायस्वहा॥

॥ अथ विष्णु स्तोत्रम् ॥
 ॥ अथ विष्णु स्तोत्रम् ॥

ॐ कौ वृषहाय स्वाहा ॥ ॐ कौ कृदाय स्वाहा ॥ ॐ
 कौ गदाय स्वाहा ॥ ॐ कौ मनस्वत्ये स्वाहा ॥ ॐ
 कौ महालक्ष्म्ये स्वाहा ॥ ॐ कौ सामवदाय स्वाहा ॥
 ॐ कौ दायनयूगय स्वाहा ॥ ॐ कौ सिधाय स्वाहा ॥
 ॐ कौ मनस्वत्ये स्वाहा ॥ ॐ कौ सामय स्वाहा ॥ ॐ कौ
 धृतय स्वाहा ॥ ॐ कौ विरुषभय स्वाहा ॥ ॐ कौ
 कृपाय स्वाहा ॥ ॐ कौ शुक्राय स्वाहा ॥ ॐ कौ धने
 धन्याय स्वाहा ॥ ॐ कौ रुक्मसंजीवनाय स्वाहा ॥
 ॐ कौ अमृक्मसंजीवनाय स्वाहा ॥ ॐ कौ जनार्द
 नाय स्वाहा ॥ ॐ कौ नयस्त्राकाय स्वाहा ॥ ॐ कौः
 वैवस्वताय स्वाहा ॥ ॐ कौ यासाय स्वाहा ॥ ॐ कौः
 अश्विदवताय स्वाहा ॥ ॐ कौ नवर्षवावाक्षे स्वा
 हा ॥ ॐ कौ यवर्षेन्द्राय स्वाहा ॥ ॐ कौ ल
 मश्राजानाय यशिमवक्राय स्वाहा ॥ ॐ कौ क
 लाक्षकृष्णालाय स्वाहा ॥ वद ॥ ॐ ॐ मम
 वन्द्य ॥ ॥ ॐ कौ कृष्णालाय स्वाहा ॥ वद ॥
 ॐ अथेतानश्री ॥ ॥ ॐ कौ धीधी स्वाहा ॥ ॐ
 धीधन ॥ ॥ ॐ कौ धीलक्ष्म्ये स्वाहा ॥ ॐ धीमा
 ला ॥ ॐ कौ कू विभूया दाय स्वाहा ॥ ॐ अथ
 तानश्री ॥ ॥ ॐ कौ अमृक्मसंजीवनाय स्वाहा ॥ ॐ न
 मम वन्द्य ॥ ॥ ॐ कौ कौ कू वास्वाधिकयव

॥ अथेतानश्री ॥
 ॥ अथेतानश्री ॥

श्रीगणेशाय नमः॥ उं वक्रयज्ञानं॥ वासुदेवाय नमः॥ ॥

उं कौं यं वायवस्वाहा॥ उं कौं धृताय स्वाहा॥ उं
कौं कालाक्षकृष्णालाय स्वाहा॥ उं गवदाय॥

॥ उं कौं यमिषादानाय

स्वाहा॥ उं कौं आनाहूताननाय स्वाहा॥ उं कौं युद्ध

वृक्षाय स्वाहा॥ उं कौं दानाधिदेवताय स्वाहा॥

उं कौं दधौ स्वाहा॥ उं कौं यधुय स्वाहा॥ उं कौं ग

हाय स्वाहा॥ उं कौं मनस्वत्य स्वाहा॥ उं कौं म

हालक्ष्य स्वाहा॥ उं कौं अथवाय स्वाहा॥ उं कौं

कालियमय स्वाहा॥ उं कौं गधुर्व्य स्वाहा॥ उं

कौं कौं गिष्वाहा॥ उं कौं अश्व स्वाहा॥ उं कौं ध

वाय स्वाहा॥ उं कौं यधुनामाय स्वाहा॥ उं कौं म

कौं ध्रुवाय स्वाहा॥ उं कौं नारुव स्वाहा॥ उं कौं

कौं नव स्वाहा॥ उं कौं धनदाय स्वाहा॥ उं कौं

धीयदाय स्वाहा॥ उं कौं मय स्वाहा॥ उं कौं मय स्वाहा॥

उं कौं ध्रुव स्वाहा॥ उं कौं मय स्वाहा॥ उं कौं मय स्वाहा॥

स्वाहा॥ उं कौं गदाय स्वाहा॥ उं कौं अधिदेवता

य स्वाहा॥ उं कौं दामधुय स्वाहा॥ उं कौं मरुः

लक्ष्म्य स्वाहा॥ उं कौं वैदामदवाय डरुनवकु

य स्वाहा॥ उं कौं नकपादकृष्णालाय स्वाहा॥

वद॥ उं कौं विदग्धा॥ ॥ उं कौं गंगाय स्वाहा॥

स्वाहा॥ उंगधनस्वाहा॥ ^ग॥ उंक्रोंगं गुनस्वाहा

॥ उं वृहस्पति॥ ^अ॥ उंक्रों अनन्दाय स्वाहा॥

उं नाहिर्मविरुं॥ विद्विमर्दनकृष्ण॥ ॥

उंक्रों कृष्णनाय स्वाहा॥ उंक्रों प्रियलाय स्वा

हा॥ उंक्रों रीमन्वय कृष्णालाय स्वाहा॥ उं कमी

धनी॥ ॥

उंक्रों अनन्ताय स्वाहा॥ उंक्रों वक्राय स्वाहा॥

उंक्रों अक्षधियन्तय हा न क कृष्णालाय

स्वाहा॥ उं प्रीणियदा॥ ॥

उंक्रों उं वक्रास्वाहा॥ उंक्रों यमरुक्माय स्वा

हा॥ उंक्रों उं उद्यधियन्तय अचल कृष्णाला

य स्वाहा॥ उं वक्रास्य॥ ॥ निवर्णादि॥

उंक्रों क्रों अधानाय स्वाहा॥ उं यान्नृद॥ उंक्रों

क्रों अधान्नृदनीष्ट स्वाहा॥ उं याम्मालखी॥

उंक्रों क्रों आदित्याय स्वाहा॥ उं आरुष्ण॥ ^{दि}॥

उंक्रों नागाय स्वाहा॥ उं नमामुसय्य॥ ^{नाग}॥

उंक्रों यक्षाय स्वाहा॥ उं अग्रजृक्का॥ उंक्रों यक्ष

नी स्वाहा॥ उं यनाजृक्का॥ ^{यक्ष}॥ उंक्रों धीध्री स्वा

हा॥ उं धीध्रन॥ उंक्रों धीलक्ष्मी स्वाहा॥ उं याम्माल

॥ ^{धारी}॥ उंक्रों रुसः मृत्पूजयाय स्वाहा॥

उं मन्दवा॥ उंक्रों क्रों गमय लिङ्गाय स्वाहा॥

मृत्पूजय

ॐ शिवानामासि ॥ ॐ कौसानिकायस्वाहा ॥ ॐ शो
 १५ भक्ति ॥ ॐ कौयष्टिकायस्वाहा ॥ ॐ शुभक ॥
 ॐ कौनामयस्वाहा ॥ ॐ या ॐ यवा ॥ सूदनग ॥
 मृतमनुद्यर्थदितिया ॥ ॐ यानूद ॥ ॐ धीमाल ॥
 सध्वान ॥ बाह्मिनि ॥ ॐ दधिकाया ॥
 वलियार्ग आह्मिमातका ॥ वदधवश्नरुर्ग ॥
 ॐ कौगंगयययस्वाहा ॥ ॐ नमागद्यथा ॥
 ॐ कौकयिलादिगमाह्मि ॥ ॐ आर्य
 लोयष्टि ॥ ॐ कौवक्राह्मिदिमाह्मिगद्यथा
 १ स्वाहा ॥ ॐ कौकोमात्रीमयूनवाहनायस्व
 हा ॥ ॐ यो गवदस ॥ ॥ कवामानका आह्म
 ति ॥ वदधवधव ॥
 दध्यागनविथः समर्पयवाहवविय ॥ मूलन
 आह्मि ॥ कलगायनिष्ठा ॥ ॐ आदिद्यकल ॥
 यून १ आह्मि ॥ ॐ मनाह्मि ॥ ॥ स्रकाह्म
 ति ॥ वद ॥ ॐ अर्पकागा ॥ यूर्ध्व ॥ यानसूलिन ॥

थनादवयूजा ॥ आह्मि विसर्पिताया ॥ ॥ थना
 वनूहामयाय ॥ थलकस्त्रिः साखनन ॥ अधो
 दकनराय ॥ गायत्री ॥ ॐ अर्प
 वनूहामस्यवसिष्ठमवय ॥ आदिरादवना

सुसुयुन्दः च नरुम विनायागः ॥ ॐ गगयनः २
 ॥ ॐ कौप्येनानमसीयस्वाहा ॥ ॐ कौनयान
 गन्धमसीयस्वाहा ॥ ॐ चक्रुषी नूयाधमसी
 यस्वाहा ॥ ॐ कौध्रुधममसीयस्वाहा ॥
 महायादृदि ॥ १०६ ॥ वद ॥ ॐ यजायन ॥ यह
 हाम ॥ समिधथवः ॥ वदथवः ॥ आदिर्य ॥
 समिध ॥ अर्कयाग ॥ ॐ अर्कयू ॥ ॥ साम ॥
 लाहसि ॥ ॐ ॐ मंदवा ॥ ॥ अंगन ॥ खयन
 ॥ ॐ अग्निर्म ॥ ॥ वृध ॥ अयामार्ग ॥ ॐ उधुः
 धा ॥ ॥ वृहस्यनि ॥ दाविन ॥ ॐ वृहस्यन ॥ ॥
 शुक्ल ॥ वलसि ॥ ॐ अन्नात्य ॥ ॥ गनिधन
 ॥ गनिकं ॥ ॐ गन्नाद ॥ ॥ नाद्र ॥ गुनना ॥
 ॐ कयान ॥ ॥ कंड ॥ कृण ॥ ॐ कंडुं कृण्वी
 जन्म ॥ बालयाग ॥ ॐ ताजस्य ॥ ॥ थव ॐ
 दवनासं मानकविय ॥ दवयामूलमनु
 नविय ॥ १०७ ॥ ध्रुवानयूध्म ॥ ॐ मनाहृति ॥
 णवचनूखसि सवयक ॥ ॐ निवन्धाम ॥ ॥
 आचार्यनदसवलिवियक ॥ आहृति ॥ ॐ अ
 संख्याता ॥ त्वाय ॥ ॥ दवकलः ॥ दिवाक
 दयूजा ॥ यजमानयनिष्ठा ॥ ॥ गनिका
 दृति ॥ ॐ धौं ॥ मनि ॥ यष्टिकादृति ॥ ॐ शुवकंड ॥

यवधान्यादि विहासाम ॥ यलदूध विगम
 पुण्यमय कसि श्रीहि मृग मास स्वानवा
 द्वा गधुल दासि स्वा यलमास नाय ॥ य
 जि वाक साउ साखल समिध गुलादन ॥ ॥
 मामलस किमस गाय व्यात्र नातिकत्र ॥
 धन आह्वामनुन ऊयलयावदय ॥ ॥ द
 ध्नादन यक्वान वदतिरुत प्रियं गुप्त
 मख सग यथा ध्वनति न कृष्ण किल न क
 किल वाजिका यी न स र्ष य गुत्र गुत्रिक
 दु लवन हि द नूय क सत्र यद्य क गः
 न वन्दन गुति १०४ ॥ गुर्गुनि १०५ ॥ अगु
 ल कयल कमुल घी खद्यु क गनि सधा
 यधि कधु मूल स्वाच नान स ग व स रुन स न
 ति क्पाल क न व्यात्र क न नाय व्यात नास प्रि
 ना ॥ ॥ दूर्वा क न यय सा जू क रु न ग र्ग रु द
 वाक्क धन न स क ल्य ॥ दि गभ र्ज द वा नू क म
 ना वलियूजा ॥ उं धर्ग य क या ॥ वद ॥ धृगदी
 यवृत्तिका ॥ गय गी जय क ॥ उं धो ॥ भ नि ॥
 धृगनाक्ष रु न ग र्ग रु द या न ॥ वाक्क धन म
 र्वाय ॥ ॥ वा द नि ॥ उं कौ रु ॥ स्वाहा ॥ उं कौ
 रु व ॥ स्वाहा ॥ उं कौ रु ॥ स्वाहा ॥ उं कौ रु व ॥

पाठ ॥ गम ॥ ॥

स्वाहा॥ इयममनकृष्णस्य॥

ॐ त्वं नमो अग्रे॥ ॐ सत्त्वनाशय॥ ॐ ह्रीं मम वन

ॐ कृत्वा यामि॥ ॐ अयाश्वाग्रस्य नरिणस्यियाः

धसत्त्वमित्तमया अमि॥ अयाभाय ह्रीं वहास्यय

नादहिरुषज० स्वाहा॥ ॐ ऊरुसर्ग॥ ॐ उदरुर्म

वनूयासमसमदवाधर्मविमक्षमः॥ ग्रथाय॥

अथाव्ययमादिरययककवानागसा अदिकं स्या

मस्वाहा॥ ॐ रुवकन॥ समनमो सयकसावज

यमो॥ मायह्रीं० हि० सिद्धमायह्रियकिङ्कन

वदमो गिबोरुवकमद्यनस्वाहा॥

ॐ याहिनाग्रयस्वाहा॥ ॐ याहिनाविध्वदव

मस्वाहा॥ ॐ सर्वयाहि विध्वदवमस्वाहा॥

ॐ यह्रयाहि विरुवमस्वाहा॥ ॐ सर्वविरुव

मस्वाहा॥ ॐ न्यूना किलिर्कह्रामिस्वाहा॥ ॐ

अमिनिर्कह्रामिस्वाहा॥ ॐ अनाह्राममना

ह्रामयसर्वक्रियकममस्वाहा॥ ॐ सर्वद

कस्वयवि नदीकस्वकनामनस्वाहा॥

गायत्री॥ ॐ वैश्वानराय विरुजनकास्त्रि

गायध्रीमहि ननावक्रि॥ यथादयान्॥

ॐ दवकृत्तयेन सार्वयजनमसिस्वाहा॥

ॐ मनूय कृत्तयेन सार्वयजनमसिस्वाहा॥

ॐ पितृकर्मणेन सार्वयजनमसिद्धाह ॥ ॐ अ
त्मकर्मणेन सार्वयजनमसिद्धाह ॥ ॐ सेन
सनन सार्वयजनमसिद्धाह ॥ ॐ यच्चाहमन
विद्याध्वकानयच्चाहमना विद्यासुखसर्वसा
न सार्वयजनमसिद्धाह ॥ ॥ ॐ स्वस्ति नमो
ॐ ॥ ॐ ययं यथिथा ॥ ॐ विष्णु नमो ॥ ॐ अग्निद
वा ॥ ॐ द्यौःमनि ॥ ॥ वाक्मगदक्षिणा दानी ॥
वाचनं ॥ वाचनादकगिवगकि स्याप्यनिध
या ॥ ॥ वलिरुवनं ॥ दसवलिविसर्जनं ॥
ईश्वरिर्विद्याया ॥ ॥ सगययासनसकेशका
तान ॥ ॐ कामं कामध्वज ॥ यविष्णुमाचनस
केशकातान ॥ ॐ सुमित्रियान ॥ ॥
गंगादिनयूर्ध्व ॥ ॥ दिनयूर्ध्वसुध्वानरु
काधवकनममान ॥ वाक्म ॥ अमकादध्वज
मुकयल्लुनिमित्र्याथर्ध्वसुध्वानरुकाधवकनममान ॥ ॥
मु ॥ वद ॥ ॐ यूर्ध्वद्विषयना ॥ ॥ आसंका
विधिर्धमात्रकायदय ॥ विस्तनमनवा
संगया ॥ ॥ दवाअनूकमनआशीर्वा
द ॥ आत्माआशीर्वाद ॥ ॐ अग्निमयि ॥ ॥
यजमान ॥ ॐ यस्यकूर्मा ॥ ॥ वक्ताविस
र्जनसकेशकातानकायमभव ॥ ॐ इति

ॐ नमः ॥ ॥ कृष्णाय नमः ॥ ॐ सर्वार्थहेतवे नमः ॥

लाहानयान॥ ॐ नमो भगवते ॥ ॥ कृष्णाय

कूँठसुखादावधमनय॥ उँद्यायूष्यम॥ ॥

वलिङ्गाय॥दृश्वारिंश्वारुक्का॥ ॥ वाचनाद

कनारिषकयऊमान॥चन्दनादिआभीषो

द॥धनदिनकृहि॥

संनिकाकृत्यानाहमस्वादावता॥यून४सं

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

दायञ्जलिगणायभामदवनायगयणीकुन्द

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ ॐ ह्रीं क्लीं श्रीगणेशाय नमः ॥

गमनायवक्रदवगायलक्ष्म्यकुन्दसयूषीन

म४॥ ॐ ह्रीं सार्वभौमदाय नमः ॥

नमः पूर्यन्ति नमः ॥ ॐ कौञ्चवद्वेदाय वेदान्तं

गंगाय नन्दवनाय नूनूष्टयुक्तुन्दसयूषान

मथा ॥ ॥ नालिकेलधोरुल किमसुमाम

लभेत्तयश्च न लभेत्तयावदुर्गकाय ॥ व्रीही

योऽसकय॥ श्रीमहादियूनर्णी॥ ॥ नमः ॥

आयनिदवतामानसंविन् ॥ वक्रायनीन

वेद लोकायलयूजः॥ ॐ क्रौञ्चक (धनमः॥

ॐ कौषिकी गायनमः॥ ॐ कौमल्यदायनमः॥

ॐ कौयश्वेदाय नमः ॥ ॐ कामवेदाय नमः ॥

ॐ कौं अथर्ववदाय नमः ॥ ॐ कौं लंछ्वाय ॥
 ॐ कौं नृअग्रय ॥ ॐ कौं मयमाय ॥ ॐ कौं द्रुः
 नेमयाय ॥ ॐ कौं वृवृषाय ॥ ॐ कौं यैवाः
 यव ॥ ॐ कौं मृकवनाय ॥ ॐ कौं कृष्णाना
 य ॥ ॐ कौं जंजननाय ॥ ॐ कौं उवक्कला
 नमः ॥ ॐ नरुमयदवाचनी ॥ ॐ कौं प्रियक्षः
 यनमः ॥ ॐ कौं चक्षुक्षय ॥ ॐ कौं दवाग
 इव ॥ ॐ कौं दिग ॥ ॐ कौं विदिग ॥ ॐ
 कौं स्रग्जाय ॥ ॐ कौं मर्याय ॥ ॐ कौं याता
 लाय ॥ ॐ कौं गमये ॥ ॐ कौं कन्दाय ॥ ॐ
 कौं सूर्याय ॥ ॐ कौं वन्दाय ॥ ॐ कौं आगीध
 वाय ॥ ॐ कौं गृक्ष्या ॥ ॐ कौं आनथिस्था
 ॥ ॐ कौं सवस्था ॥ ॐ कौं दवस्था ॥ ॐ कौं व
 क्क ॥ ॐ कौं विष्णव ॥ ॐ कौं वृदाय ॥ ॐ
 कौं शिवाग्रय नमः ॥ ॥ अष्टादशममिध
 क्षमः ॥ ॐ समिधायि ॥ ॥ आदशममिधक्षमः ॥ ॐ
 गदवाग्रिस्तदा ॥ ॥ लोकयालकलक्षदियू
 र्जन ॥ ॐ कौं लंछ्वाय नमः ॥ ॐ कौं गानमिन्द्र ॥
 ॐ कौं नृअग्रय नमः ॥ ॐ अग्निमृद्धादिव ॥
 ॐ कौं मयमाय नमः ॥ ॐ यमनदरुद्रि ॥ ॐ
 ॐ कौं द्रुनेमयाय नमः ॥ ॐ यनदवी ॥ ॥

[illegible]

नेमं यायवलिगृह्णस्वाहा॥ उं वं व न नायवलि
 गृह्णस्वाहा॥ उं यं वायवावलिगृह्णस्वाहा॥
 उं मूं क व वायवलिगृह्णस्वाहा॥ उं हूं ष्ठीं म
 नायवलिगृह्णस्वाहा॥ उं अं न न नायवलि
 गृह्णस्वाहा॥ उं वं म् ष्ठीं वलिगृह्णस्वाहा॥ ॥
 मं ष्ठीं क याला॥ उं दूं दूं दूं दूं क यालायव
 लिगृह्णस्वाहा॥ ऽ धीं दीं क ल य व डं क
 नायवलिगृह्णस्वाहा॥ ऽ मं गीं गूं गूं गूं धीं
 क ल ग ष्ठीं व नायवलिगृह्णस्वाहा॥ नें ऽ
 मूं मूं वलिगृह्णस्वाहा॥ ऽ मूं
 मूं मूं सूर्य दीयमना न्मनायवा
 न न द क यालायवलि
 गृह्णस्वाहा॥ दूं दूं दूं वलिगृह्णस्वा
 हा॥ ॥ ध्या॥ दीया॥ वदनं॥ जाया॥ म
 ण॥ उं निर्वोर्धनिर्विकारं निनूयमद्वयं नि
 र्विकल्पककारं दूं कालं वददं दूं क वदन
 यनं नोदड न्मल्लरावीरुत्कारं वदनां र
 कृगिरुत मूरुवैरु न वं धूलयागिं खद्वार्धं
 मनीलं रुम नू क सहि रं न वं क याली॥ अ
 णगं आदि॥ अमुन विमर्शनी॥ वलिश्वाया॥
 वा नानमधुपदूयकाववाय॥ धनमधुप

यायिवनवलिविया ॥ ॥ थनायिनयाद्या

लयूजा ॥ यूध ॥ उं कं गनिकलाद्यालयन

म ॥ उं अग्रिम ॥ उय ॥ आद्य दालयूजा ॥

उं कं अग्रयनम ॥ उं अग्रिमूर्द्धा ॥

दक्षिणदालयूजा ॥ उं कं विद्यादालायन

म ॥ उं ॐ ॥ ॥ नेमस्यदाल ॥ उं कं

नेमस्यायनम ॥ उं यन्तदवी ॥ ॥ यमि

मदाल ॥ उं कं यमिषादालायनम ॥ उं अ

ग्रज्यादि ॥ ॥ वायव्यदाल ॥ उं कं वाय

व्यनम ॥ उं कं ववाय ॥ ॥ उरुवदाल ॥

उं कं निवृत्तिदालायनम ॥ उं कं न्नादवी

॥ ॥ ॐ ॥ ॥ उं कं ॐ ॥ ॥

यनम ॥ उं अरित्वा ॥ ॥ अथदाल ॥

उं कं अथदालायनम ॥ उं यी नियदा ॥

उद्वदाल ॥ उं कं उद्वदालायनम ॥ उं वः

कृष्णस्य ॥ ॥ धनदालयूजा ॥ ॥ उं कं न

मस्तुद्वयकमहायाधुयकामायदूरु ॥

याद्वर्णा ॥ उद्वद्विलिकमूरियूजन ॥ उं कं

गद्ययनम ॥ उं कं सनखनीनम ॥ उं कं

महालक्ष्मीनम ॥ अकनीक्षकधननिना

क्षन ॥ मलयाधुयकामु ॥ विधिनागय ॥

मूलअमुदक्षिप्यादकलः शिवानरुमिता
यम् ॥ नमस्तुभ्यं नमः ॥ अमुकलभयू
र्जन ॥ ॐ स्त्रीयसंस्कृतं अमुकलभमूरुयनम
॥ ॐ कौकौकं अमुकलभयनमः ॥ ॥

नमः पूर्वदालयूज ॥ समीपगता ॥ गमयणी नि
वाक्षणी ॥ न्यासा ॥ असनी ॥ ॐ कलाजामि ॥ अरु
क्षणी ॥ ॐ दवस्यता ॥ ॥ ॐ कौकौकनिद्रायाय न
मः ॥ ॐ कौकौकनिद्रायाय नमः ॥ ॐ कौकौकवृक्ष
यश ॥ ॐ कौकौकनाधिदवनायश ॥ ॐ कौकौकनदिनश ॥
ॐ कौकौकमहाकालायश ॥ ॐ कौकौकगणेशनायश ॥ ॐ
कौकौकसप्तस्त्रीश ॥ ॐ कौकौकमहालक्ष्मीश ॥ ॥ ॐ
द्वैलिक ॥ ॐ कौकौकभयवदायश ॥ ॐ कौकौकभयग
यश ॥ ॥ वामदक्षिणाय ॥ ॐ कौकौकवृक्षायश ॥
ॐ कौकौकधृश ॥ ॐ कौकौकरुगभयश ॥ ॥ विष्णुल ॥
ॐ कौकौकगभयश ॥ ॐ कौकौकयमूनयश ॥ ॥ दानध
र्या ॥ ॐ कौकौकयस्युषायश ॥ ॐ कौकौकयस्युषायश ॥ ॐ
कौकौकअश्वसामायश ॥ ॐ कौकौकवल्लयश ॥ ॥ ॐ कौ
कौकौकमायश ॥ ॐ कौकौकअंगनायश ॥ यश ॥ ॥
ॐ कौकौककुवालाकायश ॥ ॐ कौकौककुवालाकायश ॥
ॐ कौकौकप्रधनाकायश ॥ ॐ कौकौकगिनिनायनमः ॥

वद॥ उं हानादवि॥ उं वत्वा विष्णुं ॥ उं ह
 नायत्वाना नाना यत्न विरु विष्णु वन्दु ० रु
 कान्दर्याः पृथिव्या मूर्ध्व नमिन्मन्त्रमिः
 पृथिव्या त्वा नाहो सा दया म्मादि ह्या १३
 यत्नान्तरुद्या ० वक्र॥ ॥ उं उयनः सुव
 वागिनः गृध्रुत्वं मन्त्रस्यय॥ म्मृती काः
 रुवन्दुना॥ ॥ उं अस्मन्नुद मन्त्रनायवर्णा
 सावृष्ट रुत्यवदूना सजावा ॥ यः ग० मन्त्र
 वरुक्षयिवदू १००० रुद्रुद्वा १००० अस्मा २१०० वन्दुदया॥

ॐ गङ्गा नास्तीति ॥ ॐ महाः शुद्धः सप्तसप्ततयुधन
यत्किञ्चन ॥ धिया विष्णु विना कति ॥ ॐ ध्याय
न लक्ष्मी च ॥ ॐ अग्नि मातु ॥ ॐ अक्षना जाय कि
न वक्षु नायादि न वदर्ग मुनाये कल्येन न्द्वय
नाया धि कल्येन मास्कु न्दाय सरास्त्रा न्मृदु
वत्त ध्यायु सक्त काय गभ द्या न्दु (ध्याय मं वि
कृ नक्त रिक्ता मातु ॥ ॐ यत्किञ्च न्दु नाय च
न काचार्य म्यास्कु न से लगतु ॥ ॐ न नि
रुद्रा व न्दु नाया रिक्ता सुय्या नूय द्दु नाया
नूय ह्या ॥ ॐ नक्त मन्त्रा द्दु नाया जः कृत्त म
न्य द्दु नाया ॥ ॐ नक्त मन्त्रा ॥ ॐ न्दु नाया ॥ ॐ न्दु
मीम व न्दु नाया ॥ ॐ नदा द्दु नाया योऽस्ति द्दु नाया

दया ॥

ॐ कौंयतत्यनूषाययूर्ध्ववकायश॥ ॐ कायायूत
 त्वाय वीध्वनाधीदेवतायश॥ ॐ अम्बुजम्बिका॥
 ॐ यत्यनूषी॥ ॥ ॐ कौं वियलवृणायनमः॥
 ॐ कौं कार्त्तिकयाकायनमः॥ ॐ वृहस्पतवृत्ति॥
 ॐ आवर्क॥ ॥ वलि॥ ॐ कौं रुडककृष्णयल
 यवलिगृक्षरसाह॥ ॐ अर्धवाचदधिवका॥
 ॐ कयानधिष्ठा॥ कलानयनिस्तनवी॥ धूय॥
 दीय॥ रुला॥ नेवद्या॥ यनिष्ठा॥ जाय॥ मुक्ति॥ ॐ
 नमामुक्तसचीयनयूर्ध्वधियकयध्वनायक
 जाकृष्कम्मानि॥ नक्षत्रमनिधीरुवा॥ अरु
 गम्भादि॥ ॥

नमो आग्रयदालयूजा॥ गमयन्ती निमीक्षणी॥
 न्यास॥ आसनी॥ ॐ कृत्वा कामि॥ अरुक्षणी॥ ॐ द
 वस्यत्वा॥ ॐ कौं सद्दिद्यायनमः॥ ॐ कौं भानिक
 नमयश॥ ॐ कौं वटवृक्षायश॥ ॐ कौं उपवदाय
 नमः॥ ॐ कौं चन्द्रमश॥ ॥ वद॥ ॐ दानादवी॥
 ॐ वत्तानिर्गुमा॥ ॐ रुणायत्त्वानायायस्वपरि
 विश्वायन्द० रुनान्दर्या० यथिव्यामूर्ध्वनमिक्त
 मन्त्रमिष्टिथिव्यात्त्वानारोसादयाम्भदिख्या॥
 उपस्त्वान्तरुवा० नक्ष॥ ॥ ॐ अग्निमाशु॥

ॐ ह्रस्वः ॥ स्वः ॥ सुयः ॥ अः ॥ यः ॥ इति ॥ स्या ॥ प्रसूतीना
द्वीने ॥ सुयाय ॥ याये ॥ नर्यप्यकाभुयादि ॥ ५ स्य
यधूनयाश्चथर्यायिउमयादि ॥ ॥ ध्यान ॥ म
फात्रियश्चविशर्माञ्जकमालाकमद्युलं । का
लामालाकुलनकीः द्वागस्तृणकिष्कानवी ॥ ॐ
जां नां नी नूं नूं ॥ अग्रयणकिरुसाय नडाधि
यरयः ॥ व ॥ गतनायनमः ॥ वयः ॥ ॐ ज
निम्बो ॥ ॥ ॐ जां द्वायनमः ॥ ॐ जां

विऊंयना कायनम॥ उं वृरुस्यनं वृ॥ उं वृरु
ज्रासां॥ ॥ वलि॥ उं वृरुस्यनं वृ॥ उं वृरु
यालायवलिगृह २ स्वाहा॥ उं वृरुस्यनं वृ॥ ॥
धूय॥ दीय॥ रुला॥ नेवय॥ ज्ञाय॥ स्वाहा॥ अह
यमं उमासीनः महाकठ ४ समयरुं नकमाला
म्वनधनः शक्तिरुसं नमाधुत॥ अह गन्धादि॥

गतादक्षिणद्वानयूजा॥समीपंगत्वा॥गमयणी॥
निनाक्षणी॥न्यास॥असनी॥ॐ नत्वाजामि॥अ
सूक्ष्मी॥ॐ देवस्यत्वा॥ॐ द्वाविद्याद्यावायनम॥
ॐ द्वाहनिनाक्षयश॥ॐ द्वाअश्वत्थवृक्षायश॥
ॐ द्वाद्यानाधिदेवमायश॥ॐ द्वाहृगिनश॥ॐ द्वा
विनायकायनम॥ॐ द्वागणायनयश॥ॐ द्वास

[illegible]

तद्भुध्यागं विरुक्तकर्मिमानेऽयमिह नि
 दृष्टुं नायञ्च न काचार्यम्याद्यनसेलगमा ॥
 ॐ नदीकाः योऽजिष्टमृत्वा काश्चानेवादम्य
 नृषयाद्यायदर्मदङ्गधर्वायुनाकावाह्य
 म्ययुक्ताऽऽनारु० सयदङ्गनध्यायनिंदमय
 ह्यऽकिंनवमीर्यतायाऽऽकिंनवमिष्ठावः
 ह्याविदलकार्मायाऽऽधनध्याऽऽकृकीर्क
 नीमा ॥ ॐ ॐ नावनीधममनीरुक्तगण
 यवसिनीमनवदध्यामा ॥ ध्याक्कसुनादसीवि
 सुवतदाधर्षयुधिवामरिनामयूखेऽस्वाहा ॥
 ॐ दवञ्जुनादवध्याद्यायतम्याद्यायतमद्वन
 कल्यायनीऽऽर्धयुक्तनयतमाकिङ्कन
 म ॥ स्वऽज्ञाद्यमावदतन्धवाद्युऽऽजयुर्मानि
 र्वादिष्टम्यजामानिर्वादिष्टमरुनमथावर्षा
 न्युधिव्या ॥ ॐ यस्य कर्मा ॥ ॐ गीवाध्या
 या ॥ ॐ ददध्यास्वाहा ॥ ॐ वृरुह्यनं अग्नि ॥
 ॐ शोनासीत्यूर्वविरुक्तनञ्चऽऽसीदुरुह्य
 ॥ अविनासीत्यलियिलावात्रिनासीत्यन
 जिला ॥ ॐ मरुमनसांरुवनवावानायाधा
 दवानांजयनामदस्मान् ॥ ॐ आजिष्यकलगां
 धान ॥ कृणानं महिषा ब्रह्मदधुरुह्यनकां

वद॥ॐ द्वात्रिंशद्वी॥ॐ वत्सनिगृह्ण॥ ॥ॐ

रुतायत्नानात्रायस्वजिह्विविश्वसन्दृष्ट
नादृश्याऽप्यथिद्यामूर्धकनिद्रामन्वसिपुषि
द्यास्तानारोसादयाम्मादिस्थाऽउपस्थान्नह
द्य० नक्ष॥ ॥ ॐ ॐ भवा ॥ उद्भुतवः स्वः ॥

सुयुक्ताः सुयुक्तारिः स्यात् सुवीना वीनेऽस्य म
॥ ४ ॥ नर्यायुक्ता भनयादि ग ५ स्या यगू न्म
याश्च थयोपि गुभयादि ॥ ॥ क्षान ॥ नकन

ऋषिवाचुः नीलात्यलदलयरु। कथानिया
 निमग्नार्चः यिवर्कवाक्षमध्वरी॥ उंकांकांकां
 कूंकां नैमत्याय स्वजहृसाय, वाक्षसाधि
 य वृ कथयतासनाय नमः॥ वद॥ उंय
 नद वी॥ ॥ उंकांकलकृणाय नमः॥

ॐ कौं धृति यत्ना काय नमः ॥ ॐ वृहस्पति नमः ॥
ॐ ह्यनुमः ॥ ॥ वलि ॥ ॐ कौं अग्नि काय नमः ॥

या लायवर्लिगृह्ण २ स्वाहा ॥ उं यमदस्वामनूत ॥
आवारुनादि ॥ धूय दाय ॥ रुत ॥ नैवद्या ॥ जाय

॥ मुक्ति ॥ नमो ह्यादिगिताथस्तुं शवाचूडमहा
वर्ण। नकमांससदाष्टाति स्वद्वयानि नभा मु
क्ति ॥ जगन्नाथ ॥

गनः यच्छिमशानयूजंगत्वा॥ गभयपी. नि

ॐ
त्रीक्ष्णी॥ नाम॥ आसनी॥ गत्वा कामि॥ अयूक
णी॥ देवस्यत्वा॥ ॐ कौं निवृत्तिं दानाय श॥ ॐ कौं
वल्लभानक्षय श॥ ॐ कौं उद्वेगवृत्तय श॥ ॐ
कौं वृषय श॥ ॐ कौं क्षिपय श॥ ॐ कौं गगय न
य श॥ ॐ कौं सनस्रय श॥ ॐ कौं मरुलक्ष्मी श॥
ॐ कौं सामवदाय श॥ ॐ कौं क्षयनयूगय श॥ ॐ
कौं सिधव श॥ ॐ कौं सनस्रय श॥ ॐ कौं सामय श
॥ ॐ कौं धृगय श॥ ॐ कौं विरीष क्षय श॥ ॐ कौं
कृपाय श॥ ॐ कौं शुक्राय श॥ ॐ कौं गनीष ना
य श॥ ॐ कौं रुक्मसंजीवनाय श॥ ॐ कौं अमृगसं
जीवनाय श॥ ॐ कौं ऊनीक्ष्मा कायनम॥ ॐ कौं क
यीला कायनम॥ ॥ वद॥ ॐ दालोदवा॥ ॐ
वत्तानिगृह्णा॥ ॐ रुक्माय त्वाना नागयस्व॥ न
रुविश्वस्य नृ० रुक्मां दया॥ १५०॥ थिद्यामूर्धन
निक्रमन्धे मियु थिद्या त्वाना री सा दयाम्मा
दिरुडि यस्वा॥ नृ० रुक्मा० नृ० ॥ ॥ ॐ ये रु
क्मां कनिका दन्तानदद्रा मरु० यस्वा॥ रुक्म न
मिष्यन्तीष्या माया द्याय म० यन॥ ॥ दृष्टान्निष्ठ
यहा रुक्म नया म० रुक्मा० म० दियम॥ अग्र॥ आ
याहि वा नय॥ ॥ ॐ यदकुन्द॥ ॐ गन्धना
त्वा॥ ॐ मरु० रुक्म सनस्रमी॥ ॐ धी धृगलक्ष्मी॥

ॐ अग्र आयाहि ॥ ॐ अक्षरा जाय कि न वरुः
 नायादि न वद र्गनु नाये कलिय न द्वाय नाया
 धि कलिय न मास्कु नाय सरा स्या धूम मृत्
 वर गमय दूम न काया गमया न द्वा (ध्या गम वि
 क न न मि द्वा मा ध ॥ ॐ य नि द्वा ति द्वा नाय व
 न का वा यो म्या य न न ल ग म ॥ ॥ ॐ न दी
 द्वाः पो डि इ धु मृ द्वा का द्वा नै द्वा द म्पू नू यः
 द्वा द्वा य द्वा म्पू द्वा न्ध र्वा य्वा ना द्वा द्वा र्वा म्पू
 य न्ध ॥ ॐ न्ध र्वा ० म्पू य द्वा न न द्वा य नि द्वा म्पू
 द्वा ॥ कि न व मी र्वा नाया ॥ अ कि न व मि द्वा वः
 द्वा वि द ल का र्वा य्वा ॥ ॐ न द्वा ॥ क न्ध का
 का र्वा म्पू ॥ ॥ ॐ वि द्वा न्ध र्वा य्वा ॥ वि द्वा
 वा र्वा य ॥ पा र्वा नि वि द्वा म्पू न्ध र्वा ॥ पा र्वा
 अ न्ध र्वा य द्वा न ० म्पू य द्वा वि द्वा क मा ध ॥
 (ध्या न्ध र्वा वि द्वा वत्वा ॥ ॥ ॐ दि द्वा वा वि
 द्वा ॥ ॐ न द्वा य्वा वि द्वा म्पू वा वि द्वा ॥ ॐ न न
 नि द्वा ॥ ॐ न द्वा र्वा द्वा म्पू ना य्वा द्वा य
 य द्वा द्वा द्वा द्वा म्पू वा वि द्वा वत्वा ॥ ॥
 ॐ न द्वा म्पू ॥ ॐ अग्र ॥ म्पू ॥ ॐ न नात्य नि
 ध र्वा ॥ ॐ न ना द्वा ॥ ॐ अग्र ना ॥ अग्रि व नि
 वरु (ध्या वत्वा म्पू यः पू न्ध ॥ ॐ य हि द्वा ॥

अर्यवाडाअर्यउवाडासागावय०सेकअर्य
उडाकषाग१स्वाहा॥ ॥ॐसयसय॥ॐ
जियकलणी॥ ॥ध्यान॥नागयासधनंदस
नत्ताद्यमिवियरु।ग१म१धुवलीधायद
नूगमकनासनी॥ॐकांवांवीवूंवां॥वनूध
ययासरुसायउलाधियतय॥ॐमकः
नासनायनम१॥ॐॐममववृत्त॥ ॥
यताका॥ॐकांनवर्जवानाक्षे१॥ॐकांयवर्ज
ॐन्दायदी१॥ॐअम्वअम्विका॥ ॥ॐकांलेः
सद्याजातायपश्चिमवकाय१॥ॐकांयुधीन
त्वायवकाधियवताय१॥ॐसद्याजातामि
मीतयरुमन्निर्धवानामरुवत्यनाम१॥अ
स्यरुउ०यदि१धुस्यवाचिस्वाहाकन०रु
विनयकुदवा१॥ॐकांकानिककृपयनम१॥
ॐकांयताकायनम१॥ॐवृहस्यनय॥ॐअसून
यि॥ ॥वलि॥ॐकांयताधिय॥ॐकृपयाले
यवलिगृधरस्वाहा॥ॐयताकयतानन॥आ
वारुनादि॥धूय॥दीय॥रुस॥नेवद्या॥वनिष्ठा
॥जाय॥साध॥ॐवानुर्ध्ववक्षधीर्गमकना
सनगमिनी॥सर्वालज्ञानसीराश्यासरुस
नमासुग१॥अरुगवादि॥ ॥

दि॥ धृय दीया॥ रुल नैवद्या॥ जाया॥ मुनि॥ वगिन
श्रमरुयादी॥ सर्वरुगरुगास्वनी॥ मृगमसनसुसा
रा॥ रुधुज रुसुनमासुग॥ अरुगभादि॥ ॥

रुगडरुनदानयूजा॥ मयणी॥ निनीरुधी॥ न्या
सा॥ आसनी॥ उंरुत्वाजामि॥ अरुधुदी॥ उंदव
स्यत्वा॥ ॥ उंरुयकिष्ठादानायश॥ उंरुअ
नारुगानमयश॥ उंरुयुशुवृदायश॥ उंरु
दानाधिदवनायश॥ उंरुदवोनमथा॥ उंरुच
धुयेनमथा॥ उंरुगधयनयश॥ उंरुसनमथे
नमथा॥ उंरुमहालक्ष्मिनमथा॥ ॥ उंरुदिवनि
क॥ उंरुअथर्ववदायश॥ उंरुकलियगयश॥
उंरुगधुवे॥ उंरुकोणिवे॥ उंरुअरु॥
उंरुधुवायश॥ वसु॥ ॥ उंरुयधुनामायश॥
उंरुमार्काधुयायश॥ उंरुगारुवश॥ उंरुक
नवश॥ उंरुसत्यन्नाकायश॥ उंरुधुर्वन्नाका
यश॥ उंरुधनदायश॥ उंरुधायदायनमथा॥
॥ ॥ वद॥ उंरुनादवी॥ उंरुवत्वाविगृज्ञा॥ उं
रुगायत्त्वानावाकयस्वपरिविष्कृष्यनृ० रुक
नृया॥ यथिद्यामर्षननिक्षमन्वमियथिद्या
त्त्वानारुसादयाम्मदित्या॥ उयत्वाग्नेरुवा

० नमो ॥ उंदवास्मिं प्रादवानगिन्निनरासनस
 ती ॥ गुरुयन्नमश्चानास्मामिन्दायदधनिन्दिर्यः
 वसुवनवसु (धयस्यचानुयज ॥ ॥ उंद० रु
 स्वदवीयुथिविस्वसुयः ॥ अमनीमायास्वध
 याकनासि ॥ इष्टुन्ववकाः ॥ उमैदमुस्वाम
 निष्टुत्वमदिहियुः ॥ अमिन् ॥ ॥ उंगक्ष
 नांत्वा ॥ उमहाधुसन्नस्वयो ॥ उंगायनलक्ष्मी
 ॥ उंगनादया ॥ ॥ उंगुक्षनाजायकिगवक्ष
 नायादिनवदर्शनं नायेकल्येनन्दायनाया
 धिकल्येनमास्मन्दायसरास्याममृख्यव
 ल्गवाचुमन्नकायगमद्यानक्षु (धयागर्ध्वि
 कन्ननमिदमागः ॥ उयनिष्टुतिद्वुनायव
 नकाचार्यम्यायूनभेलगम ॥ ॥ उन्दी
 वाः ॥ योऽङ्गिष्टुमुक्षीकाक्षानेष्टादम्यनूयवाः
 द्यायदमोदङ्गभवाय्यनास्माद्याख्यम्ययुग्मा
 ॥ उन्नारु० सय्यदङ्गनक्षायनिदमयकाः कि
 नवमीर्यनायाः ॥ अकिगवम्यिष्टमवक्ष्याविद
 लकाप्रीयोऽक्षानक्षुः ॥ कक्षकीकानीम ॥ ॥
 उंगुक्षनिष्टुमुवन्नदीर्यो (धमृगभनरामः ॥ कूच
 नागिनिष्टुः ॥ यस्यानूयुक्षिष्टुविक्रम (धय्यधि
 क्षियनिष्टुवनानिष्टुम् ॥ ॥ उंगिष्टुलला ॥

[illegible]

मन्त्रयक्ष्णयालायवलिगृह्णस्वारु॥ ॐ अक्ष
वाचदधिवक्ता॥ ॥ आवाहनादि॥ धूया॥ दा
य॥ रुला॥ नेवद्या॥ जाय॥ मुनि॥ ॐ गमनीसर्वः
रुर्गर्मावसासनसमास्तिर्गोलाकाधियनिर्ग
ॐ शूलयानिनमामुक्त॥ अग्न्यादि॥ ॥

गताश्रुधदिगयूजांगत्वा॥ गयणा नित्रीक्षणी॥
न्यासधा आसनी॥ ॐ नत्वाजामि॥ अश्रुक्षणी॥ ॐ
दवस्यत्वा॥ ॐ कांयथीदावायश॥ ॐ कां अमुक्ता
वक्षायश॥ ॐ कां अश्वनवृक्षायश॥ ॐ कां अश्वरु
न्दनायश॥ वद॥ ॐ दानादवी॥ ॐ चत्वात्रिगृक्षा॥
ॐ अदिह्यात्तृगस्यदिह्येसदः आसीद॥ अस्तु
बुद्ध्यावृषरुद्रअननिश्चममिमीनवनिमाद्य
म्यथिद्याहा॥ आशीदद्विष्णुवृवनानिमम्मा
डिष्णुवृनिवृषास्यवृगानि॥ ॥ ॐ नीति
यदा॥ ॥ ध्यान॥ अनन्तयुधुनीका र्क्षरुना
सफनिर्गयुर्गविद्यदामयनीकासं कूर्मा
नूर्ययूजय॥ ॐ कां विष्णुवृवृकरुक्ताय
अक्षधियनय कूर्मासनायनम॥ ॐ ॐ द
विष्णु॥ ॥ ॐ कां वृषायनम॥ ॐ कां वि
यनाकायनम॥ ॐ वृहस्यनम॥ ॐ नववाय॥

वलि॥ उं कौं हानक कृपया लायवलि गृह्णस्वा
हा॥ उं यवृक्षय॥ ॥ आवाहनादि॥ धूय॥ दी
या॥ रुला॥ नेव॥ द्या॥ जाय॥ सु॥ मि॥ क॥ म॥ यी॥ र्मि
न॥ द॥ र्व॥ वि॥ द्यु॥ त्य॥ अ॥ स॥ म॥ द्यु॥ मि॥ अ॥ ध॥ रा॥ ग॥ मि॥ र्ग॥ वि
ष्ट॥ च॥ क॥ या॥ नि॥ न॥ म॥ मु॥ क॥ अ॥ ग॥ ग॥ न्धा॥ दि॥ ॥

ग॥ न॥ इ॥ द॥ द॥ द॥ न॥ य॥ ज॥ ग॥ म॥ य॥ गी॥ नि॥ गी॥ द॥ धी॥ न्या॥ स
॥ आ॥ स॥ र्नी॥ उं॥ ग॥ स्वा॥ जा॥ मि॥ अ॥ रू॥ द॥ धी॥ उं॥ द॥ व॥ स
वा॥ उं॥ कौं॥ स्व॥ र्ग॥ द॥ ना॥ य॥ श॥ उं॥ कौं॥ द॥ द॥ य॥ ना॥ न॥ द॥ म
य॥ श॥ उं॥ कौं॥ व॥ ट॥ वृ॥ क्षा॥ य॥ श॥ उं॥ कौं॥ इ॥ द॥ द॥ द॥ न॥ य
न॥ म॥ धा॥ ॥ व॥ द॥ उं॥ द॥ ना॥ द॥ वी॥ उं॥ व॥ स्वा॥ नि॥ गृ
ह्ण॥ उं॥ अ॥ दि॥ त्या॥ स्त्र॥ ग॥ उं॥ वृ॥ क्ष॥ ण॥ स्य॥ न॥ ॥
ध्या॥ न॥ या॥ नी॥ या॥ नी॥ च॥ उ॥ र्वा॥ र्क॥ व॥ क्षा॥ र्णी॥ च॥ उ॥ ना॥ नू॥ र्म
रु॥ स॥ या॥ नी॥ च॥ वि॥ द्या॥ र्णा॥ द॥ धु॥ द॥ र्क॥ क॥ क॥ म॥ धु॥ ली॥
उं॥ कौं॥ कौं॥ वृ॥ क्ष॥ ण॥ य॥ द॥ म॥ रु॥ क्षा॥ य॥ उ॥ र्वा॥ धि॥ य॥ न॥ य॥ र्क॥
सा॥ स॥ ना॥ य॥ न॥ म॥ धा॥ व॥ द॥ उं॥ वृ॥ क्ष॥ ण॥ स्य॥ न॥ ॥
उं॥ कौं॥ ग॥ द॥ द॥ न॥ य॥ न॥ म॥ धा॥ उं॥ कौं॥ या॥ नी॥ च॥ वृ॥ क्ष॥ ण॥ य॥ ना॥ का
य॥ न॥ म॥ धा॥ उं॥ वृ॥ रू॥ स्य॥ न॥ च॥ उं॥ वा॥ क्ष॥ ण॥ स्य॥ न॥ ॥
वलि॥ उं॥ कौं॥ अ॥ च॥ ल॥ कृ॥ प॥ या॥ ला॥ य॥ वलि॥ गृ॥ ह्ण॥ स्त्र॥
स्वा॥ हा॥ उं॥ उ॥ रा॥ यि॥ व॥ न॥ म॥ धि॥ ना॥ रा॥ नू॥ ग॥ म॥ य
द॥ न॥ अ॥ रि॥ दि॥ या॥ रि॥ नू॥ मि॥ रि॥ ॥ आ॥ वा॥ रु॥ ना

मुवतधायियकुरं नुक्कुवा अस्मांश्च अव
नुदवा ॥ ॐ अग्निमा ॥ ॐ अक्षनाजाय कि
तव कुमायादिनवदर्शनतायेकल्यिन न्दयन
याधिकल्यिनमास्कु न्दयसहास्त्रा वृमस्त्रव
मवाचमनकायमया तद्भू (धयागं विकृत
नमि क्षमाने इत्यतिष्ठु निदृष्टुमाय च न कावा
र्यम्याक्षनसेलगाम् ॐ मंदवा ॥ ॐ अग्निः
मूर्धा ॥ ॐ तानमिन्द्र ॥ ॐ मन्त्राहू नि ॥ यतिस्त्रा ॥ ॐ क
यानश्चि ॥ कृष्णनयनिस्तनर्षी ॥ अग्नगन्धादि ॥

आत्मयकलगायुजा ॥ ॐ कौजा तवदससवाह
नायसयनिवा नायनम ॥ वद ॥ ॐ अग्निमूर्धा
॥ ॐ मन्त्राहू नि ॥ यतिस्त्रा ॥ ॐ कयानश्चि ॥ कृ
ष्णनयनिस्तनर्षी ॥ अग्नगन्धादि ॥ ॥

दक्षि (वयमकलगायुर्षी ॥ ॐ कौहृ गिननम ॥
ॐ कौ विनायकायनम ॥ ॐ कौ यशुर्वदायनम ॥
ॐ कौ ष्णतायुगयश ॥ ॐ कौ मरुदायेश ॥ ॐ कौ नर्म
दायेश ॥ ॐ कौ वृक्षयश ॥ ॐ कौ वृहस्यनयनम ॥
ॐ कौ ययमायसवाह नायसयनिवा नायनम
॥ ॥ वद ॥ ॐ इत्युत्सहितनमि ० सो व

नृक्षयसुवाहनायसयनिवानायनमः॥ ॥
वद॥ उंथे उवाजीकनिकुदना नदद्यासरुह्य
त्वा॥ रुननन्निम्यनीष्यमायाद्यायूषयूना॥
वृषार्निवृषक्षमनया रुद्र० समुदियम॥ नृ
न्नुः आयाहिद्वीनया॥ उंयदकन्द॥ उंअग्रअर्य
॥ उंअद्रनाजाया॥ उंअनात्यनिधुनी॥ उंअना
दवी॥ उं००मभवनृक्ष॥ आवाहनादि॥ उंमना
रूनि॥ यनिष्ठा॥ उंकयानधिष्ठ॥ कृष्णनय
निस्तनदी॥ अङ्गगन्धदि॥ ॥

वायुयकलभश्चनी॥ उंकांयूयवनाधियनय
सुवाहनायसयनिवानायनमः॥ ॥ वद॥ उं
नववायु॥ आवाहनादि॥ उंमनारूनि॥ यनिष्ठा
॥ उंकयानधिष्ठ॥ कृष्णनयनिस्तनदी॥ अङ्गगन्ध॥

इरुनकवनकलभश्चनी॥ उंकांदद्योनमः॥
उंकां वधुयश॥ उंकां अथर्वदायश॥ उंकां कः
नियुगयश॥ उंकां गधुक्श॥ उंकां कोषिक्श॥
उंकां नारुवश॥ उंकां कनवश॥ उंकां सुंऊरुना
जायसुवाहनायसयनिवानायनमः॥ ॥
वद॥ उंथेवामिमादवीनञ्जिनतासुनखनी॥
गृक्षनमश्चानाह्यामिद्यायदधुनिदियंघसूव

नवमध्यायस्य चतुर्थः ॥ ॐ ह्रस्वद
वीथिविस्वस्त्यः आसनीमायास्रध्याक
तासि ॥ रुद्रं वक्ष्ये ॥ ह्रस्वमसुहृद्वामनिष्ठा
दिरियस्रः अस्मिन् ॥ ॐ गन्नादवी ॥ ॐ अक्षना
डायकिरवक्ष्ये नायादिनवदर्शनं नायेकल्येन
न्यायनायाधिकल्येन मास्त्र न्यायसरुस्या
मसुहृद्वगमयन्मनकायगमयान्द्रुध्याः
गं चिकनकमिहमाधः डयमिष्टमिद्वक्ष्ये
यश्च नकाचार्यम्याक्कनभेलगम् ॥ कयानः ॐ
धिष्ठ ॥ ॐ कं ॐ क्व ॥ ॐ क्विदगः ॥ आवाह
नादि ॥ ॐ मनाक्कमि ॥ यमिष्ट ॥ ॐ कयानधि
ष्ठ ॥ क्वानयमिस्त्रवनी ॥ अणगन्धदि ॥

ह्रीं गमनकलभार्चनी ॥ ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं गमनाय
सवाहनाय सयमिवावायनमः ॥ वद ॥ ॐ
गमीं गमीं ॥ आवाहनादि ॥ ॐ मनाक्कमि ॥ यमिष्ट ॥
ॐ कयानधिष्ठ ॥ क्वानयमिस्त्रवनी ॥ अणगन्धदि ॥

अधकलभार्चनी ॥ ॐ ह्रीं अं ननायसवाहमाः
यसयमिवावायनः ॥ वद ॥ ॐ गमिथयदा ॥ अ
वाहनादि ॥ ॐ मनाक्कमि ॥ यमिष्ट ॥ ॐ कया
नधिष्ठ ॥ क्वानयमिस्त्रवनी ॥ अणगन्धदि ॥

उड्डकलभावननी॥ उं दौं उं ड्डाधियनयसवारु
नायसयनिवानायनमः॥ ॥ वद॥ उं वृक्ष
हास्यन॥ आवारुनादि॥ उं मनाकृति॥ यमिषा॥
उं कयानधिष॥ कृणमयनिस्तनी॥ अरुगंधादि॥

वायुयामयूर्ध्वगधकलभावननी॥ गमयणी नि
बीक्षणी॥ आसनी॥ उं नखाजामि॥ अरुक्षणी॥
उं दवस्यत्वा॥ उं दौं दृगायनमः॥ उं दौं यनाका
यनमः॥ उं दौं मृगसनायनमः॥ ॥ ध्यान॥
गजाननमो कदर्क यदनालदभायमीचु
रुजास्वदुनकृ लरुकायनधुधनधी॥ नाग
यक्षाय विमिश्र विधिनाडीनमाम्यहं॥ ॥ उं
दौं गंगायामि मूरुयनमः॥ ॥ वद॥ उं आः
रुनं नृदवृष्टं नमः॥ कमदुमागहि॥ महो
नदीसि नृकिरि॥ आवारुनादि॥ ॥ वलि॥
उं दौं गंगायामि मूरिं श्यावलिं गृह्णस्वाहा॥
उं गधनांत्वा॥ धूपदायरुलनेवद्या॥ उं म
नाकृति॥ यमिषा॥ जाया॥ स्माय॥ सर्वकार्येषु
कर्तव्यं सर्वविद्यनिवानधी॥ विद्यरुर्नगधर्ष
श्च मूषा नृनमाम्यहं॥ अरुगंधादि॥ ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय॥ गमय

ॐ नित्रीक्षणी॥ आसनं॥ ॐ गत्वायामि॥ अस्य
क्षणी॥ ॐ दवस्यत्वा॥ ॐ दौक्षगयनमः॥ ॐ दौप
नाकायनमः॥ ॐ दौपनासनायनमः॥ ध्यानं॥
कूकमानुषासारुर्गं अक्षयस्तु कक्षविनासर्व
शामुविदस्तु स्वगुन्ययामाम्यहं॥ ॐ दौ
पुंगुवमूरुयनमः॥ वक्षयस्तु न॥ आवाह
नादि॥ ॥ वलि॥ ॐ दौपुंगुवमूरुयवलि
गृक्षरस्वाहा॥ ॐ वृहस्पतिभूति॥ ध्रुव॥ दीप॥
रुल॥ नेवद्य॥ ॐ मनास्तुति॥ प्रणिष्टा॥ जाया
स्तु॥ सुवर्धवर्धसंकाशं यस्तु काक्षकन
द्यय॥ सर्वशामुक्रियादिस्तु गुन्ययनमाम्यहं॥
अगगन्धादि॥

नेमस्यस्य यूर्ध्वागिनीकलगायुः॥ गमय
मी नित्रीक्षणी॥ आसनं॥ ॐ गत्वायामि॥ अस्य
क्षणी॥ ॐ दवस्यत्वा॥ ॐ दौक्षगयनमः॥ ॐ दौ
यनाकायनमः॥ ॐ दौपनासनायनमः॥ ध्यानं॥
न॥ विद्युत्पुं निरुदहा गिषावानसमनिः
ताष्टदक्षकवियलीविद्युत्पुं वर्यदिरुवयः
॥ ॐ दौअमुनाजायनमः॥ ॥ वद॥ ॐ वसुध
भवसमिधमकमवमगकिधमधमधमध
मधमध॥ स्वायमगकिधमयस्तु नकल्यनाः
सु॥ आवाहनादि॥ ॥ वलि॥ ॐ दौयागिनी

कखद्याङ्गक्षयालीनमाम्यहं॥अङ्गगन्धदि॥

यधिमम्यदक्षि(व)धीकललयूडा॥गभयणी
निनीक्षणी॥आसनं॥उंरत्वाजामि॥अरुक्ष
णी॥उंदवस्यत्वा॥उंकांक्षुणायनम॥उंकांय
नाकायनम॥उंकांमकनासनायनम॥ध्म
ना॥यधियनिस्मिनीदवीनीलात्यलदलयरु
सिंदूनयद्रुसुक्ष्मकानियारुवर्मास्मिना॥
उंकांघीघीमूरुयनम॥उंघीघुन॥आवारु
नादि॥॥वलि॥उंकांघीमूरुयवलिगृक्ष
मारा॥उंअधवाच॥धूय॥दीय॥रुल॥नेव
द्या॥उंमनाक्षुनि॥यनिष्ठा॥जाय॥स्माद्य॥मक
नाक्षुस्मिनीदवीलाकषयसूयुजिनी॥सिंदूनात्यल
यानिस्मंघादवीयवमाम्यहं॥अङ्गगन्धदि॥॥

यधिमम्यउरुवल्काकललयूडा॥गभयणी
निनीक्षणी॥आसनं॥उंरत्वाजामि॥अरुक्ष
णी॥उंदवस्यत्वा॥उंकांलुक्षीक्षुणायनम॥
उंकांयनाकायनम॥उंकांकर्मासनायनम
॥ध्मना॥यध्यासनस्मिनीदवीसुद्धसूटिकसं
तिनी॥अरुदयोषारुसुक्ष्मधनधन्यावययदा॥

ॐ क्रांती लक्ष्मी मूर्त्यनमः ॥ ॐ श्रीमालक्ष्मी ॥
 आवाहनादि ॥ ॥ वलि ॥ ॐ क्रांती लक्ष्मी मूर्त्य
 वलिगृह २ स्वर ॥ ॐ अक्षवाचनधि ॥ धूय ॥
 दीय ॥ रुल ॥ नैवद्य ॥ ॐ मना इति ॥ यति ॥
 शाय ॥ स्तोत्र ॥ कर्मया ॥ भसना ॥ सीना ॥ इत्या
 नकर्मदायमा ॥ यद्गदर्थ ॥ सयुक्तां लक्ष्मी
 दर्शनाममह ॥ अग्रान्धादि ॥ ॥

गणस्य यूर्व विप्रिमर्दन कलधयूजा ॥ गाय
 त्रीनित्रीकधी ॥ आसनी ॥ ॐ कृत्वा कामि ॥ ॐ द
 वस्यत्वा ॥ अस्य कधी ॥ ध्यान ॥ ॐ आनन्दध्रु
 नन्दध्रु सुमुखदन्मुखसुक्ता ॥ अविद्याविद्य
 कर्कष्य यत्तु न्याल काळं म ॥ ॐ ॐ आनन्द्या
 यनमध ॥ वद ॥ ॐ नारिर्भविर्लु विज्ञानं याय
 र्भयव निरुसु ॥ अर्नन्दन न्याया ॥ धुमरुगा ॥
 मोरुल्लं यम ॥ ॐ द्यात्वा यद्वा धर्मास्मि विधिनाय
 निष्ठिग ॥ ॐ मन्नारु नि ॥ यमिष्टा ॥ अष्टगन्धादि ॥

द्रुक्कलधस्य दक्षिण विनूयाद्रुक्कलधयू
 ज्ञा॥ उं कत्वा जामि॥ आसनी॥ उंदवस्यत्वा॥ ज
 सुकधं॥ प्रिया ऊति॥ उं ऊं ऊं विनूयाद्रायः

शुक्रशक्ति ३

नमः॥ वद॥ ॐ अथेनानष्टे विनूयानालरु
नदिदार्द्यशक्तिः स्वशक्तिस्त्वत्शक्तिः क
नशक्तिः स्वशक्तिकल्पशक्तिः लामशक्तिः
॥ अष्टादशः अष्टादशः अष्टादशः अष्टादशः अष्टादशः
धृष्ट्याः अष्टादशः अष्टादशः अष्टादशः अष्टादशः
अष्टादशः अष्टादशः अष्टादशः अष्टादशः अष्टादशः
अष्टादशः अष्टादशः अष्टादशः अष्टादशः अष्टादशः

अष्टकलशस्य डुरुनजमुकलशयूजा॥ गाय
त्रीनिनीकली॥ आसनी॥ ॐ कत्वाजामि॥ अष्टक
ली॥ ॐ दवस्यत्वा॥ ॐ कौचुगयनमः॥ ॐ कौच
ताकायनमः॥ ध्यान॥ ॐ वरुलाध्याविष्मलाक्षी
ध्यामायासुर्योवना॥ रुमवर्द्धकसंस्मवयी
नान्नकययाध्या॥ वा नू सर्वोद्गमयुध्मदिवारु
नमस्तुति॥ सूर्यावभक्तनीरुज॥ वामघाघी
रुनामिना॥ ॥ ॐ कौचुअम्नायरुद्र॥ कौ
अम्नायरुद्रयनमः॥ ॥ वद॥ ॐ नमस्तु
दमिना॥ अष्टादशनादि॥ ॥ वलि॥ ॐ कौ
अम्नायरुद्रयवलिगृह्णस्त्वाहा॥ ॐ अ
ष्टादशवद॥ धृष्ट्या॥ दीया॥ रुद्र॥ नैवद्या॥ ॐ म
नारुति॥ यमिष्टा॥ अष्टादश॥ अष्टादशः
रुद्रादष्टादशमवर्द्धसुर्योवन॥ विष्टिभक्तिक

नादवी अमुमूर्ति नमो मुनि ॥ अमुग न्नादि ॥

अमुकलगाय उरु न वा मुकलगायूजा ॥
गायणी निनी दधी ॥ उं न खाजामि ॥ आसनी ॥
अमुदधी ॥ उं द व स्यात्वा ॥ उं दौ द्वायनमः ॥
उं दौ यना कायनमः ॥ ध्यान ॥ यी न व र्ध च
उं दौ द्वा च उं व क कजासनः ॥ स्यानी च वि
काम अदमाला कमधुर्ल ॥ उं दौ दौ द्वा
स्वाधिकयवक्त (धनमः ॥ उं व द्वा यस्तनी ॥
आवाहनादि ॥ ॥ वसि ॥ उं दौ वा स्वाधिक
यवर्लिगृह्ण ॥ स्वाहा ॥ उं व द्वा दस्यनः ॥ धूय
दीया ॥ रुता ॥ नेव द्या ॥ उं म नो द्वा नि ॥ यमिष्टा ॥
जाय ॥ रुता ॥ यी न व र्ध महादीर्घ च उं दौ द्वा
सुभारुनी ॥ यस्तु कं वा द्वा सुर्ण च वा मुवक्तः
नमो मुनि ॥ अमुग न्नादि ॥ ॥

नेमस्यस्य पूर्ववस्तु कलगायूजा ॥ गायणी नि
नी दधी ॥ उं न खाजामि ॥ आसनी ॥ उं द व स्यात्वा
॥ अमुदधी ॥ उं दौ द्वायनमः ॥ उं दौ यना
कायनमः ॥ ध्यान ॥ सर्वसत्वाय कर्हि र्व
वदा नर्त्त मास्तिका ॥ अस्मि ऊरु सदाय द्वा

कून्वष्य विवानग ॥ उं कूं कूं वसु मूर्ख्यन
मः ॥ उं वसु मूर्ख्यन मूर्ख्यन मूर्ख्यन मूर्ख्यन
मूर्ख्यन मूर्ख्यन मूर्ख्यन मूर्ख्यन मूर्ख्यन
न कल्यन्ताम् ॥ ॥ वलि ॥ उं कूं वसु कल्य
यवलिगृह्णस्वाहा ॥ उं अक्षवाचद ॥ धूय दी
यरुतनेवद्य ॥ उं मनाहूति ॥ यमिषा ॥ जाय ॥ स्म
॥ उगमागानमामुख्य सर्वसथायकाविधीव
सुत्रयनमामुख्य रुद्रविधि विद्यानधी ॥ अर्गमा ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ सानिकयष्टिक कल्य
युजा ॥ मयदी निनीरुधी ॥ उं क्त्वाजामि ॥ अ
मनी ॥ उं दवस्यत्वा ॥ अरुद्रधी ॥ ध्यान ॥ स
र्वेषां सानिक कल्यत्वं ॥ लोका नायष्टिदायकी
तया नैखी विरुथार्थ ॥ यूजयन् यरुसं निः
(धो ॥ उं कूं कूं कूं सानिक काय नमः ॥ उं कूं कूं
सः यूष्टिकाय नमः ॥ उं शोः सानिक ॥ उं क्रिय
वकी ॥ ॥ वलि ॥ उं कूं सानिकयष्टिकाय
वलिगृह्णस्वाहा ॥ उं अक्षवाचद ॥ धूय ॥
दीयरुतनेवद्य ॥ उं मनाहूति ॥ यमिषा ॥
जाय ॥ स्म ॥ सानिक काय नमामुख्य यूष्टि
दायनमानमा सदा ममाध्वने नक्षी कनूः

च विधिनामयन् ॥ अङ्गनादि ॥ ॥

कन्यानामकमयूजनी ॥ गमयन् निनीकः
र्षी ॥ उं कत्वाकामि ॥ आसनी ॥ असूक्ष्मी ॥ उं द
वस्यत्वा ॥ ध्यान ॥ शुद्धरूटिकसंकाशं वन्द
यन्मन्त्रिणी ॥ रुद्रमय विरूपांगं ध्यायन्
रुद्रमधिप ॥ उं द्रौ अनन्तादिमूर्तिस्थान
मः ॥ उं नमो मुसर्था ॥ आवाहनादि ॥ ॥
वसि ॥ उं द्रौ अनन्तादिनामकमयवर्णि
कश्चाह ॥ ॥ वद ॥ उं अग्रयस्वाहा ॥ सामा
यस्वाहा ॥ यामादायस्वाहा ॥ सवित्रस्वाहा ॥ वाय
वस्वाहा ॥ विष्णुस्वाहा ॥ रुद्रायस्वाहा ॥ वृह
स्पतयेस्वाहा ॥ मित्रायस्वाहा ॥ वसुधायस्वाहा
॥ ध्रुवा ॥ दीया ॥ रुद्रा ॥ नैवद्य ॥ उं मन्त्राह्नि ॥ प्र
मिष्टा ॥ जाय ॥ मन्त्रा ॥ रुद्रमन्त्रिणी ॥ उं
नानावत्तविरूपा ॥ विषकाता वक्रधर्म
कर्मनामयवेनमः ॥ अङ्गनादि ॥ ॥

कन्यायक्ष्मीयक्ष्मयूजनी ॥ आसनी ॥ उं कत्वा
यामि ॥ असूक्ष्मी ॥ उं दवस्यत्वा ॥ ध्यान ॥ यी
नवर्णमहाकाय वीजयुवश्चक्ष्मन् ॥ हमा

लक्ष्मणसाराङ्गधनधान्यप्रणियुक्त॥स्यामव
र्ध्ममहागङ्गाःसर्वालक्ष्मणसाराङ्गिणी।नर्तयुर्ध्व
ऋकलर्गःयुक्तीर्णानमाम्यहं॥ॐङ्कायक्षा
यनमः॥ॐङ्कायक्षानमः॥ॐअग्रजस्य
वदहनःप्रतिनःसमनारव॥

यनायस्यसहस्रजिह्वः०हिधनदाःअसिह
हा॥ॐयक्षायस्यन्यर्थमययुषाथंरुस्यनिः॥८३.
यवाःअदवायदाउनः॥आवाहनादि॥
वलि॥ॐङ्कायक्षणीयक्षास्यावर्तिगृह्णस्व
हा॥ॐअधवायदधि॥धूयदीयस्तनेवः
द्या॥ॐमनाहूति॥यनिह॥आय॥आग्राहम
नत्वाचलीयकंमूकगाहलसाराङ्गिणी।गदा
यानिमहायक्षंयुधामामिधनाधिर्य॥दिवा
वसुयनीधनीसर्वालक्ष्मणरुषिणी।नमामिय
क्षणीयवीसर्वसंयलिदायनी॥अग्रगन्मादि॥

थविुलस्यदक्षि०आदिस्यकलधयूजा॥
गयशानिनीक्षणी॥न्याम॥ॐङ्कासफास
वारुनायश॥ॐनत्वायामि॥आसनी॥ॐद
वस्यत्वा॥ॐङ्कादावायश॥ॐङ्कातोसनायश
॥ॐङ्कावृणायश॥ॐङ्कायताकायश॥ॐदा

नादवी॥ उं व स्वा र्ग ग ॥ उं वृहस्य निष्ठा ॥ उं अ
स्मा कमिन्द्र ॥ ॥ ध्यान ॥ यद्वासन ॥ यद्वाकन
यद्वागर्क ॥ समग्र निः ॥ सकाश्वनथमा नूरुं दि
हुजस्या त्मदानवि ॥ ध्यानयुष्मिनमः ॥ ध्या
यांति ॥ मूलना ॥ उं आदिस्था यन्त्रे वा
य अग्रियस्य धिदवनाय ॥ वद ॥ उं आरुष्ठा
उं ग्रायवर्क ॥ उं अग्रिद ॥ आवाहनादि ॥ कृष्ण
नयनिष्ठावनी ॥ उं कयानधिष्ठ ॥ ॥ वलि ॥
उं आदिस्थादिनवग्रहस्थावलिगृह ॥ स्वाह
॥ उं ग्रायवर्क ॥ धूय दीय रुत नेवद्या ॥ उं
मना रुमि ॥ यनिष्ठा ॥ जाया ॥ स्माग्रा ॥ उं कलि
गदगा र्गिह ॥ विष्मसामस्य मरुवी नकय
प्रकनर्दद नोमि आदिस्थमधुली ॥ अर्गगंधादि ॥

थगुलस्य उरुन मूर्युजयकल ॥ यजू ॥
न्यास ॥ गायत्री नित्राक्षणी ॥ उं आध्वनगर्क
स्थादिष्ट ॥ धृवा सनाय ॥ उं नखाजामि ॥ आ
सनी ॥ उं दवस्य स्वा ॥ अर्गक्षणी ॥ उं दानाय ॥
उं नर्वाकिगना नधाय ॥ उं धवनरुगाय ॥
उं वृषरुधुजाय ॥ वद ॥ उं दानादवा ॥ उं व
त्वानि ॥ उं वृहस्य ॥ उं अस्माका ॥ ध्यान ॥ उं

कृष्णकमदसंकाशं चक्षुमधुलसध्वगीप्रय
 लाचनमकाशं मूर्खं जयविहावयह ॥ ध्व
 नयर्थं ॥ प्रिया ॥ लि ॥ ॐ मूर्खं जयाय जम्
 नध्वप्रगकि सहिताय ॥ वद ॥ ॐ ता अस्या
 ॐ सकसमय ॥ ॐ पुनस्त्वादि ॥ ॐ मंदवा ॥
 ॐ श्रीगते ॥ ॐ अश्वत्थवा ॥ आवाहनादि ॥
 वसि ॥ ॐ मूर्खं जयाय वसिगृह ॥ ॐ
 अश्वत्थवा ॥ ॐ कथानधि ॥ कृष्णनयनिस्त
 र्ण ॥ ध्रुवदाय रुतनेवद्य ॥ यमिषा ॥ ॐ मना
 रुति ॥ ज्ञायास्तान् ॥ ॐ सयाय सव्यरुजया
 दधदिन्दुविस्त्रं करुं वरुनिमेषमरु कसु
 प्रावि ॥ अकपिर्थां यवप्रदारुययानि नखां म
 र्खं जया जयति सा कनिमा कनम् ॥ अश्वगंधादि ॥

अथ यद्युलार्चनं दर्वनं क्रमना ॥ अनं क्रमना ॥
 न्यास ॥ अथ यागपूजा ॥ आत्मपूजा ॥ आसर्ग ॥
 ॐ नवाशामि ॥ अश्वदधी ॥ ॐ देवस्य त्वा ॥ ॐ कौ
 दवाय ॥ ॐ कौदवाय ॥ ॐ कौयताकाय ॥
 ॐ कौधवाय नमः ॥ ॥ वद ॥ ॐ दानादिवी ॥ ॐ
 वरुस्य नमः ॥ ॐ रुद्र आसी ॥ ॐ अस्माकमिद ॥
 ॐ कौवृषासनाय नमः ॥ ध्वन ॥ देवयादान ॥

प्रियाश्रुति॥दवयादान॥वदा॥उंयाभनूद॥
उंशीमाल॥वदार्चदवयादानमानकाया
या॥धूया॥दीया॥नेवद्या॥यतिश्या॥ ॥वति॥
दवयादान॥ज्ञया॥स्मृ॥दवयादान॥सान
यसाननूयाययश्चवकुधृगायवानमपिशू
रुक्मायसर्वयायनकायव॥नूगमध्यादि॥

गिवगकि कलगाय॥घीनक्षीयूडा॥उंका
घीनमश॥उंका नक्षीनमश॥उंघीघ्न॥उंघ
माल॥ ॥समस्तकलगायूडा॥उंअजिघ
कलम॥ ॥गमयलिगयूडा॥उंकाग
मयलिगयनमश॥उंगिवानामासि॥ ॥
सूयनागयूडा॥उंका नागयनमश॥वदा॥उं
या॥ॐ॥वदा॥उक्षनानायावाचनस्यगी॥
नन॥यवावटष॥नन॥यवा॥सर्थायानमश॥

गिवगकि कलगायूडा॥गमयागीमकुधनि
नीक्षी॥न्यास॥अध्याययूडा॥आत्मयू
डा॥उंकाधर्मायनमश॥ ॥यू॥उंका
नायनमश॥यधिमा॥उंका नक्षीयनमश॥
उरु॥उंका अधर्मायनमश॥आ॥उंका

अज्ञानाय नमः॥ नमः॥ ॐ कौं अवेनामय
नमः॥ वायुर्व॥ ॐ कौं अनेश्वराय नमः॥ ॐ
ध्यान॥ ॐ कौं आध्वनय नमः॥ नवी॥ अ
नन्ता॥ स्कन्दा॥ नाना॥ यज्ञा॥ कणना॥ कर्षि
कास्त्रा॥ यद्वास्त्राय नमः॥ ॐ कौं अननयनास्त्र
यनमः॥ ॐ कौं वृषास्त्राय॥ ॐ कौं सिंहास्त्राय
नमः॥ ॥ ध्यान॥ ॐ कौं कर्षिकाय निदाया
नयकलनमः॥ ॐ कौं गीर्वाणाय नमः॥
वनमालाविह्वलि॥ किंवाटीमूकटाईउरु
नासकविह्वलि॥ ऊटालग्नमहाध्यायतुध्वा
यदवगिरवागिर्व॥ सर्वदासमस्त्यामं काया
रुदनसवलीचतुर्वर्कंदशरुडा नानालंका
नमः॥ गऊं नयमहाध्यानं द्वाविमगुग
किंसीयनं॥ कयासखद्वानयनधुं मूलं ठमन
मा लिका॥ वीजयूनकवनदं आयुधनिवि
चिनयना॥ अ॥ न्यावाकूद्वयस्था॥ गऊं वस्मी
॥ नविग्रहं॥ गऊं नीलावर्णनादं रुद्रयं व्याः
ध्विचिनयना॥ ॐ गऊं त्वावधिसिंहि॥ मयिं
यनमः॥ मूलिभन॥ विनयस्य स्वदहं
यूजयुरुता॥ यद्वादावाहयद्वं दत्तकमता
मधुसायनि॥ द्वाविमगुगमनकलयथा॥

लिप्ययदयत्। अर्थजलनसंगर्थ मूढायूर्ध्व
कूडयत्॥ गंगा लयाङ्गमयर्थ रूपाङ्गानि
गद्वयत्॥ वृत्तिध्वानयर्थनमः॥ ॥
प्रियाङ्गलि॥ नैऋतम् आनन्दगकिर्ण
कनाययावर्गिस हितायनमः॥
मूढायदका॥ नैऋतम् आन
न्दगकिर्णकनाया वर्गि
महितायनमः॥ यद्वा य
दका॥ उंक्रांलसद्याङ्गा नैऋतम् ययधि
मवकायनमः॥ उंक्रां वं वांमदव
यउरुववकायनमः॥ उंक्रां नैऋतम्
यदक्षिणवकायनमः॥ उंक्रां यैतत्यन
सायपूर्ववकायनमः॥ उंक्रां वं वृत्तिध्वान
यउरुवकायनमः॥ ॥ उंक्रां वामादि
गकिर्णानमः॥ उंक्रां कयालीङ्गदिरुव
वकायनमः॥ ॥ षष्ठमयूङ्गा॥ आवाह
नादि॥ लिङ्गयानिमूढा॥ ॥ वदा॥ उंक्रां
त्वायामि॥ उंत्वमग्रयूरिस्त्वमाधुगुमिस्त्व
मयस्त्वमङ्गमनस्यत्रित्वमनस्यस्त्वमायधीय
स्त्वनृत्तानयनजायमधुवि॥ उं आयाजस्मा
न्मातृवधुव्ययनुयुक्तननाद्युक्तपठयननु

सकलैयूजा॥ ॥ वसियूजा॥ ॐ स्वस्मान्नक्षत्र
 पालायवर्तिगृह्णस्वाहा॥ या० यादानमालकं
 ॥ ॐ मधनी॥ ॐ यागवद॥ ॐ ॐ मायूदा॥ ॐ घृ
 नैयूग॥ ॐ नमावह॥ ॐ अर्पयामा॥ ॐ यावो
 दि॥ ॥ धाययादान, दवयादान, अनकमन
 मालकविय॥ दूखा, पिखा॥ ॐ समखाद॥ ॥
 ॐ नमाग॥ गमयमि॥ ॐ अयमे॥ ॥ मयाम॥
 ॐ यागवद॥ कोमानाहुजा॥ ॥ सगुणयूजा॥
 ॐ वसा॥ यविर्ग॥ ॐ दधिकायमि॥ ॥ ॐ स
 मिगृह॥ कृष्कन॥ ॐ ग्राह्य॥ सिंधुमूढ॥ ॥
 सर्वकलगा॥ ॐ अजिद्यकलगी॥ ॐ यॐ ॐ
 स्त्रीयादिय॥ ॐ ॥ धूय, दीय, रुत॥ नेवद्य॥ ॥
 यमिष्टा॥ ॐ मनाह्मि॥ जाया॥ स्नाय॥ दवयादान॥

समस्तधूनदावयकृत्सिंहसनसधान॥ ॥
 ॐ यथादिवीमि॥ अग्निपूजनं॥ ॥ नमायजा
 यमिदवनामानसर्विष्या॥ वक्रा, यनी, वद,
 लोकयासयूजा॥ ॐ कौं वक्र, धनम॥ ॐ कौं य
 नीनायश॥ ॐ कौं मयदायश॥ ॐ कौं यरुर्वदा
 दायश॥ ॐ कौं सामवदायश॥ ॐ कौं अथर्वव
 दायश॥ लोकयासयूजा॥ ॐ कौं ॐ दायनम॥
 लं॥

ॐ कौं वं गयश ॥ ॐ कौं मं यमायश ॥ ॐ कौं कूं नेम
षायश ॥ ॐ कौं वं वनूमायश ॥ ॐ कौं यं वायवनमा
ॐ कौं सं कवनायश ॥ ॐ कौं कूं लीमा नायश ॥ ॐ कौं
अं नन नायश ॥ ॐ कौं उं वक्राश ॥ यनरुमिष
दवाचर्तनी ॥ ॥ ॐ कौं प्रियञ्जयनमः ॥ ॐ कौं वं
षाञ्जयनमः ॥ ॐ कौं दवागमरुवश ॥ ॐ कौं दिग
श ॥ ॐ कौं विदिगश ॥ ॐ कौं स्वर्गायश ॥ ॐ कौं म
र्गायश ॥ ॐ कौं पातालायश ॥ ॐ कौं गोमयाश ॥ ॐ
कौं कन्दायश ॥ ॐ कौं सूर्यायश ॥ ॐ कौं चन्द्रायश
ॐ कौं जामीधनायश ॥ ॐ कौं रुद्रायश ॥ ॐ कौं
आग्नेयश ॥ ॐ कौं सर्वश ॥ ॐ कौं देवश ॥
ॐ कौं प्रिदवश ॥ ॐ कौं नममादवश ॥ ॥
अस्मदगममिधरामा ॥ ॐ समिधार्णि ॥ वादगम
मिधरामा ॥ ॐ नदवाग्निरुदा ॥ एकं ॐ स्वाहा ॥ व
कीयधिरु ॥ निधाय ॥ ॥ द्वाग्निरु ॥ ॐ कौं
रुद्राहा ॥ ॐ कौं रुवः स्वाहा ॥ ॐ कौं रुवः स्वाहा ॥ ॐ
कौं रुवः स्वाहा ॥ ॥ द्वाग्निरुद्राहा ॥
ॐ स्वनाजु ॥ ॐ दमग्निरुद्राहा ॥ ॥ ॐ
स्वनाजु ॥ ॐ दमग्निरुद्राहा ॥ ॥ ॐ
ममवद्रुद्राहा ॥ ॐ दमग्निरुद्राहा ॥ ॥ ॐ
यामि ॥ ॐ दमग्निरुद्राहा ॥ ॥ ॐ अग्निरुद्राहा

सुनरिगसिधायसुखमिदमयाअसिअयाना
यकंवरुस्ययानादहिरुषक०स्वाहा॥ॐदमया
ध्यात्वा॥ॐॐनगर्ग॥ॐदमवृक्षायसुविष
विश्वकर्माधःविश्वस्यादवस्यामवृक्षसुवर्क
॥ॐॐदरुमविनृग्यासमसमदवाधर्मविम
क्षमः॥ध्यायाअथवयमादिरययननवानाग
य ५ साअदिगस्यामस्वाहा॥ॐदववृक्षायदिर्याधि
यनयस्यागा॥ॐॐद०दिनाडा॥ॐदमग्नि
ववृक्षाय॥ॐॐववृक्षायारुमनमसिधवृक्ष
स्यसुमसुसर्जनास्याववृक्षस्यसमसदवा
सिधवृक्षस्यसमसदनमसिधवृक्षस्यसमस
दनमासीद॥ॐदमग्निववृक्षाय॥ॐॐरु
वगन्तःसमनसोसवगसावगयसो॥मायक
०दि०सिधुमायकयनिष्ठागवदसोनिवाः
रुवगमयनः॥ॐदमग्निववृक्षाय॥ॐनिद
वावृक्षसुम॥॥धृताकृतिमानकवि
या॥॥किनाकृतिविरया॥यूर्वदाननीनिस्थ
मालकासमसुविरया॥॥धनाववृक्षसाधन
याया॥ॐॐधनमसि॥ककुरुसुग॥ॐॐकुरुसि॥
समिधनकुरुनी॥ॐॐवर्षवृद्धमसि॥सूर्योनिधा
या॥ॐॐयनायुग०॥ॐॐनिनीकनी॥ॐॐदवाव॥

[illegible]

दकन॥ १॥ मयदा॥ २॥ जल॥ ३॥ दकं यथा॥ ४॥ वृथा
 दक२॥ गीतादक३॥ गीधदक४॥ नदीसंग
 मादक५॥ वाधादक६॥ कृयादक७॥ गम८॥
 गमदक९॥ सूत्रधर्मदक१०॥ नलादक११॥ यूथ
 दक१२॥ रुलादक१३॥ अंगुलिजल१४॥ गीम
 दक१५॥ कथ्यनजल१६॥ कंकालाजल१७॥
 नकाजल१८॥ धनदकनकलगास॥ ॥ ॥
 गान॥ कयिलयदा॥ दूर्ध॥ यव॥ अक्षयः
 ध्वनिल३॥ रुम४॥ शिवादक५॥ धन॥
 गानकलगास॥ ॥ विधिधूजायाया॥ न
 सादि॥ आसन॥ ॐ नृवातामि॥ अयकृणी॥ ॐ
 दवम्यत्वा॥ ॥ यूथ॥ ॐ दौ अनकनामय
 यूथसमदायनमः॥ ॐ दौ क्षीनसमदायनमः॥
 ॐ दौ ददयायमंन॥ ॐ समदादमि॥ मृलि
 का॥ ॐ अस्वकान्क॥ ॥ आग्रय॥ ॐ दौ क्षी
 नसमदायनमः॥ ॐ दौ गिनमंन॥ ॐ सम
 दक्ष॥ कषाय॥ ॐ विष्णुनवाट॥ ॥ दक्षि
 न॥ ॐ दौ नृककनामयदक्षिणसमदायन
 मः॥ ॐ दौ दधिसमदायनमः॥ ॐ दौ गिखाय
 मंन॥ ॐ समदायत्वावा॥ यत्तव॥ ॐ ॐ दवि
 यू॥ ॥ नैमय॥ ॐ दौ दृगसमदायनमः॥

ॐ कं कवचनमंघ्रि॥ ॐ समुद्रनददय॥
यं वाम॥ ॐ मरुवस्तु॥ ॥ यश्चिमा॥ ॐ
कायप्रनागययश्चिमसमुद्रायनम॥
ॐ कां सुनादनसमुद्रायनम॥ ॐ कां न
मंघ्रि॥ ॐ समुद्रासिबिम्बवावाऽञ्जनास्य
कयादहिनसिवृद्ध्याद्यागस्येन्द्रमसिस्त
दास्यरुस्यद्यात्रोमामासुनायकमडनामड
यकथ्यमानिस्वस्तिमस्तिन्यथिदवया
नरुया॥ यद्वादय॥ ॐ वक्रयस्तानी॥ ॥
वायव्या॥ ॐ कां गरुडकसमुद्रायनम॥
ॐ कं कवचनमंघ्रि॥ ॐ दवस्यत्वा॥ धनमा
वधी॥ ॐ यातावधी॥ ॥ डरुना॥ ॐ कां
खयालनागयडरुनसमुद्रायनम॥ ॐ
कां सुसमुद्रायनम॥ ॐ कां गिखायमंघ्रि
॥ ॐ समुद्रत्वनृवधऽअष्टनकनृवक्षा
ॐ धेदिवाऽअष्टऽडधन॥ रुनायत्वावजसि
नसिवाऽसमयामयस्थमहिषाऽअवर्द्धन
॥ जल॥ ॐ ममगी॥ ॥ ॐ गमना॥ ॐ कां
गिद्वनसमुद्रायनम॥ ॐ कां गिनसमंघ्रि
॥ ॐ समुद्रायमि॥ वृक्ष॥ ॐ ययऽयथि॥ ॥
मानजाननयूजा॥ गन्ध॥ ॐ गन्धदाना॥ सुव

धर्मदकी॥हिनयगर्ह॥नलादकी॥उंयचनय
॥गमगुगुठक॥उंचखाविगु॥गनधन॥उं
अमिन्दा॥मरुमधन॥उंवसपुविममसि॥
यव॥उंद्रयदादिव॥रुसा॥गयणीना॥मृ
रुिका॥उंस्थानायथिवीना॥सायविवा॥
मूलमनुषा॥धन्या॥उंधन्यमसि॥वीहि॥
उंवीरुयधम॥लाजा॥उंखयवि॥रुला॥उं
या॥रुनि॥धनयूजना॥ ॥दवसेकदमा
॥उंदवदवजगनाथ॥सुधिसहालकानकश
निमिनायखयादव॥खदीयामूरचनसा॥न्यू
नांन॥धिकांगवा॥यांगवायिकन॥क
विगुध॥कनुमह॥मिगसर्व॥कमयायनमध
न॥ ॥दवरुनमन॥गुरुतिरुनमन॥स्ना
नयाचक॥ ॥निर्मकनादि॥लाहमर्द
सुकाय॥स्नानी॥ ॥यूर्वकलगस्नानी॥व
द॥उंअध्वकान॥मुरुिका॥उंसमूदाद्रा॥
आत्मया॥कषाय॥उंविष्णाननाट॥उंसम
दुंजुषा॥ ॥दक्षिना॥यन्त्रवा॥उं०००दवि
षु॥उंसमूदायत्वा॥ ॥नेमरु॥यश्चाम
न॥उंसनयषु॥उंसमूदक॥ ॥यधिम॥
यद्मादय॥उंवक्षयस्नानी॥उंसमूदागिवि
॥ ॥वायुवा॥गनमोषधी॥उयाडाषधी॥

उरुनवदिसतयावदवदिष्टिविय॥ १२

[illegible]

२ गश्लियादिष्टिविद्य कलभायाव्यवन २

प्रविष्ठा॥ वरुनीकनसुनदक्षिणा॥ धधिलन
 डरुना॥ देवता॥ रुदया॥ ० कास्त्राय॥ ॐ अ
 नारुडा॥ देवस्त्रायनी॥ ॐ नमः॥ रुदया॥ ॥
 देवस्त्रायस्त्रायनी॥ गृहायकननादि
 ॥ वेद॥ ॐ कास्त्रा॥ निदाकलगास्त्राय॥ ॐ
 वायव्यवाय॥ वस्तुनस्त्रायकगद्यनस्त्राय
 देव॥ यादनगिननी॥ गिननयादनी॥ न्यास
 याया॥ देवदान॥ ॥ ॥ याद॥ ॐ रुस्त्राह
 ॥ ॐ अत्मानस्त्रायवस्तुनमः॥ ॐ वस्तुयः
 स्त्रायनी॥ ॥ रुदया॥ ॐ रुस्त्राह॥ ॐ अविद्या
 नस्त्रायविस्तुवनमः॥ ॐ विस्तुननाह॥ गिन
 म॥ ॐ रुस्त्राह॥ ॐ अगिननस्त्रायमदागि
 वायनमः॥ ॐ गिननामासि॥ यन॥ गिनः
 नयादनीकाठिसिह॥ ॥ नादासिधन॥
 यवस्तुनानविद्याववास्तुनस्त्रायसिह
 मस्तुन॥ ॥ यस्तुनाननस्त्राय
 रुनि॥ ॐ अत्मानस्त्रायवस्तुनस्त्राह॥
 ॐ वस्तुयस्तुन॥ ॥ यादयिथ॥ ॐ अवि
 द्यानस्त्रायविस्तुवस्त्राह॥ ३॥ ॐ विस्तुन॥ रु
 दयसथिथ॥ ॐ अगिननस्त्रायमदागिवाय
 स्त्राह॥ ॐ नमः॥ रुदया॥ ॥ गिनसथि
 या॥ यन॥ धमस्तुननादिवनागिननामा

व्यादनधनक॥ कथिर्गुणान॥ ॥ दिव्या
मूलमनुसंधान॥ धनमावसजवयुका
याया॥ ॥

धनादिवयुका॥ अकृतिविस्तार॥ ॥
यनूहामयाया॥ विधिर्धर्म॥ ॥ भक्तिक॥
युष्टिक॥ यवधन्यादिनालिकनादि॥ वि
धिर्धर्मयुद्धनक॥ ॥ संहितातायुद्धः
धनवता॥ ॥ निदिधितियदिनविधिः॥
नामिनिनिवसिविय॥ ॥

यानुसानादिनिश्चकर्म॥ नेमयुद्धाना
यसुवसिवियुद्धयाया॥ ॥ युद्धदार्ननिस्
दावयुद्धयायुद्धयाया॥ ॥
विधिर्धर्मयुद्धयाया॥ कलगायनिस्सामिका
कृतिर्वियाय॥ ॥
नकायधर्मकर्म॥ ॥ नकादशक्रियाया
या॥ यजमानदवया॥ अयसुक्तय॥ यजसु
काननधर्मयुद्धयायुद्धकृतिविस्तार॥
उंकाददयाययानिकल्यनायस्वरा॥ वेदा॥
उंकाददयाययानिकल्यनायस्वरा॥ वेदा॥
उंकाददयाययानिकल्यनायस्वरा॥ वेदा॥
उंकाददयाययानिकल्यनायस्वरा॥ वेदा॥
उंकाददयाययानिकल्यनायस्वरा॥ वेदा॥
उंकाददयाययानिकल्यनायस्वरा॥ वेदा॥

नादवावसवस्त्रिदृगामुताः प्रथममसु
नरुसारुविनिन्दव्यादधुः॥ उंक्रौंक्रौंक्रौं
क्रौंक्रौंवीर्ययनायस्वाहा॥ वद॥ उं नमामुण
विजहातिथानिम्यविगदिन्द्रियम्। गरुड
वायव्यवृत्तः इत्युक्तं विजन्मना॥ उंक्रौं
कवचायस्वाहा॥ नमः॥ उं त्वं विषदा॥ ॐ
मित्रदा॥ ॥ उंक्रौं रुदयायस्वाहा॥ उंक्रौं
गरुडधनायस्वाहा॥ उं गरुडजघोष॥ गरु
धनी॥ ॥ उंक्रौं मित्रसस्वाहा॥ उंक्रौं यैस्व
नायस्वाहा॥ उं स्वस्ति यधुमि॥ ययवनी॥ ॥
उंक्रौं शिखायस्वाहा॥ उंक्रौं सीमन्तानयनाय
स्वाहा॥ उं सारुमायदाक॥ सीमन्तानय
नी॥ ॥ उंक्रौं कवचायस्वाहा॥ उंक्रौं शक
र्मनायस्वाहा॥ उं व्याधायस्वाहा॥ व्याधयस्
वाहा॥ व्याधयस्वाहा॥ वदुस्वस्वाहा॥ ॐ नमो
यस्वाहा॥ वाचस्वाहा॥ मनसस्वाहा॥ यदुः॥
यास्यति या कायाः उदाला॥ ॥ उंक्रौं अस्त
यश॥ उं दवस्य स्वासवि॥ सय्यो कलशल
स्वतदाय॥ ॥ शककर्म॥ ॥ नमो देव
आचमनी॥ उं दयदादि॥ ॐ स्वाचमनी॥ ॥
उंक्रौं नृपायस्वाहा॥ लावनीददह॥ उं न
वृद्धदेवहिनी॥ ॥ अथावमूलमनुक
निश्चयदन्धि आय ४

द्युक्तमधुदाययह॥ॐ कंका सिधुक्रममि॥
 ॐ मधुदाययह॥ ॥ मूलनना ठि कु
 दनी॥ ॐ कंका ना ठि कुदनाय स्वाहा॥ ॐ य
 स्येनय ह्रियाग श्राय स्येयानि हि नक्ष्त्रः
 यी॥ अक्षान्द्रुमाय स्य तमा का समञ्ज
 गमश्वाहा॥ ॐ किना ठि कुदनी॥ ॥ ग
 यथं शक्रुयाह॥ ॐ अ (ग्न) का ना न्द्रुद
 नः सयत्का न्द्रुस्वजा ना न्द्रुदजा न वदः॥
 अधिना वृहिसमनाः अरुः सुवस्याम
 गर्भमिव नूथः इहो॥ ॥ (म) य ग्मल
 या नू विद्याय॥ ॐ किजा न विधि॥ ॥
 अर्घ्याहर्लखनहाय॥ ॐ अथा अस्मान्ना
 ॐ स्वारिषकां॥ ॥ कनाड कायनी॥ ॐ ड
 ठि म्ना ज सा सरुया ली गि य अ वयय
 साम मिद्वयमसूतं॥ ॥ इथायनी॥ ॥
 अयनामनु॥ ॐ कंका सद्यसूत कनास
 नाय स्वाहा॥ ॐ स्वम (य) द्रुहि स्तुमा गुगु
 द्वा विस्त्वमश्वास्त्वमभनसा विस्त्वमन
 स्यस्त्वमायधीत्यस्त्विनृमो नृयकजायस्
 तुवि॥ सद्यसूत कनासनी॥ ॥ ॐ कं
 निष्कमनाय स्वाहा॥ ॐ वद्वयस्त्वानी॥

ॐ कौमुद्याय नाम कनकयस्त्रादा ॥ यथा
 देवस्य नाम लिख्यते नृपवदन् ॥ ॐ अस्म
 मर्न ॥ ॐ यादायस्त्रादा रुमि ॥ नाम कनकी
 गुगुनिदवश्च नाडा गुनिनाम ॥ ॥ विदा ॥
 ॐ कायस्त्रादा कसमस्त्रादा स्त्रादा धिमाधा
 नायस्त्रादा मनःशुभाय नयस्त्रादा चिरं वि
 द्वा नाया दिस्त्रादा दिस्त्रादा मन्त्रास्त्रादा दि
 स्त्रादा समुद्रा कायस्त्रादा मनस्त्रादा स्त्रादा
 मनस्त्रादा वाव कायस्त्रादा मनस्त्रादा वृक्ष
 स्त्रादा यस्त्रादा यस्त्रादा यस्त्रादा यस्त्रादा यस्त्रादा
 हा यस्त्रादा न नन्दिनायस्त्रादा त्वष्ट्रादा त्वष्ट्रादा
 शुद्धीयायस्त्रादा त्वष्ट्रादा यस्त्रादा यस्त्रादा
 विष्णुवस्त्रादा विष्णुवनिस्त्रादा यस्त्रादा विष्णु
 वगिथि विष्ट्रादा ॥ ॐ निनाम कनकी
 ॥ ॥ ॐ कौमुद्याय मन्यायस्त्रादा ॥ ॐ यादा
 लानि मि ॥ सयिनिनन्दा वरुन्यासम
 ॥ ॥ ॐ कौमुद्याय मन्यायस्त्रादा ॥ ॐ अन्
 यमि ॥ यन्नुन्तादा वरुन्यासम ॥ य
 यमस ॥ ॥ ॐ कौमुद्याय शूरा कनकय
 स्त्रादा ॥ ॐ मूर्धनान्दिवा ॥ लयान्तादा ॥

नमः॥ वाक नरु नीनि नय॥ ॐ नमः नमि
 नमि॥ ॐ नमि नमः नमः॥ ॥ ॐ नमः नमः
 यक नरु रुदाय स्वाहा॥ ॐ रुदं क (धु) रि॥ ल
 मन् उाहामन् नय॥ ॐ नमि क नरु रुदा॥ ॥
 ॐ नमः क व वाय स्वाहा॥ ॐ नमः (नृ) व नय स्वा
 व नय या न व न नृ नय ० साम यियाम
 म न नृ न वा सा त्व यि॥ म न नृ व न य न
 व न नृ न न म दी क्षा नृ क्षा य कि म न नृ न
 म न नृ य म न य स्वा कि श॥ ॥ व न व न न
 ॥ म न व न ॥ ग म य नृ न ॥ ॐ य त्थ म वि व र्च ॥
 म न व न ॥ अ (ध) वा सा दि म नृ ॥ य क्षा य वी
 न ॥ ग म य नृ न रु द य ॥ अ न म सा रु ॥ ॐ य
 क्षा य वी न ॥ ॐ कृ प्पा म्पा र व न नृ नृ य त्व
 रु द म्पा क्षा मि व दि न सि व दि ष त्वा रु
 द्वा म्पा क्षा मि व दि न सि म्पा र व नृ नृ रु
 द्वा म्पा क्षा म्पा ॥ ॥ कृ प्पा जि न य दानि ॥
 ॐ व क य क्षा न नि ॥ य नृ न नृ य दानि ॥
 ग म य नृ य दानि ॥ ॐ नमि र वा ना थ य वि
 द नृ नृ व द य धा म रि न नृ नृ व द य वा
 द या नृ ॥ न नृ स धा य दानि ॥ ॐ न नृ व

नव नकुलु नागिब दमागिर्योलावन
 स्थगिर्योदियः॥ देवाधियमनामरु
 समुती कामरिषु यवर्वाधियरुवा
 रुस० समीक्षाना असद्व०॥ यदवाम
 नाकासमनायथाद कृक नवसूना
 वनुननः॥ यानुनकाः॥ स्वाहा॥ श्री दाय
 दानं॥ ॥ मूलमनुना॥ उं वुननदीक्षा
 मायाकिदीक्षयायाकिदक्षिणामु। दक्षि
 णाग्रदामायां शुद्धया मयमायन॥ ॥
 ॐ नितिवनवन्मन॥ ॥ उं कौददयाय
 समावरुनाय स्वाहा॥ उं उदरुमवन्
 नयासमसमदवाधमविमध्वम॥ यथा
 याअथावयमादिर्ययनकवानागभा
 अदिनस्यामस्वाहा॥ ॥ भस्वतामावन
 ॥ उं अकृष्टु नित्युधु॥ ॐ निसमावरुनः
 ॥ ॥ नगाविवाहा॥ अग्निलाहनकादि
 ॥ वमु॥ मध्वयर्क॥ उं स्वस्तिवाचनीय०
 न॥ ॥ अनिनानिदाय॥ उं अग्नार्यनि
 धुका॥ सवावसकया सकवृन्द्यकारुनी
 निनखा॥ उं स्वस्तिनरुन्दकि॥ ॥ सुवा

ति०

य३

वविया॥ ॐ सहस्रानि सहस्रानि वाक्कासु
 वरुणयः॥ कामा मा भूना रुगवश्यवाची
 नामस्वाकृधि॥ ॥ सकवृदकाविया॥ ॐ
 वसायविष्मसि॥ रुनीनिकाय॥ ॐ प्राग
 नमिन्द॥ लखन॥ ॐ दिनधगरु॥ कामा
 नगता॥ ॥ ॐ दायत्नीमयाश्चखाहा॥
 ॐ दौदौविवाहायखाहा॥ ॐ कन्या
 ववरुडमनवाः॥ ॐ अर्धज्ञाना अरिवा
 कणी॥ सियणमामः॥ सूर्यनयनयक्षाः
 धृनस्यधना अरिक्तियवन॥ ॥ क
 नायदानं॥ ॐ नम्यन्का रिननगकुमद
 वाः॥ पूरुडारु रिननवादिन॥ ॐ ॥ ना
 कङ्कल्यानाः॥ सकृन्स्यलाकरुगायवृ य२
 अश्विनावनदिवः॥ वदावनकाया॥ ॥
 गृहायकनक्षत्ररुकिडाद्ववन॥ ॥
 भरुगायरु अश्वि वन्दनादि सगु
 दाना निवादा॥ ॐ निविवाहा॥ ॥
 ॐ दौ अम्नायरुखाहा॥ ॐ माकवयुर्
 पृथिवीयुनीक्षमग्निः॥ ॐ यानावरुन
 षा॥ नामिद्वेदवेमडुरिः॥ समिदानय

द्विफयजस्ययश॥ जानूया॥ ॐ कौंठमू
रुयश॥ ॐ कौंठमूखाद्विफयक्रियायश
॥ नारि॥ ॐ कौंवायमूरुयश॥ ॐ कौंयमू वा २
खाद्विफयज्ञानायश॥ ददय॥ ॐ कौंखमू
रुयश॥ ॐ कौंखमूखाद्विफयछ्वाशक
यश॥ तताठ॥ सिरानकुममकाग॥ छ्
गियचतत्व॥ ॥ ॐ कौंआयतत्वायश॥
आयतत्वाद्वियायवक्र(ग)श॥ ॐ कौंक्षमू
रुयश॥ आ॥ मूखाद्विफयसर्वायश॥ ॐ
कौंवक्रिमूरुयश॥ वक्रिमूखाद्विफयय
धुयतयश॥ ॐ कौंयजमानमूरुयश॥ यज
मानमूखाद्विफयउग्रायश॥ ॐ कौंजर्क
मूरुयश॥ जर्कमूखाद्विफयनूदायश॥
ॐ कौंजलमूरुयश॥ जलमूखाद्विफय
रुवायश॥ ॐ कौंवायमूरुयश॥ वायमू
खाद्विफयछ्वाशनायश॥ ॐ कौंछ्न्द
मूरुयश॥ छ्न्दमूखाद्विफयसहाय
वायश॥ ॐ कौंखमूरुयश॥ खमूखाद्विफ
यहीमायश॥ छ्निआयतत्वायादादि
नास्यान॥ ॥ ॐ कौंविद्यातत्वायश॥

विद्याकृत्वाधियनयविष्णुमूर्त्य २॥ उंक्र
 श्मिमांय २॥ ॐ ॥ मूर्त्याधियनयसर्वाय
 २॥ उंक्रावक्रिमूर्त्य २॥ वक्रिमूर्त्याधिय
 नययधुयनय २॥ उंक्रायजमानमूर्त्य
 २॥ ज्ञेयमानमूर्त्याधियनय २॥ उंक्राञ्ज
 क्कमूर्त्य २॥ ज्ज्कमूर्त्याधियनय २॥ उं
 क्रोक्तलमूर्त्य २॥ क्तलमूर्त्याधियनय २॥
 ॥ उंक्रावायमूर्त्य २॥ वायमूर्त्याधिय
 नय २॥ उंक्रावृन्दमूर्त्य २॥
 वृन्दमूर्त्याधियनयमहादवाय २॥ उंक्रा
 उंक्राखमूर्त्य २॥ खमूर्त्याधियनय २॥
 माय २॥ ॐ निविद्याकृत्वादिअष्टमूर्ति
 नाद्यादियावार्क ॥ ॥ उंक्रागिवकृत्वा
 यशगिवकृत्वाधियनयनूदाय २॥ उंक्रा
 ॐ ॥ मूर्त्याधियनयसर्वाय २॥ उंक्रा
 वक्रिमूर्त्य २॥ वक्रिमूर्त्याधियनयय
 धुयनय २॥ उंक्रायजमानमूर्त्य २॥
 यजमानमूर्त्याधियनयउग्रय २॥ उं
 क्रोक्तलमूर्त्य २॥ क्तलमूर्त्याधियन
 यनूदाय २॥ उंक्रोक्तलमूर्त्य २॥ क्तलमूर्त्या
 उंक्राश्चामूर्त्य २॥ ॥

द्वियमयरुवाय २॥ ॐ कौ वाय मरुय २॥
वाय मरुया द्वियमय ६॥ ५॥ नाय २॥ ॐ
कौ ६॥ न्द मरुय २॥ ६॥ न्द मरुया द्वियमय
महादवाय २॥ ॐ कौ ख मरुय २॥ ख मरुय
द्वियमय रुमाय २॥ ६॥ निधिवनत्वादि
विन्यासः ॥ यीवादिस्तान् ॥

ॐ कौ वक्राधु मरुय २॥ वक्राधु मरुया द्वि
यमय यन वक्रा ६॥ २॥ ६॥ स्यादिदिकमा
ध्या ॥ ६॥ न्दिय ६॥ विगतिन खरुद ॥ मूर्द्धि ॥

॥ ॥ यदिगतिन खरुं मरुय न्यास ॥ ६॥

ॐ कौ जैक रवंगं दं ॐ आयथियाय नञ्
वायाका ५॥ तम नञ् गुष्टाया ॥ १॥ ॐ कौ
६॥ वं ६॥ मं ६॥ ६॥ ग व स्य न्नय न मर्गध
तम नम ध मा र्या ॥ २॥ ॐ कौ ६॥ ६॥ ६॥ ६॥
६॥ त व व र्म मा स न धि न म द म ज्ञा तम न
म ध मा र्या ॥ ३॥ ॐ कौ मं ६॥ थं द ध नं मं
वा द न व द्वा ॥ ६॥ जि द्वा न द म तम नञ् ना
मि का र्या ॥ ४॥ ॐ कौ ६॥ यं रं वं रं मं ६॥
म ना व द्धि न रं का न वि रु त्म न क नि ष्ठा
र्या ॥ ५॥ ॐ कौ जै यं नं ल वं गं मं रं रं

ॐ शिवनादान आनन्द आत्मन विष्णो
मात्मन अम्नायरु ॥ ४ ॥ ॐ ह्यादिहृदय
दिकनाहं न्यास ॥ ॥ धार्मिक न्यास ॥ मान
नीश्वरनामि ॥ अदिगामि नत्नसाधयतु ॥
ॐ ह्यधीनत्वाय श ॥ १ ॥ ॐ ह्यआयतत्वाय
श ॥ २ ॥ ॐ ह्यग्नितत्वाय श ॥ ३ ॥ ॐ ह्यवायत
त्वाय श ॥ ४ ॥ ॐ ह्यआकाशतत्वाय श ॥ ५ ॥ ॐ
ह्यगन्धतत्वाय श ॥ ६ ॥ ॐ ह्यरूपतत्वाय श ॥ ७ ॥ ॐ
ह्यसंख्यतत्वाय श ॥ ८ ॥ ॐ ह्यसंयम्यतत्वाय श ॥ ९ ॥ ॐ
ह्यसंयम्यतत्वाय श ॥ १० ॥ ॐ ह्यसंयम्यतत्वाय
श ॥ ११ ॥ ॐ ह्यसंयम्यतत्वाय श ॥ १२ ॥ गुण
दियुक्तीर्न विन्यस्त ॥ ॥ ॐ ह्यसंयम्य
तत्वाय श ॥ १३ ॥ ॐ ह्यसंयम्यतत्वाय श ॥ १४ ॥
ॐ ह्यसंयम्यतत्वाय श ॥ १५ ॥ ॐ ह्यसंयम्यतत्वाय
श ॥ १६ ॥ ॐ ह्यसंयम्यतत्वाय श ॥ १७ ॥ ॐ ह्य
संयम्यतत्वाय श ॥ १८ ॥ गुणदिनारखीर्न विन्य
स्त ॥ ॥ ॐ ह्यसंयम्यतत्वाय श ॥ १९ ॥ ॐ ह्य
संयम्यतत्वाय श ॥ २० ॥ ॐ ह्यसंयम्यतत्वाय श
॥ २१ ॥ ॐ ह्यसंयम्यतत्वाय श ॥ २२ ॥ ॐ ह्यसंयम्य

कायकृत्याय ॥ २३ ॥ ॐ कौंयकृतिरुत्तराय
 ॥ २४ ॥ नास्यादिहृदयार्कविन्यासम् ॥ ॥
 ॐ कौंयवृषकृत्याय ॥ २५ ॥ ॐ कौंवागकृत्
 य ॥ २६ ॥ ॐ कौंनीकृत्याय ॥ २७ ॥ ॐ कौं
 कालकृत्याय ॥ २८ ॥ ॐ कौंकनकृत्याय ॥
 ॥ २९ ॥ ॐ कौंमायाकृत्याय ॥ ३० ॥ हृदया
 दिनालमूलान्कविन्यासम् ॥ ॥ ॐ कौं
 विद्याकृत्याय ॥ ३१ ॥ ॐ कौंविशुद्धकृत्याय ॥
 ॥ ३२ ॥ ॐ कौंस्वप्नकृत्याय ॥ ३३ ॥ ॐ कौंस
 दागिकृत्याय ॥ ३४ ॥ ॐ कौंशक्तिरुत्तराय ॥
 ३५ ॥ ॐ कौंशिवकृत्याय ॥ ३६ ॥ नालमूला
 दितलायार्कविन्यासम् ॥ ॐ निवद्विहृत्तः
 रुद ॥ ॥ ॐ कौंक्षेत्रज्ञनाय ॥ कनक
 ल ॥ ॐ कौंयंकरुयवृषाय ॥ अनामिका ॥ ॐ
 कौंनअध्यानाय ॥ मध्माहृति ॥ ॐ कौंवैवा
 मयवाय ॥ कर्कशाहृति ॥ ॐ कौंलंसदाज्ञा
 नाय ॥ अंगुष्ठा ॥ ॐ निवकुकरन्यासम् ॥ ॥
 रुनवाहकन्यासम् ॥ ॐ कौंअगिताहृमहुरुन
 वाय ॥ नासिका ॥ ॥ ॐ कौंनूनमहुरुनवाय
 ॥ हृदय ॥ ॥ ॐ कौंवधुमहुरुनवाय ॥ मूर्द्धि

॥३॥ उँकौं कौंकाधमहारुनवायश ॥ गीवार्या ॥
 ४॥ उँकौं डनमनमहारुनवायश ॥ डावा ॥ ५॥
 उँकौं कयालीगमहारुनवायश ॥ नग ॥ ६॥
 उँकौं रुषगमहारुनवायश ॥ ललाटा ॥ ७॥
 उँकौं सीहानमहारुनवायश ॥ गिखाया ॥ ८॥
 ॐ गिरुनवाय ॥ न्यासरुदसमाय ॥ ॥
 उँकौं लंसधाजागायश ॥ रुदय ॥ उँसधाजा
 गा ॥ १॥ उँकौं वैवामदवायश ॥ निन ॥ उँवाम
 मद्यसविगा ॥ २॥ उँकौं नैजूद्यागायश ॥ गिखा
 या ॥ उँयाकनूदगिवा ॥ ३॥ उँकौं यंकल्यनूवा
 यश ॥ कवच ॥ उँयल्यनूषी ॥ ४॥ उँकौं कैंळी
 गमनायश ॥ अमु ॥ उँकमीगमनी ॥ ५॥ यंत्रव
 कवच ॥ ॐ गिरुनवाय ॥ ॥ अष्टगि
 रिकलान्यास ॥ उँकौं गगिन्येश ॥ मूर्ध्नि यू
 र्वा ॥ उँकौं अरुदायेश ॥ मूर्ध्नि दक्षिणा ॥ २॥
 उँकौं ॐ द्वायेश ॥ मूर्ध्नि यन्त्रिमा ॥ ३॥ उँकौं म
 नीचयश ॥ मूर्ध्नि डलुन ॥ ४॥ उँकौं कातिन्य
 श ॥ मूर्ध्नि मध्या ॥ ५॥ ॐ ह्यगमनकलाममा
 यमिनि ॥ ॥ उँकौं निवृत्तायेश ॥ पूर्ववर्क
 ॥ १॥ उँकौं यमिस्त्रायेश ॥ दक्षिणवर्क ॥ २॥ उँ

कौविद्यायेश॥पश्चिमवक्त्र॥३॥ॐकौमन्त्रा
येश॥उरुवक्त्र॥४॥ॐतिगन्धर्वकला
॥ ॥ॐकौमनसेश॥मूर्ध्निउद्य॥१॥ॐकौमा
हायेश॥हृदय॥२॥ॐकौकामायेश॥पीवाय
॥३॥ॐकौनिष्ठायेश॥धाम॥४॥ॐकौबाध
येश॥नारि॥५॥ॐकौमृष्येश॥अ०वा॥६॥
ॐकौवृक्षायेश॥यष्ट॥७॥ॐकौरुष्मायेश॥
उरु॥८॥ॐतिअद्यानकला॥ ॥ॐकौ
नक्षत्रेश॥गुण॥१॥ॐकौनकार्येश॥लिङ्गा
॥२॥ॐकौनकथेश॥दक्षिणवक्त्र॥३॥ॐकौया
त्येश॥वामावक्त्र॥४॥ॐकौकामायेश॥दक्षि
णवक्त्र॥५॥ॐकौसमसिन्धवेश॥वामज
नो॥६॥ॐकौक्रियायेश॥दक्षिणजघ्ना॥७॥
ॐकौवृक्षायेश॥वामजघ्ना॥८॥ॐकौवर्ममयि
श॥दक्षिणरुद्रा॥९॥ॐकौनाथेश॥वामरु
द्रा॥१०॥ॐकौकामन्येश॥कथी॥११॥ॐकौम
रुन्येश॥दक्षिणयात्र्या॥१२॥ॐकौक्षालाय
श॥वामयात्र्या॥१३॥ॐतिवामदवक्त्र
॥ ॥ॐकौसिद्धायेश॥दक्षिणयात्र्या॥१४॥
ॐकौविद्यायेश॥वामयात्र्या॥१५॥ॐकौयूक्त

येश॥दक्षिणरुक्म॥३॥ॐ कौंक्षेत्रेश॥वामरु
 म्म॥४॥ॐ कौंक्षेत्रेश॥नामपूठ॥५॥ॐ कौं
 कान्नायेश॥गिरिस॥६॥ॐ कौंक्षेत्रेश॥दक्षि
 णरुक्म॥७॥ॐ कौंक्षेत्रेश॥वामरुक्म॥८॥
 सद्भाजनादि॥ॐ निःशुक्तिगणिकता॥ ॥
 ॐ कौंक्षेत्रेश॥गिरिरुक्मद्विषयसदाः
 गिराय॥ॐ गिरानामागि॥१॥ॐ कौंक्षेत्रेश
 रुक्मद्विषयविष्णुव॥२॥ॐ कौंक्षेत्रेश॥आत्म
 रुक्मद्विषयवक्त्र॥३॥ॐ वक्त्रात्मनः॥३॥
 ॐ निःशुक्तिगणिकता॥ ॥विधिर्ध्वजवयूजाय
 या॥ॐ कौंक्षेत्रेश॥विष्णुव॥ ॥विधिर्ध्वज
 वयूजाय॥ ॥गणिक॥यूक्षिक॥यवक्ष
 न्यादि॥नालिकनादि॥विधिर्ध्वजवयू
 नक॥सक्तियागाय॥रुक्मद्विषय॥
 ॐ निःशुक्तिगणिकता॥ ॥विधिर्ध्वजवयूजाय॥

याम॥स्नानादि॥निरुक्तकर्मा॥नेमस्यद्वानायः
 स॥वतिविषय॥यूक्षिक॥निरुक्तकर्मा॥नेमस्यद्वानायः
 य॥ॐ कौंक्षेत्रेश॥ ॥विधिर्ध्वजवयूजाय॥

विधिधर्मचक्रसाधनयाय॥ ॥ कलशः
प्रतिष्ठासंज्ञाकृतित्वयाय॥ ॥ तन्माय
थाकर्मा॥ ॥ थनादिवन्मास॥ ॥ तन्मा
दवानिकर्गवा अर्घ्याप्रसमवितन॥ यथ
विधानमरुतगुह्यादियाद्यकिष्कार्ककान
यन्॥ विसृज्यमलवासाय॥ ॥ यूनः क
धुनिकर्गवा॥ अमृकदवस्य मूलमनुध
गर्गवासरुमवाकृत्वायूर्ध्व॥ ॐ यूनः कृत्वा
स्यविमृषाविमृषिन्नदादाययथिवीअस्व
दानम्॥ यामेययश्चन्द्रमसिस्वधारिस्मृ
धीवामाः अनूदिः ययकन॥ यथाकृषीनास
दयद्विषगाच्चक्षुः॥ ॐ निजिवन्मास॥ ॥
दवयद्वनययवतिविय॥ ॐ गधनांवा॥
ॐ ॐ मानूदाय॥ ॐ नभाव॥ ॐ अमृः अमि
॥ ॐ याकृत्वा॥ ॥ यूनः कृत्वा॥ ॐ ययकृत्वा
॥ ॐ ययामि॥ ॐ ययकृत्वा ॥ ॐ ययकृत्वा
॥ ॐ ययकृत्वा ॥ ॐ ययकृत्वा ॥ ॐ ययकृत्वा
॥ ॐ ययकृत्वा ॥ ॐ ययकृत्वा ॥ ॐ ययकृत्वा
॥ ॐ ययकृत्वा ॥ ॐ ययकृत्वा ॥ ॐ ययकृत्वा
॥ ॐ ययकृत्वा ॥ ॐ ययकृत्वा ॥ ॐ ययकृत्वा
॥ ॐ ययकृत्वा ॥ ॐ ययकृत्वा ॥ ॐ ययकृत्वा

यनाऋक्षसुः आय्यायनाऋक्षसुः
 य्यायनाम॥ यरुक्षुनीयादास्त्रिनकरुः
 आय्यायनानिष्ठायायनानकरुगुद्राउगम
 हाहा॥ डावधनायस्वस्वधिनमेन० हि०
 सा॥ ययिरुत॥ भर्क॥ उंययिरुत॥ स्मायनी॥
 उंआयूर्दनायस्माहा॥ उंआयूर्यरुनकल्य
 नाऋस्माहाया॥ धायरुनकल्यनाऋस्माहाय
 नायरुनकल्यनाऋस्माहायानायरुनक
 ल्यनाऋस्माहायानायरुनकल्यनाऋस्मा
 हासमानायरुनकल्यनाऋस्माहायय
 र्यरुनकल्यनाऋस्माहाया॥ रुंययिरुनक
 ल्यनाऋस्माहायान्धरुनकल्यनाऋस्माहा
 मनायरुनकल्यनाऋस्माहात्कायरुन
 कल्यनाऋस्माहाययन्मायरुनकल्यनाऋ
 स्माहायानिर्यरुनकल्यनाऋस्माहायय
 रुनकल्यनाऋस्माहायय्यरुनकल्यनाऋ
 स्माहाययययरुनकल्यनाऋस्माहा॥ ॥
 आयूर्दनी॥ ॥ नरुसयययययययययय॥
 उंरु॥ अग्निर्देवतागमयणीरुन्दसस्माहा॥
 उंअम्भंअम्भि॥ नारु॥ ॥ उंरुव॥ उयिरुन्द

[illegible]

गुह्यगिम्हा॥ कवच॥ उं कौं नमः यायवमरु
॥ उं विष्णवे॥ नमः॥ उं कौं ॥ अस्माय रुद्र॥ उं न
मस्तु न॥ अस्तु॥ ॥ ॐ निवदय रुद्र गन्ता
महा॥ ॥ यनादिवयूजायाय विधिर्था अस्तु
निविस्त्राया॥ ॥ चन्द्रमयाय विधिर्था॥
गान्तिक यष्टिक॥ यवधन्यादि॥ नास्तिक वा
दि॥ विधिर्थाय रुद्र धनके॥ ॥ सक्तिया नाय
रुद्र धनकाया॥ ॐ नित्ये अस्तु दिन विधि॥
वाग्विस्तनिसिबलिविय॥ ॥

यान्तानादि निर्यकर्मनेमस्तु द्वात्रायस्
वलि वियवयूर्वद्वार्निर्मद्वानयूजायाय॥
द्वथयाथादा॥ ॥ विधिर्थाय रुद्र स्वाय॥ विधि
र्थावन्साधनयाय॥ कस्तुनाय निष्ठासंक्षा
नित्ययाय॥ ॥ कस्तुनाय अस्तु कर्म॥ ॥
यनाध्वजासाधन॥ उं यविष्णवे॥ यस्तु गन्ता
ना॥ उं कस्तुनाय॥ अस्तु दान॥ उं त्वमस्तु
रुद्राणि कस्तुना॥ उं अथा अस्तु नाना॥ ताम
विस्तामनयून वास्तु निवदनस्तु रुद्राया॥
ध्वजायूजनी॥ अस्तु नी॥ उं कस्तुना जाति॥ उं द

वस्यत्वा॥ॐ अस्मिन्नात्मा॥ॐ अस्माकमिन्द्र॥
अवाहनादि॥ धृय दाय॥ रुत नवद्या॥ य
निष्ठा॥ॐ मना इति॥ आ इति विस्मयात्वा॥
ॐ अस्माकमिन्द्र॥ ॥ यं वारिष्ठकयूजा ॥
ॐ यारुति॥ रुता॥ॐ यूनस्त्वा॥ यया॥ॐ मन
इति॥ लाजा॥ॐ मा कानामिन्द्रम्यनिष्ठा
ॐ द्यावृषायमा॥ धृय रुमुनायाद् ॥ यून
युषामनसाभादमाना॥ हस्त्रादवा॥ अमु
नामादयनाम् ॥ माद॥ॐ शिवानामा॥ अ
क्षर॥ ॥ यनागइति॥ धर्मा॥ कृष्णका
याव॥ॐ द्वाधर्मादि॥ धर्माय स्वाहा॥ॐ
वन्दमा॥ अयुक्तनासूय॥ धर्मावतदिवि॥
प्रथिमिगइमदलम्यनस्यरु॥ रुद्रिगि
कनिष्ठादन् ॥ वन्दमधुला॥ ॥ॐ अंग
नादिसद्या॥ जगत्कलाय॥ॐ नववायव
॥ धर्मा॥ ॥ॐ द्वाधर्माय मधुलाय
व॥ॐ यश्च सगत्वाय॥ॐ कक्षासि॥ अ
मनसात्मा॥ॐ द्वा आकाशमधुलतअयु
धिस्तमिगत्वाय॥ॐ नमः॥ कलगाः
रागमा॥ ॥ॐ द्वायनम्वक्त्रवृत्तिन

वरुणश्चिह्नत्वाय॥ॐ सर्वत्र कस्तूरयिन
 नादनादान्निलीजनस्तूरयिनस्वाहा॥ ॥
 ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं
 ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं
 ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं
 ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं

व्यायालियालाहानसवननस्वस्तिकवाय
 लखनखायचन्दनादिदक्षिणाश्वरुंठिन
 वक्राय॥ ॥धवधायनयहूनसायाजाः
 याहनयन॥विसर्जनयादाव॥ ॥नव
 काथसुनर्तवादि,धु,डावधी,लाहक
 थारसुनर्तनन्यासयाय॥ ॥

बुद्धदत्तसादशकर्मोत्पन्नदत्तं ॥ दत्तया
मूलमनुदात्तयन्तध्वनन ॥ उंकोबुद्धम
लोनागिनादवकायस ॥ उंष्टुष्टुष्टुष्टु ॥ त्व
यविसर्ज्जनयाया ॥ ॥

धर्मेतिगच्छतिद्विजाद्विपुत्रयंत्राहिवकयाः
व३ कायादादवसदायकशादवयाद्ववनय
रुमाननगच्छतिथियकंवाक्यावक ॥
रामलकृष्णलीखकायावगच्छतिथियकः
दवयाकनन ॥ ॥ वनरुमयदितिसूव

धूलिकमच्छकलशदानी॥ दानव्या॥ यज
मानन॥ ददस्वयूनः कृगिलजलकल
शयजमाननजानकं वाक्॥ वावाकल
खादि॥ अद्य॥ ॥ उंरुगवन्सर्वरुगयूर्य
साधायनिनिर्मिर्गं। नस्यार्धयूसमावायास
वर्धकलशध्वजं॥ यत्रमानन्दयूनश्रद्धा
यूननवगसा॥ टीकयामिमहाविष्णागृष्ट
कमिधूसूदन॥ नाष्टमानिकययीनाजास
रिषाः सूर्यजासुथाहमलक्षयदाननय
धंकाकिगुधध्वजं॥ यावरुगयूर्यसूया
ध्वजयववर्धुनी। नावयुगगरुमानिः
धिवलाकमरियन॥ यावच्चन्द्रदिवाकनः
यरुगयावामाङ्गलानिरुसायावत्सूरि
माचनः यरुगयस्त्रिभुवृथीकलाकेला
लागिनिजायतिः सूर्यमनः यावत्सदासाग
नास्वर्धुसत्कनः ध्वजनिवूयमवगाना
वच्चिर्वाकिष्टु॥ ॥ धीधीधीअमूकरुः
दानकयीनयउरुयमरुसम्यदद॥ गजवि
धदवयियकंथीनायनध्वजार्थीवारिषकं
॥ ॥ व्यायातिनमालकाजोदायथादाव

न॥ रुगिति स्वन॥ उं आधनग क ह्यादि
॥३॥ उं कौं कौं कूं वास्त्राधियनयवक्र (धर
॥ ॥ धनवकाथास्वन॥ धरुआदिनमा
लकात॥ विधि ध्यानासामिर्जनयनय
न॥ निर्मजनयनुचाय॥ नयूयागनकाय
या॥ ॥ यनः स्मिनादुक्तिविय॥ मूलमनु
हागर्तवा॥ नायकाय ध्रुवानयधु॥ वद॥
उं स्मिलारुवची॥ व्यायासि सरु॥ दवस्त्राय
नरुनसादवनिस्मिन्नरुन॥ धनर्तिथरु
वन॥ गहूतिस्मिन्नरुन॥ ध्रुवाकाथाया
वस्मिन्न॥ ॥ उं अयवानारुकल्य
ह्यादि॥ उं यमिस्मसिदवग॥ सयमिस्मरु
वत्त्रिय॥ सानिध्यायमिपुनक॥ यजामाना
ववर्द्धन॥ गन्नामु द्विपदनि र्थं गन्नामुः
ववर्द्धन॥ गन्नामु सर्वलाकानां गन्नाया
स्मात्तथेवचायजमानसरुखार्य॥ यस्य
प्रसवान्धव॥ नरुनसर्वदवानां दधध
यनमामुन॥ यावनुगयनसूर्य॥ ध्रुव
वसवर्द्धनि॥ नावद्वर्षसरुमागि गिवसा
कमलीयन॥ रुमलक्यदानन॥ यूर्ध्वका

टिगुर्धध्वजा॥यावच्चन्द्रस्यसूर्योस्यमदनी
 स्यसागना॥यावदाकाशगङ्गायनावर्त्त
 उक्तिवारुवा॥वद॥उंक्तिवारुदवीद्वगञ्जा
 धुरुववाञ्जर्वसायथूरुवसूयदस्त्वम॥य४
 पूनीषवारुन॥मूलमनु॥उंक्तिवारुव३॥॥
 रीयारुषक॥यनिष्ठाकल॥भरुषक॥उं
 वस्यत्वा॥रुत्ता॥उंया॥रुत्तिना॥ससा॥उंयू
 नस्त्वादि॥नाय॥उंमना॥रुत्ति॥उंमाद॥
 उंक्ताकानामि॥स्वान॥उं॥उंदविष्णू॥अरु
 त॥ध्वजाकाटिदरु॥यत्तमाननदत्ताय
 न्दमधुलकुमदत्तालाहानरुय॥यैव
 तानययक॥॥॥॥नकानवादावध्वजा
 यावायिजादावयत्तमाननकर्णनयाय॥
 उंवक्रार्णकर्णयामि॥उंविष्णूकर्णयामि॥
 उंनूदीनकर्णयामि॥उंयत्तायर्णकर्णयामि॥
 उंदवान्कर्णयामि॥उंयत्तान्कर्णयामि॥
 उंनागभन्कर्णयामि॥उंगन्धर्वान्कर्णयामि॥
 उंअय्यासकर्णयामि॥उंअसूयान्कर्णयामि॥
 उंकुत्रान्कर्णयामि॥उंसूर्यान्कर्णयामि॥
 उंसूर्यन्कर्णयामि॥उंरुववान्कर्णयामि॥

ॐ स्वप्न नर्कयामि॥ ॐ विद्याधन नर्कयामि॥
ॐ अलधन नर्कयामि॥ ॐ आकाशगमि नर्कय
ॐ निवाध नर्कयामि॥ ॐ जीवा नर्कयामि ॥
ॐ याय कर्मत्र नाय स्मो नर्कयामि॥ ॥
अष्टिष्टेव वणिष्ठध्रुयलस्यध्रुवकुशुक्ता
रुनदाजाविष्कमिष्टयतनाधमरुनृषि॥
सनकश्चसनन्दश्चरुणीयश्चसनागन॥
कपिलश्चासुविष्टेववाहूयश्चरुणीयश्च॥
सर्वेनरुफिमया नुमदरुना वनासदा॥
कथावा लानलसामाया मागिष्ठा लावहिष
द॥ आश्रयाभामयाया नु रुफिस्त्रयिमा म्
नानवकषसमसूया ननासूचयसिमाया
वान्धवावान्धवायथवान्धुनानिवान्धवाय
नरुफिमखिलायानुयधामरुनिवीरुनिष्ठा
मानकायिह नर्कयनयाया॥ ॥
दवायसवादावधुजावाचयाया॥ हामलक
गलखकायावधुजाथियकंदवस्काना॥ न
नदुजादान॥ दानर्वा॥ ददस्वब्रह्मवावाह
कल्ययादि॥ कृगनिलजलकायावधुजा
जीवावक॥ ॐ रुगवन्दवदवगमलाश्च

ॐ वहुङ्कुआयथासक्ताध्वजंदरुं यीयनाम्ना
 ध्वस्तदनः॥ ॐ वर्गमहाध्वजंदरुं कृत्वा वायं
 वनगिर्क॥ किंकिनीयुगसंयन्तां मयूत्रक
 ग्रहविर्ग॥ एतन्नेव विमानन सर्वदवाय
 निस्सिर्ग॥ सर्वत्सन्नसहस्रेकं भादकदिवि
 नाजवत्॥ ध्वजमालाकलंकयो द्यथार्थ
 सादमाननगधायथाध्वजास्तु कंवायि दिवि
 दिक्षु निवधायत्॥ यथादिवस्तुगन्तुनाम्ना
 निस्संख्यां विद्यतां तावद्युगसहस्रानिः
 विस्मृतां कमहोयत्॥ ॥ श्री श्री श्री नमः
 करुणानकायध्वजादनं दुह्यमहं स्यद
 द॥ दवधियक॥ उंकादात्॥ यिनाकाया
 वदवलस्त्रवाकनदायकं दवशुकामधि
 यकंदवमधियकं॥ यंचसूक्तानगरुः
 निमवस्यंतादावआकृति॥ मूलमन्त्रक्षत्र
 दिवि॥ गरुनियार्ताध्वजायार्तां आकृतिवि
 स्मृत्वाय॥ ॥ उं आजिघ्रक॥ गरु॥ दव॥
 उं यार्तनूद॥ उं शार्मान॥ उं अस्माकमिष्ट
 ॥ ध्वजा॥ यूनवाकृति॥ नायकाया॥ उं मना
 कृति॥ यकिष्ट॥ स्वर्णमंत्वाय॥ यंचसूक्तः

काकाकाया॥ ॥ गङ्गालिप्तमहं आनमि॥ ॥
मात्रकादिगयूडाया॥ ॥
थनादवयूडा॥ विधिथर्यवामनस्तान॥ च
न्दनादिना॥ विदनी॥ ॥ नामसिय३॥ मूर्थाद्य
न्यास॥ अर्घ्याद्ययूडा॥ आत्मयूडा॥ ॥
आमनी॥ उंक्रां आध्वर्युः कप॥ उंक्रां अनर्क
सायश॥ उंक्रां यद्मासायश॥ उंक्रां वृषरुमाः
यश॥ उंक्रां नात्रायश॥ उंक्रां यद्मायश॥ उंक्रां
यत्रायश॥ उंक्रां कङ्गलायश॥ उंक्रां कर्षिका
यश॥ मूलमङ्गुली॥ प्रियाङ्गुलि३॥ अष्टरुत्र
वमारुका॥ उंक्रां ऊयायश॥ उंक्रां विजयायश
उंक्रां अजिमायश॥ उंक्रां अयत्राजिमायश॥
उंक्रां अमनीश॥ उंक्रां अमिनीश॥ उंक्रां मा
रुनीश॥ उंक्रां कर्षणीश॥ ॥ उंक्रां अत्रयु
येश॥ उंक्रां द्यौद्ययेश॥ उंक्रां वमरुनादा
येश॥ उंक्रां क्राममयेश॥ उंक्रां दममयेश॥
उंक्रां द्यौवलायेश॥ उंक्रां नवयेश॥ उंक्रां क्रो
ययमायेश॥ उंक्रां द्यौवात्रायेश॥ उंक्रां वम
मायेश॥ उंक्रां द्यौरुमायेश॥ उंक्रां वमरु
वलायेश॥ उंक्रां नऊयायेश॥ उंक्रां नविज

याये२॥ उं कौं कूं अजिनाये२॥ उं कौं कूं अयवा
जिनाये२॥ उं कौं सें वला कटाये२॥ उं कौं नें
महा कटाये२॥ उं कौं नें धुकाये२॥ उं कौं सें
सहा वि॥ २॥ उं कौं नें विकटाये२॥ उं कौं सें
कटा वि॥ २॥ उं कौं नें दृष्टि नो२॥ उं कौं
कूं धुकाये२॥ उं कौं नें यथाहा वि॥ २॥
उं कौं सें अस्माये२॥ उं कौं सें सहा वि॥ २॥
उं कौं नें रुद्र कालो२॥ उं कौं नें रुद्राय२॥ उं कौं
नें रुद्राय२॥ उं कौं यें रुमाये२॥ उं कौं क१ सु
रुद्राय२॥ ॐ नित्य नो दीव्ययु॥ ३२॥
॥ ॥ उं कौं आवा रुनाय रुद्राय२॥ उं कौं
सहा जालाय यादायाये२॥ उं कौं वाम दवा
य निवाधाय२॥ उं कौं नें नृषाय समुखिक
वधाय२॥ उं कौं सहा या दार्घ्य२॥ उं कौं वाम
दवाय वसुध निधनी२॥ उं कौं नृषा नाय ग
न्धलय नाय२॥ उं कौं नें नृषाय चन्द्रलय
नाय२॥ मूल न प्रिया रुति३॥ धूय दीय॥
नेवाय॥ जाय म्हाय॥ ॥
यश्च हरिश्च क॥ उं यारुति॥ रुल॥ उं यनस्व
यु॥ उं मना रुति॥ साजा॥ उं स्त्रा काना॥

माह॥ उं निवानामा॥ अरुह॥ ॥
वन्दामयायविधिर्था॥ भानिकयष्टिक॥
यवधन्यादि॥ नालिकवदि॥ विधिर्थायरुध
नक॥ ॥ सीनियातायरुध्मादावणाथा॥
हूतियष्टमविधिं समाक॥ वाणोजागवनी॥

यागस्नानादिनिश्चकर्मनेमस्यद्वावायस
वसिवियावपूर्वद्वारं निर्यादावयूजायाया॥
द्वयथाथाद॥ ॥ विधिर्थायरुस्त्राय॥ वि
धिर्थावन्माधनयाय॥ कलगायकिष्ठासीः
दादुकिर्त्तयाय॥ ॥ यथाकर्मसदवय
जायाय॥ दवयगाआदुकिविर्त्तयाय॥ ॥
वन्दामयायविधिर्था॥ भानिकयष्टिक॥
यवधन्यादि॥ नालिकवदि॥ विधिर्थायरुध
नक॥ ॥ सीनियातायरुध्मादावणाथा॥
हूतियष्टमदिनविधिं समाक॥ वाणिसनिमि
वसिविया॥ ॥

यागस्नानादिनिश्चकर्मनेमस्यद्वावायसव
सिवियावपूर्वद्वारं निर्यादावयूजायाया॥
द्वयथाथाद॥ ॥ विधिर्थायरुस्त्राय॥ विधि

अथ वनमाधनयाय॥ कलशयुक्तिश्चासिद्धादु
क्तिर्विद्याया॥ ॥ यथा कर्मसदवयुजायाय॥
दवयाताञ्जुक्तिविस्मिताया॥ ॥ वनरुम
यायविधिर्था॥ भक्तिकयष्टिका॥ यवधन्या
दि॥ नास्तिकनादि॥ विधिर्थायरूधूनक॥
॥ ॥ सीकियातायरूधूनकावताथा॥ हूनिः
अष्टमदिनविधिर्ममाय॥ नादिसनिमिवलि
विय॥

यागस्नानादिनित्यकर्मनेमयदावायम
वसिवियावपूर्वदार्वानिर्मादावयुजायाय॥
दथयाथद॥ ॥ विधिर्थायरूमाय॥ विधिर्था
वनमाधनयाय॥ कलशयुक्तिश्चासिद्धादु
क्तिर्विद्याया॥ ॥ यथा कर्मसदवयुजायाय॥
दवयाताञ्जुक्तिविस्मिताया॥ ॥ वनरुम
मयायविधिर्था॥ भक्तिकयष्टिका॥ यवधन्या
नादि॥ नास्तिकनादि॥ विधिर्थायरूधूनक
॥ ॥ सीकियातायरूधूनकावताथा॥ हूनिः
वमदिनविधिर्ममाय॥ नादिसनिमिवसिवि
य॥

यागस्नानादिनित्यकर्मनेमयदावायम

वलि विद्यावा॥ पूर्वद्वानिर्णयं द्वानयूजायाय॥
द्वथयाथद॥ ॥ विधिः (थयि) ॥ विधिः
थयि नूमाधनयाय॥ कतगय निष्ठासिद्धादुक्ति
लयाय॥ ॥ जिह्वकृद्विषय॥ यथाकर्म
सयाय॥ लयाहमसकसद्धिः १ क्रादुजुद्ध
नद्धिः १ कायाव॥ चश्ववादाव॥ यवामृग
नवासा॥ धिगर्हकय॥ खचनरुचन (धय
वजलवतजुति॥ लूयजमानयाध द्वा॥
धनकयाव द्वाद्वाकायानसकय॥ कर्णयर्क
कार्यवयनाका॥ छिनष्टा॥ नकचुष्टा॥ नकयू
ष्टी॥ ॥ यजमाननमूलदावसलीसाय॥
मद्युयदायक ३॥ दूकायदावदूकालवद्ध
या॥ ॥ धमधवया॥ चउ॥ ४॥ मस्काव॥ मासि
नीगदवाणीयाप्रिकादु॥ छिविद्यानतय
वकयर्निन्यास द्वादशभङ्ग प्रउद्ध॥ मूलम
उद्ध॥ मूलमनु १०५॥ नवात्मा १०५॥ नवात्मी
१०५॥ गकिमनु १०५॥ आहामनु क्षवण॥
मद्युकावनान॥ आहामनुदाय॥ घृणादूः
ति १०५॥ पूर्व॥ वद॥ ३॥ ॥ सरुमस्ययुक्ति
मासिसरुमस्यान्मासिसारुमासिसरुमाय

स्त्रा॥ ॥ देवयूजायाय आहूतिविस्मं स्त्रा
 या॥ ॥ वनरुहामयाय विधिर्था॥ ॥ गानिक
 पूष्टिक॥ यवधन्यादि॥ नालिकनादि॥ वि
 धिर्थाय हूधूनका॥ ॥ सक्तियाताय हूधू
 दावता॥ ॥ हूतिदसमदिनविधिर्माय
 ॥ नाथीकागवनी॥ ॥

याकमानादि निश्चकर्म नेमस्यदावायस
 वसिवियावयुर्वदार्निर्मादानयूजायाय॥
 हूथयाथा॥ ॥ विधिर्थाय हूधूमाय॥ विधि
 र्थादनुसाधनयाय॥ कलगायनिष्ठासंकाद
 कित्वायाय॥ ॥ यायविहूहामयाय॥ ॐ
 वागभुविदा॥ ॐ पृष्ठादिवि॥ ॐ धृक्वनीरु
 वनानामरुष्टिथार्वाय हूधूमधूदयसूयडा
 सा॥ द्यावापृथिवीववृक्षस्य धर्मोऽहविष्करि
 तः अजयवृक्षविग्रहसा॥ ॥ ॐ अथर्व॥ ॐ
 दीविष्॥ ॥ ॐ कौस्तुभस्वाहा॥ ॐ रुद्रस्वाहा॥
 ॐ सवस्वाहा॥ ॐ कौस्तुभस्वाहा॥ ॐ तन्ना
 अग्रिणि॥ ॐ सखीनामूय॥ ॐ अयाधग्रिणि॥
 ॐ यकसर्गनि॥ ॐ उदस्यमीववृक्षनि॥ ॥

वरुणादि॥ उं धारिना विध्वं वदमस्वाहा॥ उं
 यक्षुणादि विहावमस्वाहा॥ उं सर्व्यादिमः
 कृतास्वाहा॥ उं पूननूर्यानिवरुस्वः पूननः
 वरुणासुरवायूनर्नः पादगुंसूदवानन्रुहस्वा
 हा॥ उं स्मृतिनः ॥ उं आवृष्ट्या॥ उं दैविः
 ब्रू॥ ॥ उं दवर्कस्येनमावयजनमसिस्वाः
 हा॥ उं मनुष्यकृत्स्येनमावयजनमसिस्वा
 हा॥ उं पितृकृत्स्येनमावयजनमसिस्वाहा
 उं आत्मकृत्स्येनमावयजनमसिस्वाहा॥ उं
 सैनसयनमावयजनमसिस्वाहा॥ उं यज्ञा
 रुमना विदोऽथ कावयज्ञा रुमना विदोऽस्तस्य
 सर्वस्येनमावयजनमसिस्वाहा॥ उं कौरुव
 ग्नियथिवोमरुनस्वाहा॥ उं कौरुवाननिदः
 वायवमरुनस्वाहा॥ उं कौरुदिविस्वर्यायमरु
 नस्वाहा॥ उं कौरुवः स्वः वन्दमस्तनक्षत्राः
 ममरुनस्वाहा॥ उं कौरुवर्षाक्षधाम्निः
 दवर्क्यामयस्वाहा॥ उं कौरुवर्षाक्षधाम्निः
 क्षिप्ताग्निव्यामयस्वाहा॥ उं कौरुविद्युत्विज
 क्ववर्षाक्षधाम्निः मयस्वाहा॥ उं कौरुविद्युत्विज
 क्ववर्षाक्षधाम्निः मयस्वाहा॥ उं कौरुविद्युत्विज
 क्ववर्षाक्षधाम्निः मयस्वाहा॥ उं कौरुविद्युत्विज

मड दानाय स्वाहा ॥ ॐ कौण्डी नवधुं वा
 यागि च नृणां देव न समानाय स्वाहा ॥ ॐ कौण्ड
 यागि नृणां कनिर्जनीय नृवक्षन् नृणां यि च
 ननाय स्वाहा ॥ नृणां धाम कृति ॥ ॐ नृणां
 धाम द्विदह धर्माधिका नृणां जाय नृवक्षन्
 नृणां नृणां समनसा वरुणा स्यायि द्यामिद न
 णि नृणां यन्मृत्तय दकं य ७ कृत्तं नृवक्षन्
 कृत्तं य दामुध नृवक्षन् स्वाहा ॥ धम नृणां याथा
 नृणां कृति विद्या ॥ ॐ कौ नृनरु ॥ ॐ कौ
 नृनां धि वि कृत्तं नृनां मि स्वाहा ॥ ॐ कौ नृनां
 नृनरु ॥ ॐ कौ नृनां य नृमम स्वाहा ॥ ॐ कौ नृनां
 दत्तं कृत्य नृवक्षन् नृय धरि नृवक्षन् स्वाहा ॥ ॐ
 नृवक्षन् नृय विद्वन् नृन नृवक्षन् नृय धीमह
 नृवक्षन् नृय दया नृवक्षन् स्वाहा ॥ ॥ ॐ द
 य नृय नृय ॥ ॐ नृय नृय नृय नृय स्वाहा ॥ ॐ
 दम नृय नृय नृय ॥ ॐ नृय नृय नृय ॥ ॥
 ॐ नृय नृय नृय विधि ॥ ॥ नृय नृय नृय
 विधि ॥ ॥ नृय नृय नृय ॥ ॥ नृय नृय नृय
 नृय नृय ॥ ॥ नृय नृय नृय ॥ ॥
 नृय नृय नृय ॥ ॥ नृय नृय नृय ॥ ॥
 नृय नृय नृय ॥ ॥ नृय नृय नृय ॥ ॥

दशदिनविधिं समाक॥ नातिनिशिवतिविय॥

प्राणस्य नादि निख कर्म॥ नेमस्य दानस्यः
निविय दथथ॥ पूर्व दानादि दान कल गय
जा॥ विधिश्च दाम मय॥ घृता कृति कित्राः
कृति॥ ॥ वनसाधन ममान॥ ॥ कल
गयति शर्म द्वा कृति॥ ॥ दशवलिथाः
नं आ कृति॥ ॥ वाक्क गय जा॥ यजमान
यकिष्ठा॥ आचार्य यकिष्ठा॥ वद॥ उं वरु क
धृ॥ गमनिक यष्टिका॥ यव धन्यादि॥ ना
तिक नादिविधिश्च धनक॥ वाक्क गय न
मंकन्य॥ दिगभ चन वलियूजा॥ घृता दिय
वृत्तिका॥ घृता कृति॥ १०४॥ उं सर्व वाची॥
वउ॥ यादिक्रम॥ उं स्वस्ति नः सुधा स्यादि॥
वाक्क ददक्षि नादानं॥ वाचनी॥ वाचनादक
शिवशक्ति मन्त्र॥ ॥ वलिरुचनी॥ द्रवार्थि
स्वाद्यय॥ दशवलि विसर्जन॥ ॥ संभव
यामेनी॥ उं कर्म काम धृ॥ यविष्ठा काया
वयनितारिषक॥ उं सुमिष्टियान॥ यविष्ठा
माचनी॥ ॥ धनासादान दकायाचक ॥

बुद्धायतामिहलघनवासजाकनयावद
 दिक्षुवियः॥ ॥ नमःसंयुध्मकृतियाया॥
 आकृतिः॥ ॥ आचार्यनगरिमदयाध
 वाधृत्वा॥ यजमाननृधर्मपाठं धृत्वा॥ यध्म
 यथानिमिरिमन्त्रायवाञ्छलकृदामयह
 संयुध्मकृतिसमूहकृत्वा॥ उंदवागमः॥ ध
 वाञ्छामुखयाय॥ ॥ आसिद्धायदय॥
 दवानुकमनआशीर्वाद॥ ॥ उंअग्निम
 धि॥ अग्निर्ह॥ ॥ उंयस्यकूर्मा॥ यवर्ग
 ॥ ॥ उंदीर्घायस्त्राय॥ मधुतसथादस्त्रा
 नविय॥ ॥ उंदरिष्ठयद्रुह॥ बुद्धावि
 मर्कत॥ ॥ यधीनविमर्कन॥ ॥ उं००
 दंविष्णु॥ वंश्चाकृद्गुरुदावयनीकयासंख
 नहाय॥ वद॥ उंकस्त्राविमर्कनि॥ थर्मः
 हाय॥ ॥ उंअयाञ्छान्द॥ ॥ अरुया
 ननवदीसकयावकृद्गुरुययमनकृद्गुरु
 दावयनगथुदावमगद्वय॥ उंसमिहिन
 का॥ ॥ लाहाननयादमगयान॥ उंकनू
 याअग्नेसि॥ ॥ उंमैगमनिचक्रायायर्ग
 वाक्यालवक्रधर्मयध्मावर्ग॥ ॥

धनाञ्जवरुगत्मान॥ चतुर्वानञ्जगिसरु
समिलककाया॥ ॥ उं ग्रायधयम॥ ॥
अर्घ्याणादकनककुदायक३ अक्षमूख
य॥ यो॥ वद॥ उं यरूयरूगदु॥ ॥ दमा॥
उं गदु २ सूत्रधय॥ ॥ कदुआदिनवि
सर्जन॥ उं यानुदवगद॥ ४ सर्वयूजामादा
ययारूकी॥ ६०० कामयसिध्दर्थयननाग
मनायवा॥ उं उदयनमस॥ ॥ वक्रासि
दया॥ उं कृणायकर्म॥ ६२॥ उं अकृणायः
कर्मनस्वादा॥ नामूलदया॥ सयदाम॥
सवावसंधकसंवायनदय॥ वध्वध्वना
यावागिदकाकायावरुकाकयूय॥ ॥
नासिय॥ नासिकाया॥ दवकलसज्जदि
नविसर्जनयाया॥ ॥ वद॥ उं उदयनमः
स॥ थायश्च॥ नितवसिक्काय॥ यमकलः
शयिधसक्काय॥ नागयूयदयदधीक्का
य॥ ॥ ककायजमानादिधकयाय॥ य
रूसिदासनारुअस्वस्तिकासनयजमान
नृमचुनी॥ यजमानस्यात्यनामयाकृद
र्थनीनिधाय॥ ॥ शिवशक्तिशीलकी

अग्निधारा उर्ध्वकलश हाताधारं मूधकलशे

यजमानयाद्वनन॥ अरुि(गयजन्ताक
ल(गन॥ वक्तुविय॥ उं वसा॥ ४ यविक्रम॥ च
दन॥ उं यदयग॥ सिद्धन॥ उं स्त्रीकविठ॥
भारुनी॥ उं शंङ्कनिवध्न॥ सलग्नन॥ उं दधि
काया॥ यवसूत्रकाभूर्यसस्त्रानविय॥ उं
या॥ रुतिनी॥ ॥ थपुलावलाकन॥ थ
पुलित्वननचुवक॥ ॥ अशीर्वाद॥ क
लशहायद्वययूजावाति॥ ॥ अग्निकत
शंभाययार्ग॥ प्रिकानआवाउयार्ग॥ स्वः
सिकडासियार्ग॥ द्यदाहनीवियमासकः
स॥ गिवगकि कतसहाययजमानधीलक्ष
यजमानीहाय॥ सिध्मभूदहाय॥ आवति॥
उं नडासि॥ ॥ यगिषा॥ उं मनाहूति॥ उं पूर्व
वन्दनिरुति॥ दय्यभावलकन॥ मधुतनमस्क
नी॥ ॥ उं सर्वभंगलमी॥ कोमात्रीदर्शनी॥ क
कलयूजाधाय॥ ॥ साक्षीधाय॥ क्रममधु
लसंवल्लिमासंक्षाय॥ द्वादावसलग्ननक
यावगिवगकिभावन॥ ॥ त्रादिसकीः
मात्रीयागयायसकलकार्कधूनक॥ ॥
ॐ गिवलिङ्गस्त्रायनसुवर्णकलगधजा

वत्सारुत नक्षत्रादुग्नियक्त विधिः समाक ४॥ ॥

पूष्पकचतुर्थदिवसः चतुर्थी कर्म कर्षात् ॥
मूलकृष्णपाडरु नक्षत्रकृष्णदयक ॥ चतुर्था कल
गताहातय ॥ मातृकवतिगम्यासादि ॥ ॥
दिगकलगमयकसंज्ञयायादवनसासवि
नवाथलावलयरुसकलगतवागय ॥ कल
गदकसकलरुनी लखनरायावचन्द
नादिगय ॥ ॥ विधिः अग्नियक्तयाय ॥
अग्निसूयनसमूलकृष्णसंज्ञावकाय ॥ च
अग्निनिर्मोचुनादिष्वधनमूमात ॥ पूजनरुक्त
॥ ॥ अग्नियानाम ॥ उं गिराग्रयस्तारु ॥ उं क
यानश्चिग्नयथ ॥ विधिः मनुष्यकलगार्वती ॥
वासांरुकाकलगसमर्ककार्थैर्कैश्चकृष्व
दनपूजायाय ॥ वतिमातृकविधिः (र्थयाय ॥ धू
यादिस्तुगार्क ॥ यगिस्तु ॥ ॥ कर्तार्ययदासा
धनान्क ॥ घृतादुक्ति ॥ तिलादुक्ति ॥ वासांरुक्कर्म
थवरसक्तुनआदुक्तिविस्तीर्त्वाय ॥ वदथवरश ॥
कलगयगिस्तु ॥ मृष्ट्यादुक्ति ॥ ॥ यथक
र्म ॥ ॥ दवपूजायाय ॥ वाउसायत्रानन ॥

धूयादिस्तान्नाम॥दिव्यानाञ्जलि॥वददिव्या
 दाना॥ ॥यजमानाचार्यनविसर्जनयाय॥
 वाक्॥इति॥ ॥लंङ्कनयजमाननञान
 नूवायनस्वानलंखकायावधिस्यं॥वाक्॥
 उंमयायुर्वचसंस्त्राया नन्दाद्या॥यश्चदवता
 ॥सुयीनामुरुदायानि॥मयाञ्जुविसर्ज्य
 न॥युजिनयश्च निमाल्यरुद्धि कंचनूकील
 य॥चन्द्रेत्रायदवाययाय तारुगर्वाणिव
 ॥स्वस्मानवासारुर्वड॥ ॥मधुयसकया
 कृष्णसकायंस्त्रुकाकृष्णस्त्रियाकृष्ण
 दांयस्तवमाला॥नक्षत्रानिर्माल्यस्वानन
 स्यं॥(थलयननयायचुयुतिथिनासक
 लनद्वव(७२वीसकलंधतिवादकानथ
 ॥द्वन्द्वनवर्तिनस्यं॥थवज्वसर्गमयाज
 ॥थातासनयथासननय॥स्ववसनेवद्य
 याजकमधुलस॥नामयाकयादवनतः
 यनसुप्रिसूतप्रिकाणवायथातासनव
 दनादिकय॥युजन॥सूर्यार्घ्य॥युननम
 स्ताव॥न्यास॥उंक्रौंचंजुस्त्रायरुद्र॥६
 उंक्रौंचंरुद्रयायनम॥उंक्रौंचंविनम

स्वाहा॥ उं कौं चूं नि स्वाये वषट्॥ उं कौं चूं कः
 ववाय हूं॥ उं कौं चूं न प्र न याय वषट्॥ उं
 कौं चूं अस्माय रुद्र॥ न वंद दयादि॥ अर्घ्य
 या प्रयूजा॥ आत्मयूजा॥ ॥ अर्चन॥ उं
 आध्वन गच्छ यथादि॥ उं वृषासनाय न
 म॥ सिंहासनाय नम॥ त्रियाक्षरति॥ उं
 कौं चूं चूं चूं चूं धामहाया गुयन निम्मा
 ल्यवधुष्य वृषायाय नमः॥ ॥ महाया
 गुयन मूलन यूजन॥ चन्दनादिधूप
 दीया॥ आहुति॥ जाय॥ स्नात॥ पूजिर्गय
 निम्मा ल्यं रुद्रिर्गवन्कल्या॥ चधुष्यना
 यदवाय वीयर्ग रुगवान्निव॥ अर्चन
 धादि॥ ॥ विसर्जनवाक्य १००॥ गमनियू
 स्थियदनिर्णय प्रथो धनानि व॥ नाजावि
 कं माया नि सर्व सिद्धि रू लयदी॥ कर्मस्वाः
 यावद्विसर्जन न युति॥ ॥ वनन कलश
 नागवृक्ष॥ स्रष्टनाय या द्रुव कन्दि पूवा क
 था लक्ष्मण नाम या गमना द्रुव स्रष्टय क
 ष्ठाया॥ ॥ नैवद्य या कस्तान लक्ष्मण स्रवा
 य॥ ॥ अवधन्त्यादि विधि थं य रू धून क

कृष्णामिकायावमूलकृष्णसंज्ञा ॥ ॥
 आयात्रिनध्वजाकाकायक ॥ ध्वजास्वाचका ॥
 ध्वजदधुलक्षणायां ध्वजवृषत्राचकी ॥
 यथायद्रुजयाका ॥ ध्वजालुदेका ॥ १०८ ॥
 वर्षवर्धनध्वजावलाहकनयाययाग ॥ ॥
 ध्वजालनकी ॥ गरुडिनी ॥ ॥ कृष्ण
 खदयकावदानकावना ॥ ॥ यरुमान
 अरुद्रक ॥ साक्षि ॥ अय ॥ वसिष्ठा ॥
 नागिसकोमात्रीयाग ॥ ॥ निवृत्त ॥ वि
 धि ॥ समाय ॥ ॥

यूष्मन्मनादकृष्णननिवृत्तयाविधि ॥ ॥
 द्रव्यंवाचार्थनकृष्णयाद्वनालवृत्ति
 द्रव्यान्वियकाव ॥ कृष्णस्वस्मानयाचका ॥
 वसिष्ठ ॥ समयकाय ॥ लवृ ॥ सवाचका ॥ नः
 तिदकाथाकायावजलसिसक्त ॥ यानिक
 यावदवनन ॥ तद्वदयकलगावजिह्वाः
 यानवति ॥ याग ॥ गगन ॥ याग ॥ कोमात्री
 दीर्घार्थि ॥ स्वा ॥ कृष्णयाद्वन ॥ रुत ॥ सी ॥ ना ॥ व
 धुनादि ॥ विधि ॥ अ ॥ कृष्ण ॥ कर्म ॥ याय ॥

धृताकृति॥ नित्याकृति॥ ॥ वास्यकर्कलाय
॥ ॥ यथाकर्मसर्वधुयूजा॥ कृतसियाद
वनत्रयनयूय॥ (यदवनयागासनमि
धुलविकाशत्राय॥ वधुनादि॥ ॥
नासिया॥ सूर्यार्घ्य॥ ॥ वाय॥ यथाकार्यम
वार्थ॥ मत्वननरुत्मानदीयवारुनव
धुयूजाकर्तु॥ न्यासा॥ ॐ कौं वै अस्माय रु
द्र॥ ॐ कौं वां रुद्रयाय नमः॥ ॐ कौं वां नि
रुत्माना॥ ॐ कौं वां निखायेवषट्॥ ॐ कौं
वां कवचाय कू॥ ॐ कौं वां नरुद्रयाय वष
ट्॥ ॐ कौं वां अस्माय रुद्र॥ नर्वद्रयादि॥
अर्घ्यायूजा॥ अस्मि यूजा॥ ॥ आसना॥
ॐ आध्वनय कथय्यादि॥ ॐ वृषासनाय
नमः॥ सिंहासनाय नमः॥ क्रियाऋति॥
ॐ कौं वां वां वां वां श्रीमहायागुयनूनिः
माल्यवधेयै नमः॥ ॥ म
हायागुयनूतनयूजनी॥ चन्दनादि॥
धूपदीप॥ अर्घ्या॥ जाय॥ क्राव॥ धूजिर्
यऋनिर्मात्यै रुद्रिर्नववृकलया॥ वधु
ध्वनायदवाययीयर्गा रुगवान्निव॥

अङ्गगंधादि॥ ॥ आकृति॥ ॐ नमः ॥
 मृदा॥ यतिशः॥ ॐ मनाहृति॥ ॥ मृदं
 आतनि॥ नानिक॥ यष्टिक॥ विधिर्थाय
 इधूनके॥ ॥ दक्षिणशुक्लमात॥ ॥
 अहिवकसकगाढवतिष्ठस्वसिर्षयाय
 ॥ ॥ कृणुयामयाकां धृष्टामयादाया
 गुत्तिममस्तु कृवयकीमवाद्ययादावः
 स्वसिवन॥ ॥ स्वसिधीतमुक्तयावरु
 कृत्तिशियादाव॥ वाक्॥ ॐ अद्यादिवा
 नाह कल्यस्यादि॥ वाक्॥ ॐ मयापूर्व
 कर्तुमायानन्दाद्याह्यचिदवता॥ मृषी
 नंसुहृदं चैव मया अद्य विसर्जयन्॥ ॥
 वृथ॥ ॐ समुद्रगच्छ स्वाहा नानिद्रुः
 च्छाहादवः सविनात्रगच्छ स्वाहामिण
 वन्रभोगच्छ स्वाहां नाकगच्छ स्वाहा च्छा
 र्मिगच्छ स्वाहा यरुगच्छ रभार्मिगच्छ रदि
 वनरागच्छ रग्निर्वैष्णव नरुच्छुश॥ मना
 महादियच्छुदिवनधूमागच्छ उल्लुश
 निःपृथिवी मृसमानायुगस्वाहा॥ का
 लचक्रधूमिर्जुग्वाविय॥ यजमानादि

स्नानयाय॥ ॥ कलमिसलखकस्यजान
कावचवय॥ ॥ धनखनहाय॥ कलसा
व्रंदायाय॥ वलिया१०कवाले॥ ॥ यथाक
र्मसयमिष्टाइनसादवयूजा॥ ॥ थनाई
यूजा॥ ॥ आचार्यनवलिवियक॥ वि
धिर्धनक॥ कलसाहिषक॥ यूर्ध्व
द॥ गदिथाय॥ ॥ कामालीजाग॥ वी
रहाय॥ कलकान्क॥ ॥ कलमलन
वरुसायवाहनविधि१समाय१॥ ॥

दादिदकदाववर्षवर्द्धनकेलाभाहार
नयाय॥ गारुठयग्रुठ२गिवसकिक
लगावासाय॥ ग्रुठ१वायाकलसमूर्तिक
लगाय॥ ॥ वलिमातकागदागमय
सकीमातीवासाय॥ ॥ विधिद्वनव
लिविया॥ गिवसकिकलगाक्रमनादिव
लिजादिनमात्रकायूजायाय॥ ॥ विधि
थगिवागियरूयाय॥ ॥ यथाकृतिनिर्व
कृति॥ कलगायमिष्टासुखाकृति॥ ॥
यथाकर्मसटिकिनीलीसायावदकाय॥

विधिर्थादशकर्मर्थायाय॥ ॥टिकिनि
विसर्जनयायगन्धकलणी॥विधिर्थादव
पूजायाय॥धूपदाय॥ज्ञाय॥स्नातृत्वा
या॥ ॥थनाटिकिनिद्रुतया॥यज्ञमान
नकृष्णनटिकिनिधियकाव॥नृगुकेवा
सदानेदातृणी॥दवस्त्रकृष्णद्रुतया॥दद
स्त्र॥हमलकृष्णकायावटिकिनिवाक्य
या॥उंमुद्रवासाहकल्यत्यादि॥मासनेक्ष
त॥ॐदकलाणकसूर्मविचित्रकनका
कली॥नविर्ननऊरुनेव॥सर्वनद्रुगसंज्ञनी॥
सर्वतृत्वायेमेज्ञानं॥सानविष्टेकरावनीत्र
वनायमहेश्वरयप्रसन्नमनसामया॥शि
वायपूजकामनमना॥नथसूसिद्धेयोरुषि
तर्कमहादेव॥यत्कीच्यनमश्चनथा ॥
दवयाताआहुतिविष्ट्याय॥ ॥दिग
पूजाश्चाय॥आचार्यनदशवलिवियक॥
विधिर्थायद्रुधूनक॥ ॥यज्ञमानजुः
जुष्टिक॥साक्षिथय॥ॐनिवर्षवर्द्ध
नकंनसालोहनविधिःसमायक॥ ॥

ॐ नमो गणेशाय ॥ याग ४ यूनारिह ४ क
ननिय ४ कय ४ यऊमानसहिर ४ नृस्यगी
नविविधवाद्ययूनसुनगीर्थगत्वा ॥ ॥
नवमधुतमातिरवगा ॥ कतरिगृहीत्वा
उदवानाविश्वकर्मना ॥ निर्मिभायीसुने
यस्या ॥ कतगस्तनवाद्यन ॥ कतगस्तमू
श्ववक्रायावायामुमरुध्वन ॥ मूतडम
सिक्ताविष्म ॥ म ॥ क्षमा ॥ ग ॥ क्षमा ॥ ॥
गवामुदवना ॥ सव ॥ वृ ॥ सूर्यकिचडिदि
गी ॥ कक्षी ॥ उसागत्रा ॥ सफ ॥ सफ ॥ दीयामु
मसिक्ता ॥ न ॥ कणा ॥ गिय ॥ ला ॥ सव ॥ न ॥ थ ॥ वय
नयवना ॥ हि ॥ मवा ॥ न ॥ मकू ॥ ट ॥ ध ॥ निष ॥ ध
मन ॥ न ॥ व ॥ वा ॥ नारि ॥ कामा ॥ त्या ॥ वा ॥ ॥ ध ॥ वे ॥ व ॥ ॥ सूर
य ॥ कानि ॥ ध ॥ य ॥ व ॥ ना ॥ ग ॥ ग ॥ स ॥ न ॥ ध ॥ वा ॥ सि ॥ धू
॥ सरु ॥ ग ॥ म ॥ य ॥ म ॥ नानदी ॥ ॥ ग ॥ म ॥ दा ॥ व ॥ नी ॥ म ॥ म ॥ द
व ॥ म ॥ ही ॥ ना ॥ म ॥ र्हा ॥ मे ॥ नदी ॥ ॥ क ॥ नू ॥ क ॥ न ॥ य ॥ या ॥
ग ॥ ध ॥ न ॥ क ॥ रु ॥ सु ॥ पृ ॥ थू ॥ द ॥ की ॥ अ ॥ म ॥ न ॥ ध ॥ न ॥ य
नदी ॥ की ॥ ग ॥ ग ॥ म ॥ सा ॥ ग ॥ न ॥ व ॥ वा ॥ ॥ पृ ॥ थि ॥ वा ॥ ॥
यानि ॥ गी ॥ ध ॥ नि ॥ क ॥ त ॥ ग ॥ नि ॥ व ॥ स ॥ नि ॥ का ॥ य
हा ॥ ग ॥ म ॥ नि ॥ ध ॥ य ॥ सि ॥ ध ॥ या ॥ कि ॥ न्ना ॥ य ॥ नि ॥ व

वा॥ म॥ अ॥ द॥ थ॥ ऊ॥ र्च॥ द॥ स्म॥ म॥ व॥ द॥ स॥ थ॥ व॥ च॥
अ॥ थ॥ र्च॥ व॥ द॥ स॥ हि॥ ना॥ १॥ स॥ र्च॥ क॥ ल॥ ण॥ स॥ हि॥ ना॥
न॥ व॥ क॥ क॥ ल॥ स॥ १॥ य॥ ध॥ म॥ स॥ मु॥ मू॥ र्हि॥ स॥ मू॥ रु॥
वा॥ अ॥ थ॥ न॥ न॥ र्च॥ ग॥ र्च॥ न॥ म॥ म॥ नि॥ क॥ य॥ र्च॥ न॥
हि॥ क॥ ध॥ १॥ म॥ र्च॥ १॥ ॥ उ॥ य॥ ल॥ म॥ र्च॥ २॥ म॥ न॥ क॥
१॥ ३॥ स॥ म॥ द॥ ४॥ ५॥ रु॥ द॥ ६॥ वि॥ न॥ क॥ ७॥
८॥ न॥ न॥ रु॥ द॥ ९॥ १०॥ न॥ द्रि॥ य॥ ११॥ वि॥ क॥ य॥
१२॥ ल॥ १३॥ कि॥ नी॥ द्रि॥ १४॥ १५॥ पूर्व॥ १६॥ क॥ ल॥ स॥ र्च॥ य॥
१७॥ य॥ ग्नि॥ म॥ १८॥ य॥ व॥ न॥ १९॥ वा॥ य॥ य॥ २०॥ अ॥ ग्नि॥ स॥
रु॥ व॥ २१॥ आ॥ ग्नि॥ २२॥ य॥ क॥ म॥ न॥ २३॥ न॥ म॥ र्च॥ २४॥ अ॥
का॥ र्च॥ म॥ र्च॥ रु॥ व॥ २५॥ न॥ म॥ न॥ २६॥ सो॥ म॥ र्च॥ २७॥ रु॥ न॥
सो॥ न॥ २८॥ द॥ कि॥ र्च॥ २९॥ वि॥ क॥ य॥ ३०॥ म॥ ध॥ ३१॥ रु॥ म॥ न॥
क॥ न॥ क॥ म॥ वा॥ म॥ न॥ म॥ या॥ न॥ क॥ न॥ नि॥ क॥ ३२॥ कः
ल॥ ण॥ य॥ पूर्व॥ क॥ क॥ ल॥ ण॥ स॥ न॥ य॥ क॥ रु॥ द॥ व॥
ता॥ वि॥ न॥ य॥ रु॥ ३३॥ क॥ क॥ स॥ वि॥ क॥ ल॥ न॥ ३४॥ स॥ न॥ म॥ ३५॥
द॥ व॥ स॥ न॥ ३६॥ द॥ ग॥ ३७॥ वा॥ यी॥ क॥ य॥ स॥ म॥ रु॥ द॥
ल॥ न॥ वा॥ क॥ ल॥ ण॥ म॥ न॥ य॥ रु॥ ३८॥ न॥ व॥ न॥ वा॥ नि॥
३९॥ वी॥ क॥ नी॥ ल॥ ४०॥ रु॥ ल॥ य॥ ध्या॥ नि॥ ल॥ ४१॥ क॥ ल॥ ण॥
द्रि॥ य॥ रु॥ ४२॥ व॥ न॥ न॥ व॥ र्च॥ य॥ रु॥ ४३॥ य॥ ध्या॥ म॥ र्च॥
न॥ ल॥ म॥ रु॥ य॥ रु॥ ४४॥ यी॥ वा॥ यी॥ वि॥ वि॥ न॥ व॥ म॥ रु॥ द॥ ण॥

रुथम् ॥ ॥ विलुडदमववीरुयुत्रकञ्ज
 मुठाडिमो ॥ अवसाविनिवात्रेष्ट्र ॥ मधू
 मसिक्तसर्षपेष्टकंकमागुत्रकथूनेष्टम
 दलावनचन्दनी ॥ मात्सनासूककथू
 न ॥ मधुवन्दामुनाडती ॥ निर्यासासूदर
 लयमरुदवदतीरुती ॥ यागीयकना
 गकथूया ॥ मेवीसयर्षकी ॥ ववात्राप्रिस
 मीडिष्ट ॥ उत्रकमरुत्राककी ॥ दूर्वामारु
 निरुक्त ॥ क ॥ सकमुंसतावनी ॥ ववानागः
 ववादवी ॥ सरुदवीमडाकमा ॥ युर्धुकाः
 वासितायाथ ॥ गुर्मागुत्रसिक्ताननी ॥ वा
 यकीगजदकञ्ज ॥ सकयूथायूनर्धुवा ॥ वा
 क्रीदवीगिवानूदा ॥ सर्वगन्धनिकाञ्जनी
 सामादयसूरान्यता ॥ कलल्लवनिधाय
 यम् ॥ ॥ ककाविजयाख्याकलल्ल ॥ ॐ
 सथाजार्णययधामि ॥ सथायातायवेन
 मठारुवरुवनादिरुज ॥ स्त्रिवस्त्रमीरुवा
 रुवायश ॥ ॐ किमनुगसथाजार्णयाद्यादि
 रिष्टयुजयम् ॥ ॥ ॐ वामदवायनमाश्र
 द्वायनमानूदायनमठकातायकलल्लविक

लनायनभावविक्रमयनमानमा
वनयमथनायनमसर्वरुतदमनायन
मामनान्मनायन॥ ॥ **वासदव** ॥ ॥

ॐ अथानस्याथयानस्याथानयानतल्लय
सर्वरुतः सर्वसर्वस्थानमस्तु नस्तु नूद नूय
स्य ॥ **अथान** ॥ ॥ ॐ नस्तु नस्तु नस्तु नस्तु

महादवायधामस्तु नस्तु नस्तु नस्तु नस्तु
॥ **नस्तु नस्तु** ॥ ॥ ॐ नस्तु नस्तु नस्तु नस्तु

नामीश्वरः सर्वरुतानां विष्णोः धियः किः
वृक्षः धियः किः वृक्षः धियः किः वृक्षः
धियः ॥ ॥ **नस्तु नस्तु** ॥ ॥ ॐ नस्तु नस्तु

नस्तु नस्तु ॥ ॥ **नस्तु नस्तु** ॥ ॥ ॐ नस्तु नस्तु
नस्तु नस्तु ॥ ॥ **नस्तु नस्तु** ॥ ॥ ॐ नस्तु नस्तु

नस्तु नस्तु ॥ ॥ **नस्तु नस्तु** ॥ ॥ ॐ नस्तु नस्तु
नस्तु नस्तु ॥ ॥ **नस्तु नस्तु** ॥ ॥ ॐ नस्तु नस्तु

नस्तु नस्तु ॥ ॥ **नस्तु नस्तु** ॥ ॥ ॐ नस्तु नस्तु
नस्तु नस्तु ॥ ॥ **नस्तु नस्तु** ॥ ॥ ॐ नस्तु नस्तु

नस्तु नस्तु ॥ ॥ **नस्तु नस्तु** ॥ ॥ ॐ नस्तु नस्तु
नस्तु नस्तु ॥ ॥ **नस्तु नस्तु** ॥ ॥ ॐ नस्तु नस्तु

वासनाय ॥ **नस्तु नस्तु** ॥ ॥ ॐ नस्तु नस्तु ॥ ॥ ३

रुमान्नीक्षदिव्यवायस्ककलमयमागर्ग॥
 सर्वेनदाश्रमस्थोत्यनागमयगच्छुञ्ज
 ननमकुण्डगवायुननदम्यस्थाललाह
 किलकैकूर्योह॥ ॥कक॥कम्वनमयनी
 या॥ ॥नानावाद्यनवेयूरु॥ ॥विजय
 कलमादाया॥मर्तवमर्त्यत्राहीडाकमाश्र
 जायकककसमदादधिदर्शवशसंवत्सवाद
 जायकककानाशानिषधविध्वस्यमिषक
 विगीसूर्याचन्द्रमसोधमायथयूर्ध्वमक
 ल्ययक॥दिव्यवयुथिवीचानकत्रिक्रमथाः
 स्त्र॥ ॥अननमकुण्डलाययक॥ ॥सुना
 स्त्रामरिगीश्वरुगन्धर्वायवर्मागन्धर्वा
 रुमकाकथायागकवननास्त्रिथयागन्धर्वा
 वयादवयुजाध्वयचान्द्रादवयाकयशसर्व
 सुमनसाकृत्वाहं गमनेस्त्राययनुक॥अर्च
 यीरुत्रयीगंगायमूनाचमनस्त्रिणी॥मन
 युगन्दकायूष्माध्वकगंगवकोनिकीरु
 गवकीचयाकालस्वर्णमन्दाकिनीकथा
 वगाःसुमनसाकृत्वाहं॥सिन्धुरेववर्णमर्न
 द्यायनदाकृविस्त्रिणाशसर्वरु॥ककक

सुमनसाकृत्वाहं

सुमनसाकृत्वाहं

सुमनसाकृत्वाहं

ज्ञानेसापयनुतन

ज्ञानेसापयनुतन ॥ वेसमनसाहृत्वा ॥ ज्ञानेसापय

नुतन ॥

याध्रयनागमयवान्यसर्गयागय ॥ संह ॥

दुर्भावनन्दधनीवधुयावादीकारुकीकः

थाहृनसिद्धातथाकालीनन्यानावेषुवीक

था ॥ रुद्रकालाविषमसाक्षीरुद्रवीसर्वभूयिः

धी ॥ नतासर्वामुयागिन्या ॥ रुद्र ॥ लवक्षद्रुम

त्रासर्पिर्दधिदृष्टकलानकका ॥ समुद्रास

कयवान् ॥ रुद्र ॥ सनिक ॥ सागनालोना ॥ स्त्रीः

थानिकतदानदा ॥ संह ॥ ॥ नवमकल

गमादाय ॥ सत्रास्त्रामरिषिश्चनुवक्रवि

ष्ममहेश्वरा ॥ वासुदेवाजगन्नाथ ॥ सुथार्प

कर्म ॥ विरु ॥ यद्यमध्याधिनूदध्रुवः

नुविजयायत ॥ आखद्युभागिरुगवान् ॥ य

मावेनिसमिक्तथा ॥ वनूद्ययवनरघ्वेव ॥ व

नाध्रवा ॥ सुथार्पिणिव ॥ वक्रधम ॥ सनिका ॥ स

र्वदिग्यासा ॥ यानुनसादा ॥ कारुर्लक्ष्मी

धुकिर्मध ॥ पूष्टिर्मध ॥ क्रियामतिवृद्धि

ज्ञज्ञावय ॥ शान्ति ॥ पूष्टि ॥ कान्ति ॥ श्रमान

य ॥ नतास्त्रामरिषिश्चनुदवयत्वा ॥ स

सागता ॥ आदिरुद्रमासे ॥ मवधजिव

गितार्क ॥ जा ॥ यद्रास्त्रामरिषिश्चनुना

वेसमनसापयनुतन ॥

ककलध्वनिर्यताशदवदानवगन्धर्वो य
कनाक्षसयन्नगमशासयथा मनवार्गवोद
वसाकनवववाद्यवयत्वाकवागमध्वदे
ह्याध्वान्नसौगन्धशास्त्रकाविसर्वसाक्षा
निवाजानावारुनानिचशाडाधधनिचन
तानि कानस्यावयवाध्वय॥ सत्रिक१साग
वाधेवागीर्थनिकतदानदाधनकस्त्याः
मरिषिश्चक्रनु सर्वकामार्थसिद्धय॥ ॥
सूत्राह्वामरिषिश्चक्रनु यत्रसिद्धायूनाक
नावक्ताविष्णुश्चन्द्रश्चसाध्वश्चसमन्
राक्षसाज्जादिरावसवायूदाज्जिनीच
विषर्जनो॥ अदितिर्देवमानाचस्वारुसि
द्धिसत्रस्रगीकीरुर्लक्ष्मिर्दक्षिणीध्वसिः
नीवालीकुरुक्ष्मादितिध्वसूत्रसावेव
विनताकुरुवय॥ सर्वस्वामरिषिश्च
क्रुसूरुध्वान्नसौगन्धानक्षत्राविसूरु
रुध्वयक्षाद्यानामिसंध्याशदवयत्वाव
यानाकाकलाकाष्ठाक्षनया॥ सर्वत्र
मरिषिश्चक्रु कानस्यावयवाध्वराशवे
मानिका१धुनगन्धमनव१सागव१स

रु॥ सनिकश्च महारागः द्विजावेस्वानखा
 ध्यासकषयसमादाश्च ध्रुवस्तानिच
 यानिच॥ मनीविनक्तिः यत्र रु३ रु३ रु३
 पु३ सनत्कृमात्रश्च सनकश्च सनन्दनः
 सनातनस्त्वदक्षश्च योगीश्वर्यालन्दनः
 नककश्चादितल्लेव पिताज्ञावानिकश्च
 सोऽदूर्वासादूर्विनीकश्च कर्णः ४ कात्यायन
 कथामाकर्ण्युयादीर्यतया सूनः ४ रु३ वि
 दूत्रथः ४ डावेसिवरुंकल्लेव चवनाप्रियत्रा
 पत्रः ४ दीयायनाजवकीना दवनार्तः ४ स
 हानुजः ४ ननवान्यवमूनया वदयकय
 नायनोः ४ ससिस्थाकृतिषिचक्रुः सदात्राश्च
 कथाधनाः ४ यव्वेतासुनवावत्यः ४ मयन्याय
 कनानिच॥ यज्ञायकिदिनिः ४ वगवावि
 श्वस्यमाकत्रः ४ वाहनानिचदिद्यानि स
 र्वेलाकाश्चवाचना॥ अग्रयणिकत्रस्तावा
 जीमूनाः ४ सदिष्ठाजली॥ ननवान्यववहवः
 यव्वेसकीरुनागुरुः ४ सायस्त्रामरुषिच
 क्रुः सर्वोल्याननिवहनेः ४ उं अथाहि ४ नि
 मन्तुषकलनः ४ लनयजमानस्राययिः

खानानावाद्योऽथ क ४ ख क नू क न व क न य
 क मान सर्वे ग म पं स मा र्थ अ क न व क न य
 य नि धाय ॥ यु न वि य वे व क न नू क न य ॥ अ
 न्या दयि ॥ रु (ग) हि न ध न ले ध अ न्या न यि
 क मान ग नान् ॥ ॥ क ता वि वि ण व क्तानि
 य नि धाय नाना लं कान रु षि क ४ स न धु डा
 द्या य ध ग डा ष्म नू क न य ॥ क द्य थ ॥ ॥
 न ग्रा दो र व क्त यू डा ॥ अ सि वि ण स न र व क्त न
 क्त धा वा द वा स द ४ धी ग क्त वि ज य ष्ठे व ध म
 धा न क्त (थे व च ॥ ॥ ॥ य सौ क व ना मा नि स्व य
 मू क्तानि व ध सा ॥ न क्त क्त क्त क्त क्त क्त क्त क्त
 नू द वा म ध न श हि न ध न स न व न क्त
 व न व ज ना द न ॥ यि ता यि ता म द द व ४ व
 मा याल य सर्व द्या नी ल जी मू क्त स का सोः
 नी क्त द क्त क्त क्त क्त क्त क्त क्त क्त क्त क्त
 अ न्ति क्त क्त क्त (थे व च ॥ ॥ ॥ य य न ध न क्तानि
 रु क्त म हि षा मू न ध नी क्त क्त ना य धु डा य
 क्त म्भे ख ज्ञाय न न म ४ ॥ ॥ ॥ नि म क्त क्त क्त
 ह्या दि हि ४ यू क्त य ॥ अ य क्त नि का यू डा ॥
 सर्वो य ध नां य ध म् नि मि ता सि यि ना कि

ना। गूलाय धविनिष्कृष्टत्वा मस्ति ग्रहं
 रू॥ त्रिष्टिकाया यदरुमि। सर्वदूषानि वा
 हिनी। तथा विस्तानि ता वासि। दवाना य
 तियादिना॥ सर्वसर्वा गरुतानि। सर्वाधु
 रुनिवर्हिनी॥ बुविक नक्षमानि र्हाभनि
 यस्तु नमामुक्ता॥ ॐ निमनुदं उं बुविकाये
 नमः॥ ॐ ह्याद्यादिनायुक्तयत्न॥ ॥ कर्त्तु
 न॥ ॐ ह्याभनिगज्ञानुक्त नक्षवाजिधना
 निवाममदहं सुदानुक्त कदाचकनमः
 मुक्ता॥ ॐ नि॥ ॐ कर्त्तु नकाय रयुक्तयत्न॥
 ॥ ॥ धनूयुक्ता॥ सर्वायुधमहा माण सर्व
 दवा तिसूदन॥ चायं समन्त्रयत्न साकश
 नवनेहनि॥ धूर्तं कृष्णनक्षार्थं सहा वा
 यहननय॥ कृष्णामूर्ति गतं दर्व धनू नक्ष
 नमामाहं॥ ॥ धनूधरयत्न॥ ॥ कृष्णयु
 क्ता॥ याचमत्या क यग्नपूना मनया नीक्षः
 क्षत्रया गृहान् जीविनं कर्मा कृन्तनीत्यः
 वनक्षमा॥ कृन्तायत्न॥ ॥ वर्मो॥ सम्यय
 दक्षी समन्त्र वर्मनो न्य सम्यय मा नक्षमा
 नक्षनीयाहं ता यनय नमामुक्ता॥ ॐ वर्मो

नर

मीर

ॐ॥ वामना॥ गङ्गाकनकनर्मकासं हिम
हाधुनयाधुनशायात्सानयस्त्वंदविर्निर्व
मनामनवल्लरुशा॥ उं वामनाय श॥ वृणा
यथा म्वदं दयनं गिवायमाविसुन्धः
नौ। कथामीकादयश्च यदध्वनिर्गसदं
॥ वृणाय श॥ ॥ धृज॥ गङ्गाकनकनामहावि
र्यः सुवर्णस्त्वाममाधिनशायद्विनाजावे
नकयः सुधनानायाध्वज॥ काश्रः
थायामृतारुर्लानागमनिविष्णुवाहनशा
ज्यमयाद्रवाध्यात्रादवात्रिसूदन
शागत्रत्मान्मानूगकिस्त्वयिममिदिक
क्लिक॥ साध्ववत्मायध्वनकावकासो
कवियुन्दरु॥ उं धृजाय श॥ ॥ यमाक
॥ रुक्मकुक्कमवा नूदावायुः शामामहर्ष
यशनागकिन्नत्रगन्धर्वा यक्षरुक्ममहा
त्रगशायधमाद्यमहादिवो रुक्मगमाह
रिः मरु॥ गङ्गाकनकायकिस्त्वन्दववृणः
ध्याधिनस्त्वयि॥ यकिरुनुत्रियुत्सर्वाजा
जाविजयमृच्छु॥ यानिययूकान्यवि
रिः दूर्ध्वनानिसमन्त॥ निरुक्तानिस

दातानि रुवन्तु कवकडासा ॥ कालननि
वधेयुद्धं युद्धं प्रियनद्यानिना हिनध
कणियार्युद्धं युद्धं दवासूनयथा ॥ अहि
नासितयेवाद्य ॥ अरुसूसमयं समन
शा नकोनी र्वागिर्ता दृष्ट्वा नर्धं त्वामूम
मानयशा यता काये ॥ ॥ दूरि ॥
दूरुर्वसुयन्तानां द्यामाद्युदयकं यन
॥ रुवन्तुमियसे न्यानां नथ विजयवद्ध
नशा यथा जीमूगदासदा दृष्टान्तिवन
वाय ॥ अरु कथमुक्तवसदन रुवासा
कंजयासदा ॥ यथा जीमूगदासदा मीमा
नासा रिजायता कथमुक्तवसदन ॥
स्त्रीत्वमादिधान ॥ ॐ दूरुयश ॥ ॥
गंखा ॥ ॐ गंखस्त्री गंखयून्यानां मंगः
लानां वमङ्गलं ॥ विष्णुना रि ॥ धृता निः
ह्यं मरु ॥ अर्नि यय द्रुम ॥ ॐ गंखा यश
॥ ॥ ॐ गंयूजा ॥ ॐ गंमचिर्नंजा
वयनगमे नतक्षि ॥ सदा मां सम
ननक्ष स्वामिकार्यं सदा कुरु ॥ ॐ अः
अयश ॥ ॥ ॐ गंयूजा र्वाङ्गलपूषा

विबर्द्धयन् ॥ ॥ कर्षुजायमिमं जयन् ॥
गन्धर्वकुलजातासि मारुतः कुलद्वय
कषावृक्षसहस्रवाक्कन भामस्य वनूदा
स्यवा ॥ न जसा चैव सूर्यो स्या यवनस्य वन
नत्रा ॥ यरुवा च वृक्षसहस्रवद्वत्त्वत्वं शुभं
गमशास्मन्नखना जयन्तासि कोमुरुचम
निस्मन्नशासूत्रासूत्रेर्मथ्यमाना कक्षावा
दादमनादि हि शाजात उच्चैश्च वायुर्वर्ग
नजातामिर्गस्मन्न ॥ यांगर्गि वृक्षहागश्च
त्रिरुहामारुहातथा ॥ रुम्यर्थमृत्तवा
दीचन्नद्ययश्च यनां मुखः ॥ सूर्याचन्द्र
महावायूर्यावत्यश्च निदः कर्णि ॥ तः
गर्गि वृयसिद्धिर्गर्गश्च यायैरुवैरुवा ॥
विकर्णियदि गच्छथा युद्धश्च निशुर्गम
शानियन् विजिह्य समन्न सरुरुर्लसूः
खीरुवा ॥ ॥ गजयूजा ॥ दिग्यान्नसूत्र
मरुत्तस्त्वस्वानविजयावरु ॥ यधूर्नां न
लेखनासि विजयं दहि मसदा ॥ उंगजा
यश ॥ ॥ कस्तूरुदवनादिकं यूजयि
त्वा योजति ॥ य ॥ यानुदवगक्ष ॥

सर्वं यजामादाय यार्थं वा नृ॥ सिद्धिं दत्वा
सुविपूना न्यूननागमनाय वै॥ ॥
नृ॥ विज्ञानमयविष्कार्य॥ ॥ नृ॥
धृ॥ सिद्धासनमयविष्कार्य॥ नृ॥ कथाप्रसू
युक्तदीयाद्युक्तालयनृ॥ नृ॥ रुक्मिणिवृ
धूमनृ॥ मनुष्याणामलावननिलकंकू
र्यान्॥ ॥ कान्दाकोन्दमिमनुष्यादूर्वा
क्षतादियजमानसिन्धुसिक्ताययन्॥ ॥
नृ॥ दयार्थं यजन्॥ धीश्वरमि॥ दधि
कायमिदधिमिलकंदममिन्धुर्कंकूर्य
न्॥ ॥ नानामङ्गलदद्यानियन्त्रनृः
॥ ॥ नृ॥ नृ॥ यजि॥ गङ्गाउर्मिगमिवाप्त
मानुष्य॥ नृ॥ गीतवाद्ययूनस्सर्ग
त्वायूनमहात्सर्वं कृत्वा नगवदवना
संपूजयन्॥ ॥ वन्दनस्मान्मायय
दन्॥ यूनयनधिर्नविना॥ नृ॥ वक्र
क्षयार्थं रूपायित्वा यथा विरुवंद
क्षिप्तं दद्यान्॥ ॥ ॥ विरुक्ता नृ॥ ॥

ॐ आयायस्वसुभउं विध्वनहसामवृक्षसु। रुवावायसु सुगि॥ सुनैयया०
 सिंसमयमुवाजा॥ सुवृक्षाध्वरिमाकिवा॥ आयायिमाना असुमायसामदिवि
 धवा० स्यरुमानिधिष्व। आयायसमदिनमभामविध्वरि न० शुकि॥ रुवानहस
 यथमसुसहयस्वाक्ख। आपवत्सामनायमत्यनमाश्चित्सधस्मान्॥ अलग्नर्त्वाकामय
 गिवा॥ इह्यिगाअंगिनस्तमविध्वहसुकिनय॥ यथ॥ अग्नि कामाययमिन॥ अग्नि
 यिथयधमसुकाभारुनस्यरुयास्य॥ सुमाऊकाविनाऊनि॥ यथ॥ यथिवा॥ दवः
 स्यत्वा॥ अग्निनाऊषधून॥ दियादादिवमूक्षन, सिनः स्नातामत्तादिवायूर्नयवि
 र्निनवाक्षः माय॥ सुधनुमनस॥ उदयनकभसस्यानिस्व॥ यध्नकटरुनीद्वर्दद्वर्ण
 सुय्यामगन्म, क्षाकिनूरुमी॥ छाध्नक॥ नभावक्क॥ क्षास्त्रिभयनम॥ यथिध्वीनमडाव

धीहाः नमभावावनमभावावासाविष्णुवमरुतकनामिअग्निनिन्दसासाः
मस्यदवानामूर्कमी॥ कत्रीषानक्षरैर्ममहि कत्रिषामयुर्मन्त्रकहाश्रदवाभादिवाका
दशस्तुयथियामध्वकादशस्तु॥ अयूद्विमहिनेकादशस्तुर्गदवाभीयद्रूमिर्मरु
वध्वी॥ यूनस्तुवादिहा॥ अथुर्गवाक्क॥ अथमाद्विनीयेद्विनीयास्तुनीयेस्तुनीयासथा
नमर्हयद्रूनयक्षाग्ररिग्ररुणयिस्तामरिः॥ सांमायगिमुमवः॥ यन्नानाक्परिः॥ यन्ना
नवाक्पायाक्कारिर्गोष्पावषक्कानैर्ध्वषक्कानः॥ अद्रुकिरिनाद्रुफयाभीकामान्समद्वय
नुस्तुः॥ स्त्राहा॥ ॐ किआयायसमास्तु॥ ॥ उदिमसिस्त्राद्रनायनाग्रेसासंयनि
व्यायामसि॥ उरुद्रवादिनाडुवाग्निर्देवडुरुषर्ज॥ गीगद्रुगादिनोडुवाग्निर्देवडु
रुषर्ज॥ अग्निः कामग्निनरुनयद्योर्वादस्यसूत्रागमन्॥ अज्ञानयद्रुयकाश्चरुदय

ममदूयक। वियल्लवनीवक्षाध्र, अक्षागवद कामर्या। मध्वत्रक्षयार्णोद्यत्सकसुमननरु
 मवशापिगमक्षताहिकृष्णीवक्षवर्धनमासुक्त। अस्मान्नायनिरुंसासागत्रसाम
 आग्रथा॥ ॐ नु क्षणैदधमउव नृषस्त्वमहिषिश्चरुकि॥ गणध्वनिधनर्न्यानिक्षयत्वेवक्रान्
 रुसा॥ कयिलरुठीसुर्वेरुक्षीवाग्नियह्यक्षदवना॥ वनूर्धनवसायरुममयणाध्र
 देनेसि॥ आवदादित्यसुयकि, आवरुक्षरुवन्दुमा॥ आवदा मयवरुकिडावक्षीवत्तयास
 रु॥ अयनकनयकानन, मारुनाकाऽनक्षीवकि॥ यत्र सामप्रकात्रार्धं यक्षीवकि सक्षी
 वकि॥ वषसैर्दूत्ररुस्मिन्नदग्ननर्त्तवियत्रेनायुथिवीत्वेरुक्षमे क दृक्छदधुन
 ॥ ॐ नु॥ वन्दरुस्मन्नोयकं गमरवयूर्ध्वसादावासिर्न, वर्ध्वाकाश्चनर्त्तनिरुं
 नृधर्मनागानुयुक्छिर्न। नर्त्तयसासुरुमूर्कं मनिरुनेर्ध्वद्रीसदायुक्तिर्न, निर्यदान

वमानरुक्मनयदयाकान्तकं विक्रमं ॥ वाक्कायकनमसीस्तिर्गहिरुर्नवधूर्ध्वं घ्रासीन्
धर्कं नानावीडसुनिनसंगमरुर्वकक्षाघ्नितूयध्वनी ॥ क्षमनाहाफिषार्थसमस्तकिन्न
र्णनिर्दोषकक्षाक्षर्णमन्त्राक्षावतिगक्षियाधिवन्नर्दभोमिष्ट्रवाध्मनिर्ण ॥ कात्सार्य
वन्नभयद्यानसदृक्षमवर्धुमहास्त्रौषर्षं शरु ॥ क्षमसनयातिगायिरुगावानूयायसदा
सीस्तिरुहाधम्मो धर्मो विवानचननमकिर्द्धमोवकिर्द्धोवधिः सादवारुवर्द्धावहावहास
दावध्यामयादधुधृक् ॥ सस्रक्षुन्नसन्नध्वनीदिगायकिर्गाक्षिन्नैयूक्तिर्गं निमिषि ॥ अक्ष
समद्धर्गकल्लर्त्तयगासनागममिर्न ॥ ननोमीरुमुखसदाकलिरुर्नशीवीन्ननजायर्ग
यर्थं विद्यरुर्नमूनीनुनमिर्गं नाक्षिन्नर्णनमशादक्षगुर्द्धवनीमहायूनवन्नदव ॥
सदायायिर्गं क्षमकादवसदासक्षन्नग ॥ यायायाक्तर्कं यागधृक् ॥ भक्तामांसव

नेर्विहसिं सदा शुक्राम्बनेरु विना दवार्य वन (धम विभक्तवदना निहिनभावा सुकी॥॥
 मरुसिंजनानां विहसिं सदा शुक्राम्बनेरु विना दवार्य वन (धम विभक्तवदना निहिनभावा सुकी॥॥
 धीं डीवर्न डीवर्नूय॥ निमूर्खिं या यामार्न खयिग ग किमर्थ (लो न वध्मै ह सवर्न वायू
 दिवामूर्खिं जवनन नित्र मा पादा दवार्य नभा मु॥ यद्वन्द्या वरुया भित्त वन नु न गगर्ग न
 डवा डधन धी दवा दीवी दिगर्क कनक मथक्क विद्या नू गमर्ग निव त्वं। यर्तं गी धी रु मि
 र्ग वद्वन न कनक र्खिं दिवर्ग दिव न त्वे, धन्या नो काश्च नाना रु विग न दाय किं किन्न न
 धर्म न मा मि॥ ॐ धम न रु वना धियै गि निमूर्गो वाम सदा सिक्किर्ग (लो तन्द्या य सवर्ग का
 कि धवर्तं लसदी न वध्मै कर्त्त॥ एव न र्क वृष रु नू ग मि न कर्न स यो धियै र्खिं वन्द
 रीय न र्म रु या य द र्क न क ल्या न नूर्य नि दी॥ नू दो भी न ह्यै पी व न क म ० व य १ का
 नू

[illegible]

सूर्योवाविष्णुर्मासा नित्यं सोम्या गिजातावत्रदकत्रधुतामोतिनातनभासु॥ कृष्णभाषि
यथीसकलरुगतनीरुनवाविध्वकर्को जार्धजावत्समरुडं सकलतनुनृवर्नीरुनववक्त्र
अष्ट॥ अर्जनिन्धविध्वनाथा नववत्रसगु विनाक्षत्रुत्थानिशु (ध) मन्त्रया किम निनूय॥ यि
रुगधमरुतिमरुमादिमोक्षया त॥ आ गिन्या॥ कामन्त्रया सकलतनुदय तानककारु
सुनाहा मरुर्कोक कालमाता गतग तनटी वक वम्भा रुवीया॥ स्वर्ग्या णी कया ल
गुणिमयि विवृता सुसुता सुयसन्ना रुकाना साधकाना मरुिमरु रुतदा (ध) यमा
नाय सन्ना॥ मूर्ति स्विदवताना सकल सुत्रनदी गार्थर्ग मदिताये॥ यूर्ध्व नक्षोषधादि
॥ रुतक सुमयर्ग शुण्डीयस्तवन॥ विद्या नार्ध सरु डीकति कलस्ररुनी सर्वयक्षयम
मूर्तिर्वीदक मन्त्रयी गिवध कि कलसु मङ्गल मंगलाना॥ अदि त्य॥ यत्तु नीय कामरुः

व्यायमिदं ननमिर्गं राध्वर्नं गकिं रुर्कं । ऊर्कं कोध्ना ह्यनकनात्मा कनमयि निकर्नं धू
कश्रुक्ता निधूर्कं वन्दवधूर्कं ध्वकं उद्विडं निरियेत गुर्नं सुचिकर्णं रुवर्कं । सुययी नासुव
दवारुविमकल यना अग्निमृक्ता निरुक्ता । कृत्वा यधूर्कं सुका र्क्षं सुकलसु रुदया धमः
निकर्कं याद्वियस्या ॥ सुक्ता खानस्य सुवर्ध्व अरुिमफरु तदा सुवर्ध्व सिद्धि वयदनु । तीदवी नोमि
रुक्ता सुकल सुत गधमय क नूयी नभा सु । वृक्ता विष्णु गक्रा कृत फियमक न ४ नक
यासी सुमीर्नं यक्ता स्थानक द र्मो ग्ररु गग सदि ना सयिणी सुवर्ध्व नाग्रम रुतम्बा सिद्धि
संद्याद निमरु यरु न वन्दु सूर्यो दिदवा ४ यागिना ४ सुवर्ध्व दवदवा ४ सुनवन सदि नाय
उवा सुवर्ध्व दवा ४ सग्न दाय स्याया दाय रु नयन यद ४ सामवदो थ रुक्मो । नवाथे द्वादिना
यं धाय ० वदने व्याहर्नं वृक्क धार्म ॥ गमयणी य स्य गमर्णं नयन मय निषट् वृक्क णमर्णव

देखा विष्णु प्रकृत्य मुखि रुवहुव सुमणी यहु नूयीव नारु ॥ अस्मत्सु नार्थ सुनुक
लसु सुदिन वेदमन नदि रुव ता सुयी नावन दारु वनु गमया क्रुष्य रुव रुव रुना
डाधर्म विरुया सु यडा सुखिन सुसु सुर्व सत्वा सुखि रुव नु यथो नार्था लवधीरु
वनु ना सु सु रु रुव वु ॥ दिय दधु दानो धमनि रुव रु यधि रुव रु ॥ देवा वध सु
काल रु य पि व सु धम सु स्या सु पूर्व मग्न की ना द्या सुनु ग नान य वि यून म मि या रु
ना डा ध नि जी सु यो नार्था मा ध यूणी कृत यू व पि डा ना कि दा या वि ना र्ण ला काना रु कि
ला डा य रु व रु वि य त रु कि न बा नि द्या सु ॥ अस्मदा द्या धिय पि अम क वु र्म ग र व
न सिद्धि न सु ॥ म रु मान स्य अम क य रु नि मि ल्या य न य ध धम मा क रु स दा यि ना रु
व सु ॥ य रु माना ना अत्र त सिद्ध न म सु ॥ स ग द य नि द्या न धर्मा जा यि ना ना गी रु न ध

[illegible]

ॐ द्वा ऊ सा को ण मि न्द्रा सो मा सु वि ना य ण था ॥ ११ ॥ ण न्न ण न्ना द वी न रि ष्ठ य ॥ आ या
रु व न्नु यी म य ॥ अर्ध आ त्र रि य व न्नु म ॥ १२ ॥ स्था ना य थि वि स्था ना य थि वि ना रु वा न
क्ष ना नि व ण नी ॥ य द्वा न ॥ ण म्म स य्थ य ॥ १३ ॥ आ या रि आ या रि ष्ठा म या रु व म्म
न ॥ दु ऊ द ध म न ॥ म रु न ण म य व द्वा मा ॥ १४ ॥ था व ॥ था व ॥ गि व क मा न म सु स हा ऊ य
क रु न ॥ उ ण नी नि व मा क न ॥ १५ ॥ क स्मा ॥ अ न म ॥ क स्मा ॥ अ न म ॥ म वा य स्य द
ग्रा य डि न्ध य ॥ आ या ऊ न य थ म न ॥ १६ ॥ द्यो ॥ ण म्म नि ॥ १७ ॥ अ न्नि व क वि द्वा ॥ ण म्म
॥ य थि वी ण म्म नि ना य ॥ ण म्म नि ना य ॥ ण म्म नि ना य ॥ ण म्म नि ना य ॥ द वा ॥ ण
नि र्द्व्य ण म्म नि ॥ सर्व ॥ ण म्म नि ॥ व य ण म्म नि ॥ १८ ॥ मा मा ण म्म नि व धि ॥ १९ ॥ द र्ग ॥ २०
द र्ग ॥ रु मा मि रु स मा व द्वा स र्वा गि रु ना नि सु मी क्ष ना म् ॥ मि रु स र्वा रु ष्ठ द्वा स

द्वाविहताविपुमीक्ष॥मिथुस्यत्रक्षयासमीक्षासरु॥१६॥दर्शद०रु॥
 आर्क्षसप्तृगिजीद्यासुक्ष्मक्षसप्तृगिजीद्यासु॥१७॥नमस्तुनमस्तुनमस्तु
 धनमस्तु॥अत्रिचि॥अन्नाप्तु॥अस्मरुयनु॥रुयनु॥अस्मरुयनु॥
 रुव॥२०॥नमस्तुनमस्तु॥अस्तुद्विद्यनमस्तुनमस्तु॥नमस्तुनमस्तु
 यन॥२१॥यन॥यन॥२२॥यन॥यन॥२३॥यन॥यन॥२४॥यन॥
 यन॥२५॥यन॥यन॥२६॥यन॥यन॥२७॥यन॥यन॥२८॥यन॥
 यन॥२९॥यन॥यन॥३०॥यन॥यन॥३१॥यन॥यन॥३२॥यन॥
 यन॥३३॥यन॥यन॥३४॥यन॥यन॥३५॥यन॥यन॥३६॥यन॥
 यन॥३७॥यन॥यन॥३८॥यन॥यन॥३९॥यन॥यन॥४०॥यन॥
 यन॥४१॥यन॥यन॥४२॥यन॥यन॥४३॥यन॥यन॥४४॥यन॥
 यन॥४५॥यन॥यन॥४६॥यन॥यन॥४७॥यन॥यन॥४८॥यन॥
 यन॥४९॥यन॥यन॥५०॥यन॥यन॥५१॥यन॥यन॥५२॥यन॥
 यन॥५३॥यन॥यन॥५४॥यन॥यन॥५५॥यन॥यन॥५६॥यन॥
 यन॥५७॥यन॥यन॥५८॥यन॥यन॥५९॥यन॥यन॥६०॥यन॥
 यन॥६१॥यन॥यन॥६२॥यन॥यन॥६३॥यन॥यन॥६४॥यन॥
 यन॥६५॥यन॥यन॥६६॥यन॥यन॥६७॥यन॥यन॥६८॥यन॥
 यन॥६९॥यन॥यन॥७०॥यन॥यन॥७१॥यन॥यन॥७२॥यन॥
 यन॥७३॥यन॥यन॥७४॥यन॥यन॥७५॥यन॥यन॥७६॥यन॥
 यन॥७७॥यन॥यन॥७८॥यन॥यन॥७९॥यन॥यन॥८०॥यन॥
 यन॥८१॥यन॥यन॥८२॥यन॥यन॥८३॥यन॥यन॥८४॥यन॥
 यन॥८५॥यन॥यन॥८६॥यन॥यन॥८७॥यन॥यन॥८८॥यन॥
 यन॥८९॥यन॥यन॥९०॥यन॥यन॥९१॥यन॥यन॥९२॥यन॥
 यन॥९३॥यन॥यन॥९४॥यन॥यन॥९५॥यन॥यन॥९६॥यन॥
 यन॥९७॥यन॥यन॥९८॥यन॥यन॥९९॥यन॥यन॥१००॥यन॥

यश्च न ददति ॥ २४ ॥ ॐ निमर्त्य वात्र समाक ॥
अग्निमुक् ॥ ॐ अग्नेऽग्नौ दानं सयत्क्रान्यत्वा नान्दज्ञानं वद ॥ अधिना
ब्रूहि सुमना इन्द्रं सुवसामा मर्मस्ति वनूथ इहो ॥ १ ॥ सरुसा ज्ञानानां सरुसा ज्ञा
तान्यन्तु दानं सयत्क्रान्यत्वा नान्दज्ञानं वद ॥ अधिना ब्रूहि सुमस्यमाना वय
दस्मान्यन्तु दानं सयत्क्रान्ता ॥ २ ॥ वारुणी सुमः सा रुणी भूमिः सा द्रविणः सु उग्र
त्वा नि ० गस्मि मा वज्रो द्रविणम् ॥ अग्नेऽयत्री स मस्य यथा नामान्त्वा विष्णुः अहि
गृध्रान् कुदवा ॥ सुमस्य द्वापतवती सोदय्य ज्ञा वद समा द्रविणाय सप्त ॥ ३ ॥ नवधनुः ॥
नवधनुः दानं विवक्तु न ॥ ४ ॥ सुधनुः यत्रि रुधनुः अश्वत्थानां न ॥ ५ ॥ नवधनुः ॥ सि
न्धुधनुः ॥ समदधनुः ॥ स विनः सुधनुः ॥ ककुधनुः ॥ कावा सुधनुः ॥ अक्रय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

धीर्ज्ञानारुमननरिस्तुनूक्तिं न्यवधाय धसाधीननाधीनशिः न्यारिदिगार्शनडासांशजि
 न्वा॥ नायनियदसिायनियदत्वा नयदस्यनयदत्वा सम्यदसि सम्यदत्वा नडासि नडा
 सत्वा क्रिवृदसि ॥ ४ ॥ क्रिवृदसि क्रिवृदत्वा यवृदसि यवृदत्वा विवृदसि विवृदत्वा सवृद
 सि सवृदत्वा क्रमात्क्रमायत्वा सङ्क्रमायत्वा क्रमायत्वा क्रमायत्वा क्रमायत्वा क्रानि
 यत्क्रान्तेत्वा धियनिनाङ्गोर्ङ्गि न्वा ॥ नाङ्गसि नाङ्गसि यात्रीदि न्वा सवत्सु दवाऽन
 धियतया गिरुणी नाम्यनि धर्का क्रिवृत्वा स्तुमः पृथिव्या पृथयत्वा स्तुमश्च मथाथये स्तुम
 रुतथन न० सा मयनिष्टि स्त्वाऽननक निरुऽमस्य त्वायुथमडा दवषदि वा मा रुयाद्य निम्मा
 यथनु विधरुत्वा यमधियनि ध्वनत्वा सध्वेर्मुवि दानाना कस्य पृथ्वे (मे) लोक रा रुमानर
 सादयनु ॥ ७ ॥ विवा रु सि विवा रु सि दक्षि नु द्वा सु दवाऽन प्रियनयऽ नून्दा रु नी नाम

निधलोपश्रदगस्त्वाम्ममः यथिवाश्रययउयउगमक्कमद्याथयेसुक्कुउवृरुत्सामयनिदि
ह्याअनक्तिद्विः समसयस्त्वायथमजादवषदिवासा नुयावनिम्माय्यथमनुविधलोः
वायमधिधर्गत्वासर्वेसंविद्यानानाकस्ययश्चस्त्वर्गोत्तोकयऊमानश्चसोदयनु॥७
॥सम्मारुसि।युनीवीदिगमदिरुहामुदवाऽअधियनयावन।मरुणीनीयनिधलो
सकदगस्त्वाम्ममः यथिवाश्रययउमनूत्वेनीयमक्कमद्याथयेसुक्कुउवृरुत्सामयनि
०मामयनिदिह्याऽअनक्तिद्विः समसयस्त्वायथमजादवषदिवामारुयाद्वनि
म्माय्यथनुविधलोवायमधिधर्गत्वासर्वेसंविद्यानानाकस्ययश्चस्त्वर्गोत्तोकयऊमान
त्ताकयऊमानश्चसोदयनु॥७२॥ ॥

रत्नसुखिध्वनकायन्याससाय॥ याद्युयर्गन्यास॥ अर्थनिर्ग्यास॥ प्रधादिन्यास॥
 अस्यानृदसकुस्यवामदक्षमसिः यकिध्वनृदवतापूङ्गनविनिथाग
 ॥ सस्यादिन्यासहाजिप्रसिः वामदवायसषयनमहामुखः यकथद्वन्द्वसनमहा
 द्वादयः ॥ ध्वत्रायदवनाथेनमहासुर्वाक्षः पूङ्गनविनिथागहासूतुमकुषया
 धर्ममहा ॥ ॥ माहका न्यासहा ॥ अस्यमारुकान्यासस्यवक्त्राससिः प्रसयणीद्वन्द्व
 माहकासनस्यपीदवगाह्नावीङ्गस्वनागकिकीतकमारुकान्यासविनिथागहा ॥
 न्यासहावृक्षलमषयेनमहाजिप्रसिः ॥ मुखः प्रसयणीद्वन्द्वसनमहाद्वादयः ॥ माह
 कासनस्येदवगाथेनमहानालेः ह्नावीजायेनमहातिक्ष्णः स्वनागकथनमहागु
 षः वाकिकीतकायनमहासंवाक्षः माहकान्यासविनिथागहा ॥ अनायकशगन्धिः

द्वयि॥ ॐ नमः वामयक्षि॥ इति नमः दक्षकर्म॥ इति नमः वामकर्म॥ अति नमः दक्ष
नासायुत॥ अति नमः वामनासायुत॥ इति नमः दक्षकर्म॥ इति नमः वामकर्म॥ अति नमः
दक्षकर्म॥ अति नमः वामकर्म॥ इति नमः दक्षकर्म॥ इति नमः वामकर्म॥ अति नमः
यति॥ अति नमः वामकर्म॥ इति नमः दक्षकर्म॥ इति नमः वामकर्म॥ अति नमः
विविध॥ अति नमः दक्षकर्म॥ इति नमः वामकर्म॥ अति नमः वामकर्म॥ अति नमः
वामकर्म॥ अति नमः वामकर्म॥ इति नमः दक्षकर्म॥ इति नमः वामकर्म॥ अति नमः
नमः॥ इति नमः दक्षकर्म॥ इति नमः वामकर्म॥ अति नमः वामकर्म॥ अति नमः
दा॥ अति नमः दक्षकर्म॥ इति नमः वामकर्म॥ अति नमः वामकर्म॥ अति नमः
॥ अति नमः वामकर्म॥ इति नमः दक्षकर्म॥ इति नमः वामकर्म॥ अति नमः वामकर्म॥

वेनमःयुष्ट ॥ रुंनमःतिग ॥ मेनमःनारो ॥ येनमःद्वय ॥ नेनमःद्वय ॥ क्रिणि
खन ॥ लेनमःक्रिदि ॥ वेनमःवामवाक्रिखन ॥ नेनमःद्वय ॥ द क्रिउजान्
॥ येनमःद्वय ॥ वामउजान् ॥ मेनमःद्वय ॥ दयादि ॥ वामयादा
न ॥ लेनमःमक्रिकादि ॥ दान् ॥ दानमःयादादि ॥ मक्रिकान् ॥ सकलमाह काम
वन नुवायक ॥ ॥ उं ददं यायनमः ॥ नेनि न सुखाह ॥ मैनिखायेवषट् ॥ निः
कवत्तायदू ॥ वानेनृयायवोषट् ॥ येनृक्रायदू ॥ ॥ निषठ् ॥ न्यास ॥ ॥
येनृत्तयनमः ॥ वक्र ॥ नेनृत्तयनमः ॥ ददि ॥ लेनृत्तयनमः ॥ दवाम
दवायनमः ॥ याद ॥ दं ॥ लेनृत्तयनमः ॥ म्रिदि ॥ ॥ येनृत्तयनमः ॥ यद्वेवक्रयनः
मः ॥ नेनृत्तयनमः ॥ ददि ॥ वक्रायनमः ॥ लेनृत्तयनमः ॥ यद्वेवक्रायनमः ॥ वेव

मंदवायड रुववकायनमहा ॥ क्लृप्तनायडड वकायनमहा ॥ निवकनासहा ॥
उंददि ॥ नवकु ॥ मंददिक्षमनी ॥ द्विंवाभायो ॥ वां कध ॥ यंना हो ॥ उंददवाध्या ॥ नवाम
याध्या ॥ मंय ॥ निंददया ॥ वां मुद्रि ॥ यंवदन ॥ उंददन ॥ नवामन ॥ मंददनास
निवामनास ॥ वांददरुम ॥ यवामरुम ॥ उंददयादसु ॥ नवामयादसु ॥
मंददयादया ॥ निवामया ॥ ॥ उंदिना ॥ नवदन ॥ मंददि ॥ निवकना ॥ वांदद
याद ॥ यवामयाद ॥ उंददि ॥ नवकु ॥ उंयनयनमहा वकु ॥ उंमगयनमहा ॥ दद
य ॥ उंनुरुयायनमहा ॥ यादो ॥ उंवंमोय नमहा ॥ ॥ उंमुद्रि ॥ नंरुगामंड
दन ॥ निंददो ॥ वां वामो ॥ यंददय ॥ नमो ॥ मुस्कानरुगय ॥ निगमनाम
ना ॥ वडुमर्लि वय ॥ हासि क्षयगमव ॥ ॥ श्री क्लृप्तनासहा ॥ श्री कध

ययुष्मदर्थेनमः॥ अंजनकायविग्रहायेनमः॥ ॐ सुखमायधमत्मायेनमः॥ ॐ
 त्रिमूर्त्यै नमः॥ ॐ अमनन्तयवर्तुताश्चेनमः॥ ॐ आर्क्षीय दीर्घायार्क्षीय नमः॥
 मरुतकभय दीर्घमुखी नमः॥ मं किथाभय तममुखी नमः॥ ॐ स्त्रीभय दीर्घ
 डिक्तायेनमः॥ ॐ रुद्रभय क्लृप्तार्द्रयेनमः॥ नं सिंहाभय दृष्टकंक्षेनमः॥ नं रुद्रि
 कभय विकृतमुखी नमः॥ ॐ सदाशक्तभय क्लृप्तामखी नमः॥ ॐ अनन्यरुद्रभय
 ॐ क्लृप्तामखी नमः॥ ॐ कुम्भभय घ्नीमुखी नमः॥ अरुमहासनाय विकृतमुखी नमः॥
 ॐ क्लृप्ताभय महोकायेनमः॥ स्वयं भयमनस्त्रयेनमः॥ गं यक्षककायसर्वसि
 द्विर्लोथेनमः॥ ॐ निवारुमभय ॐ ताम्रविद्यायेनमः॥ ॐ नृकभय मनुष्य
 क्षेनमः॥ ॐ कुम्भभय आत्मनाक्षेनमः॥ ॐ वकनक्षभय रुद्रमाण्डनमः॥ ॐ व

दुःखान्नमः। तन्मयादयो नमः॥ मंत्रं अक्षय्यं द्याविनो नमः॥ सर्वे भयं नागं
 नमः॥ तं मां भववायस्वयये नमः॥ ॐ तां हृतीं भयं मञ्जु ह्यो नमः॥ ॐ दानं क
 भयं नृदि ह्ये नमः॥ दं अर्द्धतां वा भयं वा वि ह्ये नमः॥ ॐ ट मा कानं भयं क कोः
 दये नमः॥ तं अष्टादीं भयं यूतं नो नमः॥ थं दण्डं भयं रुद्रं का ह्यो नमः॥ दं अक्षीं भ
 यं या गिनो नमः॥ धं मित्रं भयं गी र्विनो नमः॥ नै भयं भयं गङ्गि नो नमः॥ यं ता
 हिकं भयं कातं वा नो नमः॥ रं निखीं भयं कर्दि नो नमः॥ वं द्यु ग त ह्यु भयं क य
 दि नो नमः॥ रं द्वि न ह्यु भयं व द्याये नमः॥ मं म ह्यु का तं भयं क यार्थे नमः॥ यं
 त्वं ग त्म व वा तीं भयं सु म र्खो नमः॥ नं अ सु ग त्म नं रु र्जीं गी भयं न व ह्ये नमः॥
 तं मां सा त्म नं पि नां को भयं सा ध वी नमः॥ यं म दा त्म नं र व भ्रां भयं वा नृ ह्ये नमः॥

भंजस्मात्मानवकं भय वायवो नमः॥ ये सक्तात्मनः धर्मभय नक्षत्रिभिः क्षिप्त
 मः॥ संपुक्तात्मनः रुची भयः सरुजाये नमः॥ ह्यात्मनः कलिभयः सुदालं
 नमः॥ तं गच्छात्मनः निवेद्य भय वायि लो नमः॥ कं य न मा त्म न स ख र्क कं भयः स
 ह्यमायाये नमः॥ स क त मा ह का म् च न न् वा य कं॥ न मां मु स्मान् रु ना य क्षा नि
 निक्षाम्नात्मनः वडम्भं हिवयं दया लमिनाक्षाय न मुवा वाय कं कथो॥
 आत्मदरुणीं हावय॥ धर्मो दिहि॥ धर्मो यं नमः॥ दक्षो गः॥ उक्ता नाय नमः॥
 दक्षो नो॥ उवे नाक्षाय नमः॥ वामो नो॥ उने धर्यो य नमः॥ वामो ल॥ उने धर्मो य
 नमः॥ मरुवा॥ उने अक्षानाय नमः॥ दक्षो ल॥ उने अवे नाक्षाय नमः॥ अक्षो॥ उ
 अन्यो धर्यो य नमः॥ वामो ल॥ दक्षो॥ उने अनकाय नमः॥ उने कदाय नमः॥

ॐ नानायाय नमः॥ ॐ यज्ञाय नमः॥ ॐ केशवाय नमः॥ ॐ कर्त्तु केशवे नमः॥ ॐ यज्ञाय
ये नमः॥ ॐ सूर्याय नमः॥ ॐ चन्द्राय नमः॥ ॐ अग्नये नमः॥ ॐ सप्तर्षये नमः॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय॥ ॐ आत्माने नमः॥ ॐ अन्तःप्राप्ताने नमः॥ ॐ यज्ञ
मात्माने नमः॥ ॐ क्षान्तात्माने नमः॥ ॐ ० मय द ह वि न क य ॥

वैद्याकाशखलिन्युक्ते न विना गतं नयात् सत्त्वत्सन्नं योष कृष्णं भिक्षाणि श्लोकत्रयं कलदाक्षि
यद्धर्मिणो वक्त्रं यद्गुणमाप्तिमैसा मधिगुणं श्रीवक्त्राक्षं कर्माणि यादोषिकं सद्गुणस्य
क्षिति नः प्रीत्या प्रभादा स्य दी॥ ॥ सत्त्वगुणं ३० ५ योष कृष्णं न व मि रुक्म नक्षत्रादिरा
वा न॥ थ कृष्णं उमानर्थं युयात वधे कनवाय धून कारुण्य॥ ॥ गुरु मम ॥